

Notes

- 01_Notes

nikkyjain@gmail.com
Date : 20-Feb-2022

Index

अधिकार

कर्म	गुणस्थान	गति-आगति नियम	सामन्य जानकारी
प्रकृति बंध	स्थिति बंध	अनुभाग बंध	प्रदेश बंध
कर्म-उदय	कर्म-सत्त्व	बंध-उदय-सत्त्व त्रिसंयोग	आस्रव प्रत्यय
भाव अधिकार	गुणस्थानों में आलाप	सत्-अनुगम	संख्यानुगम
क्षेत्रानुगम	स्पर्शानुगम	कालानुगम	भावानुगम
अन्तरानुगम	अल्प-बहुत्व	मोहनीय-विभक्ति	विविध विषय

Index



गाथा / सूत्र	विषय	गाथा / सूत्र	विषय
कर्म			
01-01)	कर्म की १४८ प्रकृतियाँ	01-02)	कर्म प्रकृतियों में समूह-वाचक शब्द
01-03)	कर्मों में विभाजन	01-04)	स्वोदय / परोदय बंधी प्रकृतियाँ
01-05)	सांतर / निरन्तर बंधी प्रकृतियाँ		
गुणस्थान			
02-01)	गुणस्थानों में विभाजन	02-03)	गुणस्थानों में समुद्घात
02-02)	गुणस्थानों में गमनागमन	02-05)	गुणस्थानों में कर्म के बन्ध
02-04)	गुणस्थानों में कर्म के उदय / उदीरणा	02-07)	गुणस्थानों का काल और उनमें जीवों की संख्या
02-06)	गुणस्थानों में कर्म की सत्ता	02-10)	गुणस्थानों में कर्म की उदय / बंध व्युच्छिति
02-09)	गुणस्थानों में संभव योग	02-12)	गुणस्थानों में करण संबंधी विशेष विचार
गति-आगति नियम			
03-01)	गति-आगति	03-02)	जीव कहाँ तक जा सकता है
03-03)	जीव नियमतः कहाँ जाते हैं	03-04)	आयु
03-05)	संहनन की अपेक्षा गति प्राप्ति		
सामन्य जानकारी			
04-01)	पांचों ज्ञानों का स्वामित्व		
04-02)	संसारी जीवों में प्राण		
प्रकृति बंध			
05-01)	प्रकृति-बन्ध प्ररूपणा	05-03)	तिर्यञ्च-गति में प्रकृति बंध
05-02)	नरक में प्रकृति बंध	05-05)	देवगति में प्रकृति बंध
05-04)	मनुष्य-गति में प्रकृति बंध	05-07)	काय-मार्गणा में प्रकृति बंध
05-06)	जाति-मार्गणा में प्रकृति बंध	05-09)	वेद-मार्गणा में प्रकृति बंध
05-08)	योग-मार्गणा में प्रकृति बंध	05-11)	कषाय और ज्ञान मार्गणा में कर्म का बंध
05-10)	लेश्या-मार्गणा में प्रकृति बंध	05-13)	उत्तर प्रकृति में सादि आदि बंध के भेद
05-15)	मूल प्रकृति में सादि आदि बंध के भेद	05-16)	एक जीव के एक काल में होने वाला प्रकृति-बंध
05-19)	नाम-कर्म के बंध-स्थान का यंत्र	05-20)	नाम-कर्म बंध के आठ स्थान
05-21)	गति के साथ बंधने वाले नाम-कर्म के स्थान	05-22)	नाम-कर्म बन्ध-स्थान आदेश प्रस्तुपणा
05-23)	नाम-कर्म बंध के आठ स्थान	05-24)	
स्थिति बंध			
06-01)	जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति बंध का काल और स्वामी	06-02)	मार्गणा में जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति-बंध

06-03)	मूल-प्रकृतियों में अजघन्य आदि स्थिति के प्रकार	06-04)	स्थिति-बंधस्थान प्ररूपणा
06-05)	संक्तेश-विशुद्धि-स्थान प्ररूपणा	06-06)	स्थिति बंध अल्प-बहुत्व
06-07)	उत्तर-प्रकृतियों में अजघन्य आदि स्थिति के प्रकार		

अनुभाग बंध

07-01)	अनुभाग बन्ध के स्वामी	07-02)	मूल प्रकृतियों में सादि आदि भेद	07-03)	उत्तर प्रकृतियों में सादि आदि भेद
प्रदेश बंध					

08-01)	मूल प्रकृतियों में प्रदेश बंध				
कर्म-उदय					

09-01)	नरक और तिर्यच्च गति मार्गणा में उदय	09-03)	इंद्रिय मार्गणा में कर्म का उदय
09-02)	मनुष्य और देव गति मार्गणा में उदय	09-05)	योग मार्गणा में कर्म का उदय
09-04)	काय मार्गणा में कर्म का उदय	09-07)	कषाय मार्गणा में कर्म का उदय
09-06)	वेद मार्गणा में कर्म का उदय	09-09)	संयम मार्गणा में कर्म का उदय
09-08)	ज्ञान मार्गणा में कर्म का उदय	09-11)	लेश्या मार्गणा में कर्म का उदय
09-10)	दर्शन मार्गणा में कर्म का उदय	09-13)	संज्ञी मार्गणा में कर्म का उदय
09-12)	सम्यक्त्व मार्गणा में कर्म का उदय	09-18)	नाम-कर्म अपेक्षा जीव-पद के 41 भेद
09-14)	आहार मार्गणा में कर्म का उदय	09-20)	ओघ से एक जीव के एक काल में कर्म-उदय
09-19)	उदय योग्य पाँच काल	09-22)	नाम-कर्म उदय-स्थान जीव-समास प्ररूपणा
09-21)	एक जीव की अपेक्षा नाम कर्म के उदय-स्थान	09-24)	नाम-कर्म के उदय-स्थानों के भंग का यंत्र
09-23)	नाम-कर्म के उदय-स्थानों का यंत्र	09-26)	आदेश से एक जीव के एक काल में नाम कर्म-उदय

कर्म-सत्त्व

10-01)	नरक गति मार्गणा में सत्त्व	10-02)	तिर्यच्च गति मार्गणा में सत्त्व
10-03)	मनुष्य गति मार्गणा में सत्त्व	10-04)	देव गति मार्गणा में सत्त्व
10-05)	इंद्रिय और काय मार्गणा में सत्त्व	10-06)	उद्वेलना का क्रम
10-07)	योग मार्गणा में सत्त्व	10-08)	वेद, कषाय और ज्ञान मार्गणा में सत्त्व
10-09)	संयम और दर्शन मार्गणा में सत्त्व	10-10)	लेश्या, भव्य और सम्यक्त्व मार्गणा में सत्त्व
10-11)	संज्ञी और आहार मार्गणा में सत्त्व	10-12)	एक जीव के सत्त्व में स्थान और भंग की संख्या
10-13)	मिथ्यादृष्टि के सत्त्व में 18 स्थान / 50 भंग	10-14)	सासादन के सत्त्व में 4 स्थान / 12 भंग
10-15)	मिश्र गुणस्थान के सत्त्व में स्थान / 36 भंग	10-16)	अविरत-सम्यक्त्वी के सत्त्व में 40 स्थान / 120 भंग
10-17)	देशविरती के सत्त्व में 40 स्थान / 48 भंग	10-18)	6-7 गुणस्थान के सत्त्व में 40 स्थान / 40 भंग
10-19)	उपशम श्रेणी के सत्त्व में 24 स्थान और भंग	10-20)	अपूर्वकरण क्षपक के 4 सत्त्व स्थान / 4 भंग
10-21)	अनिवृत्तिकरण क्षपक के 36 सत्त्व स्थान / 38 भंग	10-22)	सूक्ष्मसांपरायिक / क्षीणमोह क्षपक के सत्त्व स्थान / भंग
10-23)	सयोग / आयोग केवली के स्थान और भंग	10-30)	नाम-कर्म के 13 सत्त्व-स्थान
10-31)	चार गति में पाए जाने वाले नाम-कर्म के सत्त्व-स्थान		

बंध-उदय-सत्त्व त्रिसंयोग

11-01)	मूल-प्रकृतियों में त्रिसंयोग में स्थान	11-03)	उत्तर-प्रकृतियों में त्रिसंयोग में स्थान
11-02)	ओघ से मूल-प्रकृतियों में त्रिसंयोग में स्थान	11-05)	चारों गति में आयु कर्म के त्रिसंयोग भंग
11-04)	गोत्र कर्म के त्रिसंयोग भंग	11-07)	मोहनीय के बंध अधिकरण, उदय-सत्त्व आधेय भंग
11-06)	मोहनीय कर्म के त्रिसंयोग भंग	11-09)	मोहनीय के सत्त्व अधिकरण, बंध-उदय आधेय भंग
11-08)	मोहनीय के उदय अधिकरण, बंध-सत्त्व आधेय भंग		

11-10)	नाम कर्म के बंध, उदय, सत्त्व त्रिसंयोग भंग	11-11)	14 जीव-समास में नाम कर्म के बंध, उदय, सत्त्व
11-12)	14 मार्गणा में नाम कर्म के बंध, उदय, सत्त्व भंग	11-13)	नाम कर्म के बंध अधिकरण, उदय, सत्त्व आधेय
11-14)	नाम कर्म के उदय आधार, बंध सत्त्व आधेय भंग	11-15)	नाम कर्म के सत्त्व आधार, बंध उदय आधेय भंग
11-16)	नाम कर्म के बंध / उदय आधार सत्त्व आधेय	11-17)	नाम कर्म के बंध / सत्त्व आधार उदय आधेय भंग
11-18)	नाम कर्म के उदय / सत्त्व आधार बन्ध आधेय भंग		

आस्रव प्रत्यय

12-01)	आस्रव के प्रत्यय के मूल और उत्तर-भेद	12-03)	गुणस्थानों में आस्रवों के उत्तर प्रत्यय
12-02)	गुणस्थान में आस्रवों के मूल-प्रत्यय	12-05)	गुणस्थानों में आस्रव के प्रत्यय के भंगों का प्रमाण
12-04)	गुणस्थानों में आस्रव के स्थान संख्या और उनके प्रकार		
12-06)	मार्गणा में आस्रव		

भाव अधिकार

13-01)	नाना जीवों में पाए जाने वाले भाव	13-03)	गुणस्थानों में एक जीव के एक काल में संभव भाव
13-02)	नाना जीवों में पाए जाने वाले उत्तरभाव		
13-04)	गुणस्थानों में उत्तरभावों के भंग		

गुणस्थानों में आलाप

14-01)	गुणस्थानों में आलाप	14-03)	तिर्यक्चों में गुणस्थानों में आलाप
14-02)	नरक में गुणस्थानों में आलाप		
14-04)	मनुष्यों में गुणस्थानों में आलाप		

सत्-अनुगम

15-01)	मार्गणा में भंग-विचय		
15-02)	मार्गणा का स्वामित्व		

संख्यानुगम

16-01)	मार्गणा में द्रव्य-प्रमाणानुगम	16-03)	नारकियों की संख्या
16-02)	वैमानिक देवों की संख्या		

क्षेत्रानुगम

17-01)	मार्गणा में क्षेत्रानुगम	17-02)	जीवों का वर्तमान निवास-स्थान / अवस्था
			स्पर्शानुगम

18-01)	गुणस्थानों में स्पर्श	18-02)	मार्गणा में स्पर्शानुगम
			कालानुगम

19-01)	गुणस्थानों में काल	19-02)	मार्गणा में कालानुगम
			भावानुगम

20-01)	मार्गणा में भावानुगम		अन्तरानुगम

21-01)	गुणस्थानों में अंतर	21-03)	एक जीव की अपेक्षा प्रकृतिबंध अंतरानुगम
21-02)	मार्गणा में अन्तरानुगम		

अल्प-बहुत्व

22-01)	जीवों में अल्प-बहुत्व	22-02)	अद्वापरिमाण में अल्प-बहुत्व
22-03)	योग-स्थान में अल्प-बहुत्व	23-01)	योग-स्थान
23-02)	योग-स्थान अल्प-बहुत्व	23-03)	जीव-समास में योगस्थान

मोहनीय-विभक्ति

विविध विषय

28-01)	मूल संघ पट्टावली	28-02)	पुराण-पुरुष
28-03)	जीव-समास (98 भेद)	28-04)	नरक संबंधी जानकारी
28-05)	नरक के 49 पटलों में आयु	28-06)	तिर्यञ्च-गति में जघन्य / उत्कृष्ट आयु
28-07)	एक अंतर्महृत में लब्ध्यपर्याप्तिक के संभव निरंतर क्षुद्र भव	28-08)	मनुष्य-गति मार्गणा में आयु
28-09)	देव-गति में व्यन्तर देव संबंधी आयु	28-10)	देव गति में भवनवासी संबंधी आयु
28-11)	देव गति में ज्योतिष संबंधी आयु	28-12)	देव गति में सौधर्म-ईशान देव सम्बन्धी आयु
28-13)	सानतकुमार / महेंद्र युगल में आयु	28-14)	ब्रह्म-कापिष्ठ युगल संबंधी आयु
28-15)	शुक्र से अच्युत स्वर्ग सम्बन्धी आयु	28-16)	आरण से सर्वार्थ-सिद्धि तक आयु
28-17)	वैमानिक परिवार में आयु	28-18)	वैमानिक इंद्राणि / देवियों संबंधी आयु
28-19)	चौबीस तीर्थकर निर्देश	28-20)	द्वादश चक्रवर्ती निर्देश
28-21)	नव बलदेव निर्देश	28-22)	नव नारायण निर्देश
28-23)	नव प्रतिनारायण निर्देश	28-24)	एकादश रूद्र निर्देश
28-26)	चक्रवर्ती के 14 रल	28-31)	भगवान महावीर के पूर्व भव
28-41)	भवनवासी देवों में इंद्र परिवार		

अलौकिक गणित

29-01)	क्षेत्र प्रमाण
29-02)	संख्या प्रमाण

न्याय-वाक्य

30-01)	न्याय-वाक्य
--------	-------------



कर्म



+ कर्म की १४८ प्रकृतियाँ -
कर्म की 148 प्रकृतियाँ

विशेष :

कर्म की १४८ प्रकृतियाँ

कर्म	कुल	प्रकृति
ज्ञानावरणी	५	मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मन-पर्यज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण

कर्म की १४८ प्रकृतियाँ		
कर्म	कुल	प्रकृति
दर्शनावरणी	९	चक्रुद्दर्शनावरण, अचक्रुद्दर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचलाप्रचला, स्थानगृह्णि
वेदनीय	२	सातावेदनीय और असातावेदनीय
मोहनीय	३	मिथ्यात, सम्यमिथ्यात और सम्यकत
चारित्र	२५	अनंतानुबंधी / अप्रत्याख्यानावरण / प्रत्याख्यानावरण / संज्ञलन [क्रोध, मान, माया, लोभ], हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगाड़ा, स्त्रीवद, पुंछेद और नपुंसकवेद
आपु	४	नक्काय, तिर्योन्य, मनुष्यायु और देवाय
नाम	१३	१४ पिंड प्रकृतियाँ (६५ कर्म प्रकृतियाँ) ४ गति ... नक्क, तिर्योन्य, मनुष्य और देव ५ जाति ... एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय १५ शशीर / बंधन / संघात ... औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तेजस और कार्मण ६ संस्थान ... समवत्सर, भ्याधिष्ठानमंडल, स्त्राति, कुञ्जक, तापन और हुंडक ३ अंगोपांग ... औदारिक, वैक्रियिक और आहारक ८ संहनन ... वज्रकृष्मनाराच, वज्रनाराच, नाराच, अर्धनाराच, कीलक, असंग्रातसृपाटिका ८ स्पर्श ... कोमल, कठोर, गुरु, लघु, शीत, उषा, सिंध और रुक्ष ५ रस ... तिक्त (चरपरा), कटुक, (कुडुगा), कषाय (कषायला), आम्ल (खट्ट) और मधुर (मीठा) २ गंध ... सुर्यांश और दुर्गंध ५ वर्ण ... नील, शुक्ला, कृष्ण, रक्त और पीत ४ आनुपूर्वी ... नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यगत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी और देवगत्यानुपूर्वी २ विहायोगति ... प्रसर्स और अप्रशस्त
		अपिड प्रकृतियाँ (२८ कर्म प्रकृतियाँ) उपधात, परधात आतप, उद्यात सूक्ष्म, बादर पर्याप्तक, अपर्याप्तक प्रत्येक, साधारण स्थिर, अस्थिर शुभ, अशुभ सुभग, दुर्भग सुस्वर, दुस्वर आदेय, अनादेय यशस्कीर्ति, अयशस्कीर्ति त्रस, स्थावर उच्छ्वास, अगुरुलघु, तीर्थकर, निर्माण उच्च और नीच दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य
गोत्र	२	उच्च और नीच
अंतराय	५	दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य



+ कर्म प्रकृतियों में समूह-वाचक शब्द -

कर्म प्रकृतियों में समूह-वाचक शब्द

विशेष :

प्रकृतियों में समूह के वाचक शब्द

त्रसबारस -- त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक शरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशस्कीर्ति, निर्माण और तीर्थकर

त्रसदस -- त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक शरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशस्कीर्ति

त्रसचतुष्क -- त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येक शरीर

स्थावरदसक -- स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशस्कीर्ति

स्थावरचतुष्क -- स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण

अगुरुलघुषट्क -- अगुरुलघु, उपधात, परधात, उच्छ्वास, आतप और उद्योत

अगुरुलघुचतुष्क -- अगुरुलघु, उपधात, परधात और उच्छ्वास

जातिचतुष्क -- एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय ये चार जाति

वैक्रियिकअष्टक -- वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिक अंगोपांग, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, देवायु, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी और नरकायु

वैक्रियिकषष्क -- वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिक अंगोपांग, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी

नरकचतुष्क -- नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिक अंगोपांग

देवचतुष्क -- देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिक अंगोपांग

वर्णचतुष्क -- वर्ण, रस, गंध और स्पर्श

निद्रापंचक -- स्थानगृह्णि, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, निद्रा और प्रचला

स्त्यानत्रिक -- स्थानगृह्णि, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला

तिर्यकचतुष्क -- तिर्यचगति, तिर्यचगत्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर और औदारिक अंगोपांग

नरचतुष्क -- मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, औदारिक शरीर और औदारिक अंगोपांग

त्रसत्रिक -- त्रस, बादर, पर्याप्त

त्रसत्रिक युगल -- त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त

सुभगचतुष्क -- सुभग, सुस्वर, आदेय और यशस्कीर्ति

दुर्भगचतुष्क -- दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशस्कीर्ति

सुभगचतुष्क युगल -- सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशस्कीर्ति और अयशस्कीर्ति

वर्ण चतुष्क -- स्पर्श, रस, गंध, वर्ण



+ कर्मो में विभाजन -

कर्मो में विभाजन

विशेष :

कर्मो में विभाजन

सर्वशाति	देशशाति
20 (केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, पाँच निद्रा, अनंतानुबंधीय, अप्रत्याख्यानावरण-4, प्रत्याख्यानावरण-4, मिथ्यात्व) + सम्याप्तियात्व*	26 (ज्ञानावरण-4 / मति-शृत-अवधिमनः पर्यण, दर्शनावरण-3 / चक्षु-अचक्षु-अवधिय, सम्यक्तप्रकृति, संज्वलन-4, नोक्षण्य-9, अंतराय-5)
प्रातियोगिकों में ही सर्व-शाति और देश-शाति के विकल्प हैं	
प्रशस्त	अप्रशस्त
42 (सातावेदनीय, 3 आयु / तिर्यच-मनुष्य-देव, उच्चाग्र, मनुष्य-द्विक, देव-द्विक, पंचेद्विग्य जाति, 5-शरीर, 3-अंगोपांग, 4-वर्ण-चतुष्क, समचतुरस्मि संस्थान, वज्रक्षेपभन्नाराच-संहनन, अगुरुलघु, प्रशस्त विहायोगति, परघात, आतप, उद्योत, उच्छास, पर्याप्तक, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशस्कीर्ति, त्रस, बादर, निर्माण, तीर्थकर)	82 (शेष बंध योग्य प्रकृतियाँ)
प्रातियोगिकों की सभी प्रकृतियों अप्रशस्त हैं	
जीव-विपाकी	पुद्ल-विपाकी
78 (47-धातियो कर्म 2-वेदनीय, 2-गोत्र, 4 गति, 5 जाति, बादर-सूक्ष्म, पर्याप्त-अपर्याप्ति, सुखर-दुःखर, आदेय-अनादेय, यशस्कीर्ति-अयशस्कीर्ति, त्रस-स्थावर, 2-विहायोगति, सुभग-दुभग, उच्छास, तीर्थकर)	36 (5 शरीर, 3 अंगोपांग, 6 संस्थान, 6 संहनन, 4 वर्ण-चतुष्क, निर्माण-आताप, उद्योत, स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, प्रत्येक-साधारण, उच्छास, अगुरुलघु, निर्माण)
धूत	अधूत
47 (ज्ञानावरण, 9-दर्शनावरण, 5-अंतराय, मिथ्यात्व, 10 क्षय, भाय-जुगुस्मा, तेजस-कामणि, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, वर्ण-चतुष्क)	73 (2-वेदनीय, 7-नोक्षण्य, 4-आयु, 4-गति, 5-जाति, औदारिक-द्विक, वैक्रियिक-द्विक, आहारक-द्विक, 6-संहनन, 6-संस्थान, 4-आनुपूर्वी, परघात, आतप, उद्योत, उच्छास, 2-विहायोगति, त्रस-स्थावर, बादर-सूक्ष्म, पर्याप्त-अपर्याप्ति, प्रत्येक-साधारण, स्थिर-अस्थिर, सुभग-दुभग, शुभ-अशुभ, सुस्वर-दुस्वर, आदेय-अनादेय, यशस्कीर्ति-अयशस्कीर्ति, तीर्थकर, 2-गोत्र)



+ स्वोदय / परोदय बंधी प्रकृतियाँ -

स्वोदय / परोदय बंधी प्रकृतियाँ

विशेष :

स्वोदय / परोदय बंधी प्रकृतियाँ

परोदय से बंध	स्वोदय से बंध	उभयोदय बंधी
11 (तीर्थकर, वैक्रियिक-अष्टक, आहारक-द्विक)	27 (मिथ्यात्व, 5 ज्ञानावरणी, 4 दर्शनावरणी, 5 अंतराय, धूतोदयी १२ / तेजस, कामणि, वर्ण-चतुष्क, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, अगुरुलघु, निर्माण)	82 (पाँच निद्रा, 2 वेदनीय, 2५ मोहनीय तिर्यच-विक, मनुष्य-विक, 4 जाति, औदारिक-द्विक, 6 संहनन, 6 संस्थान, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छास, विहायोगति-द्विक, त्रस-द्विक, बादर-द्विक, पर्याप्त-द्विक, प्रत्येक, साधारण, सुभग-द्विक, सुस्वर-द्विक, आदेय-द्विक, यशस्कीर्ति-द्विक, गोत्र-द्विक)



+ सांतर / निरन्तर बंधी प्रकृतियाँ -

सांतर / निरन्तर बंधी प्रकृतियाँ

विशेष :

सांतर / निरन्तर बंधी प्रकृतियाँ

निरन्तर बंध	सांतर बंध	सांतर / निरन्तर बंधी
54 = ४७ धूत-बंधी (ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ६, अंतराय ५, मिथ्यात्व, क्षय १६, भय, जुगुस्मा, शरीर ८ / तेजस, कामणि, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, वर्ण-चतुष्क) + ७ (तीर्थकर, आहारक-द्विक, आयु ४)	34 (नरक-द्विक, जाति-चतुष्क, ५ संहनन, वज्रवृषभन्नाराच विना), ५ संस्थान / समचतुरस्मि विना, अप्रशस्त-विहायोगति, आतप, उद्योत, स्थावर-दशक, असात-वेदनीय, स्त्री-वेद, न्युसक-वेद, अरति, शोक)	32 (देव-द्विक, मनुष्य-द्विक, तिर्यच-द्विक, औदारिक-द्विक, वैक्रियिक-द्विक, प्रशस्त-विहायोगति, वज्रवृषभन्नाराच संहनन, परघात, उच्छास, समचतुरस्मि संस्थान, पंचेद्विग्य, त्रस-दशक, साता-वेदनीय, हास्य, रति, पुरुष-वेद, गोत्र-द्विक)



गुणस्थान



+ गुणस्थानों में विभाजन - गुणस्थानों में विभाजन

विशेष :

गुणस्थानों के विभिन्न विभाजन																
14 अयोगकेवली	योग		केवल ज्ञानी	सर्वज्ञ	परमगुरु				वीतरामी	अनन्त सुखी	परमात्मा					यथाखात चारित्र
13 सयोगकेवली		विरत				अप्रमत गुरु			अप्रमत	अतीन्द्रिय सुखी						सूक्ष्म-साम्परायिक चारित्र
12 क्षीणमोह	चारित्र मोहनीय			ज्ञानी			उपशम श्रेणी	क्षपक ब्रेणी	मिश्र		शुद्धोपयोग					सामायिक छेदोपस्थापना परिहार-विशुद्धि चारित्र
11 उपशान्तमोह				छद्मास्य		प्रमताप्रमत गुरु		क्षपक ब्रेणी		मिश्र		शुभोपयोग				संप्रमासंयम
10 सूक्ष्मसाम्पराय									प्रमत							असंयम
9 अनिवृतिकरण										रामी	दुखी	बहिरात्मा	अशुभोपयोग	अधार्यिक		
8 अपूर्वकरण																
7 अप्रमतसंयत																
6 प्रमतसंयत																
5 देशविरत																
4 अविरत																
3 मिश्र																
2 सासादन																
1 मिथ्यात्व																



+ गुणस्थानों में गमनागमन - गुणस्थानों में गमनागमन

विशेष :

गुणस्थानों में गमनागमन		
कहाँ से	गुणस्थान	कहाँ तक
13→	14 अयोगकेवली	→सिद्ध भगवान्
12→	13 सयोगकेवली	→14
10→	12 क्षीणमोह	→13
10→	11 उपशान्तमोह	→10, 4*
9, 11→	10 सूक्ष्मसाम्पराय	→9, 11, 12, 4*
8, 10→	9 अनिवृतिकरण	→10, 8, 4*
9, 7→	8 अपूर्वकरण	→9, 7, 4*
8, 6, 5, 4, 1→	7 अप्रमतसंयत	→8, 6, 4*
7→	6 प्रमतसंयत	→7, 5, 4, 3, 2+, 1
6, 4, 1→	5 देशविरत	→7, 4, 3, 2+, 1
11*, 10*, 9*, 8*, 7*, 6, 5, 3, 1→	4 अविरत	→7, 5, 3, 2+, 1
6, 5, 4, 1→	3 मिश्र	→1, 4
6+, 5+, 4+→	2 सासादन	→1
6, 5, 4, 3, 2→	1 मिथ्यात्व	→3!, 4, 5, 7
*मरण की अपेक्षा		
*सत्त्व-मिथ्यावल्लिंग		
प्रधामोपशम / द्वितीयोपशम सम्यक्ती		



+ गुणस्थानों में समुद्धात - गुणस्थानों में समुद्धात

विशेष :

गुणस्थानों में समुद्धात						
गुणस्थान	वेदना	कवाय	मारणान्तरक	वैक्रियक	तैजस	आहारक

मिथ्यादृष्टि	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	नहीं	नहीं	नहीं
सासादन					नहीं		
मित्र							
असंयत							
संयतासंयत							
प्रमत्त							
अप्रमत्त							
अपर्वचउप.							
आपूर्वकक्षपक							
१-११ उप.							
१-११ क्षपक							
क्षीणकथाय							
सयोगी							
अयोगी							



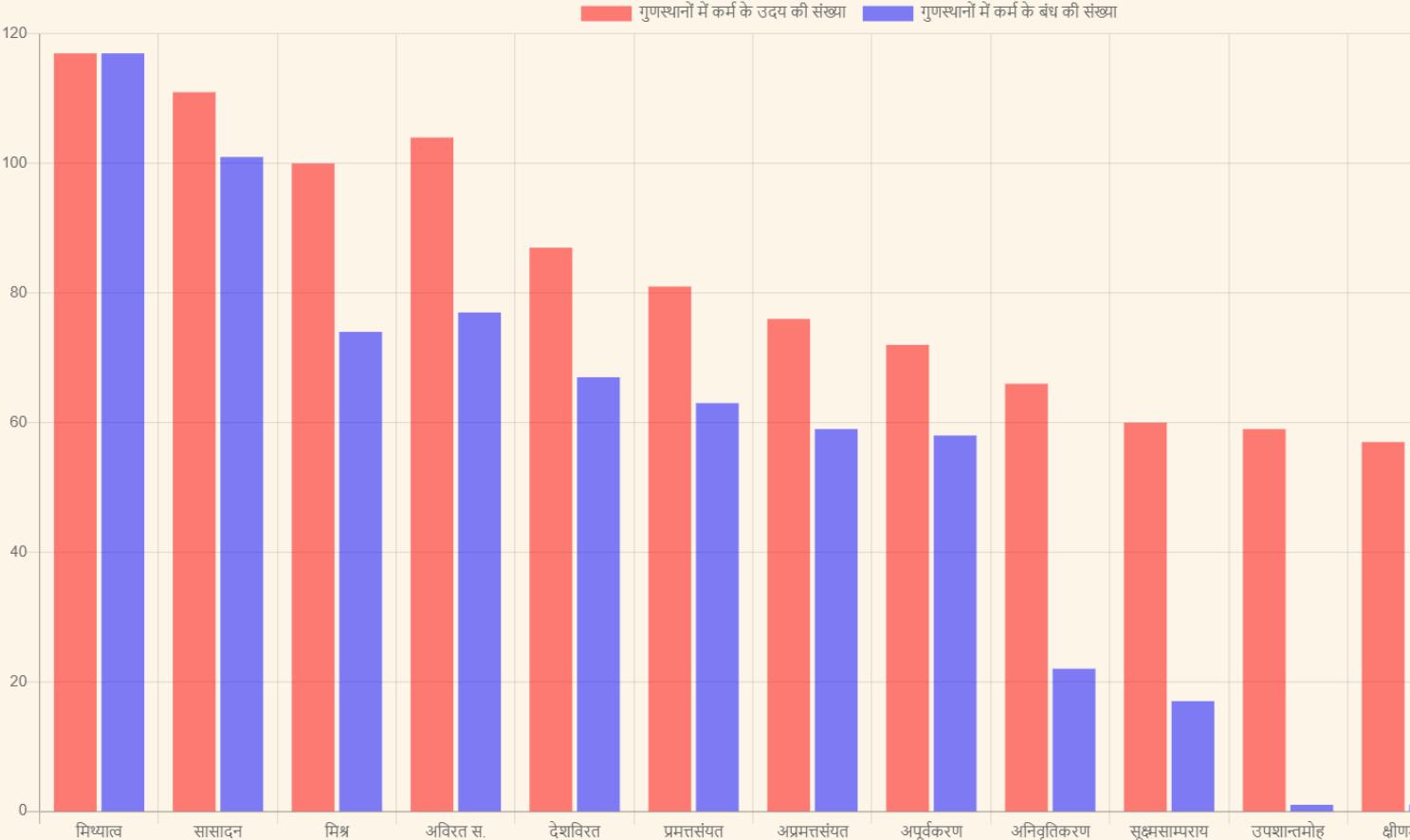
+ गुणस्थानों में कर्म के उदय / उदीरणा -

गुणस्थानों में कर्म के उदय / उदीरणा

विशेष :

सामान्य से गुणस्थानों में कर्मों के उदय				उदीरणा
	उदय	अनुदय	बुच्छिति	बुच्छिति
14 अयोगकेवली	12	110	12 (वेदनीय/कोइ १), उच्च गोत्र, मनुष्य गति, मनुष्य आयु, पंचेद्विय जाति, त्रस, बादर, पर्याप्ति, सुभग, आदेय, यशःकीर्ति, तीर्थकर)	0
13 सयोगकेवली	42 (+तीर्थकर)	80	30 (वेदनीय/कोइ १), वज्रवृषभनाराच सहनन, ६ स्त्रान, औदारिक शरीर-अंगोपांग, तैजस-कमणि शरीर, निर्मण, स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, अनुरुलघु उपाधात-पराधात, उच्छवास, प्रत्येक, शुभ-अशुभ, स्त्रियों-स्त्री, सुखर-दुखर	39 (३०+१२-३/वेदनीय २, मनुष्य आयु)
12 क्षीणमोह	57	65	16 (ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ६/अवधि केवल, निद्रा, प्रचला, चक्षु, अचक्षु, अंतराय ५)	
11 उपशान्तमोह	59	63	2 (संहनन २/नाराच, वज्रनाराच)	
10 सूक्ष्मसाम्पराय	60	62	1 (संज्वलन सूक्ष्म लोभ)	
9 अनिवृत्तिकरण	66	56	6 (संज्वलन ३-क्रोध, मान, माया), वेद ३/पुरुष स्त्री, नर्पुसक)	
8 अपूर्वकरण	72	50	6 (हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्ता)	
7 अप्रमत्तसंयत	76	46	4 (संहनन ३/असंग्राप्तासुपातिका, कीलक, अर्द्धनाराच), सम्यक प्रकृति	
6 प्रमत्तसंयत	81 (+आहारक शरीर, आहारक अंगोपांग)	41	5 (निद्रा ३/निद्रा-निद्रा, प्रचला-प्रचला, स्त्यानगृही), आहारक शरीर, आहारक अंगोपांग)	8 (५/वेदनीय २, मनुष्यायु)
5 देशविरत	87	35	8 (प्रत्याख्यानावरण ४, नीच गोत्र, तिर्थन्च गति, तिर्थन्च आयु उद्योत)	
4 अविरत	104 (+ आनुपूर्व ४, सम्यक-प्रकृति)	18	17 (अप्रत्याख्यानावरण ४, गति १/नरक, देवा, आयु २/नरक, देवा, अनुपूर्व ४, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक अंगोपांग, अनादेय, अयशःकीर्ति, दुर्भग्नि)	
3 मित्र	100 (+ सम्यक-मिथ्यात्म)	22 (-आनुपूर्व ३/देव, मनुष्य, तिर्थन्च)	1 (सम्यकमिथ्यात्म)	
2 सासादन	111	11 (-नरक आनुपूर्व)	9 (अनंतानुबंधी ४, स्थावर, जाति ४/३,२,३,१ इन्द्रिय)	
1 मिथ्यात्म	117	5 (-सम्यकमिथ्यात्म, सम्यक प्रकृति, आहारक-द्विक, तीर्थकर)	5 (मिथ्यात्म, सूक्ष्म, आतप, अपर्याप्ति, साधारण)	

*उदय योग्य कुल प्रकृतियाँ = १२२



+ गुणस्थानों में कर्म के बन्ध - गुणस्थानों में कर्म के बन्ध

विशेष :

	सामान्य से गुणस्थानों में बंध* / अबंध / व्युच्छिति		
	बंध	अबंध	व्युच्छिति
14 अयोगकेवली	0	120	0
13 सायोगकेवली	1	119	1 (साता-वेदनीय)
12 क्षीणोह	1	119	0
11 उपशान्तमोह	1	119	0
10 सूक्ष्मसाम्पराय	17	103	16 (ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ४ / चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवल), अंतराय ५, यशःकीर्ति उच्च गोत्र)
9 अनिवृतिकरण	22	98	5 (संज्वलन ५, पुरुष-वेद)
8 अपूर्वकरण	58	62	36 (निद्रा, प्रवला, तीर्थकर, निर्मण, प्रशस्त विहायोगति, पंचेन्द्रिय जाति, शरीर ४ / तेजस, कामणि, आहारक, वैक्रियिका, अंगोपांग २ / आहारक, वैक्रियिका, समचतुर्स संस्थान, देव गति, देव गत्यानुपूर्व, स्पर्श रस, गंध, वर्ण, हास्य, रसि, जुगुसा, भय, अगुरुलघुत्व, उपशात, परशात, उच्छवास, त्रस, बादर, पर्याप्ति, स्थिर प्रलेक, शुभग, सुभग, सु-स्वर, आदेय)
7 अप्रमत्तसंयत	59 (+आहारक द्विक)	61	1 (देव आयु)
6 प्रमत्तसंयत	63	57	6 (असाता-वेदनीय, अरति, शोक, अशुभ, अस्थिर, अयशःकीर्ति)
5 देशविरत	67	53	4 (प्रत्याख्यानावरण ४)
4 अविरत	77 (+तीर्थकर, देवायु मनुष्य-आयु)	43	10 (अप्रत्याख्यानावरण ४, मनुष्य ३ / आयु, गति, आनुपूर्वी, औदारिक शरीर-अंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन)
3 मिश्र	74	46 (-देव आयु मनुष्य आयु)	0
2 सासादन	101	19	25 (अनंतानुबंधी ४, स्त्री-वेद, निद्रा ३ / निद्रा-निद्रा, प्रवला-प्रवला, स्त्यानगद्धि), संहनन ४ / वज्र-नाराच, नाराच, अर्ढ नाराच, कीलक), संस्थान ४ / स्वाति, न्याग्रोधपरिमङ्गल, कुञ्जक, वामन, तिर्पत्य ३ / आयु, आनुपूर्वी, गति, नीच-गोत्र, अप्रसासन-विहायोगति, उच्चात, दुभग, दु-स्वर, अनादेय)
1 मिथ्यात्	117	3 (आहारक द्विक, तीर्थकर)	16 (मिथ्यात्, हुण्डकसंस्थान, न्युसकवेद, असंग्रामासुपातिका संहनन, एकेन्द्रिय, स्थावर, आतप, सूक्ष्म-त्रय, विकलेन्द्रिय, नरक-द्विक, नरकायु)

*बंध योग्य प्रक्रियाएँ = 120



+ गुणस्थानों में कर्म की सत्ता - गुणस्थानों में कर्म की सत्ता

विशेष :

गुणस्थानों में सत्त्व							
	सत्त्व	असत्त्व	व्युच्छिति				
अयोगकेवली	चरम समय	13	135	13 (१ वेदनीय, मनुष्यविक, पंचेन्द्रिय, सुभग, त्रस, बादर, पर्याप्ति, आदेय, यश, तीर्थकर, उच्चगोत्र)			
	द्विचरम समय	85	63	72 (५ शरीर, ५ ब्रह्मन, ५ संघात, ६ सत्थान, ३ अंगोपाण, ५ वर्ण, २ गच्छ, ५ रस, ८ स्पर्श, खिर, अस्त्र, शुभ, अशुभ, स्वरद्वय, देवद्विक, विलायोगतिद्वय, दुर्भग, निमण, अयश, अनादेय, प्रत्यक, अपर्याप्ति, अपुरुषाद्वय, १ वेदनीय, नीचगोत्र)			
	सयोगकेवली	85	63	0			
क्षपक श्रेणी	क्षीणमोह	चरम समय	99	49	14 (५ ज्ञानावरपी, ४ दर्शनावरपी, ५ अन्तराय)		
		द्विचरम समय	101	47	2 (मिश्र, प्रचला)		
		सूक्ष्मसाम्पराय	102	46	1 (संज्वलन लोभ)		
	अनिवृतिकरण	भाग 9	103	45	1 (संज्वलन माया)		
		भाग 8	104	44	1 (संज्वलन मान)		
		भाग 7	105	43	1 (संज्वलन क्रोध)		
		भाग 6	112	36	7 (पुरुष-वेद, हास्यादि ६ नोकबाय)		
		नपुसक वेद	106	42	1 (पुरुष-वेद)		
		भाग 5	114	34	2 (स्त्री-वेद, नपुसक-वेद)		
		पुरुष-वेद	112	36	1 (नपुसक वेद)		
		नपुसक वेद	114	34	6 (हास्यादि छह नोकबाय)		
		भाग 4	114	34	0		
		स्त्री-वेद	114	34	1 (स्त्री-वेद)		
		पुरुष-वेद	113	35	1 (स्त्री-वेद)		
		भाग 3	114	34	0		
		नपुसक वेद	114	34	1 (नपुसक वेद)		
		भाग 2	122	26	8 (प्रत्याख्यान ५, अप्रत्याख्यान ४)		
		भाग 1	138	10	16 (नरकाद्विक, तिर्यक-द्विक, जाति-चतुर्थ, स्थानविक, आतप, उद्घोत, सूक्ष्म, साधारण, स्थार)		
	अपूर्वकरण	138	10	0			
क्षायिक सम्पर्कव	अप्रमत्तसंयत	139	2	0			
	प्रमत्तसंयत	139	2	0			
	देशविरत	139	2	0			
	अविरत	141	0	2 (नरकायु, तिर्यचायु)			
सत्त्व-योग्य प्रकृति $141 = 148 - 7$ (दर्शकमोह ३, अनन्तानुबंधवी ५)							
	सत्त्व	असत्त्व	व्युच्छिति				
उपशम श्रेणी	8-11	146	2	0			
उपशम व क्षयोपशम सम्पर्कव	अप्रमत्तसंयत	146	2	0			
	प्रमत्तसंयत	146	2	0			
	देशविरत	147	1	1 (तिर्यचायु)			
	अविरत	148	0	1 (नरकायु)			
मिश्र	147	1 (तीर्थकर)	0				
सासादन	145	3 (तीर्थकर-आहारक-द्विक)	0				
मिथ्यात्व	148	0	0				



+ गुणस्थानों का काल और उनमें जीवों की संख्या -
गुणस्थानों का काल और उनमें जीवों की संख्या

विशेष :

काल		जीवों की संख्या (उक्ति)		मुक्त होने के लिए अनिवार्य गुणस्थान	जीव सदाकाल पाए जाते हैं
जघन्य	उत्कृष्ट	मनुष्यों की	चारों गतियां		
1 मिथ्यात्व	अन्तर्मुहूर्त	अनादि अनन्त अनादि सान्त सादि सान्त - कुछ कम अर्ध पुद्धर परावर्तन	पर्याप्ति - २९ अंक प्रमाण अपर्याप्ति - असंख्यात	अनंतानन्त	✓
2 सासादन	१ समय	६ आवली	५२ करोड़	असंख्यात	
3 मिश्र	अन्तर्मुहूर्त	(अन्तर्मुहूर्त (जे से संख्यात गुणा बढ़))	१०४ करोड़	असंख्यात	
4 अविरत	अन्तर्मुहूर्त	१ समय कम ३३ सागर + ९ अन्तर्मुहूर्त कम १ पूर्व कोटि	७०० करोड़	असंख्यात	✓
5 देशविरत	अन्तर्मुहूर्त	३ अन्तर्मुहूर्त कम १ पूर्वकोटि	१३ करोड़	असंख्यात	✓
6 प्रमत्तसंयत	१ समय - मरण अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त - सामान्य से	अन्तर्मुहूर्त	५,९३,९८,२०६		✓
7 अप्रमत्तसंयत		अन्तर्मुहूर्त (६ से आधा)	२,९६,९९,९०३		✓
8 अपूर्वकरण		यथायोग्य अन्तर्मुहूर्त	२९९+५९८=८९७		✓
9 अनिवृतिकरण					✓
10 सूक्ष्मसाम्पराय					✓
11 उपशमान्तमोह		अन्तर्मुहूर्त (२ क्षुद्र भव - ११२ सेकण्ड)	२९९		
12 क्षीणमोह		अन्तर्मुहूर्त (४ क्षुद्र भव - १६ सेकण्ड)	५९८		✓
13 सयोगकेवली	अन्तर्मुहूर्त	आठ वर्ष और अन्तर्मुहूर्त कम १ कोटि पूर्व	८,८५,५०२		✓
14 अयोगकेवली	अन्तर्मुहूर्त (५ क्षुद्र अक्षरों अह इ.उ.क्लु का उच्चारण करा)		५९८		✓



+ गुणस्थानों में संभव योग -
गुणस्थानों में संभव योग

विशेष :

गुणस्थानों में संभव योग		
गुणस्थान	सम्भव योग	असम्भव योग
मिथ्यादृष्टि	13	2 (आहारक, आहारक-मिश्र)
सासादन		5 (आहारक, आहारक-मिश्र, औदारिक-मिश्र, वैक्रियक-मिश्र, कार्मण)
मिश्र	10	
असयत	13	2 (आहारक व आहारक-मिश्र)
देशविरत	9	6 (औदारिक-मिश्र, वैक्रियक, वैक्रियक-मिश्र, आहारक, आहारक-मिश्र, कार्मण)
प्रमत्त संयत	11	4 (औदारिक-मिश्र, वैक्रियक, वैक्रियक-मिश्र, कार्मण)
अप्रमत्त संयत		
अपूर्वकरण		
अनेवृत्तिकरण	9	6 (औदारिक-मिश्र, वैक्रियक, वैक्रियक-मिश्र, आहारक, आहारक-मिश्र, कार्मण)
सूक्ष्म साम्पराय		
उपशान्त मोह		
क्षीणकधाय		
सयोग केवली	7	8 (वैक्रियक, वैक्रियक-मिश्र, आहारक, आहारक-मिश्र, असत्य व उभय [मन, वचन])

कुल योग = 15 (४ मन और ४ वचन [सत्य, असत्य, उभय, अनुभव], ६ काय योग, ३ औदारिक, औदारिक-मिश्र, वैक्रियक, वैक्रियक-मिश्र, आहारक, आहारक-मिश्र, कार्मण])



+ गुणस्थानों में कर्म की उदय / बंध व्युच्छिति -
गुणस्थानों में कर्म की उदय / बंध व्युच्छिति

विशेष :

गुणस्थानों में व्युच्छिति				
व्युच्छिति	प्रकृतियाँ	संख्या	बंध	उदय
उदय-व्युच्छिति के पक्षात बंध-व्युच्छिति	8	देव-चतुष्क	8	4
		आहारक-द्विक	8	6
		अयशस्कर्ति	6	4
		देवायु	7	4
युगपत बंध-उदय व्युच्छिति	31	मिथ्यात्व, आतप, सूक्ष्म, अपर्याच, साधारण	1	1
		स्थावर, जाति-चतुष्क	1*	1*
		अनन्तानुबंधी ४	2	2
		मनुष्यानुपूर्णी, अप्रसाख्यानावरणी ४	4	4
		प्रत्याख्यानावरणी ४	5	5
		भय, जुग्मा, हास्य, रति	8	8
		संज्वलन ३ [क्रोध, मान, माया], पुरुष-वेद	4	4
बंध-व्युच्छिति के पक्षात उदय-व्युच्छिति	81	नरक-विक		4
		असप्रादासुपाटिका संहनन		7
		नपुंसक-वेद	1	9
		हुङ्क-संसान		13
		तिर्यञ्जन्यूर्ती, दुधग, अनादेय		4
		तिर्यञ्ज-गति, तिर्यञ्जायु, उसोत, नीच-गोत्र		5
		स्यान-विक		6
		अर्ध-नाराच, कीलित-संहनन	2	7
		स्त्री-वेद		9
		वज्रनाराच, नाराच संहनन		11
		4 संस्थान [न्यग्रोधपरिमंडल, स्वाति, कुञ्जक, वामन], दुखर, अप्रशस्त-विहायोगति, औदारिक-द्विक, वज्रक्रषभनाराच संहनन		13
		मनुष्य-गति, मनुष्यायु	4	14
		अरति, शोक		8
		अस्प्र, अशुभ	6	13
		असातावेदनीय		14
		निद्रा, प्रचला		12*
		2 शरीर [तेजस, कार्मण], समचतुरस्म-संस्थान, वर्ण-चतुष्क, अगुरुलघुचतुष्क, प्रशस्त-विहायोगति, प्रत्येक, स्थिर, श्रुभ, सुस्वर, निर्माण	8	13
		पर्वेद्रिय-जाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, तीर्थकर		14
		संज्वलन-लोभ	9	10
		5 ज्ञानावरण, 4 दर्शनावरण, 5 अंतराय	10	12
		यशस्कर्ति, उच्च-गोत्र		13
		साता-वेदनीय		14

*उपात्य समय



+ गुणस्थान में मूल-प्रकृतियों में स्थान-समुक्तीर्तन -

गुणस्थान में मूल-प्रकृतियों में स्थान-समुक्तीर्तन

विशेष :

गुणस्थान में मूल-प्रकृतियों में स्थान-समुक्तीर्तन							
गुणस्थान	बंध-स्थान	उदय-स्थान	*उदीरणा	सत्त्व			
मिथ्यादृष्टि	7 / 8	8	8	8			
सासादन	7						
मिथ्र							
असंयत							
संयतासंयत	7 / 8						
प्रमत्त							
अप्रमत्त							
अपूर्वकरण	7 (आयु)				6 (8 - आयु वेदनीय)		
अनिवृत्तिकरण	6 (7 - मोहनीय)						
सूक्ष्म सम्प्रराय		5 (6 - मोहनीय)		7 (8 - मोहनीय)			
उपशान्त मोह	1 (वेदनीय)						
क्षीणकषाय		2 (नाम् गोत्र)					
सायोग केवली	4 (अघातिया)	0		4 (अघातिया)			
अयोग केवली	0						

*उदयावलि में उदीरणा का अभाव है



+ गुणस्थानों में करण संबंधी विशेष विचार -

गुणस्थानों में करण संबंधी विशेष विचार

विशेष :

गुणस्थानों में करण संबंधी विशेष विचार								
	आयु	वेदनीय			मोहनीय	ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अंतराय	नाम्, गोत्र	
	नरक	तिर्यक्	मनुष्य	देव	साता	असाता		
बंध	1	1-2	1 से 4	1 से 6	1 से 13	1 से 6	1 से 9*	1 से 10
उदीरणा	1 से 4	1 से 5	1 से 6	1 से 4	1 से 6	1 से 6	1 से 10-(आवली-1 समय)	1 से 12-(आवली-1 समय)
संक्रम	-	-	-	-	1 से 6	1 से 10	1 से 9*	1 से 10
उत्कर्षण	1	1-2	1 से 4	1 से 6	1 से 10	1 से 6	1 से 9*	1 से 10
अपकर्षण	1 से 4	1 से 5	1 से 13	1 से 11	1 से 13	1 से 13	1 से 10-(आवली-1 समय)	12-(आवली-1 समय)
अप्रशस्त उपशम	1 से 4	1 से 5					1 से 8	
निधनी	1 से 4	1 से 5					1 से 8	
निकाचना	1 से 4	1 से 5					1 से 8	
उदय	1 से 4	1 से 5	1 से 14	1 से 4	1 से 14	1 से 14	1 से 10	1 से 12
सत्त्व	1 से 4	1 से 5	1 से 14	1 से 11	1 से 14	1 से 14	1 से 11	1 से 12

कथाय-पाहुड़ (14) -- प्रस्तावना



गति-आगति नियम



+ गति-आगति -

गति-आगति

विशेष :

जीवों में गति																
देव					मनुष्य		तिर्यक्			नरक						
देव	भवनवासी	व्यंतर	ज्योतिष	१-२ स्वर्ग	३-२२ स्वर्ग	३३-१६ स्वर्ग	नव ग्रेवयक	सर्वाधिसंक्लि	भोगभूमि	कर्मभूमि	भोगभूमि	एकेदिय	विकलत्रय	पचोद्रिय	पहला	२-७
देव	भवनवासिक, देवियाँ, १-२ स्वर्ग					नहीं			हाँ	नहीं	हाँ+	नहीं	हाँ	नहीं		

		जीवों में गति										
		देव			मन्त्र		तिर्यच		नरक			
३-२२ स्वर्ग		भवनवासी व्यंतर ज्योतिष १-२ स्वर्ग ३-२२ स्वर्ग ४३-५६ स्वर्ग नव ग्रैवेयक सर्वार्थसिद्धि भोगभूमि			कर्मभूमि		भोगभूमि एकेन्द्रिय विकलत्रय		पचेन्द्रिय पहला २-७			
३२३ स्वर्ग से सर्वार्थसिद्धि		हाँ			हाँ		नहीं		हाँ			
मनुष्य	मि. पर्याप्तक कर्मभूमि	नहीं			हाँ		नहीं		नहीं			
	मि. अपर्याप्तक	हाँ			नहीं		हाँ		नहीं			
	मि. भोगभूमि	हाँ			नहीं		नहीं		नहीं			
	सा. कर्मभूमि	हाँ			नहीं		हाँ		नहीं हाँ नहीं			
	अ.स. / संयातासंयत कर्मभूमि	नहीं	हाँ		हाँ		नहीं		नहीं			
	संयत		हाँ		नहीं		नहीं		नहीं			
	पुलाक मूनि		हाँ		नहीं		नहीं		नहीं			
	बकुश, प्रतिसेवना मूनि		हाँ		नहीं		नहीं		नहीं			
	कपायकुशील, निर्वन्य मूनि		हाँ		नहीं		नहीं		नहीं			
तिर्यच	अ.स. भोगभूमि		हाँ		नहीं		नहीं		नहीं			
	मि. संज्ञी पर्याप्तक पंचेन्द्रिय कर्मभूमि	हाँ		नहीं		हाँ		हाँ				
	असंज्ञी पर्याप्तक पंचेन्द्रिय कर्मभूमि	हाँ		नहीं		हाँ		हाँ नहीं				
	पंचेन्द्रिय अपर्याप्त, विकलेन्द्रिय, जल, पृथी, वनस्पति	नहीं			हाँ नहीं		हाँ		नहीं			
	आप्ति / वायुकायिक	नहीं			नहीं		नहीं		नहीं			
	मि. भोगभूमि	हाँ		नहीं		नहीं		हाँ नहीं		नहीं		
	नित्य / इतर निर्गोद	नहीं			हाँ नहीं		हाँ		नहीं			
	सा. कर्मभूमि	हाँ		नहीं		हाँ		नहीं हाँ		नहीं		
नरक	अ.स. / संयातासंयत कर्मभूमि	नहीं	हाँ		हाँ*		नहीं		नहीं			
	अ.स. भोगभूमि		हाँ		नहीं		हाँ		हाँ नहीं			
पहला नरक		नहीं			हाँ		नहीं		हाँ			
२-७ नरक		नहीं			हाँ		नहीं		हाँ नहीं			



+ जीव कहाँ तक जा सकता है -

जीव कहाँ तक जा सकता है

विशेष :

कहाँ से	अगले भव में कहाँ तक जा सकते हैं
असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यच	पहला नरक
सरी सर्प (पेट के बल चरने वाले)	दुसरा नरक
गिर्दू पक्षी	तीसरा नरक
सर्प, अजगर आदि	चौथा नरक
सिंह, कूर तिर्यच	पांचवां नरक
स्त्री	छठा नरक
मनुष्य, मच्छ	सातवां नरक
वैमानिक देव, १-२ नरक	तीर्थीकर
चौथा नरक	मोक्ष, तीर्थीकर नहीं
पांचवां नरक	महाव्रती, मोक्ष नहीं
छठा नरक	देशव्रत, महाव्रत नहीं
सभी देव, देवियाँ	मोक्ष
१ स्वर्ग से नौ ग्रैवेयिक	नारायण, प्रतिनारायण
परिद्वाराजक	पांचवें स्वर्ग
आजीविक सम्प्रदाय के साधु	१२वें स्वर्ग
श्रावक	१६वें स्वर्ग
निर्ग्रन्थ द्रव्यःसिंगी	नौ ग्रैवेयिक
पंचम काल का मनुष्य	१६वें स्वर्ग तक



+ जीव नियमतः कहाँ जाते हैं -

जीव नियमतः कहाँ जाते हैं

विशेष :

कहाँ से	कहाँ जाते हैं
चक्रवर्ती	मोक्ष, स्वर्ग, नरक
बलभ्र	मोक्ष, स्वर्ग
नारायण, प्रतिनारायण	नरक
सातवां नरक	कूर पंचेन्द्रिय संजीव गर्भज तिर्यच
कुलकर	वैमानिक स्वर्ग
कामदेव	स्वर्ग, मोक्ष

कहाँ से	कहाँ जाते हैं
तीर्थकर के पिता	स्वर्ग, मोक्ष
तीर्थकर की माता	स्वर्ग
नारद, रुद्र	नरक



+ आयु -
आयु

विशेष :

देवों में आयु आदि जानकारी										देवियों की आयु
देव									देवियों की आयु	
ज.आयु	उ.आयु	स्वाच्छोभास	आहार	अवगाहना	लेश्या	प्रविचार	अल्प-बहुत्व	संख्या	ज.आयु	उ.आयु
अच्युत	२० सागर	२२ सागर	२२ पक्ष	२२,००० वर्ष	३ हाथ	शुक्ल	मन	ऊपर से संख्यात गुणा	पल्य के असंख्यातवे भाग	५५ पत्त्व
आरण	१८ सागर	२० सागर	२० पक्ष	२०,००० वर्ष	३ १/२ हाथ	पश्च, शुक्ल	शब्द	ऊपर से संख्यात गुणा	पल्य के असंख्यातवे भाग	४८ पत्त्व
प्राणत	१८ सागर	२० सागर	२० पक्ष	२०,००० वर्ष	४ हाथ			ऊपर से असंख्यात गुणा	जगतश्रेणी / २ ^३ (जगतश्रेणी)	४४ पत्त्व
आनन्द								ऊपर से असंख्यात गुणा	जगतश्रेणी / २ ^५ (जगतश्रेणी)	३४ पत्त्व
सहस्रार	१६ सागर	१८ सागर	१६ पक्ष	१८,००० वर्ष	५ १/२ हाथ			ऊपर से असंख्यात गुणा	जगतश्रेणी / २ ^३ (जगतश्रेणी)	२७ पत्त्व
शतार								ऊपर से असंख्यात गुणा	जगतश्रेणी / २ ^५ (जगतश्रेणी)	२५ पत्त्व
महाशुक्र	१४ सागर	१६ सागर	१६ पक्ष	१६,००० वर्ष	५ हाथ			ऊपर से असंख्यात गुणा	जगतश्रेणी / २ ^५ (जगतश्रेणी)	२३ पत्त्व
शुक्र								ऊपर से असंख्यात गुणा	जगतश्रेणी / २ ^५ (जगतश्रेणी)	२१ पत्त्व
कपिष्ठ	१० सागर	१४ सागर	१४ पक्ष	१४,००० वर्ष	५ हाथ	पद्म	रूप	ऊपर से असंख्यात गुणा	जगतश्रेणी / २ ^७ (जगतश्रेणी)	१९ पत्त्व
तान्त्रव								ऊपर से असंख्यात गुणा	जगतश्रेणी / २ ^७ (जगतश्रेणी)	१७ पत्त्व
ब्रह्मोत्तर	७ सागर	१० सागर	१० पक्ष	१०,००० वर्ष	६ हाथ	पीत, पद्म	स्पर्श	ऊपर से असंख्यात गुणा	जगतश्रेणी / २ ^९ (जगतश्रेणी)	१५ पत्त्व
ब्रह्म								ऊपर से असंख्यात गुणा	जगतश्रेणी / २ ^९ (जगतश्रेणी)	१३ पत्त्व
माहेन्द्र	२ सागर	७ सागर	७ पक्ष	७००० वर्ष	६ हाथ	पीत	काय	ऊपर से असंख्यात गुणा	जगतश्रेणी / २ ¹¹ (जगतश्रेणी)	१ पत्त्व
सानकुमार								ऊपर से असंख्यात गुणा	जगतश्रेणी x २ ^३ (घनांगुल)	११ पत्त्व
ईशान	१ पत्त्व	२ सागर	२ पक्ष	२००० वर्ष	७ हाथ	पीत				७ पत्त्व
सौधर्म										५ पत्त्व

अल्प-बहुत्व आधार: श्री कार्तिकेयअनुप्रेष्ठा, गाया: १५८, श्री गोमटसार, गाया: १६१, १६२

देवियों की आयु पौर्व से लेकर दो-दो मिलियत हुए सत्ताईस पल्य तक करें। पुनः उससे आगे सात-सात बढ़ाते हुए आरण-अच्युत पर्यन्त करना चाहिए। [मूला १९२२]

नरकों में आयु आदि जानकारी									
नाम	भूमि का नाम	आयु		अल्प-बहुत्व	संख्या	लेश्या	पुनः पुनर्भव धारण की सीमा कितनी बार उत्कृष्ट अन्तर		
		जघन्य	उत्कृष्ट						
पहला	धर्मा	रलप्रभा	दस हजार वर्ष	एक सागर	नीचे से अस. गुणा	(जगतश्रेणी x २ ^२ (घनांगुल) - शेष नारकी)	कापोत	८ बार	२४ मुहूर्त
द्वितीय	वंशा	शर्कराप्रभा	एक सागर	तीन सागर	नीचे से अस. गुणा	जगतश्रेणी / २ ^{१२} (जगतश्रेणी)	मध्यम कापोत	७ बार	७ दिन
तीसरा	मेघा	बालुकाप्रभा	तीन सागर	सात सागर	नीचे से अस. गुणा	जगतश्रेणी / २ ^{१०} (जगतश्रेणी)	उत्कृष्ट कापोत, जघन्य नील	६ बार	१ पक्ष
चौथा	अजना	पंकप्रभा	सात सागर	दस सागर	नीचे से अस. गुणा	जगतश्रेणी / २ ^४ (जगतश्रेणी)	मध्यम नील	५ बार	१ माह
पांचवां	अरिष्ठा	धूप्रप्रभा	दस सागर	सत्रह सागर	नीचे से अस. गुणा	जगतश्रेणी / २ ^५ (जगतश्रेणी)	उत्कृष्ट नील, जघन्य कृष्णा	४ बार	२ माह
छठा	मधवा	तमप्रभा	सत्रह सागर	बाईस सागर	नीचे से अस. गुणा	जगतश्रेणी / २ ^३ (जगतश्रेणी)	मध्यम कृष्णा	३ बार	४ माह
सातवां	मधवी	महातमप्रभा	बाईस सागर	तीव्रीस सागर	असंख्यात	जगतश्रेणी / २ ^४ (जगतश्रेणी)	उत्कृष्ट नील	२ बार	६ माह

उन नरकों में जीवों की उक्ति स्थिति क्रम से क्र. तीव्र, रात्र, ददृश, बाईस और तीव्रीस सागररप्त है। [त्र.सु. ३६]

अल्प-बहुत्व आधार: श्री कार्तिकेयअनुप्रेष्ठा, गाया: १५९, श्री गोमटसार, गाया: १५३, १५४



+ संहनन की अपेक्षा गति प्राप्ति -
संहनन की अपेक्षा गति प्राप्ति

विशेष :

किस संहनन से मरकर किस गति तक उत्पन्न होना सम्भव है		
संहनन	प्राप्तव्य स्वर्ग	प्राप्तव्य नरक
वत्रऋषभनाराच	पंच अनुत्तर	७ वें नरक
वत्रनाराच	नव अनुदिश	
नाराच	नव ग्रैवेयक तक	६ नरक तक
अर्धनाराच	अच्युत तक	
कीलित	संहसर तक	५ वें नरक तक
असप्राप्तासुपाटिका	सौधर्म से कापिष्ठ तक	३ नरक तक

गो.क.मृ.२९-३१२४ और गो.क.ग्र.७४६-७५५१४



सामन्य जानकारी



+ पांचों ज्ञानों का स्वामित्व -
पांचों ज्ञानों का स्वामित्व

विशेष :

पांचों ज्ञानों का स्वामित्व				
सूचि	ज्ञान	जीव समास	गुणरूपान	
११६	कुमति व कुश्ति	सर्व १४ जीवसमास	१-२	
११७-११८	विभगावधि	संज्ञी पञ्चेत्रिय पर्याप्त	१-२	
१२०	मति, श्रुति, अवधि	संज्ञी पञ्चेत्रिय तिर्यक व मनुष्य पर्याप्त, अपर्याप्त	४-१२	
१२१	मनःपर्यय	संज्ञी पञ्चेत्रिय पर्याप्त मनुष्य	६-१२	
१२२	केवलज्ञान	संज्ञी पर्याप्त, अयोगी की अपेक्षा	१३, १४, सिद्ध	
११९	मति, श्रुति, अवधि ज्ञान अज्ञान मिश्रित	संज्ञी पर्याप्त	३	

(४ खं १०१ दूर ११६-१२२/३५६-३६८)



+ संसारी जीवों में प्राण -
संसारी जीवों में प्राण

विशेष :

प्राण												
जीव		इंद्रिय				बल						
		स्पर्शन	रसना	ग्राण	चक्षु	कर्ण	मन	वचन	काय	आयु	उच्छास	कुल
पर्याप्त	स्थावर	✓							✓	✓	✓	4
	दो-इंद्रिय	✓	✓					✓	✓	✓	✓	6
	तीन-इंद्रिय	✓	✓	✓				✓	✓	✓	✓	7
	चार-इंद्रिय	✓	✓	✓	✓			✓	✓	✓	✓	8
	पञ्चेत्रिय-असैनी	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓	9
	पंचेत्रिय-सैनी	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	10
अपर्याप्त	स्थावर	✓						✓	✓			3
	दो-इंद्रिय	✓	✓					✓	✓			4
	तीन-इंद्रिय	✓	✓	✓				✓	✓			5
	चार-इंद्रिय	✓	✓	✓	✓			✓	✓			6
	पंचेत्रिय	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓			7
सयोग-केवली	सामान्य						✓	✓	✓	✓		4
	प्रथम समय दण्ड						✓	✓	✓	✓		3
	द्वितीय समय कपाट						✓	✓	✓			2
	तृतीय समय प्रतर						✓	✓				1
	चतुर्थ समय लोकपूरण						✓					1
	पंचम समय प्रतर						✓					1
	षष्ठम समय कपाट						✓	✓				2
	सप्तम समय दण्ड						✓	✓	✓	✓		3
अष्टम समय शरीर प्रवेश							✓	✓	✓	✓		4
अयोग-केवली							✓					1



प्रकृति बंध



+ प्रकृति-बन्ध प्ररूपणा -
प्रकृति-बन्ध प्ररूपणा

विशेष :

प्रकृतिबन्ध की अपेक्षा स्वामित्व प्ररूपणा			
मूल प्रकृति	उत्तर प्रकृति	स्वामित्व व गुणस्थान	
		उत्कृष्ट	जघन्य
ज्ञानावरण	पाँचों	१०	सू. ल./च
दर्शनावरण	चक्षु, अचक्षु अवधि व केवलदर्शन	१०	सू. ल./च
	निद्रा, प्रचला	१०	सू. ल./च
	निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला	१	सू. ल./च
वेदनीय	साता	१०	सू. ल./च
	असाता	१-९	सू. ल./च
मोहनीय	मिथ्यात, अनन्तानुबन्धी चतुष्क	१	सू. ल./च
	अग्रतात्त्वानावरण चतुष्क	४	सू. ल./च
	प्रत्याख्यानावरण चतुष्क	५	सू. ल./च
	संज्वलन चतुष्क	९	सू. ल./च
	हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्ता	४-९	सू. ल./च
	स्त्री वेद, नपुसक वेद	१	सू. ल./च
	पुरुष वेद	१०	सू. ल./च
आपु	नरक	१	असंजी
	तिर्यच	१	सू. ल./च
	मनुष्य, देव	१-९	
नाम	गति	नरक	१
		तिर्यच, मनुष्य	१
		देव	१-९
	जाति	एकेद्वियादि पाँचों	१
	शरीर	औदारिक, तैजस, कार्मण	१
		वैक्रियक	१-९
		आहारक	७
	अंगोपांग	औदारिक	१
		वैक्रियक	१-९
		आहारक	७
	निर्माण, बन्धन, संघात	१	सू. ल./च
	संस्थान	समचतुरस्स	१-९
		शेष पाँचों	१
	संहनन	वज्र तुष्पभ नाराच	१-९
		शेष पाँचों	१
		स्तर्ष, रस, गन्ध, वर्ष	१
आनुपूर्वी	नरक	१	असंजी
	तिर्यच व मनुष्य	१	सू. ल./च
	देव	१-९	अविरत सम्यकता
विहायोगति	अगुरुलघु उपरात, परघात	१	सू. ल./च
	आतप, उद्घोत, उच्छ्वास	१	सू. ल./च
	प्रशस्त	१-९	सू. ल./च
	अप्रशस्त	१	सू. ल./च
	प्रत्येक, साधारण, त्रस, स्पावर, दुर्भाग	१	सू. ल./च
	सुभग, आदेय	१-९	सू. ल./च
	सुस्वर, दुःखर, शुभ, अशुभ	१	सू. ल./च
	सूक्ष्म, बादर, पर्याप्ति, अपर्याप्ति	१	सू. ल./च
	स्थिर, अस्थिर, अनादेय, अवशःकीर्ति	१	सू. ल./च
	यशःकीर्ति	१०	सू. ल./च
गोत्र	तीर्थकर		
	उच्च	१०	सू. ल./च
	नीच	१	सू. ल./च
अन्तराय	पाँचों	१०	सू. ल./च

सू.ल./च = चरम भवस्थ तथा तीन विग्रह में से प्रथम विग्रह में स्थित सूक्ष्म निर्गोद लक्षणपर्याप्त जीव



+ नरक में प्रकृति बंध -
नरक में प्रकृति बंध

विशेष :

		प्रकृति बंध (मार्गणा-नरक)		
		बंध	अबंध	व्युचिति
1-3 नरक	मिथ्यादृष्टि	पर्याप्त	100	1 (तीर्थकर)
		अपर्याप्त	98	1
	सासादन		96	5
	मिश्र		70	31 (मनुष्य-आयु)
	असंयत	पर्याप्त	72 (मनुष्य-आयु तीर्थकर)	29
		पर्याप्त के बंध योग्य प्रकृतियाँ 101 = 120 - 19 (ज्ञातिवृत्तिक, स्थावरमनुष्यक, आत्मप, वैकिणिक-भृष्टक, आहारक-द्विक)		
		अपर्याप्त के बंध योग्य प्रकृतियाँ 99 = 101 - मनुष्यायु-तीर्थज्ञायु		
4-6 नरक	मिथ्यादृष्टि		100	0
	सासादन		96	4
	मिश्र		70	30 (मनुष्य-आयु)
	असंयत		71 (मनुष्य-आयु)	29
			बंध योग्य प्रकृतियाँ 100 = 101 - तीर्थकर	
7 नरक	मिथ्यादृष्टि		96	3 (उच्चगोत्र, मनुष्याद्विक) 5 (मिथ्यात्म, हुण्ड संस्थान, नपुंसकवेद, सुपाटिका संहनन, तिर्यज्ञायु)
	सासादन		91	8
	मिश्र		70	29 (24+5)
	असंयत		70	29
			बंध योग्य प्रकृतियाँ 99 = 101 - तीर्थकर-मनुष्यायु	



+ तिर्यज्ञ-गति में प्रकृति बंध - तिर्यज्ञ-गति में प्रकृति बंध

विशेष :

प्रकृति बंध (मार्गणा -- तिर्यज्ञ-गति)				
		बंध	अबंध	व्युचिति
तिर्यज्ञ पर्याप्त	मिथ्यादृष्टि		117	0
	सासादन		101	16
	मिश्र		69	48 (देवायु)
	असंयत		70 (देव-आयु)	47
	संयतासंयत		66	51
		बंध योग्य प्रकृतियाँ 117 = 120 - 3 (तीर्थकर-2-आहारकद्विक)		
तिर्यज्ञ निवृत्यपर्याप्त	मिथ्यादृष्टि		107	4 (सुर-चतुष्क)
	सासादन		94 (107-13)	17
	असंयत		69 (सुर- चतुष्क)	42
		बंध योग्य प्रकृतियाँ 111 = 120 - 9 (3 + 4 आयु नरकद्विक)		



+ मनुष्य-गति में प्रकृति बंध - मनुष्य-गति में प्रकृति बंध

विशेष :

मनुष्य-गति मार्गणा में प्रकृति बंध				
		बंध	अबंध	व्युचिति
मनुष्य सामान्य, पर्याप्त, मनुष्यायु	मिथ्यादृष्टि	117	3 (तीर्थकर, आहारकद्विक)	16 (गुणस्थानोक्त)
	सासादन	101	19	31 (25 गुणस्थानोक्त + वज्रवृषभनाराचसंहनन औदारिकद्विक, मनुष्याद्विक, मनुष्यायु)
	मिश्र	69	51 (31+19+ देवायु)	0
	असंयत	71 (तीर्थकर, देवायु)	49	4 (अप्रत्याख्यानावरण)
	देशविरत	67	53	4 (प्रत्याख्यानावरण 4)
	6 प्रमत्तसंयत	63	57	6 (असाता-वेदनीय, अराति, शोक, अशुभ, अस्विर, अयशःकीर्ति)
	7 अप्रमत्तसंयत	59 (+ आहारक द्विक)	61	1 (देव आयु)
	8 अपूर्वकरण	58	62	36 (मिद्रा, प्रचला, तीर्थकर, निर्माण, प्रशस्त विहायोगति, पंचेद्विग्य जाति, शरीर ४ तेजस, कामार्ण, आहारक, वैकिणिक, अगोपांग २, आहारक, वैकिणिक), समचतुभ संस्थान, देव गति, देव गत्यानुपूर्वक, स्पर्श, स्वर्ग, गंध, वर्ण, हास्य, रति, चुगुसा, भय, अगुलधूत, उपधात, परघात, उच्छवास, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्त्रिय, शुभ, सुभा, सुस्वर, आदेय)
	9 अनिवृत्तिकरण	22	98	5 (संज्वलन ४, पुरुष-वेद)
	10 सूक्ष्मसाम्पराय	17	103	16 (ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ४। चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवल), अंतराय ५, यशःकीर्ति, उच्च गोत्र)
	11 उपशात्तमोह	1	119	0
	12 क्षीणामोह	1	119	0
	13 सपोगकेवती	1	119	1 (साता-वेदनीय)
	14 अपोगकेवती	0	120	0

		मनुष्य-गति मार्गणा में प्रकृति बंध			
		बंध	अवंध	व्युचिति	
मनुष्य निवृत्यपर्याप्त	मिथ्यादृष्टि	107	5 (सुर-बहुष्क, तीर्थिकर)		13 (16-नरकद्विक, नरकायु)
	सासादन	94 (107-13)	18		29 (31 - तिर्यचायु, मनुष्यायु)
	असंयत	70 (तीर्थिकर- सुरचतुष्क)	42		8 (4 प्रत्याख्यान, 4 अप्रत्याख्यान)
	प्रमत्तविरत	62	50		61
	सपोग-केवली	1	111		

बंध योग्य प्रकृतियाँ 112 = 120-8(4 आयु, नरकद्विक, आहारकद्विक)



+ देवगति में प्रकृति बंध - देवगति में प्रकृति बंध

विशेष :

देव-गति मार्गणा में प्रकृति बंध					
देवों में बंध-योग्य प्रकृतियाँ = 104 (120 - वैक्रियिक-अष्टक, विकलत्रय, सुक्षमत्रय, आहारक-द्विक)					
		बंध	अवंध	व्युचिति	
भवनविक्रिक और देवियाँ	मिथ्यात्म	103	0	7 (मिथ्यात्म, हुङ्क-संस्थान, सुपाटिका-संहनन, नपुंसक-वेद, आतप, एकेन्द्रीय, स्थावर)	
	सासादन	96	7	25 (गुणस्थानोक्त)	
	मित्र	70	33 (मनुष्यायु)	0	
	अविरत-सम्प्रकृत्य	71 (मनुष्यायु)	32		
	बंध योग्य प्रकृतियाँ 103 = 104 - तीर्थकर				
सौधर्म-ईशान	मिथ्यात्म	103	1 (तीर्थिकर)	7 (मिथ्यात्म, हुङ्क-संस्थान, सुपाटिका-संहनन, नपुंसक-वेद, आतप, एकेन्द्रीय, स्थावर)	
	सासादन	96	8	25 (गुणस्थानोक्त)	
	मित्र	70	34 (मनुष्यायु)		
	अविरत-सम्प्रकृत्य	72 (मनुष्यायु, तीर्थिकर)	32		
	बंध योग्य प्रकृतियाँ 104				
पर्याप्त	मिथ्यात्म	100	1 (तीर्थिकर)	4 (मिथ्यात्म, हुङ्क-संस्थान, सुपाटिका-संहनन, नपुंसक-वेद)	
	सासादन	96	5	25 (गुणस्थानोक्त)	
	मित्र	70	31 (मनुष्यायु)	0	
	अविरत-सम्प्रकृत्य	72 (मनुष्यायु, तीर्थिकर)	29		
	बंध योग्य प्रकृतियाँ 101 = 104 - स्थावर, आतप, एकेन्द्रीय				
आनन्द से नव ग्रैवेयक	मिथ्यात्म	96	1 (तीर्थिकर)	4 (मिथ्यात्म, हुङ्क-संस्थान, सुपाटिका-संहनन, नपुंसक-वेद)	
	सासादन	92	5	21 (25 तिर्यञ्जिकि, उद्घोत)	
	मित्र	70	27 (मनुष्यायु)	0	
	अविरत-सम्प्रकृत्य	72 (मनुष्यायु, तीर्थिकर)	25		
	बंध योग्य प्रकृतियाँ 97 = 104 - 7 (स्थावर, आतप, एकेन्द्रीय, तिर्यञ्जिकि, उद्घोत)				
निवृत्यपर्याप्त	अनुदिश-अनुनास	72	32		
	भवनविक्रिक और देवियाँ	101	0	7 (मिथ्यात्म, हुङ्क-संस्थान, सुपाटिका-संहनन, नपुंसक-वेद)	
	सासादन	94	7	25 (गुणस्थानोक्त)	
	बंध योग्य प्रकृतियाँ 101 = 104 - 3 (तिर्यञ्जायु, मनुष्यायु, तीर्थिकर)				
	सौधर्म-ईशान	101	1 (तीर्थिकर)	7 (मिथ्यात्म, हुङ्क-संस्थान, सुपाटिका-संहनन, नपुंसक-वेद, आतप, एकेन्द्रीय, स्थावर)	
	सासादन	96	8	24 (25 गुणस्थानोक्त- तिर्यञ्जायु)	
	अविरत-सम्प्रकृत्य	71 (तीर्थिकर)	31		
	बंध योग्य प्रकृतियाँ 102 = 104 - 2 (तिर्यञ्जायु, मनुष्यायु)				
	सनत्कुमार से सहभार	98	1 (तीर्थिकर)	4 (मिथ्यात्म, हुङ्क-संस्थान, सुपाटिका-संहनन, नपुंसक-वेद)	
	सासादन	94	5	24 (25 गुणस्थानोक्त- तिर्यञ्जायु)	
	अविरत-सम्प्रकृत्य	71 (तीर्थिकर)	28		
	बंध योग्य प्रकृतियाँ 99 = 104 - 5 (तिर्यञ्जायु, मनुष्यायु, स्थावर, आतप, एकेन्द्रीय)				
आनन्द से नव ग्रैवेयक	मिथ्यात्म	95	1 (तीर्थिकर)	4 (मिथ्यात्म, हुङ्क-संस्थान, सुपाटिका-संहनन, नपुंसक-वेद)	
	सासादन	91	5	21 (25 तिर्यञ्जिकि, उद्घोत)	
	अविरत-सम्प्रकृत्य	71 (तीर्थिकर)	25		
	बंध योग्य प्रकृतियाँ 96 = 104 - 8 (तिर्यञ्जायु, मनुष्यायु, स्थावर, आतप, एकेन्द्रीय, तिर्यञ्जिकि, उद्घोत)				
	अनुदिश-अनुनास	71	33 (32+मनुष्यायु)		



+ जाति-मार्गणा में प्रकृति बंध - जाति-मार्गणा में प्रकृति बंध

विशेष :

प्रकृति बंध (मार्गणा -- जाति)					
		बंध	अवंध	व्युचिति	
1,2,3,4 इंद्रिय	मिथ्यात्म	109	0	15 (गुणस्थानोक्त 16 - नरक-त्रिक + मनुष्यायु + तिर्यञ्जायु)	
	सासादन	94	15	29 (25 गुणस्थानोक्त + व्रजवृषभनाराचसंहनन + ओदारिकद्विक + मनुष्यद्विक - तिर्यञ्जायु)	
पंचेन्द्रिय	लब्ध्यपर्याप्त			बंध योग्य प्रकृतियाँ 109 = 120 - 11 (तीर्थिकर, आहारकद्विक, वैकेपक-अष्टक)	
				बंध योग्य प्रकृतियाँ 109 = 120 - 11 (तीर्थिकर, आहारकद्विक, वैकेपक-अष्टक)	

वर्षात्				बंध योग्य प्रकृतियाँ 120, सामान्योक्ता, गुणस्थान 1 से 14		
पंचेत्रिय-निवृत्यपर्याप्ति	मिथ्यात्	107	5	13		
	सासादन	94	18	24		
	अविरत-सम्यक्त्व	75	37	13		
	प्रमत्त-विरत	62	50	61		
	सायोग-केवली	1	111	1		
	बंध योग्य प्रकृतियाँ 112 = 120 - 8 (आहारकांडिक, नरक-द्विक, आयुष ५)					



+ काय-मार्गणा में प्रकृति बंध -
काय-मार्गणा में प्रकृति बंध

विशेष :

प्रकृति बंध (मार्गणा – काय)						
	बंध	अबंध	व्युच्छिति			
पथी, जल, वनस्पति	मिथ्यात्	109	0	15 (13+ मनुष्य-तिर्यञ्च आयुष)		
	सासादन	94	15			
	बंध योग्य प्रकृतियाँ 109 = 120 - 11 (तीर्थकर, आहारकांडिक, वैक्रियक-अष्टक)					
वायु, अग्नि		बंध योग्य प्रकृतियाँ 109 = 109 - 4 (मनुष्य-तिर्यञ्च, उच्च गोक्त्र, गुणस्थान मिथ्यात्)				
त्रस		बंध योग्य प्रकृतियाँ 120, गुणस्थान 1 से 14				
त्रस-निवृत्यपर्याप्ति	मिथ्यात्	107	5	13		
	सासादन	94	18	24		
	अविरत-सम्यक्त्व	75	37	13		
	प्रमत्त-विरत	62	50	61		
	सायोग-केवली	1	111	1		
	बंध योग्य प्रकृतियाँ 112 = 120 - 8 (आहारकांडिक, नरक-द्विक, ५ आयुष)					



+ योग-मार्गणा में प्रकृति बंध -
योग-मार्गणा में प्रकृति बंध

विशेष :

प्रकृति बंध (मार्गणा – योग)						
	बंध	अबंध	व्युच्छिति			
मन, वचन	सत्य, अनुभव		बंध योग्य प्रकृतियाँ 120, सामान्यवत्, गुणस्थान 1 से 13			
	असत्य, उभय		बंध योग्य प्रकृतियाँ 120, सामान्यवत्, गुणस्थान 1 से 12			
	औदारिक		बंध योग्य प्रकृतियाँ 120, सामान्यवत्, गुणस्थान 1 से 13			
औदारिक-पित्रि	मिथ्यात्	109	5 (सुर-चतुष्क, तीर्थकर)	15 (16 - नरक-त्रिक + 2 आयुष / मनुष्य, तिर्यञ्च)		
	सासादन	94	20	29 (25 - 2 आयुष / तिर्यञ्च, मनुष्य) + 6 (मनुष्य-गति, मनुष्य-आनुपूर्व्य, औदारिक-द्विक, वश्ववृषभनराच संहनन)		
	अविरत-सम्यक्त्व	70 (सुर-चतुष्क, तीर्थकर)	44	69		
	सायोग-केवली	1	113	1		
	बंध योग्य प्रकृतियाँ 114 = 120 - 6 (आहारक-द्विक, नरक-द्विक, देव-नरक आयुष, सुर-चतुष्क, तीर्थकर, गुणस्थान मिथ्यात्)					
काय	वैक्रियिक	मिथ्यात्	103	1 (तीर्थकर)	7 (16 - सूक्ष्मत्रय, विकलत्रय, नरक-त्रय)	
		सासादन	96	8	25	
		पित्रि	70	34 (-मनुष्यायु)	0	
		अविरत-सम्यक्त्व	72 (+ मनुष्यायु, तीर्थकर)	32	10	
		बंध योग्य प्रकृतियाँ 104 = 120 - 16 (सूक्ष्मत्रय, विकलत्रय, वैक्रियिक अष्टक, आहारक द्विक)				
वैक्रियिक-पित्रि	मिथ्यात्	101	1 (तीर्थकर)	7 (मिथ्यात्, हृष्णकसंस्थान, नर्पुत्रकवेद, असंग्रामासापातिका संहनन, एकाद्रिय, स्थावर, आतप)		
		सासादन	94	8	24	
		अविरत-सम्यक्त्व	71 (तीर्थकर)	31	9	
		बंध योग्य प्रकृतियाँ 102 = 120 - 18 (सूक्ष्मत्रय, विकलत्रय, वैक्रियिक अष्टक, आहारक द्विक, तिर्यञ्च-मनुष्य आयुष)				
आहारक		आहारक	63	57	6	
	आहारक-पित्रि		62	58 (देवायु)		
कार्मण	मिथ्यात्	107	5 (तीर्थकर, सुर-चतुष्क)	13 (16-नरकत्रिक)		
	सासादन	94	18	24 (25-तिर्यञ्चायु)		
	अविरत-सम्यक्त्व	75 (तीर्थकर, सुर-चतुष्क)	37	74		
	सायोग-केवली	1	111	1		
	बंध योग्य प्रकृतियाँ 112 = 120 - 8 (आहारक-द्विक, नरक-द्विक, चारों आयुष)					



+ वेद-मार्गणा में प्रकृति बंध -
वेद-मार्गणा में प्रकृति बंध

विशेष :

प्रकृति बंध (मार्गणा -- वेद)				
	बंध	अबंध	व्युचिति	
पर्याप्ति	स्त्री / नंपुसक	बंध योग्य प्रकृतियाँ 120. गुणस्थान 1 से 9 अपूर्वकरण तक रचना ओघवत, अनिवृत्तिकरण के प्रथम भाग के द्वितीय समय में बंध 22, अबंध 98, व्युचिति 1 पुरुष वेद, चरम समय में बंध 21 अबंध 99, व्युचिति 0	बंध योग्य प्रकृतियाँ 120. गुणस्थान 1 से 9	
	पुरुष	बंध योग्य प्रकृतियाँ 120. गुणस्थान 1 से 9 अपूर्वकरण तक रचना ओघवत, अनिवृत्तिकरण के प्रथम भाग के चरम समय में बंध 22, अबंध 98, व्युचिति 1 पुरुष वेद	बंध योग्य प्रकृतियाँ 120. गुणस्थान 1 से 9	
निमृत्यपर्याप्ति	स्त्री	मिथ्यात्व	107	0
		सासादन	94	13
	नंपुसक	बंध योग्य प्रकृतियाँ 107 = 120 - 13 (आयु ५, आहारक-द्विक, वैक्रियकशक, तीर्थकर)	1	13 (16 - नरक-त्रिक)
		मिथ्यात्व	107	1
		सासादन	94	14
	पुरुष	अविरत-सम्यकत्व	71 (तीर्थकर)	37
बंध योग्य प्रकृतियाँ 108 = 120 - 12 (आयु ५, आहारक-द्विक, वैक्रियकशक)				
बंध योग्य प्रकृतियाँ 75 = 120 - 45 (आयु ५, आहारक-द्विक, नरक-त्रिक)				
बंध योग्य प्रकृतियाँ 112 = 120 - 8 (आयु ५, आहारक-द्विक, नरक-त्रिक)				



+ लेश्या-मार्गणा में प्रकृति बंध -
लेश्या-मार्गणा में प्रकृति बंध

विशेष :

प्रकृति बंध (मार्गणा -- लेश्या)		
	बंध	अबंध
कृष्ण-नील-कापोत	118	2 (आहारक-द्विक)
		1-4
		रचना ओघवत
पीत	111	9 (सम्बन्ध विकलत्रय, नरकत्रय)
		1-7
		रचना ओघवत, मिथ्यात्व गुणस्थान में व्युचिति 7
पद्म	108	12 (9 + एकद्वित्रय, स्पावर, आत्मा)
		1-7
		रचना ओघवत, मिथ्यात्व गुणस्थान में व्युचिति 4
शुक्ल	104	16 (12 + तिर्यङ्ग-त्रिक, उद्योग)
		1-13
		रचना ओघवत, मिथ्यात्व गुणस्थान में व्युचिति 4, सासादन में 21



+ कषाय और ज्ञान मार्गणा में कर्म का बंध -
कषाय और ज्ञान मार्गणा में कर्म का बंध

विशेष :

कषाय और ज्ञान मार्गणा में कर्म का बंध				
कषाय	ब्रोध, मान, माया	लोभ	कषाय और ज्ञान मार्गणा में कर्म का बंध	
			गुणस्थान 1 से 9, सामान्यवत्	
			गुणस्थान 1 से 10 सामान्यवत्	
ज्ञान	मिथ्यात्व	117	0	16
	सासादन	101	16	25
			बंध योग्य प्रकृतियाँ 120	
मति, क्षति, अवधि	मिथ्यात्व	77 (+ तीर्थकर, देवयु नमुन्य-अनुष्ठान्य)	2	10 (अप्रत्याख्यानावरण ४, मनुष्य ३ / आयु, गति, आनुपूर्व्य, औदारिक शरीर-अंगोपांग, वज्रवृषभनाराच संहनन)
	संयतासंयत	67	12	4 (प्रत्याख्यानावरण ४)
	प्रमत्तसंयत	63	16	6 (असाता-वेदनीय, अरति, शोक, अशुभ, अस्थिर, अपशःकीर्ति)
	अप्रमत्तसंयत	59 (+ आहारक द्विक)	20	1 (देव आयु)
	अपूर्वकरण	58	21	36 (निद्रा, प्रचला, तीर्थकर, निर्माण, प्रशस्त विहायोगति, पंचेन्द्रिय जाति, शरीर ४ / तेजस, कामणि, आहारक, वैक्रियिका, अंगोपांग १ / आहारक, वैक्रियिका, समचतुर्स संस्थान, देव गति, देव गत्यानुपूर्व्य, स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, हास्य, रति, जुगुप्ता, भय, अगुरुलधुल, उपधात, परधात, उच्छवास, त्रस, बादर, पर्यात, स्थिर, प्रत्येक, शुभ, सुभग, सु-स्वर, आदेय)
	अनिवृत्तिकरण	22	57	5 (संज्वलन ४, पुरुष वेद)
	सूक्ष्मसाम्प्राय	17	62	16 (ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ४ / चक्र्षु, अचक्षु, अवधि, केवल), अंतराय ५, यशःकीर्ति उच्च गोत्र)
	उपशान्तमोह	1	78	0
	क्षीणमोह	1	78	0
			बंध योग्य प्रकृतियाँ 79 (120 - 16 - 25)	
मनःपर्यय	प्रमत्तसंयत	63	2 (- आहारक-द्विक)	6 (असाता-वेदनीय, अरति, शोक, अशुभ, अस्थिर, अपशःकीर्ति)
	अप्रमत्तसंयत	59 (+ आहारक द्विक)	6	1 (देव आयु)
	अपूर्वकरण	58	7	36 (निद्रा, प्रचला, तीर्थकर, निर्माण, प्रशस्त विहायोगति, पंचेन्द्रिय जाति, शरीर ४ / तेजस, कामणि, आहारक, वैक्रियिका, अंगोपांग १ / आहारक, वैक्रियिका, समचतुर्स संस्थान, देव गति, देव गत्यानुपूर्व्य, स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, हास्य, रति, जुगुप्ता, भय, अगुरुलधुल, उपधात, परधात, उच्छवास, त्रस, बादर, पर्यात, स्थिर, प्रत्येक, शुभ, सुभग, सु-स्वर, आदेय)
	अनिवृत्तिकरण	22	43	5 (संज्वलन ५, पुरुष वेद)
	सूक्ष्मसाम्प्राय	17	48	16 (ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ४ / चक्र्षु, अचक्षु, अवधि, केवल), अंतराय ५, यशःकीर्ति उच्च गोत्र)
	उपशान्तमोह	1	64	0
	क्षीणमोह	1	64	0

मार्गणा		कथाय और ज्ञान मार्गणा में कर्म का बंध			
केवल	सयोगकेवली	1	0	बन्ध योग्य प्रकृतियाँ ६५ (प्रमाणसंख्या ६३ + अहारक-द्विक)	
	अयोगकेवली	0	1	1 (साता-वेदनीय)	
बन्ध योग्य प्रकृतियाँ १ (साता-वेदनीय)					0



+ मूल प्रकृति में सादि आदि बंध के भेद -

मूल प्रकृति में सादि / अनादि बंध के भेद

विशेष :

मूल प्रकृति में बंध के भेद				
	सादि	अनादि	धृव	अधृव
ज्ञानावरणी	✓	✓	✓	✓
दर्शनावरणी	✓	✓	✓	✓
वेदनीय	✓	X	✓	✓
मोहनीय	✓	✓	✓	✓
आयु	✓	X	X	✓
नाम	✓	✓	✓	✓
गोत्र	✓	✓	✓	✓
अंतराय	✓	✓	✓	✓
सादि बंध - जिस कर्म के बंध का अभिव होकर फिर वही कर्म बंधे				
अनादि बंध - भूतकाल में जिस बंध का कभी अभिव नहीं हुआ				
धृव बंध - जिस बंध का भविष्य में अंत न हो				
अधृव बंध - जिस बंध का भविष्य में कभी अंत आ जावे				



+ उत्तर प्रकृति में सादि आदि बंध के भेद -

उत्तर प्रकृति में सादि / अनादि बंध के भेद

विशेष :

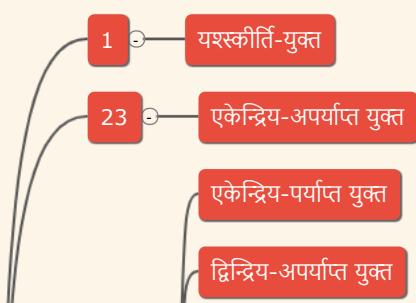
उत्तर प्रकृति में सादि / अनादि बंध के भेद				
	सादि	अनादि	धृव	अधृव
ज्ञानावरणी (३)	✓	✓	✓	✓
दर्शनावरणी (९)	✓	✓	✓	✓
वेदनीय (२)	✓	X	✓	✓
मोहनीय	मिथ्यात्, १६ कथाय, भय, चगप्ता	✓	✓	✓
	हास्य, शोक, रति, अरति, वेद ३	✓	X	X
	आयु (४)	✓	X	X
नाम (६७)	तैजस्, कार्मण, अग्न्यरुलभ्, उपचात्, निर्माण, वर्ण-चतुष्क	✓	✓	✓
	शेष ५८ प्रकृतियाँ	✓	X	X
	गोत्र (२)	✓	X	X
अंतराय (५)	धृव बंधी प्रकृतियाँ	कुल ४७		
	अधृव बंधी प्रकृतियाँ कुल ७३	अप्रतिपक्षी ११ (तीर्थकर, अहारक-द्विक, परघात, अतएं उचीत & अयु)		
		शेष ६२ (६२-११)		



+ नाम-कर्म के बंध-स्थान का यंत्र -

नाम-कर्म के बंध-स्थान का यंत्र

नाम-कर्म के बंध-स्थान का यंत्र





+ एक जीव के एक काल में होने वाला प्रकृति-बंध -

एक जीव के एक काल में होने वाला प्रकृति-बंध

विशेष :

एक जीव के एक काल में होने वाला प्रकृति कर्म-बंध की संख्या								
ज्ञानावरणी	दर्शनावरणी	वेदनीय	मोहनीय	आयु	नाम	गोत्र	अंतराय	कुल स्थान
स्थान	भग							
13 सयोगकेवती								1
12 क्षीणमोह								
11 उपशान्तमोह		1						
10 सुक्ष्मसाम्पर्य								
9 अनिवितकरण								
8 अप्रवर्करण								
7 अप्रमत्संयंत								
6 अप्रमत्संयंत								
5 देशविरत								
4 अविरत								
3 मित्र								
2 सासादन								
1 मिथ्यात्व								
5	9 6 4	1	22 21 17 13 9 5 4 3 2 1		1	1	5	17 22 21 20 19 18 55 56 57 58 26 56 57 58 59 56 57 60 61 64 65 66 63 64 71 72 73 67 69 70 72 73 74



+ गति के साथ बंधने वाले नाम-कर्म के स्थान -

गति के साथ बंधने वाले नाम-कर्म के स्थान और उनकी संख्या

विशेष :

गति के साथ बंधने वाले नाम-कर्म के स्थान और उनकी संख्या

किस गति के बंध के साथ	कितने नाम-कर्म के बंध-स्थान	स्थान-संख्या
नरक	1	28
तिर्यङ्ग	5	23, 25, 26, 29, 30
मनुष्य	3	25, 29, 30
देव	4	31, 30, 29, 28



+ नाम-कर्म बंध के आठ स्थान -

नाम-कर्म बंध के आठ स्थान

विशेष :

नाम-कर्म बंध के आठ स्थान

नाम-कर्म बंध के आठ स्थान								
गति-सहित बंध	प्रकृति स्थान	स्वामी	भग	प्रकृतियों का विवरण				
x	1	8*, 9, 10 गुणस्थान	1	यश-कीर्ति				
नरक-गति सहित	28	मिथ्यादृष्टि (मनुष्य-तिर्यङ्ग)	1	धूर्व/९, त्रस-चतुष्क, दुर्भग, अनादेय, अस्थिर, अशुभ, अयश, नारकद्वय, वैकियक द्वय, पंचेन्द्रिय, हुंडक, दुस्वर, अप्रशस्त विहायोगति, उच्छवास, परघात				
तिर्यङ्ग-गति सहित	23	मिथ्यादृष्टि (तिर्यङ्ग-मनुष्य)	4	धूर्व/९, स्थावर, 1 (बादर या सूक्ष्म), 1 (साधारण या प्रत्येक), अपराक्ष, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, अस्थ, तिर्यङ्ग-द्विक, ऐकन्द्रिय, औदारिक शरीर, हुंडक-संस्थान				
	25	मिथ्यादृष्टि	20	धूर्व/९, स्थावर, 1 (बादर या सूक्ष्म), 1 (साधारण या प्रत्येक), पर्याप्त, 3 युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश के ४ भग), दुर्भग, अनादेय, तिर्यङ्ग-द्विक, एकन्द्रिय, औदारिक शरीर, हुंडक-संस्थान, स्पाटिका-संहनन				
	26	मिथ्यादृष्टि	4	धूर्व/९, त्रस, बादर, प्रत्येक, अपराक्ष, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, अपश, तिर्यङ्ग-द्विक, 1 जाति (२-५ इन्द्रिय, ४ भग), औदारिक-द्विक, हुंडक-संस्थान, स्पाटिका-संहनन				
	29	मिथ्यादृष्टि	16	धूर्व/९, स्थावर, बादर, प्रत्येक, पर्याप्त, 3 युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश के ४ भग), दुर्भग, अनादेय, तिर्यङ्ग-द्विक, एकन्द्रिय, औदारिक शरीर, हुंडक-संस्थान, उच्छ्वास, परघात, 1 (अतप या उद्योग)				
	29	सासादन सम्यदृष्टि	4608	धूर्व/९, त्रस-चतुष्क, 5 युगल (सुभग, आदेय, स्थिर, शुभ, यश से ३२ भग), तिर्यङ्ग द्वय, पंचेन्द्रिय, 1 संस्थान (६ संस्थानों से ६ भग), 1 संहनन (६ संहनन से ६ भग), 2 (वर-द्वय / विहायोगति-द्वय से ४ भग), उच्छवास, परघात				
	30	मिथ्यादृष्टि (मनुष्य-तिर्यङ्ग)	3200 (पुनरुक्त)	धूर्व/९, त्रस-चतुष्क, 5 युगल (सुभग, आदेय, स्थिर, शुभ, यश से ३२ भग), तिर्यङ्ग द्वय, पंचेन्द्रिय, 1 संस्थान (५ संस्थानों से ५ भग), 1 संहनन (५ संहनन से ५ भग), 2 (वर-द्वय / विहायोगति-द्वय से ४ भग), उच्छवास, परघात				
	30	29 प्रकृतियों के स्वामी के समान	24	धूर्व/९, त्रस-चतुष्क, दुर्भग, अनादेय, तिर्यङ्ग द्वय, औदारिक द्वय, 1 जाति (२-४ इन्द्रिय, ३ भग), हुंडक, सुपाटिका, दुस्वर, अप्रशस्त विहायोगति, उच्छवास, परघात				
	30	सम्यदृष्टि (देव-नारकी)	8	धूर्व/९, त्रस-चतुष्क, 3 (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश के ४ भग), सुभग, सुस्वर, आदेय, मनुष्य-द्वय, पंचेन्द्रिय, समचतुरस-संस्थान, वग्रऋषभ-नाराच संहनन, प्रशस्त-विहायोगति, उच्छवास, परघात, तीर्थकर				
	29	अविरत सम्यदृष्टि / मित्र (देव-नारकी)	8 (पुनरुक्त)	उपरोक्त 30 प्रकृतियों + उद्योग				
मनुष्य-गति सहित	29	सासादन सम्यदृष्टि	3200 (पुनरुक्त)	धूर्व/९, त्रस-चतुष्क, 7 (७ युगल -- स्थिर, शुभ, यश, सुभग, सुस्वर, आदेय, विहायोगति के १८ भग), मनुष्य-द्वय, औदारिक-द्वय, पंचेन्द्रिय, १ संस्थान (हुंडक के छोड़कर, ५ भग), १ संहनन (सुपाटिका को छोड़कर, ५ भग), उच्छवास, परघात				
	25	मिथ्यादृष्टि	4608	उपरोक्त 29 प्रकृतियों + उद्योग				
	31	अप्रवर्तन, अप्रवर्करण	1	धूर्व/९, त्रस-चतुष्क, सुभग, आदेय, स्थिर, शुभ, यश, देव द्वय, पंचेन्द्रिय, समचतुरस, सुस्वर, प्रशस्त विहायोगति, उच्छवास, परघात, तीर्थकर, आहारक-द्विक				
	30	अप्रमत्त	1	उपरोक्त 31 - आहारक-द्विक				
देव-गति सहित	29	संयमी	1 (पुनरुक्त)	उपरोक्त 31 - आहारक-द्विक				
	29	सम्यदृष्टि मनुष्य (4,5,6 यु)	8	धूर्व/९, त्रस-चतुष्क, सुभग, आदेय, 3 (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश के ४ भग), देव द्वय, वैकियक द्वय, पंचेन्द्रिय, समचतुरस, सुस्वर, प्रशस्त विहायोगति, उच्छवास, परघात, तीर्थकर				

गति-सहित बध			नाम-कर्म बंध के आठ स्थान		
	प्रकृति स्थान	स्वामी	भंग	प्रकृतियों का विवरण	
	28	संयमी	1 (पुनरुक्त)	उपरोक्त 31 - (तीर्थकर आहारक-द्विक)	
	मिथ्यादृष्टि से प्रमत्त-संयत		8	द्वितीय 29 प्रकृति-स्थान - तीर्थकर	
23 सामान्य प्रकृतियाँ		१) धूप-बंधी (धूप-७ / तेजस कामणि, अमूर्खयु, उपायत निर्माण, वर्ण-चट्टक) २) मुलत (मू-१ - उत्तर-स्थापत चुक्का-बादर, पर्याप्ति-अव्याप्ति, प्रस्तक-सामाग्रण विसर-अस्त्रि-शुभ-अशुभ, सुभग-दुर्भग, आदेय-अनादेय यश-अयश) ३) गांड-५, जाति-५, चर्चाक-३, संस्कृत-६, अनुवृत्ति-५			
त्रस प्रकृति के बंध के साथ ही संहनन व अज्ञातोग्नि के बंध का नियम है पर्याप्ति प्रकृति के साथ ही चुक्का व उपायत के बंध का नियम है त्रस और पर्याप्ति प्रकृति के साथ २, त्रस-द्विक, विलायाग्रहि-द्विक में से प्रत्येक के अ-अव्याप्ति के बंध का नियम है आदेय का बंध पर्याप्ति-अव्याप्ति बादर पर्याप्ति के साथ ही होता है					
उद्घोटन का बंध बादर पर्याप्ति (पूर्णी, जल-प्रदक-वनस्पति) अव्याप्ति त्रस के साथ होता है					



+ नाम-कर्म बंध के आठ स्थान -

नाम-कर्म बंध के आठ स्थान

विशेष :

नाम-कर्म बंध के आठ स्थान																	
स्थान	भंगा	प्रकृतियों का विवरण							स्वामी संख्या	स्वामी							
1	1	यश-कीर्ति							3	8/7, 9, 10 गुणस्थान							
23	3	1	धूव/९, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, अयश, तिर्यञ्च-द्विक, एकेन्द्रिय, औदारिक शरीर, हुँडक-संस्थान							5 सूक्ष्म अपर्याप्त (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु + साधारण वनस्पति के बंधक)							
		1	उपरोक्त 23 - सूक्ष्म + बादर							11 बादर अपर्याप्त (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु + साधारण वनस्पति के बंधक)							
		1	23 - (सूक्ष्म साधारण) + (बादर, प्रत्येक)							5 सूक्ष्म पर्याप्त (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु + साधारण वनस्पति के बंधक)							
25	64	4	धूव/९, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, पर्याप्त, 2 युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ यश-अयश) के 4 भंगा), दुर्भग, अनादेय, अयश, तिर्यञ्च-द्विक, एकेन्द्रिय, औदारिक शरीर, हुँडक-संस्थान, उच्छ्वास, परघात														
		4	उपरोक्त 23 - सूक्ष्म + बादर							1 बादर पर्याप्त साधारण वनस्पति के बंधक							
		8	धूव/९, स्थावर, बादर, प्रत्येक, पर्याप्त, 3 युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश) के 8 भंगा), दुर्भग, अनादेय, तिर्यञ्च-द्विक, एकेन्द्रिय, औदारिक शरीर, हुँडक-संस्थान, उच्छ्वास, परघात														
		8	उपरोक्त 25 - (सूक्ष्म साधारण) + (बादर, प्रत्येक)							4 आवप रहित बादर, प्रत्येक, पर्याप्त (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु)							
		32	धूव/९, त्रस, अपर्याप्त, बादर, प्रत्येक, दुर्भग, अनादेय, 3 युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश) के 8 भंगा), तिर्यञ्च-द्विक, १ जाति (२-५ इन्द्रिय के ४ भंगा), औदारिक-द्विक, सपाटिका-सहनन, हुँडक-संस्थान							1 बादर पर्याप्त प्रत्येक वनस्पति (उच्चोत रहित)							
		8	उपरोक्त 25 - (तिर्यञ्च-द्विक) + (मनुष्य द्वय)							5 अपर्याप्त त्रस संज्ञी / असंज्ञी तिर्यञ्च (उच्चोत-रहित)							
		8	धूव/९, स्थावर, बादर, प्रत्येक, पर्याप्त, 3 युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश) के 8 भंगा), दुर्भग, अनादेय, अपश, तिर्यञ्च-द्विक, एकेन्द्रिय, औदारिक शरीर, हुँडक-संस्थान, उच्छ्वास, परघात, आवप							1 अपर्याप्त मनुष्य के बंधक							
		8	उपरोक्त 26 - 1-आवप + उच्छ्वास							1 बादर पर्याप्त पृथ्वी (आतप सहित)							
26	48	8	धूव/९, त्रस, अपर्याप्त, बादर, प्रत्येक, दुर्भग, अनादेय, 3 युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश) के 8 भंगा), तिर्यञ्च-द्विक, १ जाति (२-५ इन्द्रिय के ४ भंगा), औदारिक-द्विक, सपाटिका-सहनन, हुँडक-संस्थान, उच्छ्वास							3 बादर पर्याप्त (पृथ्वी, जल, वनस्पति) (उच्चोत सहित)							
		32	उपरोक्त 26 - 1-आवप + उच्छ्वास							4 बादर विकलत्रय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय (उच्चोत सहित)							
28	9	8	धूव/९, त्रस-चतुर्क, सुभग, आदेय, 3 युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश) के 8 भंगा), देवद्वय, पंचेन्द्रिय, वैक्रियक द्वय, पंचेन्द्रिय, औदारिक द्वय, समचतुरस, सुखर, प्रशस्त-विहायोगति, उच्छ्वास, परघात							1 देव-गति के बंधक							
		1	धूव/९, त्रस-चतुर्क, दुर्भग, अनादेय, अस्थिर, अशुभ, अयश, नारकद्वय, वैक्रियक द्वय, पंचेन्द्रिय, दुर्भग, अनादेय, 3 युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश) के 8 भंगा), देवद्वय, पंचेन्द्रिय, समचतुरस, परघात							1 नरक-गति के बंधक, मिथ्यादृष्टि मनुष्य / तिर्यञ्च का बंधक							
29	32	32	धूव/९, त्रस-चतुर्क, दुर्भग, अनादेय, 3 युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश) के 8 भंगा), तिर्यञ्च-द्वय, औदारिक द्वय, १ जाति (२-५ इन्द्रिय इन ४ में अन्यतम से ४ भंगा), हुँडक, सुपाटिका, दुखर, अशासन विहायोगति, उच्छ्वास, परघात							4 बादर पर्याप्त 2-४ इन्द्रिय तथा असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च का बंधक (उच्चोत रहित)							
		4608	धूव/९, त्रस-चतुर्क, ५ युगल (सुभग, आदेय, स्थिर, शुभ, यश) से ३२ भंगा), तिर्यञ्च-द्वय, औदारिक द्वय, पंचेन्द्रिय, १ संस्थान (६ संस्थानों से ६ भंगा), १ संहनन (६ संहनन से ६ भंगा), २ (सरद-द्वय) / विहायोगति-द्वय से ४ भंगा), उच्छ्वास, परघात							1 पर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च का बंधक							
		4608	उपरोक्त 29 - 1-तिर्यञ्च-द्वय + मनुष्य द्वय							1 पर्याप्त मनुष्य का बंधक नारकी							
		8	धूव/९, त्रस-चतुर्क, सुभग, आदेय, 3 युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश) के 8 भंगा), देव द्वय, वैक्रियक द्वय, पंचेन्द्रिय, समचतुरस, सुखर, प्रशस्त विहायोगति, उच्छ्वास, परघात, तीर्थीकर							1 देवगति व तीर्थीकर के बंधक							
30	328	32	धूव/९, त्रस-चतुर्क, दुर्भग, अनादेय, 3 युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश) के 8 भंगा), तिर्यञ्च-द्वय, औदारिक द्वय, १ जाति (२-५ इन्द्रिय इन ४ में अन्यतम से ४ भंगा), हुँडक, सुपाटिका, दुखर, अशासन विहायोगति, उच्छ्वास, परघात, उच्छ्वास							4 बादर पर्याप्त 2-४ इन्द्रिय तथा असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च का बंधक (उच्चोत सहित)							
		8	धूव/९, त्रस-चतुर्क, स्थिर, शुभ, सुभग, यश, आदेय / अनादेय, मनुष्य द्वय, औदारिक द्वय, पंचेन्द्रिय, समचतुरस, उच्छ्वास-भना-राच संहनन, 2 (सरद-द्वय) / विहायोगति-द्वय से ४ भंगा), उच्छ्वास, परघात, अद्वारक							1 मनुष्य व तीर्थीकर का बंधक							
		8	धूव/९, त्रस-चतुर्क, सुभग, आदेय, 3 युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश) के 8 भंगा), देव द्वय, वैक्रियक द्वय, पंचेन्द्रिय, समचतुरस, सुखर, प्रशस्त विहायोगति, उच्छ्वास, परघात, अहारक-द्विक							1 देव व आहारक का बंधक							
31	8	धूव/९, त्रस-चतुर्क, सुभग, आदेय, 3 युगल (स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, यश-अयश) के 8 भंगा), देव द्वय, वैक्रियक द्वय, पंचेन्द्रिय, समचतुरस, सुखर, प्रशस्त विहायोगति, उच्छ्वास, परघात, तीर्थीकर, आहारक-द्विक								1 देवगति, आहारक व तीर्थीकर का बंधक							
23 सामान्य प्रकृतियाँ		9 धूव-ज्वासी (धूव-० ते त्रस-कार्यालय, अग्नलग्न-पृथक निर्माण, वर्ष-चतुर्क) 9 युगल (धूव-१ से २ स्थावर, सूक्ष्म-बादर, पर्याप्त-अपर्याप्त, प्रत्येक-साधारण विहायोगति-अस्थिर, शुभ-अशुभ, सुभग-दुर्भग, आदेय-आनादेय, यश-अयश)								5 त्रस-कार्यालय, अग्नलग्न-पृथक विहायोगति-द्विक में ज्वासेन के अन्यतम							
		9 युगल (धूव-१ से २ स्थावर, सूक्ष्म-बादर, पर्याप्त-अपर्याप्त, प्रत्येक-साधारण विहायोगति-अस्थिर, शुभ-अशुभ, सुभग-दुर्भग, आदेय-आनादेय, यश-अयश)								5 त्रस-कार्यालय, ४ ग्रीष्म-वर्ष-चतुर्क							
		5 त्रस-कार्यालय (धूव-१ ते ५ संस्थान, ६ संहनन, ६ त्रस-द्वय)								5 त्रस-कार्यालय के बाय-का नियम है							
		पर्याप्त प्रकृति के साथ-१० पृथक विहायोगति-द्विक में ज्वासेन के बाय का नियम है								पर्याप्त प्रकृति के साथ ज्वासेन के बाय का नियम है							
		त्रस और पर्याप्त प्रकृति के साथ-१० पृथक विहायोगति-द्विक में ज्वासेन के अन्यतम								त्रस और पर्याप्त प्रकृति के साथ ज्वासेन के अन्यतम है							
		आप-एक पंचेन्द्रियक बादर पर्याप्त के साथ ही होता है								आप-एक पंचेन्द्रियक बादर पर्याप्त के साथ ही होता है							
		उच्चोत का बाय-बादर प्राप्ति (पृथ्वी, जल, वर्ष-चतुर्क, नम्रता)								उच्चोत का बाय-बादर प्राप्ति (पृथ्वी, जल, वर्ष-चतुर्क, नम्रता)							



+ नाम-कर्म बन्ध-स्थान आदेश प्रस्तुपणा -

नाम-कर्म बन्ध-स्थान आदेश प्रस्तुपणा

विशेष :

नाम-कर्म बन्ध-स्थान आदेश प्रस्तुपणा		
मार्गणा	बन्ध-स्थान	संख्या
गति	नरक	29, 30
	तिर्यङ्ग	23, 25, 26, 28, 29, 30
	मनव्य	23, 25, 26, 28, 29, 30, 31, 1
	देव	25, 26, 29, 30
इंद्रिय	एकेदिय	23, 25, 26, 29, 30
	विकलत्रय	23, 25, 26, 29, 30
	पञ्चेदिय	23, 25, 26, 28, 29, 30, 31, 1
काय	पृथ्वी, जल, वनस्पति	23, 25, 26, 29, 30
	तेज, वायु	23, 25, 26, 29, 30
	त्रस	23, 25, 26, 28, 29, 30, 31, 1
योग	मन, वचन	23, 25, 26, 28, 29, 30, 31, 1
	ओदारिक-काय	23, 25, 26, 28, 29, 30, 31, 1
	ओदारिक-मिश्र	23, 25, 26, 28, 29, 30
	वैक्रियिक	25, 26, 29, 30
	वैक्रियिक-मिश्र	25, 26, 29, 30
	आहारक	28, 29
	आहारक-मिश्र	28, 29
वेद	कार्मण	23, 25, 26, 28, 29, 30
	स्त्री	23, 25, 26, 28, 29, 30, 31, 1
	नपुषक	23, 25, 26, 28, 29, 30, 31, 1
कषण	पूरुष	23, 25, 26, 28, 29, 30, 31, 1
	(यथा योग्य) 23, 25, 26, 28, 29, 30, 31, 1	8
ज्ञान	कुमति-कुश्रुत	23, 25, 26, 28, 29, 30
	विभग	23, 25, 26, 28, 29, 30
	माति, श्रुत, अवधि	28, 29, 30, 31, 1
	मनःपर्यय	28, 29, 30, 31, 1
	केवल	×
संयम	सामायिक / छेदोपस्थापना	28, 29, 30, 31, 1
	परिहारविशुद्धि	28, 29, 30, 31
	सूक्ष्मसामराय	1
	यथाख्यात	×
	देशविरत	28, 29
दर्शन	असंयम	23, 25, 26, 28, 29, 30
	चक्र	23, 25, 26, 28, 29, 30, 31, 1
	अचक्र	23, 25, 26, 28, 29, 30, 31, 1
	अवधि	28, 29, 30, 31, 1
लेश्या	केवल	×
	कृष्ण, नील, कापोत	23, 25, 26, 28, 29, 30
	पीत, पद्म	25, 26, 28, 29, 30, 31
	शुक्रत	28, 29, 30, 31
भव्य	शुक्रत (क्रेवटी समुद्रघाट)	28, 29, 30, 31, 1
	भव्य	23, 25, 26, 28, 29, 30, 31, 1
	अभव्य	23, 25, 26, 28, 29, उद्योग सहित के 20
सम्यक्त्व	क्षायिक	28, 29, 30, 31, 1
	वेदक	28, 29, 30, 31
	उपशम	28, 29, 30, 31, 1
	मिश्र	28, 29
	सासादन	28, 29, 30
	मिथ्यात्व	23, 25, 26, 28, 29, 30
संज्ञी	संज्ञी	23, 25, 26, 28, 29, 30, 31, 1
	असंज्ञी	23, 25, 26, 28, 29, 30
आहारक	आहारक	23, 25, 26, 28, 29, 30, 31, 1
	अनाहारक	23, 25, 26, 28, 29, 30
	अनाहारक (अयोग्यी)	×



स्थिति बंध



+ जघन्य-उल्कृष्ट स्थिति बंध का काल और स्वामी -

जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति बंध का काल और स्वामी

विशेष :

		स्थिति बंध				
		जघन्य बंध		उत्कृष्ट बंध		
		काल	स्वामी	काल (कोड़ा-कोड़ी सागर)	स्वामी	
दर्शनावरणी	ज्ञानावरणी - 5	अंतर्मुहूर्त	सूक्ष्म साम्परय क्षपक	30	चारों गति के उत्कृष्ट व मध्यम संकलेश मिथ्यादृष्टि	
	चक्षु, अचक्षु, अवधी, केवल	अंतर्मुहूर्त	सर्व-विशुद्ध बादर पर्याप्त एकेन्द्रिय	30		
	5 निद्रा	3/7 सागर	सूक्ष्म साम्परय क्षपक	30		
वेदनीय	साता	12 मुहूर्त	सर्व-विशुद्ध बादर पर्याप्त एकेन्द्रिय	15		
	असाता	3/7 सागर	सर्व-विशुद्ध बादर पर्याप्त एकेन्द्रिय	30		
	अंतराय - 5	अंतर्मुहूर्त	सूक्ष्म साम्परय क्षपक	30		
मोहनीय	दर्शन	1 सागर	सर्व-विशुद्ध बादर पर्याप्त एकेन्द्रिय	70	चारों गति के उत्कृष्ट व मध्यम संकलेश मिथ्यादृष्टि	
	अनंतानुवर्धी	4/7 सागर		40		
	अप्रत्याख्यानावरणी	4/7 सागर				
	प्रत्याख्यानावरणी	4/7 सागर	अनिवृत्तिकरण क्षपक	10		
	संचलन क्रोध	2 मास				
	संचलन मान	1 मास				
	संचलन माया	15 दिन				
	संचलन लोभ	अंतर्मुहूर्त				
	हास्य, रति	2/7 सागर	सर्व-विशुद्ध बादर पर्याप्त एकेन्द्रिय	20		
	अरती, शोक, भय, जुगाड़ा	2/7 सागर	सर्व-विशुद्ध बादर पर्याप्त एकेन्द्रिय	20		
	नपुंसक	2/7 सागर	सर्व-विशुद्ध बादर पर्याप्त एकेन्द्रिय	10		
	पुरुष	8 वर्ष	अनिवृत्तिकरण क्षपक	10		
	स्त्री	2/7 सागर	सर्व-विशुद्ध बादर पर्याप्त एकेन्द्रिय	15		
आयु	मनुष्य	द्विद्रू-भव	कर्मभूमि संकलेश-युक्त मि. संज्ञी तिर्यञ्च / मनुष्य	3 पल्य	कर्मभूमि विशुद्धि-युक्त मि. संज्ञी तिर्यञ्च / मनुष्य	
	तिर्यञ्च	10000 वर्ष	मि. संज्ञी पंच. ति. संकलेश परिणत या सर्व-विशुद्ध संज्ञी पंच. पर्याप्त	33 सागर	कर्मभूमि संकलेश-युक्त मि. संज्ञी तिर्यञ्च / मनुष्य	
	नरक		संज्ञी-असंज्ञी तिर्यञ्च / मनुष्य		अप्रमत को सन्खेप प्रमत्त-विरत	
	देव		सर्व विशुद्ध असंज्ञी पंचेत्रिय			
नाम	गति/आनुपर्वी	देव	2000/7 सागर	10	मि. संज्ञी पंचात पर्याप्त तिर्यञ्च / मनुष्य	
		मनुष्य	2/7 सागर	15	चारों गति के उत्तम-मध्यम संकलेश-युक्त मि.	
		तिर्यञ्च	2000/7 सागर	20	पि. देव / नारकी	
		नरक			मिथ्यादृष्टि संज्ञी पंचात तिर्यञ्च / मनुष्य	
	जाति	एकेन्द्रिय	2/7 सागर	20	मि. इशान देव	
		विकरोद्धिय		18	मि. संज्ञी पंचात तिर्यञ्च / मनुष्य	
		पंचेत्रिय		20	चारों गति के उत्तम-मध्यम संकलेश-युक्त मि.	
	शरीर/अंगोपांग	औदारिक	2/7 सागर	20	मि. देव / नारकी	
		वैक्रियक	2000/7 सागर	20	मि. संज्ञी पंचात पर्याप्त तिर्यञ्च / मनुष्य	
		आहारक	अंतः कोड़ा-कोड़ी सागर	अंतः कोड़ा-कोड़ी सागर	अपूर्वकरण क्षपक के 1-7 भाग तक	
	शरीर	तैजस	2/7 सागर	20	चारों गति के उत्तम-मध्यम संकलेश-युक्त मि.	
		कार्या		10		
	निर्माण, वर्ण-चतुरुक्त			12		
	संहनन, संस्थान	वर्ण-ऋणभनाराच, समचतुरस्त्र		14	चारों गति के उत्तम-मध्यम संकलेश-युक्त मि.	
		वर्ण-नाराच, न्यग्राध		16		
		नाराच, स्त्राति		18		
		अर्ध-नाराच, कुब्जक		20	पि. देव / नारकी	
		कीलक, वामन		20	चारों गति के उत्तम-मध्यम संकलेश-युक्त मि.	
		हुँडक संस्थान		20		
		सूपाटिका संहनन		20		
	अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छास, प्रत्येक, त्रस, बादर, पर्याप्त, अशुभ, अस्त्रिय, दुर्भग, दुःखर, अनादेय		सर्व-विशुद्ध बादर पर्याप्त एकेन्द्रिय	20	चारों गति के उत्तम-मध्यम संकलेश-युक्त मि.	
	आतप, स्थावर			20	मिथ्यादृष्टि इशान देव	
	उद्योत			20	मि. देव / नारकी	
	विहायोगति	प्रशस्त		10	चारों गति के उत्तम-मध्यम संकलेश-युक्त मि.	
		अप्रशस्त		20	चारों गति के उत्तम-मध्यम संकलेश-युक्त मि.	
	सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त			18	मि. संज्ञी पंचात तिर्यञ्च / मनुष्य	
	सुभग, सुरचर, शुभ, स्त्रिय, आदेय			10	चारों गति के उत्तम-मध्यम संकलेश-युक्त मि.	
	अयश-कीर्ति			20	चारों गति के उत्तम-मध्यम संकलेश-युक्त मि.	
	यश-कीर्ति			10	चारों गति के उत्तम-मध्यम संकलेश-युक्त मि.	
	तीर्थकर			अंतः कोड़ा-कोड़ी सागर	अविरत सम्यगदृष्टि	
गोत्र	उच्च	8 मुहूर्त	सूक्ष्म-सांपरायिक क्षपक चरम समय	10	चारों गति के उत्तम-मध्यम संकलेश-युक्त मि.	
	नीच	2/7 सागर	सर्व-विशुद्ध बादर पर्याप्त एकेन्द्रिय	20		

जग्यन्य स्थिति में एकेन्द्रिय स्थामी हो तो काल को पत्त के असंख्यतरे भाग से घटायें।
जग्यन्य स्थिति में असंज्ञी पंचेत्रिय स्थामी हो तो काल को पत्त के संख्यातरे भाग से घटायें।



मार्गणा में जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति-बंध

विशेष :

आदेश से आठ कर्मों में स्थिति बंध														
ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अंतराय				वेदनीय			मोहनीय		नाम-गोत्र		आयु			
ज. स्थिति	उ. स्थिति	ज. स्थिति	उ. स्थिति	ज. स्थिति	उ. स्थिति	ज. स्थिति	उ. स्थिति	ज. स्थिति	उ. स्थिति	ज. स्थिति	उ. स्थिति	ज. स्थिति	आवाधा	
नरक	1	1000 * 3/7 सा. - प./सं.		1000 * 3/7 सा. - प./सं.		1000 सा. - प./सं.		1000 * 2/7 सा. - प./सं.		1000 * 2/7 सा. - प./सं.		पूर्व-कोटि	6 मास	
	2-7	अंतः को.को.सा.		अंतः को.को.सा.		अंतः को.को.सा.		अंतः को.को.सा.		अंतः को.को.सा.		33 सा.	पूर्व-कोटि / 3	
गति	तिर्यक्ष	3/7 सा. - (प./असं.)		3/7 सा. - (प./असं.)		12 मुहूर्त		12 मुहूर्त		8 मुहूर्त				
	मनुष्य	अंतर्मुहूर्त				1000 * 3/7 सा. - प./सं.		1000 सा. - प./सं.		1000 * 2/7 सा. - प./सं.				
	भवनवासी, व्यंतर	1000 * 3/7 सा. - प./सं.		30 को.को.सा.		30 को.को.सा.		70 को.को.सा.		20 को.को.सा.				
	ज्योतिष से ईशान			अंतः को.को.सा.		अंतः को.को.सा.		अंतः को.को.सा.		अंतः को.को.सा.				
	सनतकुमार, माहेन्द्र													
	ब्रह्म से कापिष्ठ													
	शुक्र से सहस्रार													
	आनन्द से अच्युत													
	गैरेकिंग से सर्वार्थसिद्धि													
इंद्रिय	एकेन्द्रीय	बादर-पर्याप्ति	3/7 सा. - (प./असं.)	3/7 सा.	3/7 सा. - (प./असं.)	1 सा. - (प./असं.)	1 सा.	2/7 सा. - (प./असं.)	2/7			साधिक 7000 वर्ष		
		बादर अपर्याप्ति, सूक्ष्म										अंतर्मुहूर्त		
	द्विन्द्रिय	पर्याप्ति	25 * 3/7 सा. - (प./सं.)	25 * 3/7 सा.	25 * 3/7 सा. - (प./सं.)	25 * 3/7 सा. - (प./सं.)	25 सा.	25 * 2/7 सा. - (प./सं.)	25 * 2/7			4 वर्ष		
		अपर्याप्ति	25 * 3/7 सा. - (प./सं.)	25 * 3/7 सा. - (प./सं.)	25 * 3/7 सा. - (प./सं.)	25 * 3/7 सा. - (प./सं.)	25 सा.	25 * 2/7 सा. - (प./सं.)	25 * 2/7 सा. - (प./सं.)			अंतर्मुहूर्त		
	त्रिन्द्रिय	पर्याप्ति	50 * 3/7 सा. - (प./सं.)	50 * 3/7 सा. - (प./सं.)	50 * 3/7 सा. - (प./सं.)	50 * 3/7 सा.	50 सा.	50 * 2/7 सा. - (प./सं.)	50 * 2/7			साधिक 16 दिन		
		अपर्याप्ति										अंतर्मुहूर्त		
	चतुर्विन्द्रिय	पर्याप्ति	100 * 3/7 सा. - (प./सं.)	100 * 3/7 सा. - (प./सं.)	100 * 3/7 सा. - (प./सं.)	100 * 3/7 सा.	100 सा.	100 * 2/7 सा. - (प./सं.)	100 * 2/7			2 महीना		
		अपर्याप्ति										अंतर्मुहूर्त		
	पचांद्रिय	पर्याप्ति	अंतर्मुहूर्त	30 को.को.सा.	12 मुहूर्त	30 को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त	70 को.को.सा.	8 मुहूर्त	20 को.को.सा.		33 सा.	पूर्व-कोटि / 3	
		अपर्याप्ति	1000 * 3/7 सा. - (प./सं.)	अंतः को.को.सा.	1000 * 3/7 सा. - (प./सं.)	अंतः को.को.सा.	1000 सा. - (प./सं.)	1000 * 2/7 सा. - (प./सं.)	1000 * 2/7 सा. - (प./सं.)	अंतः को.को.सा.			पूर्व-कोटि	अंतर्मुहूर्त
काय	पृथ्वी													
	जल													
	अग्नि													
	वायु													
	वनस्पति													
	त्रस	अंतर्मुहूर्त	30 को.को.सा.	12 मुहूर्त	30 को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त	70 को.को.सा.	8 मुहूर्त	20 को.को.सा.			33 सा.	पूर्व-कोटि / 3	
योग	5 मन, 5 चरन, औदारिक काय	3/7 सा. - (प./असं.)		30 को.को.सा.	3/7 सा. - (प./असं.)	30 को.को.सा.	1 सा. - (प./असं.)	2/7 सा. - (प./असं.)	2/7 सा.					
	वैक्रियिक-काय	1000 * 3/7 सा. - प./सं.			1000 सा. - प./सं.	70 को.को.सा.	2000 * 3/7 सा. - प./सं.	2000 * 3/7 सा. - प./सं.	20 को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त	33 सा.	पूर्व-कोटि / 3		
	आहारक, आहारक-मिश्र	अंतः को.को.सा.										पूर्व-कोटि	6 मास	
	औदारिक-मिश्र	3/7 सा. - (प./असं.)										पूर्व-कोटि	अंतर्मुहूर्त	
	वैक्रियिक-मिश्र	अंतः को.को.सा.										पूर्व-कोटि	अंतर्मुहूर्त	
वेद	कार्मण	3/7 सा. - (प./असं.)												
	स्त्री, नपुंसक	संख्यात हजार वर्ष	30 को.को.सा.	पत्य / असंख्यात	30 को.को.सा.	संख्यात सौ वर्ष	70 को.को.सा.	पत्य / असंख्यात	20 को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त	33 सा.	पूर्व-कोटि / 3		
	पुरुष	संख्यात हजार/सौ* वर्ष		संख्यात हजार/सौ* वर्ष		सोलाह वर्ष	70 को.को.सा.	संख्यात हजार वर्ष	20 को.को.सा.					
कथाय	अपगत		संख्यात हजार वर्ष		पत्य / असंख्यात		संख्यात सौ वर्ष		पत्य / असंख्यात			-		
	क्रोध	संख्यात हजार/सौ* वर्ष												
	मान	संख्यात हजार/पृथ्वत* वर्ष												
	माया	संख्यात हजार वर्ष/पृथ्वत मास*												
ज्ञान	लोभ	अंतर्मुहूर्त												
	मत्यज्ञानी, शृतज्ञानी	3/7 सा. - (प./असं.)		30 को.को.सा.	3/7 सा. - (प./असं.)	30 को.को.सा.	1 सा. - (प./असं.)	70 को.को.सा.	2/7 सा. - (प./असं.)	20 को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त	33 सा.	पूर्व-कोटि / 3	
	विभंगावधि	अंतः को.को.सा.												
	मनःर्पण	पृथ्वत मुहूर्त		अंतः को.को.सा.	पृथ्वत मास	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	अंतः को.को.सा.	पृथ्वत मास	अंतः को.को.सा.	पृथ्वत मास			
संपर्म	आधिनिवाधिक, शृतज्ञानी, अवधिज्ञानी	अंतर्मुहूर्त		अंतः को.को.सा.	12 मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	अंतः को.को.सा.	8 मुहूर्त	20 को.को.सा.	पृथ्वत पत्य	33 सा.	पूर्व-कोटि / 3	
	सामायिक, छेदोपस्थापना	पृथ्वत मुहूर्त		अंतः को.को.सा.	पृथ्वत मास	अंतर्मुहूर्त	पृथ्वत मास	अंतः को.को.सा.	पृथ्वत मास	अंतः को.को.सा.	पृथ्वत पत्य			
	परिहार-विशुद्धि	अंतः को.को.सा.		अंतः को.को.सा.	पृथ्वत मास	अंतर्मुहूर्त	पृथ्वत मास	अंतः को.को.सा.	पृथ्वत मास	अंतः को.को.सा.	पृथ्वत पत्य			
सूक्ष्म-सांपर्याधिक	सूक्ष्म-सांपर्याधिक	अंतर्मुहूर्त		पृथ्वत मुहूर्त	12 मुहूर्त	पृथ्वत मास	पृथ्वत मास	पृथ्वत मास	8 मुहूर्त	पृथ्वत मास	पृथ्वत पत्य			

		आदेश से आठ कर्मों में स्थिति बंध								
	ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अंतराय		वेदनीय		मोहनीय		नाम-गोत्र		आयु	
	ज. स्थिति	उ. स्थिति	ज. स्थिति	उ. स्थिति	ज. स्थिति	उ. स्थिति	ज. स्थिति	उ. स्थिति	ज. स्थिति	उ. स्थिति
	संयमासंयम	अंतः को.को.सा.	अंतः को.को.सा.	अंतः को.को.सा.	अंतः को.को.सा.	अंतः को.को.सा.	अंतः को.को.सा.	अंतः को.को.सा.	पृथक्त लेख	22 सा.
	असंयत	3/7 सा. - (प./असं.)	30 को.को.सा.	3/7 सा. - (प./असं.)	30 को.को.सा.	1 सा. - (प./असं.)	70 को.को.सा.	2/7 सा. - (प./असं.)	20 को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त 33 सा.
दर्शन	चक्षु, अचक्षु	अंतर्मुहूर्त	30 को.को.सा.	12 मुहूर्त	30 को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त	70 को.को.सा.	8 मुहूर्त	पृथक्त वर्ष	33 सा.
	अवधि		अंतः को.को.सा.		अंतः को.को.सा.		अंतः को.को.सा.			
लेश्या	कृष्ण	3/7 सा. - (प./असं.)	30 को.को.सा.	3/7 सा. - (प./असं.)	30 को.को.सा.	1 सा. - (प./असं.)	70 को.को.सा.	2/7 सा. - (प./असं.)	20 को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त 33 सा.
	नील									
	कापोत									
	पीत									
	पद्म									
	शुक्ल	अंतर्मुहूर्त	अंतः को.को.सा.	12 मुहूर्त	अंतः को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त	अंतः को.को.सा.	8 मुहूर्त	अंतः को.को.सा.	पृथक्त मास 33 सा.
भव्य	भव्य	अंतर्मुहूर्त	30 को.को.सा.	12 मुहूर्त	30 को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त	70 को.को.सा.	8 मुहूर्त	20 को.को.सा.	पृथक्त मास 33 सा.
	अभव्य	3/7 सा. - (प./असं.)		3/7 सा. - (प./असं.)		1 सा. - (प./असं.)		2/7 सा. - (प./असं.)		
सम्प्रकल्प	औपास्मिक	2 अंतर्मुहूर्त	अंतः को.को.सा.	24 मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	अंतः को.को.सा.	16 मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त 31 सा.	
	क्षायिक	अंतर्मुहूर्त		12 मुहूर्त		अंतर्मुहूर्त		8 मुहूर्त		
	वेदक									
	सम्प्रायमित्यादाइ									
	सासादन									
	मिथ्यादाइ	3/7 सा. - (प./असं.)	30 को.को.सा.	3/7 सा. - (प./असं.)	30 को.को.सा.	1 सा. - (प./असं.)	70 को.को.सा.	2/7 सा. - (प./असं.)	20 को.को.सा.	-
संज्ञी	संज्ञी	अंतर्मुहूर्त	30 को.को.सा.	12 मुहूर्त	30 को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त	70 को.को.सा.	8 मुहूर्त	20 को.को.सा.	पृथक्त वर्ष 33 सा.
	असंज्ञी	1000 * 3/7 सा. - (प./असं.)	1000 * 3/7 सा.	1000 * 3/7 सा. - (प./असं.)	1000 * 3/7 सा.	1000 सा. - (प./असं.)	1000 सा.	1000 * 2/7 सा. - (प./असं.)	1000 * 2/7 सा.	पूर्व-कोटि 33 सा.
आहार	आहारक	अंतर्मुहूर्त	30 को.को.सा.	12 मुहूर्त	30 को.को.सा.	अंतर्मुहूर्त	70 को.को.सा.	8 मुहूर्त	20 को.को.सा.	पल्य / असंख्यात 33 सा.
	अनाहारक	3/7 सा. - (प./असं.)	अंतः को.को.सा.	3/7 सा. - (प./असं.)	अंतः को.को.सा.	1 सा. - (प./असं.)	अंतः को.को.सा.	2/7 सा. - (प./असं.)	अंतः को.को.सा.	-

*कालाय के वेद में महाब्रह्म में दोनों को प्रहण किया है

~आहारक-मित्र काल योग में आहु का वेद गोमवराह के अंतराय नहीं होता। महाब्रह्म के अनुसार होता है ।

निमोद जीवों के कर्मों का स्थिति-बंध पर्याकारिक जीवों के समान है और आयु-कर्मों का स्थिति-बंध सूक्ष्म-एकदिवय के समान है।

को.को.सा. - काठा-काठी सागर, प. - पल्य, सं. - संख्यात, असं. - असंख्यात



+ मूल-प्रकृतियों में अजघन्य आदि स्थिति के प्रकार -

मूल-प्रकृतियों में अजघन्य आदि स्थिति के प्रकार

विशेष :

जघन्य आदि स्थिति बंध के प्रकार (सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुव)

अजघन्य	जघन्य	उत्कृष्ट	अनुत्कृष्ट
ज्ञानावरणी - ५	चारों	सादि, अध्रुव	सादि, अध्रुव
दर्शनावरणी	चारों	सादि, अध्रुव	सादि, अध्रुव
वेदनीय	चारों	सादि, अध्रुव	सादि, अध्रुव
मोहनीय	चारों	सादि, अध्रुव	सादि, अध्रुव
आयु	सादि, अध्रुव	सादि, अध्रुव	सादि, अध्रुव
नाम	चारों	सादि, अध्रुव	सादि, अध्रुव
गोत्र	चारों	सादि, अध्रुव	सादि, अध्रुव
अंतराय	चारों	सादि, अध्रुव	सादि, अध्रुव



+ स्थिति-बंधस्थान प्ररूपणा -

स्थिति-बंधस्थान प्ररूपणा

विशेष :

सूक्ष्म अपर्याप्त < बादर अपर्याप्त < सूक्ष्म पर्याप्त < बादर पर्याप्त << द्विन्द्रिय अपर्याप्त < द्विन्द्रिय पर्याप्त < त्रिन्द्रिय अपर्याप्त < त्रिन्द्रिय पर्याप्त < चतुर्निर्दिय अपर्याप्त < चतुर्निर्दिय पर्याप्त < असंज्ञी पंचेद्रिय अपर्याप्त < असंज्ञी पंचेद्रिय पर्याप्त < संज्ञी पंचेद्रिय अपर्याप्त < संज्ञी पंचेद्रिय पर्याप्त

'=> = संख्यात अधिक

'<< = असंख्यात अधिक



संकलेश-विशुद्धि-स्थान प्ररूपणा

विशेष :

सूक्ष्म अपर्याप्त << बादर अपर्याप्त << सूक्ष्म पर्याप्त << बादर पर्याप्त << द्विन्द्रिय अपर्याप्त << द्विन्द्रिय पर्याप्त << त्रिन्द्रिय अपर्याप्त << त्रिन्द्रिय पर्याप्त << चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त << चतुरिन्द्रिय पर्याप्त < असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त << असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त << संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त << संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त

'<<' = असंख्यात अधिक



+ स्थिति बंध अल्प-बहुत्व -

स्थिति बंध अल्प-बहुत्व

विशेष :

संयत (ज) << बादर पर्याप्त (ज) < सूक्ष्म पर्याप्त (ज) < बादर अपर्याप्त (ज) < सूक्ष्म अपर्याप्त (ज) < सूक्ष्म अपर्याप्त (उ) < बादर अपर्याप्त (ज) < सूक्ष्म पर्याप्त (उ) < बादर पर्याप्त (उ) < द्विन्द्रिय पर्याप्त (ज) < द्विन्द्रिय अपर्याप्त (ज) < द्विन्द्रिय अपर्याप्त (उ) < द्विन्द्रिय पर्याप्त (उ) < त्रिन्द्रिय अपर्याप्त (ज) < त्रिन्द्रिय अपर्याप्त (ज) < त्रिन्द्रिय अपर्याप्त (उ) < त्रिन्द्रिय पर्याप्त (उ) < चतुरिन्द्रिय पर्याप्त (ज) < चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त (ज) < चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त (उ) < चतुरिन्द्रिय पर्याप्त (उ) < असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त (ज) < असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त (ज) < असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त (उ) < असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त (उ) < संयत (उ) < संयतासंयत (ज) < संयतासंयत (उ) < असंयत सम्पदाद्विष्ट पर्याप्त (ज) < असंयत सम्पदाद्विष्ट पर्याप्त (ज) < असंयत सम्पदाद्विष्ट पर्याप्त (उ) < असंयत सम्पदाद्विष्ट पर्याप्त (उ) < संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्याद्विष्ट पर्याप्त (ज) < संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्याद्विष्ट अपर्याप्त (ज) < संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्याद्विष्ट अपर्याप्त (उ) < संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्याद्विष्ट पर्याप्त (उ)

'<' = संख्यात अधिक

'<<' = असंख्यात अधिक

(ज) = जघन्य स्थिति बंध

(उ) = उल्काएँ स्थिति बंध



+ उत्तर-प्रकृतियों में अजघन्य आदि स्थिति के प्रकार -

उत्तर-प्रकृतियों में अजघन्य आदि स्थिति के प्रकार

विशेष :

उत्तर-प्रकृतियों में अजघन्य आदि स्थिति बंध

अजघन्य	जघन्य	उल्का	अनुल्का
संज्वलन-4	चारों	सादि, अधूत	सादि, अधूत
शानावरणी	चारों	सादि, अधूत	सादि, अधूत
दर्शनावरणी	चारों	सादि, अधूत	सादि, अधूत
अंतराय	चारों	सादि, अधूत	सादि, अधूत
शेष 102 प्रकृतियों	सादि, अधूत	सादि, अधूत	सादि, अधूत



अनुभाग बंध



+ अनुभाग बन्ध के स्वामी -

अनुभाग बन्ध के स्वामी

विशेष :

अनुभाग बंध के स्वामी		जग्न्य अनुभाग के स्वामी
उत्कृष्ट अनुभाग के स्वामी	जग्न्य अनुभाग के स्वामी	
ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अन्तराय ५ निद्रा, प्रचला, हास्य, रोति, भय, जुगप्सा स्त्यानत्रिक, मिथ्यात्म, अनन्तानुबन्धी ४ अप्रत्याखान ४ प्रत्याखान ४ संज्वलन ५, पुरुष वेद अरति, शोक स्त्री, ननुपंसक वेद साता असाता नरकायु तिर्यायु, मनुष्यायु देवायु उच्च गोत्र नीच गोत्र तिर्ष्च-द्विक मनुष्य द्वि. औदारिक द्वि. एकेन्द्रिय जाति, स्थावर आतप नरक द्वि., सूक्ष्म-त्रय, विकलत्रय देव द्वि., वैक्रियक द्वि. आहारक द्वि.	चारों गति के उत्कृष्ट संविलाष मिथ्या.	सूक्ष्मसम्प्रय क्षपक का चरम समय अपूर्वकरण में बन्धव्युच्छिति से पहले अप्रमत्संयत सन्मुख सातिशय मिथ्यादृष्टि अप्रमत्संयत सन्मुख अविरतसम्पदृष्टि उपमत्संयत सन्मुख देशसंयत अनिवृत्तिकरण क्षपक के बन्धव्युच्छिति से पहले अप्रमत्संयत सन्मुख प्रमत्संयत चारों गति के विशुद्ध मिथ्या. अपरिवर्तमान मध्य मिथ्यादृष्टि / सम्पदृष्टि
सूक्ष्म-सांपराय चरम समय चारों गति के उत्कृष्ट संविलाष मिथ्या. संकिलाष मिथ्यादृष्टि मनुष्य तिर्यच विशुद्ध मिथ्यादृष्टि मनुष्य तिर्यच अप्रमत्संयत क्षपक श्रेणी सूक्ष्म-सांपराय चरम समय चारों गति के संकिलाष मिथ्या. संकिलाष मिथ्यादृष्टि देव नारकी अनन्तानुबन्धी विसंयोजक सम्पदृष्टि देव नारकी आयु के छह माह शेष रहने पर संकिलाष मिथ्यादृष्टि देव उत्कृष्ट संवलेश वाले मिथ्यादृष्टि मनुष्य तिर्यच क्षपक श्रेणी अपूर्वकरण का छठा भाग चारों गति के संकिलाष मिथ्या. क्षपक श्रेणी अपूर्वकरण का छठा भाग चारों गति के संकिलाष मिथ्या. अनन्तानुबन्धी विसंयोजक सम्पदृष्टि देव नारकी चारों गति के संकिलाष मिथ्या. संकिलाष मिथ्यादृष्टि देव नारकी क्षपक श्रेणी अपूर्वकरण का छठा भाग चारों गति के संकिलाष मिथ्या. क्षपक श्रेणी अपूर्वकरण का छठा भाग चारों गति के संकिलाष मिथ्या. संकिलाष मिथ्यादृष्टि देव नारकी नरक और मिथ्यात्म सन्मुख अविरत सम्पदृष्टि	मिथ्यादृष्टि मनुष्य तिर्यच परिवर्तमान मध्य मिथ्यादृष्टि उपशम सम्प्रकल्प सन्मुख साताम पृथ्वी नारकी विशुद्ध मिथ्यादृष्टि परिवर्तमान मध्य मिथ्यादृष्टि संकिलाष मिथ्यादृष्टि देव / नारकी मध्यम परिणामी देव मनुष्य तिर्यच संकिलाष मिथ्यादृष्टि भवनत्रिक से ईशान. मिथ्यादृष्टि मनुष्य तिर्यच प्रमत्संयत सन्मुख अप्रमत्संयत चारों गति के संकिलाष मिथ्या. क्षपक श्रेणी अपूर्वकरण का छठा भाग परिवर्तमान मध्य मिथ्यादृष्टि परिवर्तमान मध्य मिथ्यादृष्टि / सम्पदृष्टि	
पंचेन्द्रिय जाति, तैजस, कार्मण, निर्माण, प्रशस्त वर्णादि ५, अगुरुलघु, पराधात, प्रत्येक, त्रस, बादर, पर्याप्ति, उच्छास अप्रशस्त वर्णादि ५, उपधात सुभग, सुस्वर, आदेय, समचतुरभ संस्थान पाँच अप्रशस्त संस्थान वज्र ऋषभ नाराच वज्र नाराच आदि ४ असंप्राप्त सुपाटिका अप्रशस्त विहायोगति दुर्भग, दुस्वर, अनदेय अयशःकीर्ति, अशुभ, आस्थर यशःकीर्ति स्थिर, शुभ, प्रशस्त विहायोगति उद्योत तीर्थकर	चारों गति के संकिलाष मिथ्या. क्षपक श्रेणी अपूर्वकरण का छठा भाग चारों गति के संकिलाष मिथ्या. अनन्तानुबन्धी विसंयोजक सम्पदृष्टि देव नारकी चारों गति के संकिलाष मिथ्या. संकिलाष मिथ्यादृष्टि देव नारकी चारों गति के संकिलाष मिथ्या. क्षपक श्रेणी सूक्ष्म-सांपराय चरम समय क्षपक श्रेणी अपूर्वकरण का छठा भाग सातवें नरक में उपशम सम्प्रकल्प के सन्मुख विशुद्ध मिथ्यादृष्टि नारकी क्षपक श्रेणी अपूर्वकरण का छठा भाग संकिलाष मिथ्यादृष्टि देव / नारकी नरक और मिथ्यात्म सन्मुख अविरत सम्पदृष्टि	परिवर्तमान मध्य मिथ्यादृष्टि परिवर्तमान मध्य मिथ्यादृष्टि
संकिलाष मिथ्या. – तीव्र कषायपुरुष विध्यादृष्टि जीव		



+ मूल प्रकृतियों के अनुभाग बंध में सादि आदि भेद - मूल प्रकृतियों के अनुभाग बंध में सादि आदि भेद

विशेष :

मूल प्रकृतियों के अनुभाग बंध में सादि आदि भेद			
जग्न्य	उत्कृष्ट	धूत	अधूत
ज्ञातिया कर्म	सादि, अधूत	चारों	सादि, अधूत
वैदनीय, नाम	सादि, अधूत	सादि, अधूत	सादि, अधूत
गोत्र	सादि, अधूत	चारों	सादि, अधूत
आयु	सादि, अधूत	सादि, अधूत	सादि, अधूत



+ उत्तर प्रकृतियों में सादि आदि भेद - उत्तर प्रकृतियों के अनुभाग बंध में सादि आदि भेद

विशेष :

उत्तर प्रकृतियों के अनुभाग बंध में सादि आदि भेद			
जग्न्य	अजग्न्य	उत्कृष्ट	अनुत्कृष्ट
धूत बधी	तैजस, कार्मण, निर्माण, प्रशस्त वर्ण चतुर्क, अगुरुलघु	सादि, अधूत	सादि, अधूत
ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ५, अन्तराय ५, मिथ्यात्म, कषाय १६, भय, जुगप्सा, उपधात, अप्रशस्त वर्ण चतुर्क	सादि, अधूत	चारों	सादि, अधूत
७३ अधूत बंधी प्रकृतियाँ	सादि, अधूत	सादि, अधूत	सादि, अधूत



प्रदेश बंध

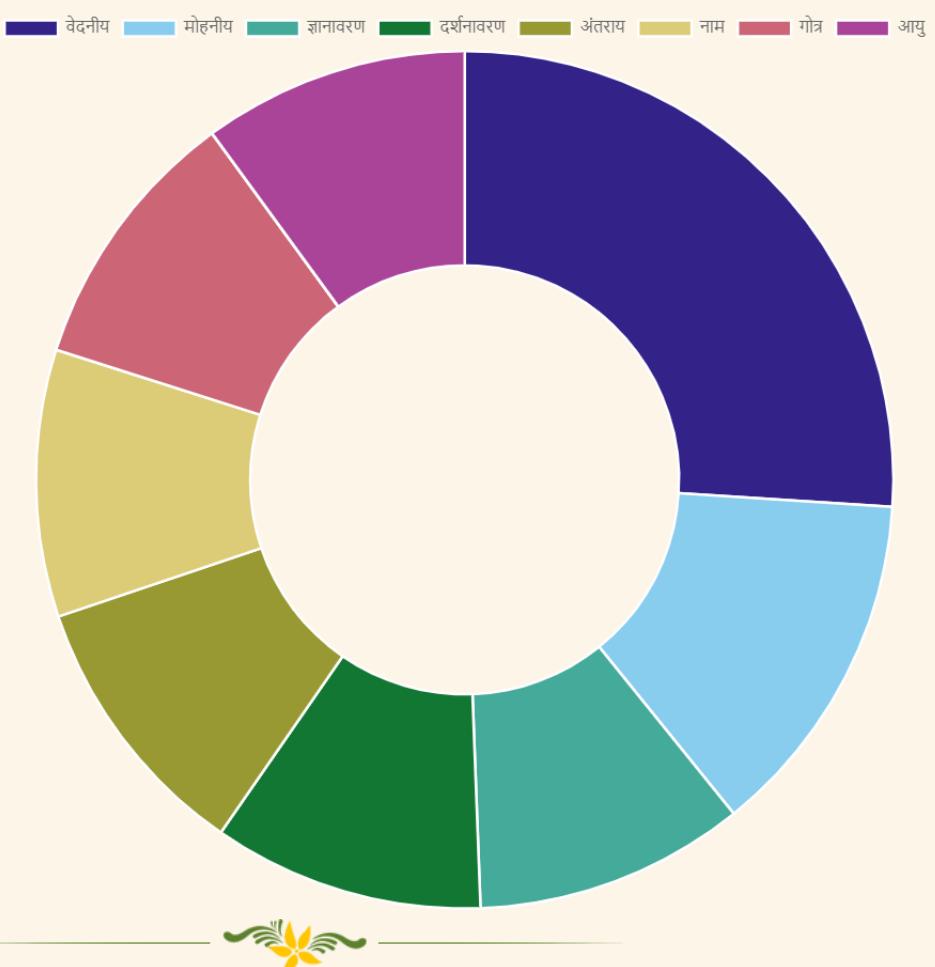


+ मूल प्रकृतियों में प्रदेश बंध -

मूल प्रकृतियों में प्रदेश बंध

उदाहरण के लिए --
समयप्रबद्ध = 75000
आवली/असंख्यात = 5

विशेष :



कर्म-उदय



+ नरक और तिर्यक्ष गति मार्गणा में उदय -

नरक और तिर्यञ्च गति मार्गणा में उदय

विशेष :

नरक और तिर्यञ्च गति मार्गणा में उदय					
		उदय	अनुदय	ब्यूचिति	
नरक	1	मिथ्यात्व	74	2 (सम्यक-मिथ्यात्व, सम्यकत्व)	
		सासादन	72	4 (नरक अनुपूर्वी)	
		मित्र	69 (सम्यक-मिथ्यात्व)	1 (सम्यक-मिथ्यात्व)	
		अविरत	70 (सम्यकत्व, नरकानुपूर्वी)	6	
	2-7	मिथ्यात्व	74	2 (सम्यक-मिथ्यात्व, सम्यकत्व)	
		सासादन	72	4	
		मित्र	69 (सम्यक-मिथ्यात्व)	1 (सम्यक-मिथ्यात्व)	
		अविरत	69 (सम्यकत्व)	7	
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 76 = 42 घोषणा (47 - स्वानन्दिक, वेद 2 / पुरुष, स्त्री) + नरक आपूर्वी + नीच-गोत्र + वेदनीय 2 + 29 नाम (वैकल्पिक-धिक, तेजस कामणि त्वित-अस्त्रि, शम्भ-अशम्भ, अप्रशस्तिहायोगति हुड़कसंस्थान निर्माण, पर्वतिंग्रजाति, नरक 2 / गति, अनुपूर्वी, दुर्भग्य-चतुर्ष, अग्न-लघुचतुर्ष, त्रसचतुर्ष, वर्णचतुर्ष)					
तिर्यञ्च	सामान्य	मिथ्यात्व	105	2 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)	
		सासादन	100	7	
		मित्र	91 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	16 (तिर्यचानुपूर्वी)	
		अविरत	92 (सम्यक प्रकृति, तिर्यचानुपूर्वी)	15	
		संयतासंयत	84	23	
	पर्वतेन्द्रिय	उदय-योग्य प्रकृतियाँ 107 = 122 - 15 (सुभूत-विक, वैकल्पिक-धिक, उच्च-गोत्र, आहारक-धिक, तीर्यकर)			
		मिथ्यात्व	97	2 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)	
		सासादन	95	4	
		मित्र	91 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	8 (तिर्यचानुपूर्वी)	
		अविरत	92 (+ सम्यक प्रकृति, तिर्यचानुपूर्वी)	7	
	पर्वतेन्द्रिय पर्याप्त	संयतासंयत	84	15	
		उदय-योग्य प्रकृतियाँ 99 = 107 - 8 (सुभूत, साधारण, ख्यात, अतप, जातिचतुर्ष)			
		मिथ्यात्व	95	2 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)	
		सासादन	94	3	
		मित्र	90 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	7 (तिर्यचानुपूर्वी)	
		अविरत	91 (+ सम्यक प्रकृति, तिर्यचानुपूर्वी)	6	
		संयतासंयत	83	14	
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 97 = 107 - 10 (सुभूत, साधारण, ख्यात, अतप, जातिचतुर्ष, लोकेन्द्र, अपर्याप्त)					
योनिमती पर्याप्त	योनिमती पर्याप्त	मिथ्यात्व	94	2 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)	
		सासादन	93	3	
		मित्र	89 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	7	
		अविरत	89 (+ सम्यक प्रकृति)	7	
		संयतासंयत	82	14	
	पर्वतेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त	उदय-योग्य प्रकृतियाँ 97 = 107 - 10 (सुभूत, साधारण, ख्यात, अतप, जातिचतुर्ष, वेद 2 / पुरुष, स्त्री, स्वानन्दिक, पर्वत, तेजस सुखस्त-दुखस्त, विह्वयोगति 2, यास्त्रीर्ति, अदेय संहनन 3, संस्थान 3, सुभग सम्यकत्व मित्र)			
		मिथ्यात्व	77	2 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)	
		सासादन	76	3	
		मित्र	72 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	7 (-तिर्यचानुपूर्वी)	
		अविरत	73 (+ सम्यकत्वप्रकृति)	6	
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 79 = 107 - 28 (स्वानन्दिक, नपुरुष-वेद, सुभूत, साधारण, ख्यात, अतप, जातिचतुर्ष, अपर्याप्त, सेहनन 3, संस्थान 3, दुर्भग्य-चतुर्ष, अप्रशस्त विह्वयोगति)					



+ मनुष्य और देव गति मार्गणा में उदय - मनुष्य और देव गति मार्गणा में उदय

विशेष :

मनुष्य और देव गति मार्गणा में उदय				
		उदय	अनुदय	ब्यूचिति
मनुष्य	सामान्य	मिथ्यात्व	97	2 (मिथ्यात्व, अपर्याप्त)
		सासादन	95	4 (अनुत्तरानुबंधी ५)
		मित्र	91 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	1 (सम्यकमिथ्यात्व)
		अविरत	92 (सम्यक प्रकृति, मनुष्यानुपूर्वी)	10
		संयतासंयत	84	18
	प्रमत्तसंयत	प्रमत्तसंयत	21	5 (स्यानन्दिक, आहारक-धिक)
		अप्रमत्तसंयत	76	26
		अपूर्वकरण	72	30
		अनिवृत्तिकरण	66	36
		सूक्ष्मसाम्प्राय	60	42
उपरात्तमाह				
सामान्य	उपरात्तमाह	59	43	
	क्षीणमोह	57	45	
	सायोगकेवली	42 (+ तीर्यकर)	60	
	अयोगकेवली	12	16 (ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ६, चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवल, निद्रा, प्रचला), अंतराय ५	
	उदय-योग्य प्रकृतियाँ 102 = 122 - 20 (वैकल्पिक-धिक, तिर्यक-विक, जातिचतुर्ष, साधारण, सुभूत, ख्यात, अतप, जातिचतुर्ष, अपर्याप्त, विह्वयोगति, निर्माण, वर्णचतुर्ष, अमुरुलघु, उपरात्त-प्रधान, उच्चावास, प्रत्येक, शम्भ-अशम्भ, ख्यिर-अस्त्रि, प्रशस्त-अप्रशस्त विह्वयोगति, सुखर-दुखर)			

मनुष्य और देव गति मार्गणा में उदय				
	उदय	अनुदय	व्युचिति	
पर्याप्त	मिथ्यात्व	95	5 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति, तीर्थकर, आहारक-द्विक)	
	सासादन	94	6	
	मिश्र	90 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	10 (मनुष्यानुपूर्वी)	
	अविरत	91 (+ सम्यक प्रकृति, मनुष्यानुपूर्वी)	9	
	संयतासंयत	83	17	
	प्रमत्संयत	80 (+ आहारक-द्विक)	20	
	अप्रमत्संयत	75	25	
	अदूर्धकरण	71	29	
	अनिवृत्तिकरण	66	35	
	सूक्ष्मसाम्प्रदाय	60	40	
	उपशान्तमोह	59	41	
	क्षीणमोह	57	43	
	सयोगकेवली	42 (+ तीर्थकर)	58	
	अयोगकेवली	12	88	
उदय-योग्य प्रकृतियों 100 = 102 - 2 (लोकेद, अपवर्ति)				
मनुष्यनी	मिथ्यात्व	94	2 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)	
	सासादन	93	3	
	मिश्र	89 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	7	
	अविरत	89 (+ सम्यक प्रकृति)	7	
	संयतासंयत	82	14	
	प्रमत्संयत	77	19	
	अप्रमत्संयत	74	22	
	अदूर्धकरण	70	26	
	अनिवृत्तिकरण	64	32	
	सूक्ष्मसाम्प्रदाय	60	36	
	उपशान्तमोह	59	37	
	क्षीणमोह	57	39	
	सयोगकेवली	41	55	
	अयोगकेवली	11	85	
उदय-योग्य प्रकृतियों 96 = 102 - 6 (वेद 2/पुरुष, नमुसक), अपवर्ति, तीर्थकर, आहारक-द्विक)				
भोगभीमनुष्य	लक्ष्यपर्याप्त	उदय-योग्य प्रकृतियों 71 = 102 - 31 (वेद 2/पुरुष, स्त्री, स्यानविक, उच्च-गोव, पर्याप्त, परथात, उच्छाल, सुख-दुखर, विहायोगति 2, प्रशस्त-अप्रशस्त विहायोगति, सुखर-दुखर)		
	मिथ्यात्व	76	2 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)	
	सासादन	75	3	
	मिश्र	71 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	7 (मनुष्यानुपूर्वी)	
	अविरत	72 (+ सम्यक प्रकृति)	6	
	उदय-योग्य प्रकृतियों 78 = 102 - 24 (ल्लानविक, नमुसक-वेद, तीर्थ-गोव, सहनन 3, संस्थान 3, दुर्भावतुष्क, अप्रशस्त विहायोगति, अपवर्ति, तीर्थकर, आहारक-द्विक)			
	सामान्य	मिथ्यात्व	75	2 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)
		सासादन	74	3
		मिश्र	70 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	7 (देवानुपूर्वी)
	अविरत	71 (+ सम्यक प्रकृति, देवानुपूर्वी)	6	9 (अप्रत्याख्यानावरण 8, देवतुष्क, देवायु)
		उदय-योग्य प्रकृतियों 77 = 122 - 45 (नरक-विक, तीर्थ-विक, मनुष्य-विक, विहायोगति, आप, जहात, तीर्थकर, आहारक-द्विक)		
		उदय-योग्य प्रकृतियों 79 = 102 - 27 - 1 (ल्ली-वेद, सम्यक-मिथ्यात्व, अनुतानुबंधी 8)		
सौधर्म से त्रीवेयक देव	देव	मिथ्यात्व	74	2 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)
		सासादन	73	3
		मिश्र	69 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	7 (देवानुपूर्वी)
		अविरत	70 (+ सम्यक प्रकृति, देवानुपूर्वी)	6
उदय-योग्य प्रकृतियों 76 = 77 - 1 (ल्ली-वेद)				
अनुदिश / अनुत्तर	देव	मिथ्यात्व	74	2 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)
		सासादन	73	3
		मिश्र	69 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	7 (देवानुपूर्वी)
		अविरत	69 (+ सम्यक प्रकृति)	7
उदय-योग्य प्रकृतियों 76 = 77 - 1 (ल्ली-वेद, सम्यक-मिथ्यात्व, अनुतानुबंधी 8)				
भवनविक देव अथवा देवी	देव	मिथ्यात्व	74	1 (मिथ्यात्व)
		सासादन	73	4 (अनुतानुबंधी 8)
		मिश्र	69 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	1 (सम्यकमिथ्यात्व)
		अविरत	69 (+ सम्यक प्रकृति)	8 (अप्रत्याख्यानावरण 8, देव 2/गति, आयु, वैकियक 2)
उदय-योग्य प्रकृतियों 76 = 77 - 1 (ल्ली-वेद अथवा दुर्लभ)				



+ इंद्रिय मार्गणा में कर्म का उदय - इंद्रिय मार्गणा में कर्म का उदय

विशेष :

इंद्रिय मार्गणा में कर्म का उदय

उदय	अनुदय	व्युचिति
-----	-------	----------

इंद्रिय मार्गणा में कर्म का उदय

	उदय	अनुदय	व्युच्छिति
एकेद्विषय	मिथ्यात्व	80	0
	सासादन	69	11
विकलत्रय	उदय-योग्य प्रकृतियों 80 = 122 - 42 (सम्यकमिथ्यात्व सम्यक प्रकृति वेद २) [पुरुष, स्त्री] उच्च-गोत्र, मनुष्य-विक, वैक्रियक-अष्टक, औदारिक-अंगोपांग संहनन ६, संस्थान ५, जाति ४, ग्रन्थ, सुभग सुखर आदेय विहायोगति २, आहारक-द्विक, तीर्थिकर	11 (मिथ्यात्व, सूक्ष्म, आतप, अपयाप्ति, साधारण, स्त्यान-विक, परघात, उद्घोत, उच्छ्वास)	
	मिथ्यात्व	81	0
विकलत्रय	सासादन	71	10
	उदय-योग्य प्रकृतियों 81 = 122 - 41 (सम्यकमिथ्यात्व सम्यक प्रकृति वेद २) [पुरुष, स्त्री] उच्च-गोत्र, मनुष्य-विक, वैक्रियक-अष्टक, स्यावर, सूक्ष्म, आतप, साधारण जाति ५, संहनन ५, संस्थान ५, सुभग, सुखर, आदेय प्रसात विहायोगति, आहारक-द्विक, तीर्थिकर	10 (मिथ्यात्व, अपयाप्ति, स्त्यान-विक, परघात, उद्घोत, उच्छ्वास, द्रुखर, अप्रसात-विहायोगति)	
पञ्चेद्विषय	मिथ्यात्व	109	5 (- सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति, आहारक-द्विक, तीर्थिकर)
	सासादन	106	8 (-नरक आनुपूर्वी)
	मित्र	100 (सम्यकमिथ्यात्व)	14 (-आनुपूर्व ३/देव, मनुष्य, तिर्यच्च)
	अविरत	104 (+ सम्यक प्रकृति, आनुपूर्व ४)	10
	संयतासंयत	87	27
	प्रमत्तसंयत	81 (+ आहारक-द्विक)	33
	अप्रमत्तसंयत	76	38
	अपूर्वकरण	72	42
	अनिवृत्करण	66	48
	सूक्ष्मसाम्पराय	60	54
	उपशान्तान्मोह	59	55
	क्षीणमोह	57	57
सयोगकेवली	सयोगकेवली	42 (+ तीर्थिकर)	72
	अयोगकेवली	12	12
उदय-योग्य प्रकृतियों 114 = 122 - 8 (स्यावर, सूक्ष्म, आतप, साधारण, जाति-चतुर्क)			



+ काय मार्गणा में कर्म का उदय -

काय मार्गणा में कर्म का उदय

विशेष :

	उदय	अनुदय	व्युच्छिति
पृथकी	मिथ्यात्व	79	0
	सासादन	69	10
अप (जल)	मिथ्यात्व	78	0
	सासादन	69	9
अग्नि / वायु	मिथ्यात्व		उदय-योग्य प्रकृतियों 79 = एकेद्विषय में उदय-योग्य प्रकृतियों 80 - साधारण
			10 (मिथ्यात्व, सूक्ष्म, आतप, अपयाप्ति, स्त्यान-विक, परघात, उद्घोत, उच्छ्वास)
स्थावर	मिथ्यात्व	79	0
	सासादन	69	10
वनस्पति	मिथ्यात्व	79	0
	सासादन	69	10
त्रस	मिथ्यात्व	112	5 (- सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति, आहारक-द्विक, तीर्थिकर)
	सासादन	109	8 (-नरक आनुपूर्वी)
	मित्र	100 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	17 (-आनुपूर्व ३/देव, मनुष्य, तिर्यच्च)
	104 (+ आनुपूर्व ४, सम्यक-प्रकृति)	13	17 (अप्रत्याख्यानावरण ४, वैक्रियक-अष्टक, आनुपूर्व २/मनुष्य, तिर्यच्च), अनादेय, अयशःकीर्ति दुर्भाग)
	87	30	8 (प्रत्याख्यानावरण ४, नीच गोत्र, तिर्यच्च गति तिर्यच्च आयु, उच्चोत)
	81 (+ आहारक-द्विक)	36	5 (स्यावर-विक, आहारक-द्विक)
	76	41	4 (संहनन ३/असंग्रामाद्युपाटिका, गीलक, अर्द्धनाराचा), सम्यक प्रकृति)
	72	45	6 (हास्य, रोति, अरति शोक, भय, जुगुस्सा)
	66	51	6 (संज्वलन ३/ब्रोध, मान, माया), वेद ३/पुरुष, स्त्री, नवुंसका)
	60	57	1 (संज्वलन सूक्ष्म लोभ)
	59	58	2 (संहनन २/नाराच, वज्रनाराचा)
	57	60	16 (ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ६/ब्रक्षु, अवक्षु, अवधि, केवल, निद्रा, प्रचला), अंतराय ५)
	42 (+ तीर्थिकर)	75	30 (वेदनीय/कोइ १, उच्च गोत्र, मनुष्य गति, मनुष्य आयु, परेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर, पर्याप्ति, सुभग, आदेय, यशःकीर्ति, तीर्थिकर)
उदय-योग्य प्रकृतियों 117 = 122 - 5 (एकेद्विषय जाति, साधारण, सूक्ष्म, स्थावर, आतप)			



+ योग मार्गणा में कर्म का उदय -

योग मार्गणा में कर्म का उदय

विशेष :

पोग मार्गणा में कर्म का उदय

		चक्र	अचुक्र	चुच्छिति	
4 मन, 3 वचन [सत्य, असत्य, उभय]*	मिथ्यात्	104	5 (-सम्यकमिथ्यात्, सम्यक प्रकृति, आहारक-द्विक, तीर्थकर)	1 (मिथ्यात्)	
	सासादन	103	6	4 (अनंतानुबंधी ४)	
	मित्र	100 (+ सम्यक-मिथ्यात्)	9	1 (सम्यकमिथ्यात्)	
	अविरत	100 (+ सम्यक-प्रकृति)	9	13 (अप्रत्याख्यानावरण ४, गति २ देव, नरक), आयु २ (देव, नरक), वैक्रियिक-द्विक, अनादेय, अयशःकीर्ति दुर्भाग्य	
	संयतासंयत	87	22	8 (प्रत्याख्यानावरण ४, नीच गोत्र, तिर्पञ्च गति, तिर्पञ्च आयु, उद्योग)	
	प्रमत्संयत	81 (+ आहारक-द्विक)	28	5 (स्पान-विक, आहारक-द्विक)	
	अप्रमत्संयत	76	33	4 (संहनन ३ असंप्राप्तासुपाटिका, कीलक, अर्द्धनाराचा, सम्यक प्रकृति)	
	अपूर्वकरण	72	37	6 (हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगासा)	
	अनिवृतिकरण	66	43	6 (संज्वलन ३-क्रोध, मान, माया), वेद ३-पुरुष, स्त्री, नपुंसक)	
	सूक्ष्मसाम्पराय	60	49	1 (संज्वलन सूक्ष्म लोभ)	
	उपशान्तमोह	59	50	2 (संहनन २ नाराच, वज्रनाराचा)	
	क्षीणमोह	57	52	16 (ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ६, अवधि, केवल, निद्रा, प्रवता, चक्षु, अचक्षु, अंतराय ५)	
	सयोगकेवती	42 (+तीर्थकर)	67	42 (वेदनीय २, वज्रवृशभनाराच संहनन, ६ संस्थान, औदारिक-द्विक, तैजस-कर्मणि शरीर, निर्माण, शुभ-अशुभ, खिर-अस्थिर, विहायोगति २, उच्च गोत्र, मनुष्य २ गति, आयु, पंचेन्द्रिय जाति, वर्णचतुरुष, अगुरुलघुचतुरुष, त्रसचतुरुष, सुभगचतुरुष, दुसर, तीर्थकर)	
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 109 = 122 - 13 (जातिचतुरुष, स्थावरचतुरुष, आत्म, जन्मपूर्वी)					
* [असत्य, उभय मन-वचन योग के युग्मात्मन १ से 12 ही हैं।]					
अनुभय वचन	मिथ्यात्	107	5 (-सम्यकमिथ्यात्, सम्यक प्रकृति, आहारक-द्विक, तीर्थकर)	1 (मिथ्यात्)	
	सासादन	106	6	7 (अनंतानुबंधी ४, विकलत्रय जाति)	
	मित्र	100 (+ सम्यक-मिथ्यात्)	12	1 (सम्यकमिथ्यात्)	
	अविरत	100 (+ सम्यक-प्रकृति)	12	13 (अप्रत्याख्यानावरण ४, गति २ देव, नरक), आयु २ (देव, नरक), वैक्रियिक-द्विक, अनादेय, अयशःकीर्ति दुर्भाग्य	
	संयतासंयत	87	25	8 (प्रत्याख्यानावरण ४, नीच गोत्र, तिर्पञ्च गति, तिर्पञ्च आयु, उद्योग)	
	प्रमत्संयत	81 (+ आहारक-द्विक)	31	5 (स्पान-विक, आहारक-द्विक)	
	अप्रमत्संयत	76	36	4 (संहनन ३ असंप्राप्तासुपाटिका, कीलक, अर्द्धनाराचा, सम्यक प्रकृति)	
	अपूर्वकरण	72	40	6 (हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगासा)	
	अनिवृतिकरण	66	46	6 (संज्वलन ३-क्रोध, मान, माया), वेद ३-पुरुष, स्त्री, नपुंसक)	
	सूक्ष्मसाम्पराय	60	52	1 (संज्वलन सूक्ष्म लोभ)	
	उपशान्तमोह	59	53	2 (संहनन २ नाराच, वज्रनाराचा)	
	क्षीणमोह	57	55	16 (ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ६, अवधि, केवल, निद्रा, प्रवता, चक्षु, अचक्षु, अंतराय ५)	
	सयोगकेवती	42 (+तीर्थकर)	70	42 (वेदनीय २, वज्रवृशभनाराच संहनन, ६ संस्थान, औदारिक-द्विक, तैजस-कर्मणि शरीर, निर्माण, शुभ-अशुभ, खिर-अस्थिर, विहायोगति २, उच्च गोत्र, मनुष्य २ गति, आयु, पंचेन्द्रिय जाति, वर्णचतुरुष, अगुरुलघुचतुरुष, त्रसचतुरुष, सुभगचतुरुष, दुसर, तीर्थकर)	
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 112 = 122 - 10 (स्थावरचतुरुष, आत्म, जन्मपूर्वी, एकेन्द्रिय जाति)					
ओदारिक	मिथ्यात्	106	3 (-सम्यकमिथ्यात्, सम्यक प्रकृति, तीर्थकर)	4 (मिथ्यात्, सूक्ष्म, साधारण, आत्म)	
	सासादन	102	7	9 (अनंतानुबंधी ४, जाति-चतुरुष, साधारण)	
	मित्र	94 (+ सम्यक-मिथ्यात्)	15	1 (सम्यकमिथ्यात्)	
	अविरत	94 (+ सम्यक-प्रकृति)	15	7 (अप्रत्याख्यानावरण ५, अनादेय अयशःकीर्ति दुर्भाग्य)	
	संयतासंयत	87	22	8 (प्रत्याख्यानावरण ५, नीच गोत्र, तिर्पञ्च गति, तिर्पञ्च आयु, उद्योग)	
	प्रमत्संयत	79	30	5 (स्पान-विक, आहारक-द्विक)	
	अप्रमत्संयत	76	33	4 (संहनन ३ असंप्राप्तासुपाटिका, कीलक, अर्द्धनाराचा, सम्यक प्रकृति)	
	अपूर्वकरण	72	37	6 (हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगासा)	
	अनिवृतिकरण	66	43	6 (संज्वलन ३-क्रोध, मान, माया), वेद ३-पुरुष, स्त्री, नपुंसक)	
	सूक्ष्मसाम्पराय	60	49	1 (संज्वलन सूक्ष्म लोभ)	
	उपशान्तमोह	59	50	2 (संहनन २ नाराच, वज्रनाराचा)	
	क्षीणमोह	57	52	16 (ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ६, अवधि, केवल, निद्रा, प्रवता, चक्षु, अचक्षु, अंतराय ५)	
	सयोगकेवती	42 (+तीर्थकर)	67	42 (वेदनीय २, वज्रवृशभनाराच संहनन, ६ संस्थान, औदारिक-द्विक, तैजस-कर्मणि शरीर, निर्माण, शुभ-अशुभ, खिर-अस्थिर, विहायोगति २, उच्च गोत्र, मनुष्य २ गति, आयु, पंचेन्द्रिय जाति, वर्णचतुरुष, अगुरुलघुचतुरुष, त्रसचतुरुष, सुभगचतुरुष, दुसर, तीर्थकर)	
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 109 = 122 - 13 (आहारक-द्विक, वैक्रियिक-ज्ञात, जन्मपूर्वी, मन्त्र, तिर्पञ्च, अपयोगि)					
औदारिक-मित्र	मिथ्यात्	96	2 (-सम्यक प्रकृति, तीर्थकर)	4 (मिथ्यात्, सूक्ष्म, साधारण, आत्म)	
	सासादन	92	6	9 (अनंतानुबंधी ४, जाति-चतुरुष, साधारण)	
	अविरत	79 (+ सम्यक-प्रकृति)	19	1 (सम्यकमिथ्यात्)	
	सयोगकेवती	36 (+तीर्थकर)	62	7 (अप्रत्याख्यानावरण ५, अनादेय अयशःकीर्ति दुर्भाग्य)	
	उदय-योग्य प्रकृतियाँ 98 = 122 - 24 (आहारक-द्विक, वैक्रियिक-ज्ञात, जन्मपूर्वी, मन्त्र, तिर्पञ्च, स्थावरचतुरुष, एकेन्द्रिय जाति, वर्णचतुरुष, अगुरुलघुचतुरुष, त्रसचतुरुष, सुभगचतुरुष, दुसर, तीर्थकर)				
वैक्रियिक	मिथ्यात्	84	2 (-सम्यकमिथ्यात्, सम्यक प्रकृति)	4 (मिथ्यात्)	
	सासादन	83	3	4 (अनंतानुबंधी ४)	
	मित्र	80 (+ सम्यक-मिथ्यात्)	6	1 (सम्यकमिथ्यात्)	
	अविरत	80 (+ सम्यक-प्रकृति)	6	13 (अप्रत्याख्यानावरण ५, गति २ देव, नरक), आयु २ (देव, नरक), वैक्रियिक-द्विक, अनादेय, अयशःकीर्ति दुर्भाग्य)	
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 96 = 122 - 36 (वैक्रियिक-ज्ञात, गति, मनुष्य २ आयु, गति, मनुष्य २ आयु, गति, आयु-ज्ञात, वर्णचतुरुष, औदारिक-द्विक, स्थावरचतुरुष, औदारिक-द्विक, स्थावरचतुरुष, आयु-ज्ञात, वर्णचतुरुष, औदारिक-द्विक, स्थावरचतुरुष, संस्थान ५, संस्थान ५, संस्थान ५, आत्म, उद्योग तीर्थकर आहारक-द्विक)					
वैक्रियिक-मित्र	मिथ्यात्	78	1 (सम्यक प्रकृति)	1 (मिथ्यात्)	
	सासादन	69	10 (हुडक-संसान, नपुंसक-वेद, दुर्भाग्य-वेद, नरक, गति, आयु, नीच-गोत्र)	4 (अनंतानुबंधी ४, स्त्री-वेद)	
	अविरत	73 (+ सम्यक-प्रकृति, हुडक-संसान, नपुंसक-वेद, दुर्भाग्य-वेद, नरक, गति, आयु, नीच-गोत्र)	6	13 (अप्रत्याख्यानावरण ५, गति २ देव, नरक), आयु २ (देव, नरक), वैक्रियिक-द्विक, अनादेय, अयशःकीर्ति दुर्भाग्य)	
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 79 = 122 - 43 (सम्यक-मिथ्यात्, परायत, उच्चास रव-दिक, विहायोगति २, तिर्पञ्च २ आयु, गति, मनुष्य २ आयु, गति, आयु-ज्ञात, वर्णचतुरुष, औदारिक-द्विक, स्थावरचतुरुष, औदारिक-द्विक, स्थावरचतुरुष, आयु-ज्ञात, वर्णचतुरुष, औदारिक-द्विक, संस्थान ५, संस्थान ५, संस्थान ५, आत्म, उद्योग तीर्थकर आहारक-द्विक)					
आहारक	प्रमत्संयत	उदय-योग्य प्रकृतियाँ 61 = ६ गुणस्थान की ११ - २० स्थावरचतुरुष, वेद २ नपुंसक, स्त्री			
आहारक-मित्र	प्रमत्संयत	उदय-योग्य प्रकृतियाँ 57 = आहारक-द्विक, विहायोगति २, स्थावरचतुरुष, परायत			
कार्मण	मिथ्यात्	87	2 (-तीर्थकर, सम्यकत्व)	3 (मिथ्यात्, सूक्ष्म, साधारण)	
	सासादन	81	8 (-नरकत्रिक)	10 (अनंतानुबंधी ४, जातिचतुरुष, स्थावर, स्त्री-वेद)	
	अविरत	75 (+ नरकत्रिक, सम्यकत्व)	14	51 (कोशाय १२, नोकोशाय १ स्त्री-वेद छोडकर), गति ३ नरक, देव, तिर्पञ्च, आयु ३ नरक, देव, तिर्पञ्च, अनपूर्व्य ४, अनादेय, अयशःकीर्ति दुर्भाग्य, नीच गोत्र, सम्यक-प्रकृति, ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ५ अवधि, केवल, निद्रा, प्रवता, चक्षु, अचक्षु, अंतराय ५)	
	सयोगकेवती	25 (+तीर्थकर)	64	25 (वेदनीय २, तैजस-कर्मणि शरीर, निर्माण, वर्णचतुरुष, अगुरुलघु शुभ-अशुभ, खिर-अस्थिर, उच्च गोत्र, मनुष्य आयु, पंचेन्द्रिय जाति, वर्णचतुरुष, अगुरुलघुचतुरुष, त्रसचतुरुष, सुभगचतुरुष, दुसर, तीर्थकर)	
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 89 = 122 - 33 स्वर-दिक, विहायोगति २, प्रत्येक, साधारण, आहारक-द्विक, वैक्रियिक-द्विक, सम्यक-मिथ्यात्, परायत, उच्चास आयु, उद्योग तथा स्थावरचतुरुष, संस्थान ५, संस्थान ५)					



+ वेद मार्गणा में कर्म का उदय -

वेद मार्गणा में कर्म का उदय

विशेष :

वेद मार्गणा में कर्म का उदय

वेद मार्गणा में कर्म का उदय			
	उदय	अनुदय	ब्युच्चिति
पुरुष	मिथ्यात्व	103	4 (- सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति, आहारक-द्विक)
	सासादन	102	5
	मिश्र	96 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	11 (आनुपूर्वी ३)
	अविरत	99 (+ सम्यक-प्रकृति, आनुपूर्वी ३)	8
	संयतासंयत	85	22
	प्रमत्तसंयत	79 (+ आहारक-द्विक)	28
	अप्रमत्तसंयत	74	33
	अपूर्वकरण	70	37
	अनिवृतिकरण	64	43
उदय-योग्य प्रकृतियों 107 = 122 - 15 (स्पारवतुष्क, नरक-विक, वेद १/स्पृष्टि-नपुरुष), जातिचतुष्क, आप, तीर्थकर			
स्त्री	मिथ्यात्व	103	2 (- सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)
	सासादन	102	3
	मिश्र	96 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	9
	अविरत	96 (+ सम्यक-प्रकृति)	9
	संयतासंयत	85	20
	प्रमत्तसंयत	77	28
	अप्रमत्तसंयत	74	31
	अपूर्वकरण	70	35
	अनिवृतिकरण	64	41
उदय-योग्य प्रकृतियों 105 = 122 - 17 (स्पारवतुष्क, नरक-विक, वेद १/पुरुष, नपुरुष), जातिचतुष्क, आप, अहारक-द्विक, तीर्थकर			
नपुरुषक	मिथ्यात्व	112	2 (- सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)
	सासादन	106	8 (- नरक आनुपूर्वी)
	मिश्र	96 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	18
	अविरत	97 (+ सम्यक-प्रकृति, नरक आनुपूर्वी)	17
	संयतासंयत	85	29
	प्रमत्तसंयत	77	37
	अप्रमत्तसंयत	74	40
	अपूर्वकरण	70	44
	अनिवृतिकरण	64	50
उदय-योग्य प्रकृतियों 114 = 122 - 8 (आहारक-द्विक, वेद-विक, वेद १/पुरुष, तीर्थ), तीर्थकर			



+ कषाय मार्गणा में कर्म का उदय -

कषाय मार्गणा में कर्म का उदय

विशेष :

कषाय मार्गणा में कर्म का उदय

कषाय मार्गणा में कर्म का उदय			
	उदय	अनुदय	ब्युच्चिति
क्रोध	मिथ्यात्व*	105	4 (- सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति, आहारक-द्विक)
	सासादन	99	10 (- नरक आनुपूर्वी)
	मिश्र	91 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	18 (आनुपूर्वी ३)
	अविरत	95 (+ सम्यक-प्रकृति, आनुपूर्वी ४)	14
	संयतासंयत	81	28
उदय-योग्य प्रकृतियों 105 = 122 - 7 (आहारक-द्विक, वेद-विक, वेद १/पुरुष, तीर्थ), साधारण			
5 (मिथ्यात्व, सूक्ष्म, आतप, अपर्याप्ति, साधारण)			
6 (अनंतानुबंधी क्रोध, स्पावर, जातिचतुष्क)			
1 (सम्यकमिथ्यात्व)			
14 (अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, वैक्रियिक-अष्टक, मनुष्यानुपूर्वी, तिर्यञ्चानुपूर्वी, अनादेय, अपशःकीर्ति, दुर्भग्नि)			
5 (प्रत्याख्यानावरण क्रोध, नीच गोत्र, तिर्यन्च गति, तिर्यन्च आयु, उद्योग)			

कषाय मार्गणा में कर्म का उदय			व्युचिति	
	उदय	अनुदय		
प्रमत्संयत	78 (+ आहारक-द्विक)	31	5 (स्यान-विक, आहारक-द्विक)	
अप्रमत्संयत	73	36	4 (संहनन 3 असंग्रापासुपाटिका, कीलक, अर्द्धनाराच, सम्यक प्रकृति)	
अपूर्वकरण	69	40	6 (हास्य रति, अरति, शोक, भय, जुगासा)	
अनिवृतिकरण	63	46	63 (संज्वलन क्रोध, वेद 3, संहनन 3 नाराच, वज्रनाराच, वज्रवृषभनाराच), ज्ञानवरण 4, दर्शनवरण 6 अवधि, केवल, निद्रा, प्रचला, चक्षु, अचक्षु, अंतराय 4, वेदनीय 2, संस्थान 6, औदारिक-द्विक, तैजस-कमाण शरीर, निर्माण, वर्णवृत्तक, अगुरुलघुवृत्तक, प्रत्येक, शुभ-अशुभ, स्त्रिर-अस्त्रिर, विहायोगति 2, स्वर-द्विक, उच्च-गात्र, मनुष्य 2 गति, आयु, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसविक, सुभग, आदेय, यशःकीर्ति)	
उदय-योग्य प्रकृतियों 109 = 122 - 13 / 12 कषाय-मान, माया और लोभ, तीर्पकर				
क्रोध के समान मान, भया और लोभ में भी उदय-योग्य प्रकृतियों 109 लोभ में गृहणशब्द सम्बन्धित तक				
*अनन्तानुबंधी ग्रोथ रहित मिथ्यात्म गुणस्थान में उदय-योग्य प्रकृतियों 91 = 122 - 31 (अनन्तानुबंधी ग्रोथ, 12 कषाय-मान, माया और लोभ, स्वरवृत्तक, अनुपूर्वी, जातिवृत्तक, आदेय, सम्यकमिथ्यात्म, सम्यक प्रकृति, आहारक-द्विक, तीर्पकर)				
लोभ	अनिवृतिकरण	63	46	3 वेद
	सूक्ष्म-सापरायिक	60	49	60 (संज्वलन लोभ, संहनन 3 नाराच, वज्रनाराच, वज्रवृषभनाराच), ज्ञानवरण 4, दर्शनवरण 6 अवधि, केवल, निद्रा, प्रचला, चक्षु, अचक्षु, अंतराय 4, वेदनीय 2, संस्थान 6, औदारिक-द्विक, तैजस-कमाण शरीर, निर्माण, वर्णवृत्तक, अगुरुलघुवृत्तक, प्रत्येक, शुभ-अशुभ, स्त्रिर-अस्त्रिर, विहायोगति 2, स्वर-द्विक, उच्च-गात्र, मनुष्य 2 गति, आयु, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसविक, सुभग, आदेय, यशःकीर्ति)



+ ज्ञान मार्गणा में कर्म का उदय - ज्ञान मार्गणा में कर्म का उदय

विशेष :

ज्ञान मार्गणा में कर्म का उदय			व्युचिति
	उदय	अनुदय	
कुमति / कुश्रुत	मिथ्यात्व	117	0
	सासादन	111	6
विभंगावधि	मिथ्यात्व	104	0
	सासादन	103	1
मति / श्रुत / अवधि	अविरत	104	2
	संपत्तसंयत	87	19
	प्रमत्संयत	81 (+ आहारक-द्विक)	25
	अप्रमत्संयत	76	30
	अपूर्वकरण	72	34
	अनिवृतिकरण	66	40
	सूक्ष्मसाप्तराय	60	46
	उपशान्तमोह	59	47
	क्षीणमोह	57	49
मनःपर्यय	प्रमत्संयत	77	0
	अप्रमत्संयत	74	3
	अपूर्वकरण	70	7
	अनिवृतिकरण	64	13
	सूक्ष्मसाप्तराय	60	17
	उपशान्तमोह	59	18
	क्षीणमोह	57	20
केवलज्ञान	सयोगकेवली	42	0
	अयोगकेवली	12	30 (वेदनीय कोइ १, वज्रवृषभनाराच संहनन, ६ संस्थान, औदारिक शरीर, निर्माण, स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, अगुरुलघु, उपशात-परधात, उच्छवास, प्रत्येक, शुभ-अशुभ, स्त्रिर-अस्त्रिर, प्रस्तर-प्रस्तर, अप्रस्तर विहायोगति, सुख-दुःख)
उदय-योग्य प्रकृतियों 106 = 122 - 16 (मिथ्यात्म सम्यकमिथ्यात्म अतप, जातिवृत्तक, अनन्तानुबंधी ४, तीर्पकर)			



+ संयम मार्गणा में कर्म का उदय - संयम मार्गणा में कर्म का उदय

विशेष :

संयम मार्गणा में कर्म का उदय			व्युचिति
	उदय	अनुदय	
सामायिक / छेदोपस्थापना	प्रमत्संयत	81	0
	अप्रमत्संयत	76	5
	अपूर्वकरण	72	9
	अनिवृतिकरण	66	15
उदय-योग्य प्रकृतियों 81 = 122 - 41 (मिथ्यात्म सम्यकमिथ्यात्म अतप, उद्योग, जातिवृत्तक, वेकियक-अष्टक, स्पर्शवृत्तक, कथाय १२, अनुपूर्वी २ विर्जन, मनुष्य, विर्जन गति, विर्जन आयु, अनादेय, अयशःकीर्ति, दुर्भाग, नीच-गोत्र, तीर्पकर)			
परिहारविशुद्धि	प्रमत्संयत	77	0
	अप्रमत्संयत	74	3
	अपूर्वकरण	74	3 (संहनन 3 असंग्रापासुपाटिका, कीलक, अर्द्धनाराच, सम्यक प्रकृति)
उदय-योग्य प्रकृतियों 77 = 81 - 4 (वेद १ स्त्री, नर्पतक, आहारक-द्विक)			
सूक्ष्मसाप्तराय	सूक्ष्मसाप्तराय	60	0

1 (संज्वलन लोभ)

संयम मार्गणा में कर्म का उदय

			व्युच्छिति
	उदय	अनुदय	
यथाखात	उपशान्तमोह	59	1 (तीर्थकर)
	क्षीणमोह	57	3
	सयोगकेवती	42 (तीर्थकर)	18
	अयोगकेवती	12	48
देशदिवरत	संयमासंयम	87	0
			8 (प्रलयाखानावरण ४, नीच गोत्र, तिर्यक गति, तिर्यक आयु, उद्योत)
असंयम	मिथ्यात्व	117	2 (सम्यकमिथ्यात्व सम्यक प्रकृति)
	सासादन	111	8 (-नरक आनुपूर्वी)
	मित्र	100 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	19 (-आनुपूर्वी ३ / देव, मनुष्य, तिर्यक)
	अविरत	104 (+ आनुपूर्वी ४, सम्यक-प्रकृति)	15
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 119 = 122 - (तीर्थकर, आहारक-द्विक)			



+ दर्शन मार्गणा में कर्म का उदय - दर्शन मार्गणा में कर्म का उदय

विशेष :

दर्शन मार्गणा में कर्म का उदय

	उदय	अनुदय	व्युच्छिति
चक्षु	मिथ्यात्व	110	4 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)
	सासादन	107	7 (-नरक आनुपूर्वी)
	मित्र	100 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	14 (-आनुपूर्वी ३ / देव, मनुष्य, तिर्यक)
	अविरत	104 (+ आनुपूर्वी ४, सम्यक-प्रकृति)	10
	संयमासंयम	87	27
	प्रमत्तसंयत	81	33
	अप्रमत्तसंयत	76	38
	अपूर्वकरण	72	42
	अनिवृतिकरण	66	48
	सूक्ष्मसाम्पराय	60	54
अचक्षु	उपशान्तमोह	59	55
	क्षीणमोह	57	57
	मिथ्यात्व	117	4 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)
	सासादन	111	10 (-नरक आनुपूर्वी)
	मित्र	100 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	21 (-आनुपूर्वी ३ / देव, मनुष्य, तिर्यक)
	अविरत	104 (+ आनुपूर्वी ४, सम्यक-प्रकृति)	17
	संयमासंयम	87	34
	प्रमत्तसंयत	81	40
अविचक्षु	अप्रमत्तसंयत	76	45
	अपूर्वकरण	72	42
	अनिवृतिकरण	66	49
	सूक्ष्मसाम्पराय	60	55
	उपशान्तमोह	59	61
	क्षीणमोह	57	64
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 114 = 122 - 8 (आतप, जाति ३ / १२, ३ ईविष्य, स्वावर, सूक्ष्म, साम्यक, तीर्थकर)			
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 121 = 122 - 1 (मिथ्यात्व, सम्यकमिथ्यात्व, आतप, जातिचतुष्क, स्वावर, अनंतानुबंधी ५, तीर्थकर) अविचक्षुनवत्, गुणस्थान ४ से १२]			
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 126 = 122 - 16 (मिथ्यात्व, सम्यकमिथ्यात्व, आतप, जातिचतुष्क, स्वावर, अनंतानुबंधी ५, तीर्थकर) अविचक्षुनवत्, गुणस्थान ४ से १२]			
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 42 (केवलज्ञनवत्, गुणस्थान 13, 14)			



+ लेश्या मार्गणा में कर्म का उदय - लेश्या मार्गणा में कर्म का उदय

विशेष :

लेश्या मार्गणा में कर्म का उदय

	उदय	अनुदय	व्युच्छिति
कृष्ण / नीत	मिथ्यात्व	117	2 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति)
	सासादन	111	8
	मित्र	98 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	21 (-मनुष्यानुपूर्वी)
	अविरत	99 (+ मनुष्यानुपूर्वी, सम्यक-प्रकृति)	20
उदय-योग्य प्रकृतियाँ 119 = 122 - 3 (आहारक-द्विक, तीर्थकर)			

लेश्या मार्गणा में कर्म का उदय				
कापेत	उदय	अनुदय	बुचिति	
	मिथ्यात्व सासादन मित्र अविरत	117 111 98 (+ सम्यक-मिथ्यात्व) 101 (+ अनुपूर्व॑ ३/मनुष्य, तिर्यक्, नरक), सम्यक-प्रकृति)	2 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति) 8 (-नरक अनुपूर्व॑) 21 (-आनुपूर्व॑ २/मनुष्य, तिर्यक्) 18	5 (मिथ्यात्व, सुक्षमत्रय, अतप) 12 (अनंतानुबंधी ४, स्थावर, जातिचतुष्क, देव-विक) 1 (सम्यकमिथ्यात्व) 14 (अप्रत्याख्यानावरण ४, नरक-विक, वैक्रियिक-द्विक, अनुपूर्व॑ २, अनादेय, अयशःकीर्ति, दुर्भग्न)
	उदय-योग्य प्रकृतियों 119 = 122 - 3 (आहारक-द्विक, तीर्यक्)			
	मिथ्यात्व सासादन मित्र अविरत	103 102 98 (+ सम्यक-मिथ्यात्व) 100 (+ अनुपूर्व॑ २/देव, मनुष्य, सम्यक-प्रकृति)	5 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति, आहारक-द्विक, मनुष्यानुपूर्व॑) 6 10 (-आनुपूर्व॑ १/देव) 8	1 (मिथ्यात्व) 4 (अनंतानुबंधी ४) 1 (सम्यकमिथ्यात्व) 13 (अप्रत्याख्यानावरण ४, देव-द्विक, वैक्रियिक द्विक, अनुपूर्व॑ २/मनुष्य, देव, अनादेय, अयशःकीर्ति, दुर्भग्न)
	संयमासंयम प्रमत्संयत अप्रमत्संयत	87 81 76	21 27 32	8 (प्रत्याख्यानावरण ४, नीच गोत्र, तिर्यक् गति, तिर्यक् आयु, उद्योता) 5 (स्थान-विक, आहारक-द्विक) 4 (संहनन ३/असंग्रापात्मसुपाटिका, कीलक, अर्द्धनाराच, सम्यक प्रकृति)
उदय-योग्य प्रकृतियों 108 = 122 - 14 (आतप, जातिचतुष्क, स्थावरचतुष्क, नरकविक, तिर्यकानुबंधी, तीर्यक्)				
शुक्त	मिथ्यात्व सासादन मित्र अविरत	103 102 98 (+ सम्यक-मिथ्यात्व) 100 (+ अनुपूर्व॑ २, सम्यक-प्रकृति)	6 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति, तीर्यकर, आहारक-द्विक, मनुष्यानुपूर्व॑) 7 11/-देवानुपूर्व॑ 9	1 (मिथ्यात्व) 4 (अनंतानुबंधी ४) 1 (सम्यकमिथ्यात्व) 13 (अप्रत्याख्यानावरण ४, देव-विक, वैक्रियिक द्विक, मनुष्यानुपूर्व॑, अनादेय, अयशःकीर्ति, दुर्भग्न)
	संयमासंयम प्रमत्संयत अप्रमत्संयत	87 81 76	22 28 33	8 (प्रत्याख्यानावरण ४, नीच गोत्र, तिर्यक् गति, तिर्यक् आयु, उद्योता) 5 (स्थान-विक, आहारक-द्विक) 4 (संहनन ३/असंग्रापात्मसुपाटिका, कीलक, अर्द्धनाराच, सम्यक प्रकृति)
	अपर्वकरण अनिवृतिकरण	72 66	37 43	6 (हास्य रति, अरति शोक, भय, जुगादा)
	सूक्ष्मसम्पर्याप	60	49	6 (संज्वलन ३, वेद ३)
	उपरात्मोह	59	50	2 (संहनन २/नाराच, वर्चनाराच)
	क्षीणमोह	57	52	16 (जानवरण ५, दर्शनविक ६/अवर्थि, कैवल, निद्रा, प्रचला, चक्षु, अवक्षु, अंतराय ५)
	संयोगकेवटी	42 (तीर्यकर)	67	42 (वेदनीय २, वृत्तवृषभनाराच संहनन ६, संस्थान, औदैविक-द्विक, तैजस-कर्मणी शरीर, निमिण, शम-अशम, स्प्रिर-अस्प्रिर, विहायेगति २, उच्च गोत्र, मनुष्य २/गति, अस्तु, एंडोस्ट्रिय जाति, वार्चितुष्क, अपुरुलानुचतुष्क, त्रसरचतुष्क, सुभावचतुष्क, दुस्तर, तीर्यकर)
	उदय-योग्य प्रकृतियों 109 = 122 - 13 (आतप, जातिचतुष्क, स्थावरचतुष्क, नरकविक, तिर्यकानुबंधी)			



+ सम्यक्त्व मार्गणा में कर्म का उदय -

विशेषः

सम्यक्त्व मार्गणा में कर्म का उदय						
	उदय	अनुदय			व्युचिति	
उपशम	अविरत	100	0	14 (अप्रत्याख्यानावरण ४, देव-त्रिक, वैक्रियिक द्विक, नरक-गति, अनादेय, अयशःकीर्ति, दुर्भग्न)		
	संयमासंयम	86	14	8 (प्रत्याख्यानावरण ४, नीच गोत्र, तिर्यंच गति, तिर्यंच आयु उद्योत)		
	प्रमत्तसंयत	78	22	3 (स्थान-त्रिक)		
	अप्रभ्रमत्संयत	75	25	3 (संहनन ३) असंप्राप्तासुपाटिका, कीलक, अदर्द्वनाराच्)		
	अपूर्वकरण	72	28	6 (हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुसा)		
	अनिद्वित्तकरण	66	34	6 (संज्ञलन ३, वेद ३)		
	सूक्ष्मसाम्प्राय	60	40	1 (संज्ञलन लोभ)		
उपशान्तमोह						
उदय-योग्य प्रकृतियों 100 = 122 - 22 (मिथ्यात्व, सम्यकमिथ्यात्व, सम्यकत्व, आत्मप्रत्यक्ष, अनंतानुबृती ५, जातिचुक्र, अनुपूर्वी १ तिर्यंच, मनुष्य, अनादेय, अयशःकीर्ति, दुर्भग्न)						
वेदक	अविरत	104	2 (आहारक-द्विक)	17 (अप्रत्याख्यानावरण ४, वैक्रियकअष्टक, अनुपूर्वी २ तिर्यंच, मनुष्य, अनादेय, अयशःकीर्ति, दुर्भग्न)		
	संयमासंयम	87	19	8 (प्रत्याख्यानावरण ४, नीच गोत्र, तिर्यंच गति, तिर्यंच आयु उद्योत)		
	प्रमत्तसंयत	81 (आहारक-द्विक)	25	5 (स्थान-त्रिक, आहारक-द्विक)		
	अप्रभ्रमत्संयत	76	30	76		
उदय-योग्य प्रकृतियों 106 = 122 - 16 (मिथ्यात्व, सम्यकमिथ्यात्व, अनंतानुबृती ५, आत्मप्रत्यक्ष, अनुपूर्वी १, जातिचुक्र, तीर्थकर)						
क्षायिक	अविरत	103	3 (तीर्थकर, आहारक-द्विक)	20 (अप्रत्याख्यानावरण ४, वैक्रियकअष्टक, अनुपूर्वी २ तिर्यंच, मनुष्य), तिर्यंचायु, उद्योत, तिर्यंगाति, अनादेय, अयशःकीर्ति, दुर्भग्न)		
	संयमासंयम	83	23	5 (प्रत्याख्यानावरण ४, नीच गोत्र)		
	प्रमत्तसंयत	80 (आहारक-द्विक)	26	5 (स्थान-त्रिक, आहारक-द्विक)		
	अप्रभ्रमत्संयत	75	31	3 (संहनन ३) असंप्राप्तासुपाटिका, कीलक, अदर्द्वनाराच्)		
	अपूर्वकरण	72	34	6 (हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुसा)		
	अनिद्वित्तकरण	66	40	6 (संज्ञलन ३, वेद ३)		
	सूक्ष्मसाम्प्राय	60	46	1 (संज्ञलन लोभ)		
	उपशान्तमोह	59	47	2 (संहनन २) नाराच, वध्रनाराच्)		
	द्वीपांगमोह	57	49	16 (जानावरण ५, दर्शनावरण ६, अवधि, केवल, निद्रा, प्रचला, बृक्ष, अचक्षु), अंतराय ५		
	सयोगकेवली	42 (तीर्थकर)	64	30 (वेदनीय कोड १), वध्रवध्वनाराच संहनन, ६ संस्थान, औदारिक शरीर-अंगोंपांग, तैजस-कर्मणी शरीर, निमाण स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, अंगुरुलघु उपधात-परधात, उच्चवास, प्रत्येक, शुभ-अशुभ, स्त्रि-अस्त्रि, प्रश्टस्त-अप्रश्टस्त विहायगति, सुखस्त-दुखस्त)		
	अयोगकेवली	12	94	12 (वेदनीय कोड १), उत्त च्योत्र, मनुष्य गति, अनुष्य आयु, पंचेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर, पर्यात, सुभग, आदेय, यशःकीर्ति, तीर्थकर)		
उदय-योग्य प्रकृतियों 106 = 122 - 16 (मिथ्यात्व, सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक, अनंतानुबृती ५, आत्मप्रत्यक्ष, जातिचुक्र)						
मिश्र	उदय-योग्य प्रकृतियों 100 = 122 - 22 (मिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति, अनंतानुबृती ५, आत्मप्रत्यक्ष, जातिचुक्र, तीर्थकर)					
सासादन	उदय-योग्य प्रकृतियों 111 = 122 - 11 (मिथ्यात्व, सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति, सुखस्त, योग्य, आत्मप्रत्यक्ष, आहारक-द्विक, तीर्थकर)					
मिथ्यात्व	उदय-योग्य प्रकृतियों 117 = 122 - 5 (सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति, आहारक-द्विक, तीर्थकर)					

उदय-यात्रा प्रक्रीतया $106 = 122 - 16$ (मिथ्यात्, सम्यकामिथ्यात्, सम्यक्त, अनंतानुबधा ४, आतप, स्थावरचतुष्क, जातिचतुष्क)

+ संज्ञी मार्गणा में कर्म का उदय -
संज्ञी मार्गणा में कर्म का उदय

विशेष :

संज्ञी मार्गणा में कर्म का उदय			
	उदय	अनुदय	व्युच्छिति
संज्ञी	मिथ्यात्व	109	4 (-सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति, आहारक-द्विक)
	सासादन	106	7 (-नरक अनुपूर्व)
	मित्र	100 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	13 (-आनुपूर्व ३ देव, मनुष्य, तिर्यक्)
	अविरत	104 (+ आनुपूर्व ५, सम्यक-प्रकृति)	9
	संयमासंयम	87	26
	प्रमत्तसंयत	81 (+ आहारकद्विक)	32
	अप्रमत्तसंयत	76	37
	अपूर्वकरण	72	41
	अनिवृतिकरण	66	47
	सूक्ष्मसाम्पराय	60	53
अनंत्री	उपशान्तमोह	59	54
	क्षीणमोह	57	56
उदय-योग्य प्रकृतियाँ = 113 = 122 - 9 (आतप, स्थावर, संधारण, सूक्ष्म, जातिचतुष्क, तीर्थकर)			
अनंत्री	मिथ्यात्व	91	0
	सासादन	78	13
उदय-योग्य प्रकृतियाँ = 91 = 122 - 31 (सम्यक-प्रकृति, सम्यकमिथ्यात्व, मनुष्य-त्रिक, देविक-प्रकृति, उच्च-गोव, संहनन, संस्थान, सुभग, सुखर, आदेय, प्रशस्त विहायोगति, आहारकद्विक, तीर्थकर)			

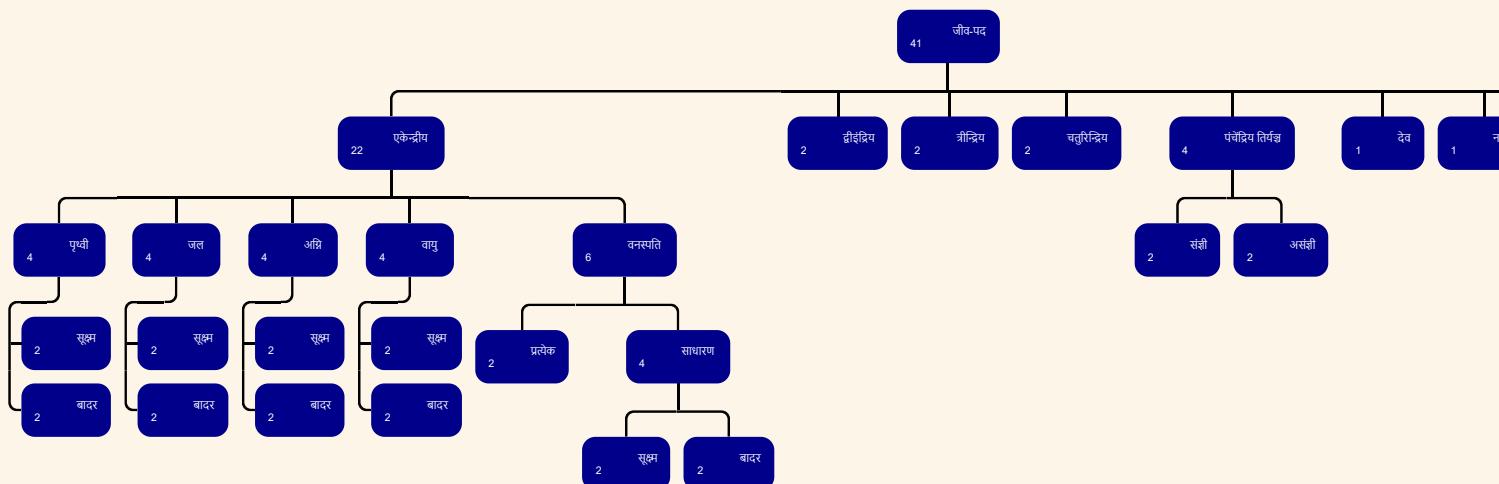
+ आहार मार्गणा में कर्म का उदय -
आहार मार्गणा में कर्म का उदय

विशेष :

आहार मार्गणा में कर्म का उदय			
	उदय	अनुदय	व्युच्छिति
आहारक	मिथ्यात्व	113	5 (-सम्यकमिथ्यात्व, सम्यक प्रकृति, आहारक-द्विक, तीर्थकर)
	सासादन	108	10
	मित्र	100 (+ सम्यक-मिथ्यात्व)	18
	अविरत	100 (+ सम्यक-प्रकृति)	18
	संयमासंयम	87	31
	प्रमत्तसंयत	81 (+ आहारकद्विक)	37
	अप्रमत्तसंयत	76	42
	अपूर्वकरण	72	46
	अनिवृतिकरण	66	52
	सूक्ष्मसाम्पराय	60	58
अनाहारक	उपशान्तमोह	59	59
	क्षीणमोह	57	61
अन्योगकेवली	सयोगकेवली	42 (+ तीर्थकर)	76
	उदय-योग्य प्रकृतियाँ = 118 = 122 - 4 अनुपूर्व	16 (ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ६ अवधि, केवल, नित्रा, प्रचला, चक्षु, अचक्षु, अंतराय ५ गति, आगु, पर्वेद्रिय जाति, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु चतुष्क, त्रस्यावरुष्क, सुभगचतुष्क, दुखर, तीर्थकर)	
अनाहारक	मिथ्यात्व	87	2 (तीर्थकर, सम्यकत्व)
	सासादन	81	8 (-नरकत्रिक)
	अविरत	75 (+ नरकत्रिक)	14
	सयोगकेवली	25 (+ तीर्थकर)	64
	अयोगकेवली	12	77
उदय-योग्य प्रकृतियाँ = 89 = 122 - 33 (स्वर-द्विक, विहायोगति र, प्रयेक, साधारण, आहारक-द्विक, अपूर्वकरण, वैकियिक-द्विक, सम्यक-मिथ्यात्व, उपशान, परशत, उच्छास, आतप, उच्छात, स्थानाविक, संहनन, संस्थान ६)			

+ नाम-कर्म अपेक्षा जीव-पद के 41 भेद -
नाम-कर्म अपेक्षा जीव-पद के 41 भेद

विशेष :



2 भेद = पर्याप्त और अपर्याप्त



+ उदय योग्य पाँच काल - उदय योग्य पाँच काल

विशेष :

उदय योग्य पाँच काल	
विग्रह गति काल	पूर्वभव के शरीर को छोड़कर उत्तरभव ग्रहण करने के अर्थ ममन करने में लगने वाला समय (1 से 4 सम्म)
मित्र शरीर काल	आहार ग्रहण करने से शरीर पर्याप्ति की पूर्णता तक
शरीर पर्याप्ति काल	शरीर पर्याप्ति के पश्चात श्वाच्छोस्वास पर्याप्ति की पूर्णता तक
आनपान पर्याप्ति काल	श्वाच्छोस्वास पर्याप्ति के पश्चात भाषा पर्याप्ति की पूर्णता तक
भाषा पर्याप्ति काल	पूर्ण पर्याप्ति होने के पश्चात आयु के अन्त तक



+ ओघ से एक जीव के एक काल में कर्म-उदय - ओघ से एक जीव के एक काल में होने वाला कर्म-उदय

विशेष :

ओघ से एक जीव के एक काल में होने वाला प्रकृति कर्म-उदय की संख्या										
ज्ञानावरणी	दर्शनावरणी	वेदनीय	मोहनीय			अपु	नाम		गोत्र	अंतराय
प्रकृति	प्रकृति	प्रकृति	स्थान-संख्या	प्रकृति	स्थान	भंग	प्रकृति	स्थान-संख्या	प्रकृति	प्रकृति
अयोगकेवली	0	0						2	8,9	
सयोगकेवली								2	30,31	
क्षीणमोह										0
उपशान्तमोह										
सूक्ष्मसाम्पराय										
अनेवितिकरण										
अपूर्वकरण										
अप्रमत्संयत										
प्रमत्संयत										
देशसंयत										
असंयत										
मित्र										
सासादन										
मिथ्यात्व										
	5	4, 5	1	2, 1	1,1	24,10	1	30		
			3	6, 5, 4	1,2,1		5	25,27,28,29,30		
			4	7, 6, 5, 4	1,3,3,1		2	31,31		
			4	7, 6, 5, 4	1,3,3,1		8	21,25,26,27,28,29,30,31		
			4	8, 7, 6, 5	1,3,3,1		3	29,30,31		
			4	9, 8, 7, 6	1,3,3,1		7	21,24,25,26,29,30,31		
			3	9, 8, 7	1,2,1		9	21,24,25,26,27,28,29,30,31		
			4	10,9,8,7	1,3,3,1	54	1283			

नाम-कर्म की 67 प्रकृतियों में उदय संबंधी नियम

- [धृ/१२] -- 12 ध्रुवोदयी प्रकृतियों (तेजस, कार्मण, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, अगुरुलघु, निर्मण) का उदय इनकी व्युच्छिति तक ध्रुव रूप से होता है।
- [यु/४] -- 8-युगल प्रकृतियों (गति, जाति, त्रस-स्थावर, बादर-सूक्ष्म, पर्याप्त-अपर्याप्त, सुभग-दुर्भग, आदेय-अनादेय, यश-अयश) में से प्रत्येक युगल की अन्यतम एक-एक करके युगपत 8 ही उदय में आती हैं।

- [आनु०१] -- चार आनुपूर्वी में से कोई एक ही का उदय विग्रह-गति में होता है ।
- कार्मण-काल के बाद सभी जीवों को 2 शरीर (औदारिक, वैक्रियिक) में से एक, 6 संस्थान में से एक, प्रत्येक-साधारण में से एक और उपघात इसप्रकार युगपत 4 के उदय का नियम है ।
- शरीर पर्याप्ति के बाद परघात का उदय नियम से है ।
- त्रस-जीव को विग्रह गति के बाद 3 अंगोपांग में से किसी एक का तथा उनमें भी औदारिक शरीर वाले के 6 संहनन में से किसी एक का उदय का नियम है ।
- बादर प्रत्येक तिर्यकों में आतप-उद्योत में से किसी एक का उदय हो सकता है, आतप का उदय पृथ्वी-कायिक में ही और उद्योत का उदय सभी जातियों (1 से 5) में हो सकता है ।
- त्रस-पर्याप्त जीव में प्रशस्त-अप्रशस्त विहायोगति का उदय शरीर पर्याप्ति के बाद नियम से है
- उच्छ्वास का उदय उच्छ्वास पर्याप्ति के बाद सभी जातियों में है
- त्रस-पर्याप्त जीव को भाषा पर्याप्ति के बाद सुस्वर-दुस्वर में से किसी एक के उदय का नियम है ।
- [तीर्थ०१] -- तीर्थकर प्रकृति का उदय भजनीय है ।



+ एक जीव की अपेक्षा नाम कर्म के उदय-स्थान -

एक जीव की अपेक्षा नाम कर्म के उदय-स्थान

विशेष :

		एक जीव की अपेक्षा नाम कर्म के उदय-स्थान	
उदय संख्या	स्थान	प्रकृतियों का विवरण	स्वामी
20	1	धू/12, यु/8 पर्याप्त-पंचेत्रिय-मनुष्य-त्रस-बादर-सुभग-आदेय-यश]	समुद्घात सामान्य के वेती [प्रतर व लोकपूरण]
21	2	धू/12, यु/8, आनु०१	चारों गति के विग्रह-गति में जीव
24	1	धू/12, यु/8 अपर्याप्त-एकेत्रिय-तिर्यक्ष-स्थावर], शा/३, *उपघात	एकेत्रिय के मिश्र शरीर का काल
25	3	धू/12, यु/8 पर्याप्त-एकेत्रिय-तिर्यक्ष-स्थावर], शा/३, उपघात, परघात	एकेत्रिय का शरीर पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8 पर्याप्त-पंचेत्रिय-मनुष्य-त्रस-बादर], शा/३, उपघात, आहारक-अङ्गोपांग	आहारक-शरीर का मिश्र-काल
26	9	धू/12, यु/8 पर्याप्त-एकेत्रिय-तिर्यक्ष-स्थावर], शा/३, उपघात, परघात, आतप / उद्योत	देव-नरकी के शरीर का मिश्र-काल
		धू/12, यु/8 पर्याप्त-एकेत्रिय-तिर्यक्ष-स्थावर], शा/३, उपघात, परघात, उच्छ्वास	एकेत्रिय का शरीर पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, औदारिक-अङ्गोपांग, एक संहनन	ओदारिक-मिश्र काल [2 से 5 इंद्रिय तिर्यक्ष / मनुष्य / सामान्य के वेती]
27	6	धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, आहारक-अङ्गोपांग, प्रशस्त-विहायोगति	आहारक शरीर पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, औदारिक-अङ्गोपांग, वक्रऋषभनाराच-संहनन	तीर्थकर समुद्घात के वेती का ओदारिक-मिश्र काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, वैक्रियिक-अङ्गोपांग, विहायोगति [प्र./अप्र.]	देव-नरकी का शरीर पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आतप / उद्योत	एकेत्रिय का उच्छ्वास पर्याप्ति-काल
28	17	धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, औदारिक-अङ्गोपांग, संहनन [कोई एक], विहायोगति [प्र./अप्र.]	सामान्य मनुष्य और मूल शरीर में प्रवेश करता सामान्य-के वेती का शरीर पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, औदारिक-अङ्गोपांग, सुपाटिका संहनन, विहायोगति [प्र./अप्र.]	2-5 इंद्रिय का शरीर पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, आहारक-अङ्गोपांग, उच्छ्वास, प्र. विहायोगति	आहारक का उच्छ्वास पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, वैक्रियिक-अङ्गोपांग, उच्छ्वास, विहायोगति [प्र./अप्र.]	देव-नरकी का उच्छ्वास पर्याप्ति-काल
29	20	धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, औदारिक-अङ्गोपांग, संहनन [कोई एक], विहायोगति [प्र./अप्र.], उच्छ्वास	सामान्य मनुष्य और मूल शरीर में प्रवेश करता सामान्य-के वेती का उच्छ्वास पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, उद्योत, औदारिक-अङ्गोपांग, सुपाटिका संहनन, विहायोगति [प्र./अप्र.]	2-5 इंद्रिय का उच्छ्वास पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, औदारिक-अङ्गोपांग, सुपाटिका संहनन, विहायोगति [प्र./अप्र.], उच्छ्वास	2-5 इंद्रिय का उच्छ्वास पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, औदारिक-अङ्गोपांग, वक्रऋषभनाराच-संहनन, प्र. विहायोगति, तीर्थकर	समुद्घात तीर्थकर-के वेती का शरीर पर्याप्ति-काल
30	9	धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, उद्योत, औदारिक-अङ्गोपांग, सुपाटिका संहनन, विहायोगति [प्र./अप्र.], उच्छ्वास	आहारक का भाषा पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, औदारिक-अङ्गोपांग, सुपाटिका संहनन, विहायोगति [प्र./अप्र.], सुखर/दुःखर	देव-नरकी का भाषा पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, वैक्रियिक-अङ्गोपांग, उच्छ्वास, विहायोगति [प्र./अप्र.], सुखर/दुःखर	2-5 इंद्रिय का उच्छ्वास पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, औदारिक-अङ्गोपांग, सुपाटिका संहनन, विहायोगति [प्र./अप्र.], उच्छ्वास, तीर्थकर	त्रस उद्योत-सहित तिर्यक्ष व सामान्य मनुष्य का भाषा-पर्याप्ति काल
31	5	धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, औदारिक-अङ्गोपांग, वक्रऋषभनाराच-संहनन, प्र. विहायोगति, उच्छ्वास, तीर्थकर, सुखर	समुद्घात तीर्थकर-के वेती का भाषा पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, औदारिक-अङ्गोपांग, वक्रऋषभनाराच-संहनन, प्र. विहायोगति, उच्छ्वास, सुखर/दुःखर	सामान्य समुद्घात के वेती का भाषा पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, औदारिक-अङ्गोपांग, १ संहनन, विहायोगति [प्र./अप्र.], उच्छ्वास, तीर्थकर, सुखर	तीर्थकर-के वेती का भाषा पर्याप्ति-काल
		धू/12, यु/8, शा/३, उपघात, परघात, उद्योत, औदारिक-अङ्गोपांग, १ संहनन, विहायोगति [प्र./अप्र.], उच्छ्वास, सुखर/दुःखर	त्रस उद्योत-सहित तिर्यक्ष का भाषा-पर्याप्ति काल
8	1	मनुष्य-गति, पंचेत्रिय-जाति, सुभग, आदेय, यश-कीर्ति, त्रस, बादर, पर्याप्ति	अयोग-के वेती तीर्थकर
9	1	मनुष्य-गति, पंचेत्रिय-जाति, सुभग, आदेय, यश-कीर्ति, त्रस, बादर, पर्याप्ति, तीर्थकर	अयोग-के वेती तीर्थकर

धू/12 = धूवोटदी 12 (तेजस, कामणि, वर्ण-चतुष्क. खिर-जल्विर, शुभ-अद्युत, अग्नलघु निर्माण)

यु/8 = युग्म ४/४ गति, ५ जाति, त्रस-स्थावर, बादर-सुभग, पर्याप्ति, सुभग-दुर्भग, आदेय-अनादेय, यश-अभ्युग्म ४/४ योगलोकी की कुल २२ प्रकृतियों में से प्रत्येक-युग्मल में से १, इसप्रकार युग्मत ८ का ही उदय होता है।

शा/३ = शरीर आदि ३ (शरीर/ओदारिक, वैक्रियिक, आहारक), ६ संस्थान, प्रत्येक-साधारण में से युग्मत ३ का ही उदय होता है।



+ नाम-कर्म उदय-स्थान जीव-समास प्ररूपणा -

नाम-कर्म उदय-स्थान जीव-समास प्ररूपणा

विशेष :

नाम-कर्म उदय-स्थान जीव-समास प्ररूपणा

भंग	उदय-स्थान	स्वामी
लक्ष्यपर्याप्ति	21, 24	सुख बादर एकेत्रिय

	2	21, 26	विकलेंद्रिय
	2	21, 26	संज्ञी असंज्ञी पंचेन्द्रिय
पर्याप्ति	4	21, 24, 25, 26	सुक्ष्म एकेन्द्रिय
	5	21, 24, 25, 26, 27	बादर एकेन्द्रिय
	5	21, 26, 28, 29, 31	विकलेंद्रिय
	5	21, 26, 28, 29, 31	असंज्ञी पंचेन्द्रिय
	8	21, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31	संज्ञी पंचेन्द्रिय



+ नाम-कर्म के उदय-स्थानों का यंत्र

नाम-कर्म के उदय-स्थानों का यंत्र

विशेष :

नाम-कर्म के उदय-स्थानों का यंत्र							
कार्मण काल		शरीर-मित्र काल		शरीर-प्रयापि काल		उच्चास-पर्यापि काल	भाषा-पर्यापि काल
तिर्प्ति	स्थावर	21 (20 + तिर्प्तिशुभ्रपूर्णी)	24 (20 + औदारिक-शरीर + हुङ्कर-संस्थान + प्रत्येक साधारण + उपधात)	25 / 26 (24 + परघात + आतप उद्घोरत)	26 / 27 (+उच्चास)	-na-	
	त्रस	21 (20 + तिर्प्तिशुभ्रपूर्णी)	26 (20 + 6 औदारिक-शरीर व अंगोपायं + १-संस्थान + प्रत्येक + उपघात + १-संहन)	28 / 29 (26 + परघात + विहायोगति + उद्घोरत)	29 / 30 (+उच्चास)	30 / 31 (+ स्वर)	
देव		21 (20 + देवनपूर्णी)	25 (20 + वैकिपिक-शरीर व अंगोपायं + समवृत्तस-संस्थान + प्रत्येक + उपघात)	27 (25 + परघात + प्रशस्त-विहायोगति)	28 (27 + उच्चास)	29 (28 + सुखर)	
नारकी		21 (20 + नरकाशुभ्रपूर्णी)	25 (20 + वैकिपिक-शरीर व अंगोपायं + हुङ्कर-संस्थान + प्रत्येक + उपघात)	27 (25 + परघात + अप्रशस्त-विहायोगति)	28 (27 + उच्चास)	29 (28 + दुर्स्वर)	
मनुष्य		21 (20 + मनुष्याशुभ्रपूर्णी)	26 (20 + औदारिक-शरीर व अंगोपायं + १-संस्थान + प्रत्येक + उपघात + १-संहन)	28 (26 + परघात + विहायोगति)	29 (+उच्चास)	30 (29 + स्वर)	
आहारक-जारी		-na-	25 (20 + आहारक-शरीर व अंगोपायं + समवृत्तस-संस्थान + प्रत्येक + उपघात)	27 (25 + परघात + प्रशस्त-विहायोगति)	28 (27 + उच्चास)	29 (28 + सुखर)	
सामान्य-केवती		20	26 (20 + औदारिक-शरीर व अंगोपायं + १-संस्थान + प्रत्येक + उपघात + वज्रऋबन्नाराच-संहन)	28 (26 + परघात + विहायोगति)	29 (28 + उच्चास)	30 (29 + स्वर)	
तीर्त्यकर-केवती		21 (20 + तीर्त्यकर)	27 (21 + औदारिक-शरीर व अंगोपायं + समवृत्तस-संस्थान + प्रत्येक + उपघात + वज्रऋबन्न-नाराच-संहन)	29 (27+ परघात + प्रशस्त-विहायोगति)	30 (29 + उच्चास)	31 (30 + सुखर)	



+ नाम-कर्म के उदय-स्थानों के भंग का यंत्र .

नाम-कर्म के उदय-स्थानों के भंग का यंत्र

विशेष :



[±] नाम कर्म के उदय-स्थान में जीव-पद अपेक्षा भंग -

नाम कर्म के उदय-स्थान में जीव-पद अपेक्षा भंग

विशेष :

		विकलत्रय और असंजी	8		8		8		-na-											
		बादर -- पृथी, अप तेज, वायु, प्र. वनस्पति	10		10		6													
		सूक्ष्म 5*, बादर साधारण वनस्पति	6		6		-na-													
		लब्ध्यपर्याप्ति 17 (पृथीकाकापाति)	17		17		-na-													
		*समुद्रधात तीर्थकर केवली	1															1		
उदय-स्पान	काल	स्वामी		सामान्य	मिथ्यात्म	सासादन	मिश्र	अविरत स.	देशविरत	प्रमत्तविरत	अप्रमत्तविरत	उपशम-त्रेणी	क्षपक-त्रेणी	संयोग-केवली						
				भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग			
24	मिश्र शरीर	बादर -- पृथी, अप तेज, वायु, प्र. वनस्पति	10		27	10	6	-na-	-na-	-na-	-na-	-na-	-na-	-na-	-na-	-na-	-na-	-na-		
		सूक्ष्म 5*, बादर साधारण वनस्पति	6		6		-na-													
		लब्ध्यपर्याप्ति 11 (एकान्द्रिय)	11		11															
25	मिश्र-शरीर	देव, नारकी, आहारक-शरीरी	3		19	2	1		2		1									
	शरीर-पर्याप्ति	बादर -- पृथी, अप तेज, वायु, प्र. वनस्पति	10		10	18	-na-	1	-na-	2	-na-	1		1	-na-	-na-	-na-	-na-		
		सूक्ष्म 5, बादर साधारण वनस्पति	6		6															
उदय-स्पान	काल	स्वामी		सामान्य	मिथ्यात्म	सासादन	मिश्र	अविरत स.	देशविरत	प्रमत्तविरत	अप्रमत्तविरत	उपशम-त्रेणी	क्षपक-त्रेणी	संयोग-केवली						
				भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग			
26	शरीर-मिश्र	विकलत्रय और असंजी	8		8		8		-na-									-na-		
		संजी तिर्यङ्ग	288		288		288		1									6		
		मनुष्य	288		288		288		36									6		
		सामान्य समुद्रधात केवली	6		-na-															
		लब्ध्यपर्याप्ति 6 (त्रिय)	6		6		614		584		-na-		37	-na-	-na-	-na-	-na-			
	शरीर-पर्याप्ति	बादर पृथीकायिक आतप	2		2		-na-		-na-		-na-									
		उद्योत 3 (पृथी, अप, वनस्पति)	6		6															
	उच्चास-पर्याप्ति	बादर -- पृथी, अप तेज, वायु, प्र. वनस्पति	10		10		-na-													
		सूक्ष्म 5, बादर साधारण वनस्पति	6		6															
उदय-स्पान	काल	स्वामी		सामान्य	मिथ्यात्म	सासादन	मिश्र	अविरत स.	देशविरत	प्रमत्तविरत	अप्रमत्तविरत	उपशम-त्रेणी	क्षपक-त्रेणी	संयोग-केवली						
				भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग			
27	शरीर-मिश्र	तीर्थकर समुद्रधात केवली	1		-na-													1		
	शरीर-पर्याप्ति	देव, नारकी, आहारक-शरीरी	3		2		10	-na-	-na-	-na-	-na-	-na-	2	-na-	1	-na-	-na-	1		
	उच्चास-पर्याप्ति	बादर पृथीकायिक आतप	2		2		-na-		-na-		-na-		0	-na-	1	-na-	-na-	-na-		
		उद्योत 3 (पृथी, अप, वनस्पति)	6		6															
28	शरीर-पर्याप्ति	सामान्य समुद्रधात केवली	12		-na-													12		
		मनुष्य	576		576													12		
		संजी तिर्यङ्ग	576		576		1162	-na-	-na-	-na-	-na-	-na-	72	-na-	1	-na-	-na-	12		
		विकलत्रय और असंजी	8		8															
	उच्चास-पर्याप्ति	देव, नारकी, आहारक-शरीरी	3		2															
उदय-स्पान	काल	स्वामी		सामान्य	मिथ्यात्म	सासादन	मिश्र	अविरत स.	देशविरत	प्रमत्तविरत	अप्रमत्तविरत	उपशम-त्रेणी	क्षपक-त्रेणी	संयोग-केवली						
				भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग			
29	शरीर-पर्याप्ति	तीर्थकर समुद्रधात केवली	1		-na-													1		
		संजी तिर्यङ्ग उद्योत	576		576													12		
	उद्योत-युक्त विकलत्रय और असंजी	8			8															
	उच्चास-पर्याप्ति	सामान्य समुद्रधात केवली	12		-na-															
		मनुष्य	576		576															
		संजी तिर्यङ्ग	576		576															
		विकलत्रय और असंजी	8		8															
	भाषा-पर्याप्ति	देव, नारकी, आहारक-शरीरी	3		2															
उदय-स्पान	काल	स्वामी		सामान्य	मिथ्यात्म	सासादन	मिश्र	अविरत स.	देशविरत	प्रमत्तविरत	अप्रमत्तविरत	उपशम-त्रेणी	क्षपक-त्रेणी	संयोग-केवली						
				भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग	भंग	कुल-भंग			
30	उच्चास-पर्याप्ति	तीर्थकर समुद्रधात केवली	1		-na-													1		
		संजी तिर्यङ्ग उद्योत	576		576													1		
	उद्योत-युक्त विकलत्रय और असंजी	8			8															
	भाषा-पर्याप्ति	सामान्य केवली	24		2921		2896		2304		2304		2305		288		144		25	
		मनुष्य	1152		1152		1152		1152		1152		1152		144		144			
		संजी तिर्यङ्ग	1152		1152		1152		1152		1152		1152		144		144			
		विकलत्रय और असंजी	8		8															
31	भाषा-पर्याप्ति	तीर्थकर केवली	1		-na-													1		
		संजी तिर्यङ्ग उद्योत	1152		1152													1		
		उद्योत-युक्त विकलत्रय और असंजी	8		8															
		कुल भंग	7758		7692		4080		3458		3653		432		148		144		72	
																			60	

*सूक्ष्म 5 = पृथी, अप तेज, वायु, वनस्पति

केवली में कार्यालय-काल प्रतर और लोकपूर्ख समुद्रधात के 3 समय का काल है।

केवली समुद्रधात में उदयस्पान - देव (30/31) > कायाट मिश्र (26/27) > प्रतर+लोकपूर्ख (20/21) > कायाट मिश्र (26/27) > शरीर-पर्याप्ति (28/29) > उच्चास पर्याप्ति (29/30) > भाषा-पर्याप्ति (30/31)



+ आदेश से एक जीव के एक काल में नाम कर्म-उदय -

आदेश से एक जीव के एक काल में होने वाला नाम कर्म-उदय

विशेष :

नाम-कर्म उदय-स्थान आदेश प्रस्तुपणा		
मार्गणि	स्थान	उदय-स्थान
गति	नरक	5 21, 25, 27, 28, 29
	तिर्यच्च	9 21, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31
	मनुष्य	11 20, 21, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 8, 9
	हव	5 21, 25, 27, 28, 29
इतिहास	एकेन्द्रिय	5 21, 24, 25, 26, 27
	विकलत्रय	6 21, 26, 28, 29, 30, 31
	चंचेद्रिय	10 21, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 9, 8
काय	पृथ्वी, जल, वनस्पति	5 21, 24, 25, 26, 27
	तेज, वायु	4 21, 24, 25, 26
	त्रस	10 21, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 9, 8
योग	4 मन	3 29, 30, 31 (<i>पञ्चेद्रिय संज्ञी पर्याप्ति वत्</i>)
	3 वर्चन (- अनुभव)	3 29, 30, 31 (<i>पञ्चेद्रिय संज्ञी पर्याप्ति वत्</i>)
	अनुभव-वर्चन	3 29, 30, 31 (<i>त्रस-पर्याप्ति वत्</i>)
	ओदारिक-काय	7 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31 (<i>त्रस-पर्याप्ति वत्</i>)
	ओदारिक-मिश्र	3 24, 26, 27 (<i>सातों अपर्याप्ति वत्</i>)
	कार्मण	2 20, 21
	वैक्रियिक	3 27, 28, 29
	वैक्रियिक-मिश्र	1 25
	आहारक	3 27, 28, 29
	आहारक-मिश्र	1 25
वेद	स्त्री	8 21, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31
	पुरुष	8 21, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31
	नपुसक	9 21, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31
कथाय		
ज्ञान	कुमारि-कुश्त्रत	9 21, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31
	विभग	3 29, 30, 31
	मति, श्रुति, अवधि	8 21, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31
	मन-पर्यय	1 30
	केवल	10 20, 21, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 9, 8
संयम	सामाधिक / छेदोपस्थापना	5 25, 27, 28, 29, 30
	परिहारविशुद्धि	1 30
	सूक्ष्मसाम्प्रशय	1 30
	यथाख्यात	4 30, 31, 9, 8
	देशाविरत	10 20, 21, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 9, 8
	अर्थम	2 30, 31
दर्शन	चक्र	8 21, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31
	अचक्र	9 21, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31
	अवधि	8 21, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31
	केवल	10 20, 21, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 9, 8
त्वेष्या	कृष्ण, नील, कापोत	9 21, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31
	पीत, पद्म	7 21, 25, 27, 28, 29, 30, 31
	शुक्ल	7 21, 25, 27, 28, 29, 30, 31
	शुक्ल (केवली सम्पूर्णता)	8 20, 21, 26, 27, 28, 29, 30, 31
भव्य	भव्य	12 20, 21, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 9, 8
	अभव्य	9 21, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31
सम्प्रकृत	क्षायिक	11 20, 21, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 9, 8
	देवक	8 20, 21, 26, 27, 28, 29, 30, 31
	उपशम	5 21, 25, 29, 30, 31
	मिश्र	3 29, 30, 31
	सासादन	7 21, 24, 25, 26, 29, 30, 31
	मियात्र	9 21, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31
संज्ञी	संज्ञी	8 21, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31
	असंज्ञी	7 21, 24, 26, 28, 29, 30, 31
आहारक	आहारक	8 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31
	अनाहारक (संयोगी)	2 20, 21
	अनाहारक (अयोगी)	2 9, 8



कर्म-सत्त्व



+ नरक गति मार्गणा में सत्त्व -
नरक गति मार्गणा में सत्त्व

विशेष :

नरक गति मार्गणा में सत्त्व			
	सत्त्व	असत्त्व	
1-3	मिथ्यात्व	147	0
	सासादन	144	3 (तीर्थकर, आहारक-द्विक)
	मिश्र	146	1 (तीर्थकर)
	अविरत क्षायोपशमिक / औपशमिक	147	0
4-6	क्षायिक* (प्रथम नरक)	140	7 (अनंतानुबंधी ४, दर्शन-मोहनीय ३)
	सत्त्व योग्य प्रकृतियों = 147 (148 - देवायु)		
	सत्त्व	असत्त्व	
4-6	मिथ्यात्व	146	0
	सासादन	144	2 (आहारक-द्विक)
	मिश्र	146	0
	अविरत	146	0
सत्त्व योग्य प्रकृतियों = 146 (148 - देवायु, तीर्थकर)			
	सत्त्व	असत्त्व	
7	मिथ्यात्व	145	0
	सासादन	143	2 (आहारक-द्विक)
	मिश्र	145	0
	अविरत	145	0
सत्त्व योग्य प्रकृतियों = 145 (148 - देवायु, मनुष्यायु, तीर्थकर)			



+ तिर्यक्ष गति मार्गणा में सत्त्व -
तिर्यक्ष गति मार्गणा में सत्त्व

विशेष :

तिर्यक्ष गति मार्गणा में सत्त्व			
	सत्त्व	असत्त्व	व्युच्छिति
सामान्य, पंचेत्रिय, पंचेत्रिय पर्याप्त, योनिमति	मिथ्यात्व	147	0
	सासादन	145	2 (आहारक-द्विक)
	मिश्र	147	0
	अविरत क्षायोपशमिक / औपशमिक	147	0
	क्षायिक* (भोग-भूषि)	140	7 (अनंतानुबंधी ४, दर्शन-मोहनीय ३)
	संयमासंयम	145	2
	सत्त्व योग्य प्रकृतियों = 147 (148 - तीर्थकर)		
	सत्त्व	असत्त्व	
लब्ध्यपर्याप्त	मिथ्यात्व	145	3 (तीर्थकर, देवायु, नरकायु)



+ मनुष्य गति मार्गणा में सत्त्व -
मनुष्य गति मार्गणा में सत्त्व

विशेष :

मनुष्य गति मार्गणा में सत्त्व			
	सत्त्व	असत्त्व	व्युच्छिति
सामान्य, पर्याप्त, योनिमति*	मिथ्यात्व	148	0
	सासादन	145	3 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर)
	मिश्र	147	1 (-तीर्थकर)
	अविरत	148	0
	संयमासंयम	146	2
	प्रमत्तसंयत		
	अप्रमत्तसंयत		
	अपर्वकरण	146/-142	
	अनिवृत्तिकरण		2 (आयुर-नरक, तिर्यक्ष)
	सूक्ष्मसाम्प्रदाय		
	उपशान्तमोह		4 * (अनंतानुबंधी ४)
	क्षीणमोह	101	47
	सयोगकेवली	85	63
	अयोगकेवली	85	63
	सत्त्व योग्य प्रकृतियों = 148		
क्षपक-श्रेणी के अपर्वकरण पुण्यस्थान में देवायु और मोहनीय की सात प्रकृतियों की सत्ता नहीं है			



+ देव गति मार्गणा में सत्त्व -

देव गति मार्गणा में सत्त्व

विशेष :

देव गति मार्गणा में सत्त्व

देव गति मार्गणा में सत्त्व		
	सत्त्व	असत्त्व
मिथ्यात्व	146	0
सासादन	144	2 (-आहारक-द्विक)
भवनवासी देव, देवियाँ	मित्र	146 0
अविरत	146	0
सत्त्व योग्य प्रकृतियों 146 = 148 - 2 (तीर्पकर, नरकायु)		
सौर्धम से सहसार		
मिथ्यात्व	146	1 (-तीर्पकर)
सासादन	144	2 (-आहारक-द्विक, तीर्पकर)
मित्र	146	1 (-तीर्पकर)
अविरत	147	0
सत्त्व योग्य प्रकृतियों 147 = 148 - 1 (नरकायु)		
आनन्द से 9 ग्रेवैषिक		
मिथ्यात्व	145	1 (-तीर्पकर)
सासादन	143	3 (-आहारक-द्विक, तीर्पकर)
मित्र	145	1 (-तीर्पकर)
अविरत	146	0
सत्त्व योग्य प्रकृतियों 146 = 148 - 2 (नरकायु तिर्पञ्जायु)		
9 अनुदिशा, 5 अनुचर		
अविरत	146	0
सत्त्व योग्य प्रकृतियों 146 = 148 - 2 (नरकायु तिर्पञ्जायु)		



+ इंद्रिय और काय मार्गणा में सत्त्व -

इंद्रिय और काय मार्गणा में सत्त्व

विशेष :

इंद्रिय और काय मार्गणा में सत्त्व

इंद्रिय और काय मार्गणा में सत्त्व		
	सत्त्व	असत्त्व
1,2,3,4 इंद्रिय	मिथ्यात्व	145 0
	सासादन	143 2 (-आहारक-द्विक)
	सत्त्व योग्य प्रकृतियों 145 = 148 - 3 (तीर्पकर, नरकायु देवायु)	
पचेंद्रिय	सत्त्व योग्य प्रकृतियों 148, युग्मस्थान 1 से 14, सामान्यवद्	
लब्ध्यपर्याप्ति	सत्त्व योग्य प्रकृतियों 145 = 148 - 3 (तीर्पकर, नरकायु देवायु)	
काय		
अग्नि, वायु	मिथ्यात्व	144 0
	सत्त्व योग्य प्रकृतियों 144 = 148 - 4 (तीर्पकर, नरकायु वेगायु, मनुष्यायु)	
पथ्य, जल, वनस्पति	मिथ्यात्व	145 0
	सासादन	143 2 (-आहारक-द्विक)
	सत्त्व योग्य प्रकृतियों 145 = 148 - 3 (तीर्पकर, नरकायु देवायु)	
त्रस	सत्त्व योग्य प्रकृतियों 148, युग्मस्थान 1 से 14, सामान्यवद्	



+ उद्वेलना का क्रम -

उद्वेलना का क्रम

आहारक-द्विक -> सम्पर्कव-प्रकृति -> सम्पर्कमिथ्यात्व -> देव-गति / देव-गत्यानुपूर्वी -> नरक-गति / नरक-गत्यानुपूर्वी / वैक्रियिक-शरीर / वैक्रियिक-अंगोपांग -> उच्च-गोत्र -> मनुष्य-गति / मनुष्य-गत्यानुपूर्वी



+ योग मार्गणा में सत्त्व -

योग मार्गणा में सत्त्व

विशेष :

योग मार्गणा में सत्त्व																																																
सत्त्व	असत्त्व																																															
सत्त्व और अनुभय मन / वचन	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148 गुणस्थान 1 से 13, सामान्यवत्																																															
असत्त्व और उभय मन / वचन	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148 गुणस्थान 1 से 12, सामान्यवत्																																															
औदारिक	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148, गुणस्थान 1 से 13, सामान्यवत्																																															
आहारक / आहारक-मिश्र	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 = 148 - 2 (नरकायु तिर्यजायु, गुणस्थान 1 / प्रमत्संस्कर)																																															
सत्त्व	असत्त्व																																															
वैक्रियिक	<table border="1"> <thead> <tr> <th>मिथ्यात्व</th> <th>148</th> <th>0</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>सासादन</td> <td>145</td> <td>3 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर)</td> </tr> <tr> <td>मिश्र</td> <td>147</td> <td>1 (-तीर्थकर)</td> </tr> <tr> <td>अविरत</td> <td>148</td> <td>0</td> </tr> <tr> <td colspan="2">सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148</td></tr> </tbody> </table>	मिथ्यात्व	148	0	सासादन	145	3 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर)	मिश्र	147	1 (-तीर्थकर)	अविरत	148	0	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148																																		
मिथ्यात्व	148	0																																														
सासादन	145	3 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर)																																														
मिश्र	147	1 (-तीर्थकर)																																														
अविरत	148	0																																														
सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148																																																
वैक्रियिक मिश्र	<table border="1"> <thead> <tr> <th>मिथ्यात्व</th> <th>146</th> <th>0</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>सासादन</td> <td>142</td> <td>4 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर, नरकायु)</td> </tr> <tr> <td>अविरत</td> <td>146</td> <td>0</td> </tr> <tr> <td colspan="2">सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 = 148 - 2 तिर्यजायु भन्नायु</td></tr> <tr> <th>सत्त्व</th><th>असत्त्व</th></tr> <tr> <td>औदारिक-मिश्र</td><td> <table border="1"> <thead> <tr> <th>मिथ्यात्व</th> <th>145</th> <th>1 (तीर्थकर)</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>सासादन</td> <td>143</td> <td>3 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर)</td> </tr> <tr> <td>अविरत</td> <td>146</td> <td>0</td> </tr> <tr> <td>सयोग-केवली</td> <td>85</td> <td>61</td> </tr> <tr> <td colspan="2">सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 = 148 - 2 तिर्यजायु नरकायु</td></tr> <tr> <th>सत्त्व</th><th>असत्त्व</th></tr> <tr> <td>कार्मण</td><td> <table border="1"> <thead> <tr> <th>मिथ्यात्व</th> <th>148</th> <th>0</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>सासादन</td> <td>144</td> <td>4 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर, नरकायु)</td> </tr> <tr> <td>अविरत</td> <td>148</td> <td>0</td> </tr> <tr> <td>सयोग-केवली</td> <td>85</td> <td>63</td> </tr> <tr> <td colspan="2">सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148</td></tr> </tbody> </table> </td></tr> </tbody> </table> </td></tr></tbody></table>	मिथ्यात्व	146	0	सासादन	142	4 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर, नरकायु)	अविरत	146	0	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 = 148 - 2 तिर्यजायु भन्नायु		सत्त्व	असत्त्व	औदारिक-मिश्र	<table border="1"> <thead> <tr> <th>मिथ्यात्व</th> <th>145</th> <th>1 (तीर्थकर)</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>सासादन</td> <td>143</td> <td>3 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर)</td> </tr> <tr> <td>अविरत</td> <td>146</td> <td>0</td> </tr> <tr> <td>सयोग-केवली</td> <td>85</td> <td>61</td> </tr> <tr> <td colspan="2">सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 = 148 - 2 तिर्यजायु नरकायु</td></tr> <tr> <th>सत्त्व</th><th>असत्त्व</th></tr> <tr> <td>कार्मण</td><td> <table border="1"> <thead> <tr> <th>मिथ्यात्व</th> <th>148</th> <th>0</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>सासादन</td> <td>144</td> <td>4 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर, नरकायु)</td> </tr> <tr> <td>अविरत</td> <td>148</td> <td>0</td> </tr> <tr> <td>सयोग-केवली</td> <td>85</td> <td>63</td> </tr> <tr> <td colspan="2">सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148</td></tr> </tbody> </table> </td></tr> </tbody> </table>	मिथ्यात्व	145	1 (तीर्थकर)	सासादन	143	3 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर)	अविरत	146	0	सयोग-केवली	85	61	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 = 148 - 2 तिर्यजायु नरकायु		सत्त्व	असत्त्व	कार्मण	<table border="1"> <thead> <tr> <th>मिथ्यात्व</th> <th>148</th> <th>0</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>सासादन</td> <td>144</td> <td>4 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर, नरकायु)</td> </tr> <tr> <td>अविरत</td> <td>148</td> <td>0</td> </tr> <tr> <td>सयोग-केवली</td> <td>85</td> <td>63</td> </tr> <tr> <td colspan="2">सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148</td></tr> </tbody> </table>	मिथ्यात्व	148	0	सासादन	144	4 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर, नरकायु)	अविरत	148	0	सयोग-केवली	85	63	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148	
मिथ्यात्व	146	0																																														
सासादन	142	4 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर, नरकायु)																																														
अविरत	146	0																																														
सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 = 148 - 2 तिर्यजायु भन्नायु																																																
सत्त्व	असत्त्व																																															
औदारिक-मिश्र	<table border="1"> <thead> <tr> <th>मिथ्यात्व</th> <th>145</th> <th>1 (तीर्थकर)</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>सासादन</td> <td>143</td> <td>3 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर)</td> </tr> <tr> <td>अविरत</td> <td>146</td> <td>0</td> </tr> <tr> <td>सयोग-केवली</td> <td>85</td> <td>61</td> </tr> <tr> <td colspan="2">सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 = 148 - 2 तिर्यजायु नरकायु</td></tr> <tr> <th>सत्त्व</th><th>असत्त्व</th></tr> <tr> <td>कार्मण</td><td> <table border="1"> <thead> <tr> <th>मिथ्यात्व</th> <th>148</th> <th>0</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>सासादन</td> <td>144</td> <td>4 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर, नरकायु)</td> </tr> <tr> <td>अविरत</td> <td>148</td> <td>0</td> </tr> <tr> <td>सयोग-केवली</td> <td>85</td> <td>63</td> </tr> <tr> <td colspan="2">सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148</td></tr> </tbody> </table> </td></tr> </tbody> </table>	मिथ्यात्व	145	1 (तीर्थकर)	सासादन	143	3 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर)	अविरत	146	0	सयोग-केवली	85	61	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 = 148 - 2 तिर्यजायु नरकायु		सत्त्व	असत्त्व	कार्मण	<table border="1"> <thead> <tr> <th>मिथ्यात्व</th> <th>148</th> <th>0</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>सासादन</td> <td>144</td> <td>4 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर, नरकायु)</td> </tr> <tr> <td>अविरत</td> <td>148</td> <td>0</td> </tr> <tr> <td>सयोग-केवली</td> <td>85</td> <td>63</td> </tr> <tr> <td colspan="2">सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148</td></tr> </tbody> </table>	मिथ्यात्व	148	0	सासादन	144	4 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर, नरकायु)	अविरत	148	0	सयोग-केवली	85	63	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148																
मिथ्यात्व	145	1 (तीर्थकर)																																														
सासादन	143	3 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर)																																														
अविरत	146	0																																														
सयोग-केवली	85	61																																														
सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 = 148 - 2 तिर्यजायु नरकायु																																																
सत्त्व	असत्त्व																																															
कार्मण	<table border="1"> <thead> <tr> <th>मिथ्यात्व</th> <th>148</th> <th>0</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>सासादन</td> <td>144</td> <td>4 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर, नरकायु)</td> </tr> <tr> <td>अविरत</td> <td>148</td> <td>0</td> </tr> <tr> <td>सयोग-केवली</td> <td>85</td> <td>63</td> </tr> <tr> <td colspan="2">सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148</td></tr> </tbody> </table>	मिथ्यात्व	148	0	सासादन	144	4 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर, नरकायु)	अविरत	148	0	सयोग-केवली	85	63	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148																																		
मिथ्यात्व	148	0																																														
सासादन	144	4 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर, नरकायु)																																														
अविरत	148	0																																														
सयोग-केवली	85	63																																														
सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148																																																



+ वेद, कषाय और ज्ञान मार्गणा में सत्त्व -

वेद, कषाय और ज्ञान मार्गणा में सत्त्व

विशेष :

वेद, कषाय और ज्ञान मार्गणा में सत्त्व										
	सत्त्व	असत्त्व								
वेद	<table border="1"> <thead> <tr> <th>पुरुष</th> <th>सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148 गुणस्थान 1 से 9, सामान्यवत्</th> </tr> </thead> </table>	पुरुष	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148 गुणस्थान 1 से 9, सामान्यवत्							
पुरुष	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148 गुणस्थान 1 से 9, सामान्यवत्									
	<table border="1"> <thead> <tr> <th>स्त्री, नर्पुसक</th> <th>सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148 गुणस्थान 1 से 9, क्षपक-शेषी में तीर्थकर का सत्त्व नहीं</th> </tr> </thead> </table>	स्त्री, नर्पुसक	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148 गुणस्थान 1 से 9, क्षपक-शेषी में तीर्थकर का सत्त्व नहीं							
स्त्री, नर्पुसक	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148 गुणस्थान 1 से 9, क्षपक-शेषी में तीर्थकर का सत्त्व नहीं									
कषाय	<table border="1"> <thead> <tr> <th>क्रोध, मान, माया</th> <th>सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148, गुणस्थान 1 से 9, सामान्यवत्</th> </tr> </thead> </table>	क्रोध, मान, माया	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148, गुणस्थान 1 से 9, सामान्यवत्							
क्रोध, मान, माया	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148, गुणस्थान 1 से 9, सामान्यवत्									
	<table border="1"> <thead> <tr> <th>लोभ</th> <th>सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148, गुणस्थान 1 से 10, सामान्यवत्</th> </tr> </thead> </table>	लोभ	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148, गुणस्थान 1 से 10, सामान्यवत्							
लोभ	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148, गुणस्थान 1 से 10, सामान्यवत्									
ज्ञान	सत्त्व	असत्त्व								
<table border="1"> <thead> <tr> <th>कुमति, कुश्रुत, विभंगावधि</th> <th>मिथ्यात्व</th> <th>148</th> <th>0</th> </tr> </thead> </table>	कुमति, कुश्रुत, विभंगावधि	मिथ्यात्व	148	0	<table border="1"> <thead> <tr> <th>सासादन</th> <th>145</th> <th>3 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर)</th> </tr> </thead> </table>	सासादन	145	3 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर)		
	कुमति, कुश्रुत, विभंगावधि	मिथ्यात्व	148	0						
	सासादन	145	3 (-आहारक-द्विक, तीर्थकर)							
		<table border="1"> <thead> <tr> <th>सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148</th> <th></th> <th></th> </tr> </thead> </table>	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148							
सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148										
<table border="1"> <thead> <tr> <th>मति, श्रुत, अवधि</th> <th>सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148, गुणस्थान 4 से 12, सामान्यवत्</th> <th></th> <th></th> </tr> </thead> </table>	मति, श्रुत, अवधि	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148, गुणस्थान 4 से 12, सामान्यवत्								
	मति, श्रुत, अवधि	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148, गुणस्थान 4 से 12, सामान्यवत्								
<table border="1"> <thead> <tr> <th>मनःपर्यय</th> <th>सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 = 148 - 2 (नरकायु तिर्यजायु, गुणस्थान 6 से 12, सामान्यवत्)</th> <th></th> <th></th> </tr> </thead> </table>	मनःपर्यय	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 = 148 - 2 (नरकायु तिर्यजायु, गुणस्थान 6 से 12, सामान्यवत्)			<table border="1"> <thead> <tr> <th>सयोगकेवली</th> <th>85</th> <th>0</th> </tr> </thead> </table>	सयोगकेवली	85	0		
	मनःपर्यय	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 = 148 - 2 (नरकायु तिर्यजायु, गुणस्थान 6 से 12, सामान्यवत्)								
	सयोगकेवली	85	0							
<table border="1"> <thead> <tr> <th>केवल</th> <th>सयोगकेवली</th> <th>85</th> <th>0, 72 (चरम-समय)</th> </tr> </thead> </table>	केवल	सयोगकेवली	85	0, 72 (चरम-समय)						
	केवल	सयोगकेवली	85	0, 72 (चरम-समय)						
	<table border="1"> <thead> <tr> <th>सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 85, सामान्यवत्</th> <th></th> <th></th> </tr> </thead> </table>	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 85, सामान्यवत्								
सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 85, सामान्यवत्										



+ संयम और दर्शन मार्गणा में सत्त्व -

संयम और दर्शन मार्गणा में सत्त्व

विशेष :

संयम और दर्शन मार्गणा में सत्त्व					
	सत्त्व	असत्त्व			
संयम	<table border="1"> <thead> <tr> <th>असंयम</th> <th>सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148, गुणस्थान 1 से 4, सामान्यवत्</th> </tr> </thead> </table>	असंयम	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148, गुणस्थान 1 से 4, सामान्यवत्		
असंयम	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 148, गुणस्थान 1 से 4, सामान्यवत्				
	<table border="1"> <thead> <tr> <th>संयमासंयम</th> <th>सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 147, नरकायु का सत्त्व नहीं, सामान्यवत्</th> </tr> </thead> </table>	संयमासंयम	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 147, नरकायु का सत्त्व नहीं, सामान्यवत्		
संयमासंयम	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 147, नरकायु का सत्त्व नहीं, सामान्यवत्				
सामायिक / छेदोपस्थापना	<table border="1"> <thead> <tr> <th>सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146, नरकायु और तिर्यजायु का सत्त्व नहीं, गुणस्थान 6 से 9, सामान्यवत्</th> </tr> </thead> </table>	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146, नरकायु और तिर्यजायु का सत्त्व नहीं, गुणस्थान 6 से 9, सामान्यवत्			
सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146, नरकायु और तिर्यजायु का सत्त्व नहीं, गुणस्थान 6 से 9, सामान्यवत्					
परिहारिष्युद्धि	<table border="1"> <thead> <tr> <th>सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146, नरकायु और तिर्यजायु का सत्त्व नहीं, गुणस्थान 6 से 7, सामान्यवत्</th> </tr> </thead> </table>	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146, नरकायु और तिर्यजायु का सत्त्व नहीं, गुणस्थान 6 से 7, सामान्यवत्			
सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146, नरकायु और तिर्यजायु का सत्त्व नहीं, गुणस्थान 6 से 7, सामान्यवत्					
सूक्ष्मसाम्पराय	<table border="1"> <thead> <tr> <th>सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 (उपर्याम-श्रेणी - नरकायु और तिर्यजायु का सत्त्व नहीं) / 102 (क्षपक-श्रेणी)</th> </tr> </thead> </table>	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 (उपर्याम-श्रेणी - नरकायु और तिर्यजायु का सत्त्व नहीं) / 102 (क्षपक-श्रेणी)			
सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थों 146 (उपर्याम-श्रेणी - नरकायु और तिर्यजायु का सत्त्व नहीं) / 102 (क्षपक-श्रेणी)					
यथाखात	<table border="1"> <thead> <tr> <th>उपशात-मोह</th> <th>146 (द्वितीयोपस्थाम) / 139/138 (क्षायिक)</th> <th>2 / 9</th> </tr> </thead> </table>	उपशात-मोह	146 (द्वितीयोपस्थाम) / 139/138 (क्षायिक)	2 / 9	
उपशात-मोह	146 (द्वितीयोपस्थाम) / 139/138 (क्षायिक)	2 / 9			

		क्षीण-मोह	101	47
		सयोगकेवली	85	0
		अयोगकेवली	85	0, 72 (चरम-समय)
			सत्त्व	असत्त्व
	चक्रु / अचक्रु	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 148, गुणस्थान 1 से 12, सामान्यवत्		
दर्शन	अवधि	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 148, गुणस्थान 4 से 12, सामान्यवत्		
	केवल	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 85, केवलज्ञानवत्		



+ लेश्या, भव्य और सम्यक्त्व मार्गणा में सत्त्व -

लेश्या, भव्य और सम्यक्त्व मार्गणा में सत्त्व

विशेष :

लेश्या, भव्य और सम्यक्त्व मार्गणा में सत्त्व				
		सत्त्व	असत्त्व	
लेश्या	कृष्ण, नीत	मिथ्यात्व	147	1 (तीर्धकर)
		सासादन	145	3 (-आहारक-द्विक, तीर्धकर)
		मित्र	147	1 (तीर्धकर)
		अविरत	148	0
भव्य	कापोत	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 148, गुणस्थान 1 से 4		
		सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 148, गुणस्थान 1 से 4, सामान्यवत्		
		पीत-पद्म	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 148, गुणस्थान 1 से 7, मिथ्यात्व गुणस्थान में तीर्धकर का सत्त्व नहीं, शेष सामान्यवत्	
		शुक्रत	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 148, गुणस्थान 1 से 13, मिथ्यात्व गुणस्थान में तीर्धकर का सत्त्व नहीं, शेष सामान्यवत्	
सम्यक्त्व	भव्य	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 148, गुणस्थान 1 से 14, सामान्यवत्		
	अभव्य	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 141 = 148 - 7 (तीर्धकर, आहारक ४/शरीर, वंचन, संघर, अंगोपाय, सम्यक्त्व और मित्र मोहनीय), गुणस्थान मिथ्यात्व		
		सत्त्व	असत्त्व	
सम्यक्त्व	औपशमिक	अविरत	148	0
		देशसंसयत	147	1 (नरकायु)
		प्रमत्त-विरत से उपशान्तमोह	146	2 (तिर्धायु, नरकायु)
		सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 148, गुणस्थान 4 से 11, सामान्यवत्		
क्षायिक	क्षायिक	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 148, गुणस्थान 4 से 7, सामान्यवत्		
		अविरत	141	0
		देशसंसयत से अप्रमत्तसंसयत	139	2 (तिर्धायु, नरकायु)
		अपूर्वकरण* से उपशान्तमोह	139	2
		क्षीणमोह	101	40 (2+36 / अनिवृत्तिकरण में व्याच्छिन्न) + संज्वलन लोभ+ देवायु)
		सयोगकेवली	85	56
		अयोगकेवली	85*72,13	56,69,128
		सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 141 = 148 - 7 (दर्शनमोहनीय ३ और अनन्तानुभौमि ५), गुणस्थान 4 से 14,		
		*अपूर्वकरण गुणस्थान से उपशान्तमोह में अवद्वायुक के द्वायु का सत्त्व नहीं पाया जाता		
संज्ञी	संज्ञी	*आयामग्रन्थी गुणस्थान में द्विवरम समय में सत्त्व 72, चतुर्म समय में सत्त्व 13		
		सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 147, तीर्धकर सत्त्व नहीं, गुणस्थान मित्र		
		सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 145, तीर्धकर और आहारक द्विक का सत्त्व नहीं, गुणस्थान सासादन		
		सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 148, गुणस्थान मिथ्यात्व		



+ संज्ञी और आहार मार्गणा में सत्त्व -

संज्ञी और आहार मार्गणा में सत्त्व

विशेष :

संज्ञी, और आहार मार्गणा में सत्त्व				
		सत्त्व	असत्त्व	
संज्ञी	असंज्ञी	मिथ्यात्व	147	0
		सासादन	145	2 (आहारक-द्विक)
		सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 147, तीर्धकर बिना		
आहार	अनाहारक	संज्ञी	सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 148, गुणस्थान 1 से 12, सामान्यवत्	
		सत्त्व योग्य प्रकृतिर्थी 148, गुणस्थान 1 से 13, सामान्यवत्		
		मिथ्यात्व	148	0
		सासादन	144	4 (-आहारक-द्विक, तीर्धकर, नरकायु)
		अविरत	148	0
		सयोगकेवली	85	63
		अयोगकेवली	85*,85,13	63,63,135
*अयोगकेवली गुणस्थान में द्विवरम समय में सत्त्व 72, चतुर्म समय में सत्त्व 13				



+ एक जीव के सत्त्व में स्थान और भंग की संख्या -

एक जीव के सत्त्व में स्थान और भंग की संख्या

विशेष :

एक जीव के सत्त्व में स्थान और भंग

	स्थान	भंग
मिथ्यात्व	18	50
सासादन	4	12
मिश्र	8	36
अविरत	40	120
देशविरत	40	48
प्रमत्संयंत	40	40
अप्रमत्संयंत		
स्थान		भंग
उपशम-ब्रेणी	क्षपक ब्रेणी	
अपूर्वकरण	24	4
अनिवृतिकरण	24	36
सूक्ष्मसाम्पराय	24	4
उपशान्तमोह	24	-
क्षीणमोह	-	8
सम्योगकेवली	4	4
अयोगकेवली	6	8



+ मिथ्यादृष्टि के सत्त्व में 18 स्थान / 50 भंग -

मिथ्यात्व गुणस्थान के सत्त्व में 18 स्थान और उनके 50 भंग

विशेष :

मिथ्यात्व गुणस्थान के सत्त्व में 18 स्थान और उनके 50 भंग

बद्धायुक्त				अबद्धायुक्त			
स्थान	भंग	असत्त्व	विशेष	स्थान	भंग	असत्त्व	विशेष
146	1	2 (आयु २ / देव, तिर्यज्ञ)	तीर्थकर और आहारक चतुर्क की सत्ता वाला नरक की ओर जाता हुआ मनुष्य	145	1	3 (आयु ३ / देव, तिर्यज्ञ, मनुष्य)	२-३ नरक में तीर्थकर और आहारक चतुर्क की सत्ता वाला निर्वित अपर्याप्तक नरकी
145	5	3 (तीर्थकर, २ आयु)	चारों गति के बद्धायुक्त (तिर्यज्ञ-अरकायु-मनुष्य-देवायु-मनुष्य-उपरकायु-देवायु)	144	4	4 (तीर्थकर, ३ आयु)	चारों गति के अबद्धायुक्त
142	1	6 (आयु २ / देव, तिर्यज्ञ, आहारक-चतुर्क)	तीर्थकर की सत्ता वाला नरक की ओर जाता हुआ मनुष्य	141	1	7 (आयु ३ / देव, तिर्यज्ञ, मनुष्य, आहारक-चतुर्क)	२-३ नरक में तीर्थकर की सत्ता वाला निर्वित अपर्याप्तक नरकी
141	5	7 (तीर्थकर, आहारक-चतुर्क, २ आयु)	चारों गति के बद्धायुक्त (तिर्यज्ञ-अरकायु-मनुष्य-देवायु-मनुष्य-उपरकायु-देवायु)	140	4	8 (तीर्थकर, आहारक-चतुर्क, ३ आयु)	चारों गति के अबद्धायुक्त
140	5	8 (तीर्थकर, आहारक-चतुर्क, २ आयु सम्यक्त)	सम्यक्त मोहनीय की उद्वेलना करने वाले चारों गति के बद्धायुक्त	139	4	9 (तीर्थकर, आहारक-चतुर्क, ३ आयु सम्यक्त)	सम्यक्त मोहनीय की उद्वेलना करने वाले चारों गति के अबद्धायुक्त
139	5	9 (तीर्थकर, आहारक-चतुर्क, २ आयु सम्यक्त, सम्यग्मिथ्यात्व)	सम्यग्मिथ्यात्व की उद्वेलना करने वाले चारों गति के बद्धायुक्त	138	4	10 (तीर्थकर, आहारक-चतुर्क, ३ आयु सम्यक्त, सम्यग्मिथ्यात्व)	सम्यग्मिथ्यात्व की उद्वेलना करने वाले चारों गति के अबद्धायुक्त
137	1	11 (१ + देव-द्विक)	देव-द्विक की उद्वेलना सहित मनुष्यायु की सत्ता वाला एकेन्द्रिय या विकलेन्द्रिय	136	4	12 (१० + देव-द्विक)	एकेन्द्रीय या विकलेन्द्रिय
						12 (१० + देव-द्विक)	अपर्याप्त मनुष्य
						12 (१० + नरक-द्विक)	सुर-षट्क का बंधक पर्याप्तादा तिर्यज्ञ
						12 (१० + नरक-द्विक)	सुर-षट्क का बंधक पर्याप्त मनुष्य
131	1	17 (११ + नरक-षट्क)	नरक-षट्क की उद्वेलना सहित मनुष्यायु की सत्ता वाला एकेन्द्रिय या विकलेन्द्रिय	130	2	18 (१२ + नरक-षट्क)	नरक-षट्क की उद्वेलना सहित एकेन्द्रिय या विकलेन्द्रिय
129	1	19 (१७ + उच्च-गोत्र + मनुष्यायु)	उच्च-गोत्र की उद्वेलना करने वाले अप्रि / वायुकायिक			18 (१२ + नरक-षट्क)	नरक-षट्क की उद्वेलना सहित निर्वित अपर्याप्तक मनुष्य
127	1	21 (१९ + मनुष्य-द्विक)	मनुष्य-द्विक की उद्वेलना करने वाले अप्रि / वायुकायिक				



+ सासादन के सत्त्व में 4 स्थान / 12 भंग -

सासादन के सत्त्व में 4 स्थान और 12 भंग

विशेष :

सासादन गुणस्थान के सत्त्व में 4 स्थान और उनके 12 भंग

बद्धायुक्त				अबद्धायुक्त			
स्थान	भंग	असत्त्व	विशेष	स्थान	भंग	असत्त्व	विशेष
141	5	7 (तीर्थकर, आहारक-चतुर्क, आयु २)	चारों गति के बद्धायुक्त (तिर्यज्ञ-३/नरकायु-मनुष्यायु-देवायु-मनुष्य-उपरकायु-देवायु)	140	4	8 (तीर्थकर, आहारक-चतुर्क, आयु ३)	चारों गति के अबद्धायुक्त
145	1	3 (तीर्थकर, २ आयु)	देवायु की सत्ता वाला मनुष्य	144	2	4 (तीर्थकर, ३ आयु)	अबद्धायुक्त मनुष्य



+ मिश्र गुणस्थान के सत्त्व में स्थान / 36 भंग -

सम्यग्मिथ्यात्व के सत्त्व में स्थान और उनके 36 भंग

विशेष :

सम्पर्मित्यात्व गुणस्थान के सत्र में स्थान और उनके 36 भंग									
बद्धायुष्क					अबद्धायुष्क				
स्थान	भंग	असत्र	विशेष		स्थान	भंग	असत्र	विशेष	
145	5	3 (तीर्थकर, २ आयु)			144	4	4 (तीर्थकर, ३ आयु)		
141	5	7 (तीर्थकर, आयु २ अनंतानुबंधी ४)	जारी गति के बद्धायुष्क (विरचयु, अनरकायु, मनव्यायु, देवायु, मनुष्य, अनरकायु, देवायु)		140	4	8 (तीर्थकर, आयु ३, अनंतानुबंधी ४)		
	5	7 (तीर्थकर, आयु २, आहारक ४)				4	8 (तीर्थकर, आयु ३, आहारक ४)		
137	5	11 (तीर्थकर, आयु २, आहारक ४, अनंतानुबंधी ४)			136	4	12 (तीर्थकर, आयु ३, आहारक ४, अनंतानुबंधी ४)		



+ अविरत-सम्यक्त्वी के सत्त्व में 40 स्थान / 120 भंग -

अविरत-सम्यक्त्वी के सत्त्व में 40 स्थान और उनके 120 भंग

विशेष :

अविरत-सम्पर्कती गुणस्थान के सत्त्व में 40 स्थान और उनके 120 भंग							
		अनंतानुबंधी के सत्त्व सहित	अनंतानुबंधी विसंयोजक	क्षायिक-सम्पर्क प्रस्थापक	कृतकत्य वेदक	क्षायिक सम्पर्कती	कुल
तीर्थकर, आहारक-४ सहित	बद्धायुष्क	स्थान भंग 146 (-तिर्यङ्) आयु	142 (-अनंतानुबंधी श)	141 (-मिष्यात्व)	140 (-मिष्मोहनाय)	139 (-सम्पर्क)	
	बद्धायुष्क	2 (मनु-->देव, मनु-->नरक)	2 (भु मनु ब. देव नरक)	2 (भु मनु ब. देव नरक)	2 (भु मनु ब. देव नरक)	2 (मनु-->देव, मनु-->नरक)	10
	अबद्धायुष्क	स्थान भंग 145	141	140	139	138	
तीर्थकर रहित	बद्धायुष्क	स्थान भंग 145 (वारों गति के बद्धायुष्क)	141 (वारों गति के बद्धायुष्क)	140	139 (-मिष्मोहनाय)	138 (क्षायिक सम्पर्कती)	
	बद्धायुष्क	5 (तिर्यङ्+शनरक, मनु, देव, मनुष्य+शनरक, देव)	5 (तिर्यङ्+शनरक, मनु, देव, मनुष्य+शनरक, देव)	3 (भु मनु, ब. तीर्णो)	3 (भु मनु, ब. तीर्णो)	4 (नरक-->मनुष्य, देव-->मनुष्य, तिर्यङ्>देव, मनुष्य+तिर्यङ्)	20
	अबद्धायुष्क	स्थान भंग 144	140	139	138	137	
आहारक चतुष्क रहित	बद्धायुष्क	स्थान भंग 142	138	137	136	135	
	बद्धायुष्क	2 (मनु-->देव, मनु-->नरक)	2 (भु मनु ब. देव नरक)	2 (भु मनु ब. देव नरक)	2 (भु मनु ब. देव नरक)	2 (मनु-->देव, मनु-->नरक)	10
	अबद्धायुष्क	स्थान भंग 141	137	136	135	134	
तीर्थकर, आहारक-४ रहित	बद्धायुष्क	स्थान भंग 141	137	136	135	134	
	बद्धायुष्क	5 (तिर्यङ्+शनरक, मनु, देव, मनुष्य+शनरक, देव)	5 (तिर्यङ्+शनरक, मनु, देव, मनुष्य+शनरक, देव)	3 (भु मनु, ब. तीर्णो)	3 (भु मनु, ब. तीर्णो)	4 (नरक-->मनुष्य, देव-->मनुष्य, तिर्यङ्>देव, मनुष्य+तिर्यङ्)	20
	अबद्धायुष्क	स्थान भंग 140	136	135	134	133	



± देशविरती के सब्ल में 40 स्थान / 48 भंग -

देशविरत गुणस्थान के सत्र में 40 स्थान और उनके 48 भंग

विशेष :

देशविरत गुणस्थान के सत्त्व में 40 स्थान और उनके 48 भंग						
		अनंतानुबंधी के सत्त्व सहित	अनंतानुबंधी विसंगोजक	क्षायिक-सम्यकत प्रस्थापक	कृतक्त्व वेदक	क्षायिक सम्यकता
तीर्थकर, आहारक-४ सहित	बद्धापुष्क	स्थान 146 (-2 आयु/तिर्ज्ञ, नरक)	142 (-अनंतानुबंधी ६)	141 (-मिथ्यात्म)	140 (-प्रियमाहनीय)	139 (-सम्यकता)
	भंग	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)
तीर्थकर रहित	बद्धापुष्क	स्थान 145	141	140	139	138
	भंग	1 (भु मनुष्यायु)	1 (भु मनुष्यायु)	1 (भु मनुष्यायु)	1 (भु मनुष्यायु)	1 (भु मनुष्यायु)
आहारक चतुर्थ रहित	बद्धापुष्क	स्थान 145 (148-2 आयु/नरक, तिर्ज्ञि/मनुष्य-तीर्थकर)	141 (145-4 अनंतानुबंधी)	140 (141-मिथ्यात्म)	139 (140-प्रियमाहनीय)	138 (139-सम्यकता)
	भंग	2 (भु मनुष्यायु/तिर्ज्ञायु ब देवायु)	2 (भु मनुष्यायु/तिर्ज्ञायु ब देवायु)	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)
तीर्थकर, आहारक-५ रहित	बद्धापुष्क	स्थान 144	140	139	138	137
	भंग	2 (भु मनुष्यायु/तिर्ज्ञायु)	2 (भु मनुष्यायु/तिर्ज्ञायु)	1 (भु मनुष्यायु)	1 (भु मनुष्यायु)	1 (भु मनुष्यायु)
आहारक चतुर्थ रहित	बद्धापुष्क	स्थान 142	138	137	136	135
	भंग	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)
तीर्थकर, आहारक-५ रहित	बद्धापुष्क	स्थान 141	137	136	135	134
	भंग	1 (भु मनुष्यायु)	1 (भु मनुष्यायु)	1 (भु मनुष्यायु)	1 (भु मनुष्यायु)	1 (भु मनुष्यायु)
तीर्थकर, आहारक-५ रहित	बद्धापुष्क	स्थान 141	137	136	135	134
	भंग	2 (भु मनुष्यायु/तिर्ज्ञायु ब देवायु)	2 (भु मनुष्यायु/तिर्ज्ञायु ब देवायु)	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)	1 (भु मनुष्यायु ब देवायु)
तीर्थकर, आहारक-५ रहित	बद्धापुष्क	स्थान 140	136	135	134	133
	भंग	2 (भु मनुष्यायु/तिर्ज्ञायु)	2 (भु मनुष्यायु/तिर्ज्ञायु)	1 (भु मनुष्यायु)	1 (भु मनुष्यायु)	1 (भु मनुष्यायु)



अनिवृत्तिकरण क्षपक के 36 सत्त्व स्थान / 38 भंग

विशेष :

अनिवृत्तिकरण क्षपक के 36 सत्त्व स्थान / 38 भंग									
1	2	3	4	5	6	7	8	9	
तीर्थकर, आहारक-४ सहित	138	122	114	113	112	106	105	104	103
तीर्थकर रहित, आहारक-४ सहित	137	121	113	*112	111	105	104	103	102
तीर्थकर सहित, आहारक-४ रहित	134	118	110	109	108	102	101	100	99
तीर्थकर, आहारक-४ रहित	133	117	109	*108	107	101	100	99	98

*यहाँ दो भंग हैं

दूसरे स्थान में क्षीण होने वाली प्रकृतियाँ = 16 (नरक-द्विक, तिर्थक-द्विक, जाति-चतुर्थक, स्थानविक, अत्य, उद्योग, सूक्ष्म, साधारण, स्थावर)

तीसरे स्थान में क्षीण होने वाली प्रकृतियाँ = 8 (प्रत्याख्यान, अप्रत्याख्यान)



+ सूक्ष्म-सांपरायिक / क्षीणमोह क्षपक के सत्त्व स्थान / भंग -

सूक्ष्म-सांपरायिक / क्षीण मोह क्षपक के सत्त्व स्थान / भंग

विशेष :

सूक्ष्म-सांपरायिक और क्षीण मोह क्षपक के सत्त्व स्थान और भंग			
सूक्ष्म-सांपरायिक	क्षीण मोह		
	उपांत्य	अंत-समय	
तीर्थकर, आहारक-४ सहित	102	101	99
तीर्थकर रहित, आहारक-४ सहित	101	100	98
तीर्थकर सहित, आहारक-४ रहित	98	97	95
तीर्थकर, आहारक-४ रहित	97	96	94

क्षीण-मोह उपांत्य समय में व्युचित्र २ प्रकृतियाँ = निद्रा, प्रवला



+ सयोग / आयोग के वाली के स्थान और भंग -

सयोग / आयोग के वाली के स्थान और भंग

विशेष :

सयोग / आयोग के वाली के स्थान और भंग		
सयोग-के वाली	आयोग-के वाली	
	द्विचरम-समय	चरम-समय
तीर्थकर, आहारक-४ सहित	85	85
तीर्थकर रहित, आहारक-४ सहित	84	84
तीर्थकर सहित, आहारक-४ रहित	81	81
तीर्थकर, आहारक-४ रहित	80	80



+ नाम-कर्म के 13 सत्त्व-स्थान -

नाम-कर्म के 13 सत्त्व-स्थान

विशेष :

नाम-कर्म के 13 सत्त्व-स्थान		
सत्त्व-स्थान	प्रकृति	विशेष
93	सर्व-प्रकृति	सम्यद्विष्ट वैमानिक देव, सम्यद्विष्ट मनुष्य
92	93 - तीर्थकर	सासादन रहित चारों गति के जीव
91	93 - आहारक-द्विक	सम्यद्विष्ट वैमानिक देव, सम्यद्विष्ट या मिथ्यादृष्टी मनुष्य या नारकी
90	91 - तीर्थकर	चारों-गतियों के जीव, सभी सासादन गुणस्थान वाले
88	90 - देव-द्विक	मिथ्यादृष्टी मनुष्य या तिर्यङ्ग
84	88 - (नरक-द्विक + वैकियिक-द्विक)	मिथ्यादृष्टी मनुष्य या तिर्यङ्ग
82	84 - मनुष्य-द्विक	मिथ्यादृष्टी तिर्यङ्ग
80	93-13 (नरक-द्विक, तिर्थक-द्विक, जाति-चतुर्थक, आत्य, उद्योग, सूक्ष्म, साधारण, स्थावर)	क्षपक श्रेणी के अनिवृत्तिकरण से अयोग-के वाली के द्विचरम-समय तक
79	80 - तीर्थकर	
78	80 - आहारक-द्विक	
77	80 - (तीर्थकर + आहारक-द्विक)	
10	मनुष्य-द्विक, पंचेन्द्रिय, सुभग, त्रस, बादर, पर्याप्त, आदेय, यश, तीर्थकर, उच्चगोत्र	अयोग-के वाली चरम-समय
9	10 - तीर्थकर	



+ चार गति में पाए जाने वाले नाम-कर्म के सत्त्व-स्थान -

चार गति में पाए जाने वाले नाम-कर्म के सत्त्व-स्थान

विशेष :

चार गति में पाए जाने वाले नाम-कर्म के सत्त्व-स्थान

जीव-पद	नाम-कर्म के स्थान
नारकी	सामान्य 92, 91, 90
	4-7 नरक 92, 90
तिर्प्ति	सामान्य 92, 90, 88, 84, 82
	भोग-भूमि 92, 90
मनुष्य	सामान्य 93, 92, 91, 90, 88, 84, 80, 79, 78, 77, 10, 9
	सप्तोग-केवली 80, 79, 78 77
	*अयोग-केवली 80, 79, 78 77, 10, 9
	आहारक-शरीरी 93, 92
	भोग-भूमि 92, 90
	*9-14 गुणस्थान 80, 79, 78 77
	वैमानिक 93, 92, 91, 90
देव	भवनत्रिक 92, 90

*10 और 9 का स्थान अयोग-केवली के दरम समय में है।
 80, 79, 78, 77 का स्थान शुष्क क्षेत्री के अनिवार्यकरण से अयोग-केवली के द्विचरम-समय तक है।
 88, 84 का स्थान मनुष्य / तिर्प्ति मिथ्यादृष्टि के ही पाया जाता है।
 82 का स्थान मिथ्यादृष्टि रिंग रूपी पाया जाता है।
 93 का स्थान असंयुक्त सम्युद्धी देव और सम्युद्धी मनुष्य के ही पाया जाता है।
 92 का स्थान सासादन रहित चारों गति के जीवों में पाया जाता है।



बंध-उदय-सत्त्व त्रिसंयोग



+ मूल-प्रकृतियों में त्रिसंयोग में स्थान -

मूल-प्रकृतियों में त्रिसंयोग में स्थान

विशेष :

मूल-प्रकृतियों में त्रिसंयोग में स्थान

बंध	उदय	सत्त्व
8	8	8
7	8	8
6	8	8
1	7	8
1	7	7
1	4	4
0	4	4



+ ओघ से मूल-प्रकृतियों में त्रिसंयोग में स्थान -

ओघ से मूल-प्रकृतियों में त्रिसंयोग में स्थान

विशेष :

ओघ से मूल-प्रकृतियों में त्रिसंयोग में स्थान

गुणस्थान	बंध	उदय	सत्त्व
14 अयोगकेवली	0	4	4
13 सप्तोगकेवली	1	4	4
12 द्वीणगोह	1	7	7

11 उपशान्तमोह	1	7	8
10 सूक्ष्मसाम्पराय	6	8	8
9 अनिवृतिकरण	7	8	8
8 अपूर्वकरण	7	8	8
7 अप्रमत्संयत	8 / 7	8	8
6 प्रमत्संयत	8 / 7	8	8
5 देशविरत	8 / 7	8	8
4 अविरत	8 / 7	8	8
3 मिश्र	7	8	8
2 सासादन	8 / 7	8	8
1 मिथ्यात्व	8 / 7	8	8

गोमत्सार कर्मकाण्ड गाया 629



+ उत्तर-प्रकृतियों में त्रिसंयोग में स्थान - उत्तर-प्रकृतियों में त्रिसंयोग में स्थान

विशेष :

ओघ (गुणस्थान) से उत्तर-प्रकृतियों में त्रिसंयोग में स्थान																												
गुणस्थान	1	2	3	4	5	6	7	8 उ.श्र. क्ष.श्र.	9 उ.श्र. क्ष.श्र.	10 उ.श्र. क्ष.श्र.	11	12	13	14														
शानावरण, अंतराय	बंध	5										-na-																
	उदय	5										-na-																
	सत्त्व	5										-na-																
दर्शनावरण	बंध	9	6	6 / 4		4		0			-na-																	
	उदय	4 / 5										4 / 5	4	-na-														
	सत्त्व	9			9	9 / 6	9	6	9	6	4	-na-																
वेदनीय	बंध	साता / असाता			साता					-na-																		
	उदय	साता / असाता										साता / असाता																
	सत्त्व	2										-na-																
अयोग-केवली के चरम-समय में दोनों में से एक का ही उदय और उसी की सत्ता है																												
प्रमत्संयत तक साता / असाता के उदय / बंध से 4 भंग हैं, उसके अपेक्षायक सत्ता के उदय से दो भंग हैं																												
गोत्र	बंध	नीच / उच्च	नीच / उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	-na-			-na-																	
	उदय	नीच / उच्च	नीच / उच्च	नीच / उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च	उच्च															
	सत्त्व	2 / *नीच	2	2	2		2		2		2 / *उच्च																	
मिथ्यात्मक गुणस्थान में उच्च गोत्र की उद्धुलना करने वाले अपि / वायुकायिक के नीच-गोत्र का ही बंध-उदय-सत्त्व पाया जाता है, जहाँ से निकलकर तिर्यङ्ग होकर पहले अंतमूर्ति तक यही भंग पाया जाता है।																												
अयोग-केवली के दोनों की या उच्च-गोत्र की ही सत्ता है																												



+ गोत्र कर्म के त्रिसंयोग भंग - गोत्र कर्म के त्रिसंयोग भंग

विशेष :

गोत्र कर्म के त्रिसंयोग भंग							
बंध	नीच	नीच	उच्च	उच्च	नीच	0	0
उदय	नीच	उच्च	उच्च	नीच	नीच	उच्च	उच्च
सत्त्व	2 (नीच / उच्च)	1 (नीच)	2 (नीच / उच्च)	1 (उच्च)			
भंग	1	2	3	4	5	6	7



+ चारों गति में आयु कर्म के त्रिसंयोग भंग - चारों गति में आयु कर्म के त्रिसंयोग भंग

विशेष :

आयु कर्म के त्रिसंयोग भंग				गुणस्थान										
गति	कुल-भंग	भंग	आयु	बंध	उदय	सत्त्व	1	2	3	4	5	6 / 7	उ.श्र.	क्ष.श्र.
नरक	5	1	अबंध	-na-	नरक	नरक	✓	✓	✓	✓	-na-	-na-	-na-	
		2	बंध	मनुष्य	नरक	नरक, मनुष्य	✓	✓	X	✓	-na-	-na-	-na-	
		2	उपरतबंध	तिर्यङ्ग	नरक	नरक, तिर्यङ्ग	✓	✓	X	X	-na-	-na-	-na-	
तिर्यङ्ग	9	1	अबंध	-na-	नरक	नरक, मनुष्य	✓	✓	✓	✓	-na-	-na-	-na-	
		4	बंध	नरक	तिर्यङ्ग	तिर्यङ्ग, नरक	✓	X	X	X	-na-	-na-	-na-	
		4	तिर्यङ्ग	तिर्यङ्ग	तिर्यङ्ग	तिर्यङ्ग, तिर्यङ्ग	✓	✓	X	X	-na-	-na-	-na-	

गति	कुल-भंग	आयु कर्म के त्रिसंयोग भंग					गुणस्थान 6 / 7	उ.श्रे.	क्ष.श्रे.
		भंग	आयु	बंध	उदय	सत्त्व			
मनुष्य	9	4	उपरतबंध	मनुष्य	तिर्यङ्	तिर्यङ्, मनुष्य	✓ ✓ X X		
				देव	तिर्यङ्	तिर्यङ्, देव	✓ ✓ X ✓ ✓		
				-na-	तिर्यङ्	तिर्यङ्, नरक	✓ ✓ ✓ ✓ X		
				-na-	तिर्यङ्	तिर्यङ्, तिर्यङ्	✓ ✓ ✓ ✓ X		
				-na-	तिर्यङ्	तिर्यङ्, मनुष्य	✓ ✓ ✓ ✓ X		
		4		-na-	तिर्यङ्	तिर्यङ्, देव	✓ ✓ ✓ ✓ ✓		
		1	अंबंध	मनुष्य	मनुष्य	✓ ✓ ✓ ✓ ✓ ✓ ✓ ✓			
			-na-	नरक	मनुष्य	✓ X X X X X X X			
			बंध	मनुष्य	मनुष्य, तिर्यङ्	✓ ✓ X X X X X X			
			मनुष्य	मनुष्य	मनुष्य, मनुष्य	✓ ✓ X X X X X X			
देव	5	4	उपरतबंध	देव	मनुष्य	मनुष्य, देव	✓ ✓ X ✓ ✓ ✓ ✓ X		
				-na-	मनुष्य	मनुष्य, नरक	✓ ✓ ✓ ✓ X X X X		
				-na-	मनुष्य	मनुष्य, तिर्यङ्	✓ ✓ ✓ ✓ X X X X		
				-na-	मनुष्य	मनुष्य, मनुष्य	✓ ✓ ✓ ✓ X X X X		
		2		-na-	मनुष्य	मनुष्य, देव	✓ ✓ ✓ ✓ ✓ ✓ ✓ X		
		2	अंबंध	देव	देव	✓ ✓ ✓ ✓			
			संख्या	स्थान	संख्या	स्थान			
			संख्या	स्थान	संख्या	स्थान			
गोमटसार कर्मकांड गाथा – 645									



+ मोहनीय कर्म के त्रिसंयोग भंग -

एक जीव की अपेक्षा मोहनीय कर्म के त्रिसंयोग भंग

विशेष :

एक जीव की अपेक्षा मोहनीय कर्म के त्रिसंयोग भंग							
	बंध	उदय	सत्त्व				
	संख्या	स्थान	संख्या	स्थान	संख्या	स्थान	
मिथ्यात्व	1	22	4	10,9,8,7	3	28,27,26	
सासादन	1	21	3	9,8,7	1	28	
मित्र	1	17	3	9,8,7	2	28,24	
असंयत स.	1	17	4	9,8,7,6	5	28,24,23,22,21	
देशविरत	1	13	4	8,7,6,5	5	28,24,23,22,21	
प्रमत्तसंयत	1	9	4	7,6,5,4	5	28,24,23,22,21	
अप्रमत्तसंयत							
अपूर्वकरण	उ.श्रे. क्ष.श्रे.	1	9	3	6,5,4	3	28,24,21
		1	9	3	6,5,4	1	21
अनिवृत्तिकरण	उ.श्रे. क्ष.श्रे.	5	5,4,3,2,1	2	2,1	3	28,24,21
		5	5,4,3,2,1	2	2,1	8	13,12,11,5,4,3,2,1
सूक्ष्मसाम्पराय	उ.श्रे. क्ष.श्रे.	-na-	1	1	3	28,24,21	
उपशान्तमोह		-na-			3	28,24,21	

गोमटसार कर्मकांड गाथा – 653-659



+ मोहनीय के बंध अधिकरण, उदय-सत्त्व आधेय भंग -

मोहनीय कर्म के बंध अधिकरण, उदय-सत्त्व आधेय भंग

विशेष :

मोहनीय कर्म के बंध अधिकरण, उदय-सत्त्व आधेय त्रिसंयोग भंग				
	बंधस्थान	उदयस्थान	सत्त्वस्थान	विशेष
मिथ्यात्व	22	10,9,8	28	सादि मिथ्यादृष्टि
		7		अनंतानुबंधी के उदय रहित
		10,9,8	27	सम्यक्त प्रकृति की उद्घेलना वाले
सासादन	21	9,8,7	28	चारों गति के सासादन
मित्र		9,8,7	28,24	चारों गति के सम्यविमयाती
असंयत स.	17	9,8,7,6	28,24	क्षायोपशमिक / औपशमिक सम्यक्ती
		9,8,7	23,22	क्षायिक-सम्यक्त प्रस्थापक
		8,7,6	21	क्षायिक सम्यक्ती
देशविरत	13	8,7,6,5	28,24	क्षायोपशमिक / औपशमिक सम्यक्ती
		8,7,6	23,22	क्षायिक-सम्यक्त प्रस्थापक

मोहनीय कर्म के बंध अधिकरण, उदय-सत्त्व आधेय त्रिसंयोग भंग		
	बंधस्थान	उदयस्थान सत्त्वस्थान विशेष
		7,6,5 21 क्षायिक सम्यकती
		7,6,5,4 28,24 क्षायोपशमिक / औपशमिक सम्यकती
		7,6,5 23,22 क्षायिक-सम्यकत प्रसापक
		6,5,4 21 क्षायिक सम्यकती
		6,5,4 28,24,21 उपशम-श्रेणी
		21 क्षपक श्रेणी
		गोमटसार कर्मकांड गाया -- 662-664, 674-679



+ मोहनीय के उदय अधिकरण, बंध-सत्त्व आधेय भंग -

मोहनीय कर्म के उदय अधिकरण, बंध-सत्त्व आधेय त्रिसंयोग भंग

विशेष :

मोहनीय कर्म के उदय अधिकरण, बंध-सत्त्व आधेय त्रिसंयोग भंग		
उदयस्थान	बंधस्थान	सत्त्वस्थान
10	22	28,27,26
9	22,21,17	28,27,26,24,23,22
8	22,21,17,13	28,27,26,24,23,22,21
7	22,21,17,13,9	
6	17,13,9	28,24,23,22,21
5	13,9	
4	9	28,24,21
2	5,4	28,24,21,13,12,11
1	4,3,2,1	28,24,21,11,5,4,3,2,1
गोमटसार कर्मकांड गाया -- 665-668		



+ मोहनीय के सत्त्व अधिकरण, बंध-उदय आधेय भंग -

मोहनीय कर्म के सत्त्व अधिकरण, बंध-उदय आधेय त्रिसंयोग भंग

विशेष :

मोहनीय कर्म के सत्त्व अधिकरण, बंध-उदय आधेय त्रिसंयोग भंग			
सत्त्वस्थान	बंधस्थान	उदयस्थान	गुरुस्थान
28	10 (22,21,17,13,9,5,4,3,2,1)	9 (10,9,8,7,6,5,4,2,1)	1 से 11
27	1 (22)	3 (10,9,8)	1
26			
24	8 (17,13,9,5,4,3,2,1)	8 (9,8,7,6,5,4,2,1)	3 से 11
23	3 (17,13,9)	5 (9,8,7,6,5)	4 से 7
22			
21	8 (17,13,9,5,4,3,2,1)	7 (8,7,6,5,4,2,1)	4 से 11 (क्षायिक स)
13			
12	2 (5,4)	1 (2)	
11		2 (2,1)	
5	1 (4)		9 (क्ष. श्र.)
4	2 (4,3)		
3	2 (3,2)		
2	2 (2,1)	1 (1)	
1	1 / 0		9,10 (क्ष. श्र.)
गोमटसार कर्मकांड गाया -- 669-672			



+ नाम कर्म के बंध, उदय, सत्त्व त्रिसंयोग भंग -

नाम कर्म के बंध, उदय, सत्त्व त्रिसंयोग भंग

विशेष :

नाम कर्म के बंध, उदय, सत्त्व त्रिसंयोग भंग				
	बंधस्थान	उदयस्थान	सत्त्वस्थान	
मिथ्यात्व	6 (23,25,26,28,29,30)	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	6 (92,91,90,88,84,82)	
सासादन	3 (28,29,30)	7 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	1 (90)	
मिश्र	2 (28,29)	3 (29,30,31)	2 (92,90)	
असंयत स.	3 (28,29,30)	8 (21,25,26,27,28,29,30,31)	4 (93,92,91,90)	
देशविरत	2 (28,29)	2 (30,31)	4 (93,92,91,90)	
प्रमत्त संयत	2 (28,29)	5 (25,27,28,29,30)	4 (93,92,91,90)	
अप्रमत्त संयत	4 (28,29,30,31)	1 (30)	4 (93,92,91,90)	
अपूर्वकरण	4 (28,29,30,31,1)	1 (30)	4 (93,92,91,90)	
अनिवृत्तिकरण	उ.श्रै. क्ष.श्रै.	1 (1)	1 (30)	4 (93,92,91,90) 4 (80,79,78,77)
सूक्ष्मसाम्पराय	उ.श्रै. क्ष.श्रै.	1 (1)	1 (30)	4 (93,92,91,90) 4 (80,79,78,77)
उपशान्तमोह		0	1 (30)	4 (93,92,91,90)
क्षीणमोह		0	1 (30)	4 (80,79,78,77)
सयोगकेवली		0	2 (30,31)	4 (80,79,78,77)
अयोगकेवली		0	2 (9,8)	6 (80,79,78,77,10,9)

गोमटसार कर्मकोड गाया -- 693-703

करती लामुदुग्राम में उदयस्थान - दंड (30,31) > कपाट/मिश्र (26,27) > प्रतर-लोकपूरण (29,21) > कपाट/मिश्र (26,27) > शरीर-पयादि (28,29) > उच्छ्वास पयादि (29,30) > भाजा-पयादि (30,31)



+ 14 जीव-समास में नाम कर्म के बंध, उदय, सत्त्व -

14 जीव-समास में नाम कर्म के बंध, उदय, सत्त्व त्रिसंयोग भंग

विशेष :

14 जीव-समास में नाम कर्म के बंध, उदय, सत्त्व त्रिसंयोग भंग			
	बंधस्थान	उदयस्थान	सत्त्वस्थान
अपर्याप्त	स्थावर त्रस		
सूक्ष्म	5 (23,25,26,29,30)	2 (21,24) 2 (21,26)	
बादर		4 (21,24,25,26)	
विकलत्रय		5 (21,24,25,26,27)	
असंजी	6 (23,25,26,28,29,30)	6 (21,26,28,29,30,31)	
संजी	8 (23,25,26,28,29,30,31,1)	8 (21,25,26,27,28,29,30,31)	11 (93,92,91,90,88,84,82,80,79,78,77)

गोमटसार कर्मकोड गाया -- 704-709



+ 14 मार्गणा में नाम कर्म के बंध, उदय, सत्त्व भंग -

14 मार्गणा में नाम कर्म के बंध, उदय, सत्त्व त्रिसंयोग भंग

विशेष :

14 मार्गणा में नाम कर्म के बंध, उदय, सत्त्व त्रिसंयोग भंग			
	बंधस्थान	उदयस्थान	सत्त्वस्थान
गति	नरक	2 (29,30)	5 (21,25,27,28,29)
	तिर्प्ति	6 (23,25,26,28,29,30)	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)
	मनुष्य	8 (23,25,26,28,29,30,31,1)	11 (20,21,25,26,27,28,29,30,31,8,9)
	देव	4 (25,26,29,30)	5 (21,25,27,28,29)
ईंद्रिय	एकन्त्रीय	5 (23,25,26,29,30)	5 (21,24,25,26,27)
	विकलत्रिय		6 (21,26,28,29,30,31)
काय	पंकोद्रव्य	8 (23,25,26,28,29,30,31,1)	11 (20,21,25,26,27,28,29,30,31,8,9)
	पृथ्वी, जल, वनस्पति	5 (23,25,26,29,30)	5 (21,24,25,26,27)
	तेज, वायु		4 (21,24,25,26)
योग	त्रस	8 (23,25,26,28,29,30,31,1)	11 (20,21,25,26,27,28,29,30,31,8,9)
	मन, वचन	8 (23,25,26,28,29,30,31,1)	3 (29,30,31)
औदारिक-काय	औदारिक-काय	8 (23,25,26,28,29,30,31,1)	7 (25,26,27,28,29,30,31)
	औदारिक-मिश्र	6 (23,25,26,28,29,30)	3 (24,26,27)
वैक्रियिक	वैक्रियिक	4 (25,26,29,30)	3 (27,28,29)
	वैक्रियिक-मिश्र		4 (29,30,31)
आहारक	आहारक	2 (28,29)	3 (27,28,29)
	आहारक-मिश्र		1 (25)
कार्मण	कार्मण	6 (23,25,26,28,29,30)	2 (20,21)
			11 (93,92,91,90,88,84,82,80,79,78,77)
चेद	पुरुष	8 (23,25,26,28,29,30,31,1)	11 (93,92,91,90,88,84,82,80,79,78,77)
	स्त्री		9 (93,92,91,90,88,84,82,79,77)

		14 मार्गण में नाम कर्म के बंध, उदय, सत्त्व त्रिसंयोग भंग		
	नपुंसक	बंधस्थान	उदयस्थान	सत्त्वस्थान
कषाय	8 (23,25,26,28,29,30,31,I)	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	11 (93,92,91,90,88,84,82,80,79,78,77)
ज्ञान	कृमति-कृत्रित	6 (23,25,26,28,29,30)	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	6 (92,91,90,88,84,82)
	विभग		3 (29,30,31)	3 (92,91,90)
	माति, क्षत्र, अवधि	5 (28,29,30,31,I)	8 (21,25,26,27,28,29,30,31)	8 (93,92,91,90,80,79,78,77)
	मनःपर्यय		1 (30)	
	केवल	0	10 (20,21,26,27,28,29,30,31,9,8)	6 (80,79,78,77,10,9)
संयम	सामाधिक / छोटोपस्थापना	5 (28,29,30,31,I)	5 (25,27,28,29,30)	8 (93,92,91,90,80,79,78,77)
	परिहारविशुद्धि	4 (28,29,30,31)	1 (30)	4 (93,92,91,90)
	सूक्ष्मसाम्पराय	1 (I)	1 (30)	8 (93,92,91,90,80,79,78,77)
	यथाख्यात	0	9 (20,21,26,27,28,29,30,31,9,8)	10 (93,92,91,90,80,79,78,77,10,9)
	देशविरत	2 (28,29)	2 (30,31)	4 (93,92,91,90)
	असंयम	6 (23,25,26,28,29,30)	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	7 (93,92,91,90,88,84,82)
दर्शन	चक्षु	8 (23,25,26,28,29,30,31,I)	8 (21,25,26,27,28,29,30,31)	11 (93,92,91,90,88,84,82,80,79,78,77)
	अचक्षु		9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	8 (93,92,91,90,80,79,78,77)
	अवधि	5 (28,29,30,31,I)	8 (21,25,26,27,28,29,30,31)	8 (93,92,91,90,80,79,78,77)
	केवल	0	10 (20,21,26,27,28,29,30,31,9,8)	6 (80,79,78,77,10,9)
लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत	6 (23,25,26,28,29,30)	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	7 (93,92,91,90,88,84,82)
	पीत	6 (25,26,28,29,30,31)		8 (21,25,26,27,28,29,30,31)
	चद्वा	4 (28,29,30,31)		4 (93,92,91,90)
	शुक्ल	5 (28,29,30,31,I)	8 (20,21,25,26,27,28,29,30,31)	8 (93,92,91,90,80,79,78,77)
भव्य	भव्य	8 (23,25,26,28,29,30,31,I)	12 (20,21,24,25,26,27,28,29,30,31,8,9)	13 (93,92,91,90,88,84,82,80,79,78,77,10,9)
	अभव्य	6 (23,25,26,28,29,30)	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	4 (90,88,84,82)
सम्प्रकृत्य	उपशम	5 (28,29,30,31,I)	5 (21,25,29,30,31)	4 (93,92,91,90)
	वेदक	4 (28,29,30,31)	8 (21,25,26,27,28,29,30,31)	
	क्षायिक	5 (28,29,30,31,I)	11 (20,21,25,26,27,28,29,30,31,9,8)	10 (93,92,91,90,80,79,78,77,10,9)
	मिश्र	2 (28,29)	3 (29,30,31)	2 (92,90)
	सासादन	3 (28,29,30)	7 (21,24,25,26,29,30,31)	1 (90)
आहार	मिथ्यात्व	6 (23,25,26,28,29,30)	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	6 (92,91,90,88,84,82)
	आहारक	8 (23,25,26,28,29,30,31,I)	8 (24,25,26,27,28,29,30,31)	11 (93,92,91,90,88,84,82,80,79,78,77)
	अनाहारक	6 (23,25,26,28,29,30)	4 (20,21,9,8)	13 (93,92,91,90,88,84,82,80,79,78,77,10,9)

गोमत्सार कर्मकोड गाया – 710-738



+ नाम कर्म के बंध अधिकरण, उदय, सत्त्व आधेय -

नाम कर्म के बंध अधिकरण, उदय, सत्त्व आधेय त्रिसंयोग भंग

विशेष :

नाम कर्म के बंध अधिकरण, उदय, सत्त्व आधेय त्रिसंयोग भंग				
बंधस्थान	उदयस्थान	सत्त्वस्थान	बंध	स्वामी
23	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31,I)	5 (92,90,88,84,82)	एकेन्द्रिय अपर्याप्ति	तिर्यञ्च
	5 (21,26,28,29,30)	4 (92,90,88,84)		मनुष्य
25	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31,I)	5 (92,90,88,84,82)	एकेन्द्रिय पर्याप्ति / त्रस अपर्याप्ति	तिर्यञ्च
	5 (21,26,28,29,30)	4 (92,90,88,84)		मनुष्य
26	5 (21,25,27,28,29)	2 (92,90)	एकेन्द्रिय पर्याप्ति	देव
	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31,9,8)	5 (92,90,88,84,82)		तिर्यञ्च
	5 (21,26,28,29,30)	4 (92,90,88,84)		मनुष्य
28	5 (21,25,27,28,29)	2 (92,90)	देव गति	देव
	4 (28,29,30,31)	3 (92,90,88)		संज्ञी / असंज्ञी तिर्यञ्च
	2 (30,31)	1 (90)		सासादन
	6 (21,26,28,29,30,31)	2 (92,90)		सम्प्रमित्यादृष्टि
	2 (30,31)	4 (92,91,90,88)		असंयत सम्पद्वद्धि
29	3 (28,29,30)	1 (90)	देव गति	देवसंयत
	1 (30)	1 (90)		मिथ्यादृष्टि
	5 (21,26,28,29,30)	1 (90)		सासादन
	1 (30)	2 (92,90)		सम्प्रमित्यादृष्टि
	5 (25,27,28,29,30)	2 (92,90)		असंयत सम्पद्वद्धि
	1 (30)	3 (92,91,90)		देवसंयत
	5 (21,25,27,28,29)	7 (93,92,91,90,88,84,82)		प्रमत्त-संयत
	5 (21,25,27,28,29)	3 (92,91,90)	नरक	अप्रमत्त-संयत
	2 (21,25)	1 (91)		मिथ्यादृष्टि, नरक सामान्य
	3 (21,25,27,28,29)	2 (92,90)		मिथ्यादृष्टि, 1-3 नरक, तीर्थेकर सत्त्व सहित
	1 (29)	1 (90)		मिथ्यादृष्टि, 1-6 नरक, तीर्थेकर सत्त्व रहित
	1 (29)	2 (92,90)		मिथ्यादृष्टि, 7 नरक
	5 (21,25,27,28,29)	3 (92,91,90)		सासादन
	1 (29)			सम्प्रमित्यादृष्टि

बंधस्थान	उदयस्थान	नाम कर्म के बंध अधिकरण, उदय, सत्त्व आधेय त्रिसंयोग भंग		
		सत्त्वस्थान	बंध	स्वामी
		2 (92,90)		असंयत सम्पदादृष्टि, 4-7 नरक
9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	5 (92,90,88,84,82)	त्रस तिर्यञ्च / मनुष्य	तिर्यञ्च	मिथ्यादृष्टि
	5 (21,24,26,30,31)	1 (90)	पंचेद्रिय तिर्यञ्च / मनुष्य	सासादन
	5 (21,26,28,29,30)	4 (92,90,88,84)	त्रस तिर्यञ्च / मनुष्य	मिथ्यादृष्टि
	1 (30)	1 (91)	मनुष्य-गति	मिथ्यादृष्टि, तीर्थकर के सत्त्व युक्त
	5 (21,26,30)	1 (90)	पंचेद्रिय तिर्यञ्च / मनुष्य	सासादन
	5 (21,26,28,29,30)	3 (93,91)	देवगति, तीर्थकर	असंयत सम्पदादृष्टि
	5 (25,27,28,29,30)	1 (30)		देशसंयत
	5 (21,25,27,28,29)	1 (30)	अप्रमत्त-संयत, अपूर्वकरण	प्रमत्त-संयत
	5 (21,25,27,28,29)	2 (92,90)	संज्ञी पंचेद्रिय, मनुष्य	मिथ्यादृष्टि, भवनविक से सहसार
	3 (21,25,29)	1 (90)	मनुष्य-गति	मिथ्यादृष्टि, ग्रैवेयिक
30	1 (29)	2 (92,90)	संज्ञी पंचेद्रिय, मनुष्य	सासादन, भवनविक से सहसार
	1 (29)	1 (90)	मनुष्य-गति	सासादन, ग्रैवेयिक
	5 (21,25,27,28,29)	1 (91)	मनुष्य, तीर्थकर	सम्पर्मिथ्यादृष्टि
	5 (21,25,27,28,29)	2 (92,90)	पंचेद्रिय-उद्योत-तिर्यञ्च	असंयत सम्पदादृष्टि, भवनविक
	1 (29)	1 (90)	पंचेद्रिय-उद्योत-तिर्यञ्च	असंयत सम्पदादृष्टि, वैमानिक
	5 (21,25,27,28,29)	5 (92,90,88,84,82)		मिथ्यादृष्टि
	1 30	4 (92,90,88,84)	त्रस, पर्याप्ति, उद्योत, तिर्यञ्चगति	सासादन
	1 31	4 (92,90,88,84)	पंचेद्रिय-उद्योत-तिर्यञ्च	असंयत सम्पदादृष्टि, 1 नरक
	5 (21,24,26,30,31)	2 (92,90)	मनुष्य-गति	असंयत सम्पदादृष्टि, 2-3 नरक
	5 (21,26,28,29,30)	1 (90)	पंचेद्रिय-उद्योत-तिर्यञ्च	मिथ्यादृष्टि, सामान्य
31	3 (21,26,30)	4 (92,90,88,84)	त्रस, पर्याप्ति, उद्योत, तिर्यञ्चगति	मिथ्यादृष्टि, उच्चस पर्याप्ति, उद्योत
	1 (30)	1 (90)	पंचेद्रिय-उद्योत-तिर्यञ्च	मिथ्यादृष्टि, भाषा-पर्याप्ति, विकलत्रय
	5 (21,25,27,28,29)	1 (91)	मनुष्य, तीर्थकर	मिथ्यादृष्टि, भाषा-पर्याप्ति, पंचेद्रिय
	5 (21,25,27,28,29)	2 (92,90)	पंचेद्रिय-उद्योत-तिर्यञ्च	मिथ्यादृष्टि, भाषा-पर्याप्ति, विकलत्रय, उद्योत
	3 (21,25,29)	1 (90)	पंचेद्रिय-उद्योत-तिर्यञ्च	मिथ्यादृष्टि, भाषा-पर्याप्ति, पंचेद्रिय, उद्योत
	5 (21,25,27,28,29)	1 (92)	देवगति, आहारक-द्विक	सासादन
	5 (21,25,27,28,29)	2 (92,90)	पंचेद्रिय-उद्योत-तिर्यञ्च	मिथ्यादृष्टि
	3 (21,25,29)	1 (90)	पंचेद्रिय-उद्योत-तिर्यञ्च	सासादन
	5 (21,25,27,28,29)	2 (93,91)	मनुष्य, तीर्थकर	असंयत सम्पदादृष्टि, वैमानिक
	1 (30)	1 (93)	देवगति, आहारक-द्विक, तीर्थकर	अप्रमत्त, अपूर्वकरण
1	1 (30)	4 (93,92,91,90)		अपूर्वकरण
		8 (93,92,91,90,80,79,78,77)	यशःकीर्ति	अनिवृतिकरण सूक्ष्मसाम्पराय
0	1 (30)	4 (93,92,91,90)		मनुष्य
	1 (30)	4 (80,79,78,77)		मनुष्य
	1 (30)			मनुष्य
	5 (21,27,29,30,31)			उपशान-तामोह
	21			क्षीणमोह
	27			सयोगकेवली
	29			तीर्थकर-केवली
	30			तीर्थकर-केवली, कार्मण काल
	31			तीर्थकर-केवली, मिश्र शरीर काल
	5 (20,26,28,29,30)			तीर्थकर-केवली, शरीर पर्याप्ति काल
-na-	20			तीर्थकर-केवली, उच्चस पर्याप्ति
	26			तीर्थकर-केवली, भाषा पर्याप्ति
	28			सामान्य-केवली
	29			सामान्य-केवली, कार्मण काल
	30			सामान्य-केवली, मिश्र शरीर काल
	1 (9)	3 (80,78,10)		सामान्य-केवली, शरीर पर्याप्ति
		10		सामान्य-केवली, उच्चस पर्याप्ति
	1 (8)	3 (79,77,9)		सामान्य-केवली, भाषा पर्याप्ति
		9		सामान्य-केवली, उच्चस पर्याप्ति
				सामान्य-केवली, चरम समय
				अयोगकेवली
				तीर्थकर-केवली
				तीर्थकर-केवली, चरम समय
				सामान्य-केवली
				सामान्य-केवली, चरम समय



+ नाम कर्म के उदय आधार, बंध सत्त्व आधेय भंग -

नाम कर्म के उदय आधार, बंध सत्त्व आधेय त्रिसंयोग भंग

विशेष :

नाम कर्म के उदय आधार, बंध सत्त्व आधेय त्रिसंयोग भंग				
उदयस्थान	बंधस्थान	सत्त्वस्थान	स्वामी	
20	0	2 (79,77)	सामान्य केवली, समुद्रघात, कार्मण काल	
21	6 (23,25,26,28,29,30)	9 (93,92,91,90,88,84,82,80,78)	बारंगति के जीव, कार्मण काल	
	0	2 (80,78)	तीर्थकर केवली	
	2 (29,30)	3 (92,91,90)	नरक	1 से 3 नरक, मिथ्यात्म
				1 नरक, असंयत स.

उदयस्थान	वंधस्थान	नाम कर्म के उदय आधार, वंध सत्र आधेय त्रिसंयोग भंग	
		सत्रस्थान	स्वामी
		3 (92,90)	4 से 7 नरक, मिथ्यात्म
5 (23,25,26,29,30)	5 (92,90,88,84,82)	तिर्यङ्	मिथ्यादृष्टि
	2 (29,30)		सासादन
	1 (28)		असंयत स.
	5 (23,25,26,29,30)		मिथ्यादृष्टि
	2 (29,30)		सासादन
	2 (28,29)		असंयत स.
	4 (25,26,29,30)		भवनत्रिक / देवियाँ, मिथ्यादृष्टि
	4 (25,26,29,30)		मिथ्यादृष्टि, सौधर्म-द्विक
	2 (29,30)		मिथ्यादृष्टि, सानकुमार से सहसार
	1 (29)		मिथ्यादृष्टि, आनत से ग्रेवेयिक तक
24	2 (29,30)	देव	सासादन, सहसार तक
	1 (29)		सासादन, आनत से ग्रेवेयिक तक
	2 (29,30)		असंयत स.
	5 (23,25,26,29,30)		लब्धपर्याप्ति एक-द्विय
	3 (23,25,29)		तेज, वायुकायिक
	6 (23,25,26,28,29,30)		चारों गति के जीव के अवर्गीय अवस्था, एकेद्वितीय पर्याप्ति
	2 (29,30)		1 से 3 नरक, मिथ्यात्म, शरीर-मिश्र
	2 (29,30)		4 से 7 नरक, मिथ्यात्म, शरीर-मिश्र
	2 (29,30)		1 नरक, असंयत स., शरीर-मिश्र
	5 (23,25,26,29,30)		एकेद्विय
25	2 (28,29)	देव	आहारक, शरीर-मिश्र
	4 (25,26,29,30)		भवनत्रिक / देवियाँ, मिथ्यादृष्टि
	4 (25,26,29,30)		मिथ्यादृष्टि, सौधर्म-द्विक
	2 (29,30)		मिथ्यादृष्टि, सानकुमार से सहसार
	1 (29)		मिथ्यादृष्टि, आनत से ग्रेवेयिक तक
	2 (29,30)		सासादन, सहसार तक
	1 (29)		सासादन, आनत से ग्रेवेयिक तक
	2 (29,30)		असंयत स.
	6 (23,25,26,28,29,30)		तिर्यङ्, मनुष्य / सामान्य-केवली औदारीक-मिश्र
	5 (23,25,26,29,30)		त्रस लब्धपर्याप्ति / निवृत्ति-अपर्याप्ति, शरीर-मिश्र, मिथ्यादृष्टि
26	5 (23,25,26,29,30)	देव	एकेद्विय, आतप/उद्दोत शरीर-पर्याप्ति, उच्चास-पर्याप्ति, मिथ्यादृष्टि
	2 (29,30)		पर्याप्ति, सासादन
	1 (28)		असंयत स.
	6 (23,25,26,28,29,30)		मिथ्यादृष्टि, शरीर-मिश्र
	2 (29,30)		सासादन
	2 (28,29)		असंयत स.
	0		सामान्य-केवली, कपाट समुद्रघात
	6 (23,25,26,28,29,30)		देव / नरकी / तीर्थकर / आहारक-भाषी शरीर-पर्याप्ति, एकेद्वितीय उच्चास-पर्याप्ति
	2 (29,30)		नरक, मिथ्यादृष्टि, शरीर पर्याप्ति
	1 (29,30)		1 नरक, असंयत स.
27	1 (30)	देव	2-3 नरक, असंयत स., तीर्थकर सत्र सहित
	5 (23,25,26,29,30)		एकेद्विय, उच्चास पर्याप्ति, तेज / वायु बिना
	5 (23,25,26,29,30)		एकेद्विय, उच्चास पर्याप्ति, तेज / वायु कायिक
	2 (28,29)		आहारक शरीर, शरीर पर्याप्ति
	0		तीर्थकर केवली, कपाट समुद्रघात, शरीर-मिश्र
	4 (25,26,29,30)		भवनत्रिक देव / देवियाँ / सौधर्म-द्विक, मिथ्यात्म, शरीर पर्याप्ति
	2 (29,30)		मिथ्यादृष्टि, सानकुमार से सहसार
	1 (29)		मिथ्यादृष्टि, आनत से ग्रेवेयिक तक
	2 (29,30)		असंयत, वैमानिक, शरीर पर्याप्ति
	6 (23,25,26,28,29,30)		तिर्यङ् / मनुष्य .. शरीर पर्याप्ति, देव / नरकी .. उच्चास पर्याप्ति
28	2 (29,30)	देव	नरक, मिथ्यादृष्टि, उच्चास पर्याप्ति
	2 (29,30)		1 नरक, असंयत स.
	1 (30)		2-3 नरक, असंयत स., तीर्थकर सत्र सहित
	6 (23,25,26,28,29,30)		मिथ्यात्म, त्रस, शरीर पर्याप्ति
	1 (28)		असंयत स.
	6 (23,25,26,28,29,30)		मिथ्यात्म, शरीर पर्याप्ति
	2 (28,29)		असंयत स., शरीर पर्याप्ति
	0		आहारक, उच्चास पर्याप्ति
	4 (25,26,29,30)		सामान्य केवली, दण्ड समुद्रघात, औदारीक काय-योग, शरीर पर्याप्ति
	2 (29,30)		भवनत्रिक देव / देवियाँ / सौधर्म-द्विक, मिथ्यात्म, उच्चास पर्याप्ति
29	1 (29)	देव	मिथ्यादृष्टि, सानकुमार से सहसार
	2 (29,30)		मिथ्यादृष्टि, आनत से ग्रेवेयिक तक
	2 (29,30)		असंयत स., वैमानिक, उच्चास पर्याप्ति
	6 (23,25,26,28,29,30)		बारों गति के जीव
	2 (29,30)		मिथ्यादृष्टि, भाषा पर्याप्ति
	1 (90)		सासादन
	1 (29)		मिश्र
	2 (29,30)		1-3 नरक, असंयत स.
	6 (23,25,26,28,29,30)		4-7 नरक, असंयत स.
	1 (28)		मिथ्यात्म, त्रस, उच्चास पर्याप्ति (उच्चोत रहित), शरीर पर्याप्ति (उच्चोत सहित)
29	2 (28,29)	देव	असंयत स.
	6 (23,25,26,28,29,30)		मिथ्यात्म, उच्चास पर्याप्ति
	1 (28)		असंयत स.
	6 (23,25,26,28,29,30)		आहारक, भाषा पर्याप्ति
	2 (28,29)		असंयत स.

उदयस्थान	नाम कर्म के उदय आधार, बंध सत्त्व आधेय त्रिसंयोग भंग		स्वामी
	बंधस्थान	सत्त्वस्थान	
	0	2 (80,78)	तीर्थकर केवली, दण्ड समुद्रधात, शरीर पर्याप्ति
	0	2 (79,77)	सामान्य केवली, मूल शरीर में प्रवेश, उच्चास पर्याप्ति
	4 (25,26,29,30)	2 (92,90)	मिथ्यादृष्टि भवनत्रिक देव / देवियाँ / सौधर्म-द्विक, भाषा पर्याप्ति
	2 (29,30)	1 (90)	मिथ्यादृष्टि, सानकुमार से सहसर
	1 (29)	2 (92,90)	मिथ्यादृष्टि, आनन्द से ग्रैवेयिक तक
	2 (29,30)	1 (90)	सासादन, भवनत्रिक देव / देवियाँ / सौधर्म से सहसर, भाषा पर्याप्ति
	1 (29)	2 (92,90)	सासादन, आनन्द से ग्रैवेयिक तक, भाषा पर्याप्ति
30	1 (29)	2 (92,90)	मित्र
	2 (29,30)	4 (93,92,91,90)	असंयत स., भवनत्रिक देवियाँ
	8 (23,25,26,28,29,30,31,1)	10 (93,92,91,90,88,84,82,80,79,78,77)	असंयत स., वैमनिक
	6 (23,25,26,28,29,30)	2 (92,90)	तिर्थङ्क
	5 (23,25,26,29,30)	4 (92,90,88,84)	मिथ्यादृष्टि, त्रस, उच्चास पर्याप्ति, उद्योत सहित, पर्वेद्रिय
	1 (28)	2 (92,90)	मिथ्यादृष्टि, त्रस, उच्चास पर्याप्ति, उद्योत सहित, विकलत्रय
	6 (23,25,26,28,29,30)	2 (92,90)	असंयत स., उच्चवास पर्याप्ति
	5 (23,25,26,29,30)	4 (92,90,88,84)	मिथ्यादृष्टि, त्रस, भाषा पर्याप्ति, उद्योत रहित, पंचोद्रिय
	3 (28,29,30)	1 (90)	मिथ्यादृष्टि, त्रस, भाषा पर्याप्ति, उद्योत रहित, विकलत्रय
	1 (28)	2 (92,90)	सासादन, भाषा-पर्याप्ति
	0	2 (80,78)	मित्र, असंयत स., देश-संयत
	6 (23,25,26,28,29,30)	3 (92,91,90)	तीर्थकर, समुद्रधात, उच्चास पर्याप्ति
	3 (28,29,30)	1 (90)	मिथ्यात्म, भाषा-पर्याप्ति
	1 (28)	2 (92,90)	सासादन, भाषा-पर्याप्ति
	2 (29,28)	4 (93,92,91,90)	मित्र
	1 (1)	4 (93,92,91,90)	असंयत स. से प्रमत
	1 (1)	4 (80,79,78,77)	अप्रमत्त से अपूर्वकरण के 6 भाग तक
	0	4 (93,92,91,90)	अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्म-सापराय, क्षपक श्रेणी
	0	4 (80,79,78,77)	अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्म-सापराय, क्षपक श्रेणी
31	6 (23,25,26,28,29,30)	6 (92,90,88,84,80,78)	मनुष्य
	6 (23,25,26,28,29,30)	2 (92,90)	मिथ्यादृष्टि, त्रस, भाषा पर्याप्ति, उद्योत सहित, पंचोद्रिय
	5 (23,25,26,29,30)	4 (92,90,88,84)	मिथ्यादृष्टि, त्रस, भाषा पर्याप्ति, उद्योत सहित, विकलत्रय
	3 (28,29,30)	1 (90)	सासादन, भाषा-पर्याप्ति, उद्योत-सहित
	1 (28)	2 (92,90)	मित्र, असंयत स., देश-संयत, उद्योत-सहित
	0	2 (80,78)	तीर्थकर, भाषा-पर्याप्ति
	9	0	आयोग-केवली, तीर्थकर
8	0	3 (79,77,9)	आयोग-केवली, सामान्य

गोमटसार कर्मकांड गाया -- गाया -- 746 से 752



+ नाम कर्म के सत्त्व आधार, बंध उदय आधेय भंग -

नाम कर्म के सत्त्व आधार, बंध उदय आधेय भंग

विशेष :

नाम कर्म के सत्त्व आधार, बंध उदय आधेय त्रिसंयोग भंग			
सत्त्वस्थान	बंधस्थान	उदयस्थान	स्वामी
93	4 (29,30,31,1)	7 (21,25,26,27,28,29,30)	पर्याप्ति / निवृत्तिअप्याप्ति कर्मभूषि-मनुष्य / देव
	5 (21,26,28,29,30)	1 (30)	असंयत स.
	1 (29)	5 (25,27,28,29,30)	मनुष्य
	2 (29,31)	1 (30)	देशसंयत
	1 (1)	5 (25,27,28,29,30)	प्रमत्तसंयत
	0	1 (30)	अप्रमत्तसंयत / अपूर्वकरण
	1 (30)	5 (21,25,27,28,29)	उपशमक अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय
92	6 (23,25,26,28,29,30)	5 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	उपशांतमोह
	7 (23,25,26,28,29,30,1)	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	देव
	2 (29,30)	5 (21,25,27,28,29)	चारण-गति के जीव
	1 (29)	1 (29)	मिथ्यादृष्टि
	1 (29)	5 (21,25,27,28,29)	मित्र
	1 (29)	1 (29)	नरक
	6 (23,25,26,28,29,30)	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	1 नरक, असंयत स.
	2 (29,30)	2 (30,31)	2-7 नरक, असंयत स.
	1 (28)	6 (21,26,28,29,30,31)	तिर्थङ्क
	1 (28)	2 (30,31)	असंयत स.
92	6 (23,25,26,28,29,30)	5 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	देशसंयत
	7 (23,25,26,28,29,30,1)	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	मिथ्यादृष्टि
	2 (29,30)	2 (30,31)	मित्र
	1 (29)	6 (21,26,28,29,30,31)	नरक
	1 (29)	2 (30,31)	असंयत स.
	6 (23,25,26,28,29,30)	5 (21,26,28,29,30)	तिर्थङ्क
	1 (28)	1 (30)	देशसंयत
92	6 (23,25,26,28,29,30)	5 (21,26,28,29,30)	मिथ्यादृष्टि
	1 (28)	5 (21,26,28,29,30)	मित्र
	1 (28)	1 (30)	असंयत स.
	2 (28,30)	5 (25,27,28,29,30)	देशसंयत
	1 (1)	1 (30)	प्रमत्तसंयत
92	0	5 (25,27,28,29,30)	अप्रमत्तसंयत / अपूर्वकरण
	2 (28,30)	1 (30)	उपशमक अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय
	1 (1)	1 (30)	उपशांतमोह

नाम कर्म के सत्त्व आधार, बंध उदय आधेय त्रिसंयोग भंग			
सत्त्वस्थान	बंधस्थान	उदयस्थान	स्वामी
91	1 (29)	5 (21,25,27,28,29)	मिथ्यादृष्टि, भवनत्रिक से सौधर्म-द्विक
			मिथ्यादृष्टि, सनकु-मार से सहसार तक
			मिथ्यादृष्टि, सहसार से ग्रैवेयिक तक
			मिश्र
			असंयत स., भवनत्रिक
	1 (29)	5 (21,25,27,28,29)	असंयत स., वैमानिक
			नारकी, मनुष्य, देव
			1 से 3 नरक, मिथ्यादृष्टि
			1 नरक, असंयत स.
			2-3 नरक, असंयत स.
90	1 (29)	5 (21,25,27,28,29)	मिथ्यादृष्टि
			असंयत स.
			देशसंपत्ति
			प्रमत्संयत
			अप्रमत्संयत / अपूर्वकरण छठा भाग
	1 (29)	5 (21,26,28,29,30)	उपशमक अपूर्वकरण 7वां भाग से, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय
			उपशांतमोह
			असंयत स.
			चारों-गति के जीव
			मिथ्यादृष्टि
88	1 (29)	5 (21,25,27,28,29)	सासादन
			मिश्र
			1 नरक, असंयत स.
			2-7 नरक, असंयत स.
			मिथ्यादृष्टि
	1 (29)	5 (21,24,26,30,31)	सासादन
			मिश्र
			असंयत स.
			देशसंपत्ति
			मिथ्यादृष्टि
84	1 (28)	5 (21,26,28,29,30)	सासादन
			मिश्र
			असंयत स.
			देशसंपत्ति
			प्रमत्संयत
	1 (28)	5 (21,26,28,29,30)	अप्रमत्संयत / अपूर्वकरण छठा भाग
			उपशमक अपूर्वकरण 7वां भाग से, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय
			उपशांतमोह
			मिथ्यादृष्टि, भवनत्रिक से सौधर्म-द्विक
			मिथ्यादृष्टि, सनकु-मार से सहसार तक
82	1 (29)	5 (21,26,28,29)	मिथ्यादृष्टि, सहसार से ग्रैवेयिक तक
			सासादन, भवनत्रिक से सहसार तक
			सासादन, सहसार से ग्रैवेयिक तक
			मिश्र
			असंयत स., भवनत्रिक
	1 (29)	5 (21,25,27,28,29)	असंयत स., वैमानिक
			एकेद्वय, विकल्पय, पर्वोद्वय (ज्ञान की अवैष्णवी)
			मिथ्यादृष्टि
			एकेद्वय, विकल्पय, पर्वोद्वय (ज्ञान की अवैष्णवी)
			मिथ्यादृष्टि
80 / 78	0	1 (30)	एकेद्वय के, विकल्पय व पर्वोद्वय (ज्ञान की अवैष्णवी) तिर्यङ्, मिथ्यादृष्टि
			क्षेत्र के बैरां / तैर्धेत्र के बैरां
			क्षेत्रक अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय
			क्षीणमोह
			स्योग-केवली, स्वस्थान
	0	5 (21,27,29,30,31)	स्योग-केवली, समुद्रधात
			अयोग-केवली
			क्षेत्र के बैरां / सामान्य के बैरां
			क्षेत्रक अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय
			क्षीणमोह
79 / 77	0	1 (30)	स्योग-केवली, स्वस्थान
			स्योग-केवली, समुद्रधात
			अयोग-केवली
			क्षेत्र के बैरां / सामान्य के बैरां
			क्षेत्रक अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय
	0	5 (21,26,28,29,30)	क्षीणमोह
			स्योग-केवली, स्वस्थान
			स्योग-केवली, समुद्रधात
			अयोग-केवली
			क्षेत्र के बैरां / सामान्य के बैरां
10	0	1 (9)	अयोग-केवली, चरम समय, तीर्थकर
9	0	1 (8)	अयोग-केवली, चरम समय, सामान्य

गोमटसर कर्मकांड गाथा – 753-759



+ नाम कर्म के बंध / उदय आधार सत्त्व आधेय -

नाम कर्म के बंध / उदय आधार सत्त्व आधेय

विशेष :

नाम कर्म के बंध / उदय आधार सत्त्व आधेय त्रिसंयोग भंग

बंधस्थान	उदयस्थान	सत्त्वस्थान
23,25,26	21,24,25,26	5 (92,90,88,84,82)
	27,28,29,30,31	4 (92,90,88,84)
28	21,25,26,27,28,29	2 (92,90)
	30	4 (92,91,90,88)
29	31	3 (92,90,88)
	21,25,26	7 (93,92,91,90,88,84,82)
30	24,31	4 (92,90,88,84)
	27,28,29,30	6 (93,92,91,90,88,84)
31	21,25	7 (93,92,91,90,88,84,82)
	27,28,29	6 (93,92,91,90,88,84)
30	24,26	5 (92,90,88,84,82)
	30,31	4 (92,90,88,84)
31	30	1 (93)
1	30	8 (93,92,91,90,80,79,78,77)

गोमटसार कर्मकांड गाथा – गाथा – 760-768



+ नाम कर्म के बंध / सत्त्व आधार उदय आधेय भंग -

नाम कर्म के बंध / सत्त्व आधार उदय आधेय त्रिसंयोग भंग

विशेष :

नाम कर्म के बंध / सत्त्व आधार उदय आधेय त्रिसंयोग भंग

बंधस्थान	सत्त्वस्थान	उदयस्थान	बंध	स्वामी
23,25,26	92,90,88,84	9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)	एकेन्द्रिय	देव / तिर्यञ्च / मनुष्य
	82	9 (21,24,25,26)	एकेन्द्रिय	एकेन्द्रिय / त्रस तिर्यञ्च (शरीर-मिश्र तक)
28	92	8 (21,25,26,27,28,29,30,31)	देव / नरक	मनुष्य / पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च
		5 (21,26,28,29,30)		सामान्य मनुष्य
		4 (25,27,28,29)		आहारक शरीरी
		7 (21,26,27,28,29,30,31)		पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च / मनुष्य
	91	1 (30)		मिथावृष्टि मनुष्य, तीर्थकर सत्त्व सहित
	90	7 (21,26,27,28,29,30,31)		मनुष्य / तिर्यञ्च
29	88	2 (30,31)	चारों गति के जीव	
	93	7 (93,92,91,90,88,84,82)		
		9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)		
		5 (21,26,28,29,30)		सामान्य मनुष्य
	92,90,88,84	4 (25,27,28,29)		आहारक समुद्रघात
		5 (21,25,27,28,29)		देव / नारकी
		5 (21,24,25,26,27)		एकेन्द्रिय
		7 (21,26,27,28,29,30,31)		त्रस तिर्यञ्च
		5 (21,26,28,29,30)		मनुष्य
		2 (21,25)		मनुष्य-गति
30	91	5 (21,26,28,29,30)	देवगति-तीर्थकर	नारकी मिथावृष्टि
		4 (25,27,28,29)		मनुष्य
		4 (21,26,28,29,30)		आहारक-समुद्रघात
	82	4 (21,24,25,26)		एकेन्द्रिय
		9 (21,24,25,26,27,28,29,30,31)		चारों गति के जीव
		5 (21,25,27,28,29)		मनुष्य, तीर्थकर
31	93,91	5 (21,25,27,28,29)	त्रस तिर्यञ्च / मनुष्य	देव
	92,90,88,84	5 (21,25,27,28,29)		देव / नारकी
		5 (21,24,25,26,27)		एकेन्द्रिय
		7 (21,26,27,28,29,30,31)		त्रस तिर्यञ्च
	82	5 (21,26,28,29,30)		मनुष्य
		4 (21,24,25,26)		एकेन्द्रिय
31	93	30	देव, तीर्थकर, आहारक-द्विक	अप्रमत्त-संयत / अपूर्वकरण
1	8 (93,92,91,90,80,79,78,77)	30	यशःकीर्ति	त्रेणी अराहण के समय
	4 (93,92,91,90)			उपशम श्रेणी, अनिवृत्तिकरण / सुक्ष्म-साम्पराय
	4 (80,79,78,77)			क्षणक-श्रेणी, अनिवृत्तिकरण / सुक्ष्म-साम्पराय

गोमटसार कर्मकांड गाथा – गाथा – 769-774



+ नाम कर्म के उदय / सत्त्व आधार बन्ध आधेय भंग -

नाम कर्म के उदय / सत्त्व आधार बन्ध आधेय भंग

विशेष :

नाम कर्म के उदय / सत्त्व आधार बन्ध आधेय त्रिसंयोग भंग

उदयस्थान	सत्त्वस्थान	बंधस्थान	बंध	स्वामी
21	93	30	मनुष्य / तीर्थकर	देव, अविरत स., कार्मण काल
		29	देव / तीर्थकर	मनुष्य, अविरत स., कार्मण काल

नाम कर्म के उदय / सत्त्व आधार बन्ध आधेय त्रिसंयोग भंग				
उदयस्थान	सत्त्वस्थान	बंधस्थान	बंध	स्वामी
	92.90	6 (23,25,26,28,29,30)	चारों-गति	चारों-गति के कार्मण-काल के जीव
	88.84.82	5 (23,25,26,29,30)	तिर्यञ्च / मनुष्य	उद्गेलना सहित मिथ्यादृष्टि तिर्यञ्च / मनुष्य
24	92.90.88.84.82	5 (23,25,26,29,30)	तिर्यञ्च / मनुष्य	एकेद्विय, शरीर-मिश्र काल
25	93	30	मनुष्य / तीर्थकर	देव, अविरत स., शरीर-मिश्र काल
		29	देव / तीर्थकर	आहारक-शरीरी, शरीर-मिश्र काल
	91	30	मनुष्य / तीर्थकर	देव / नारकी (1 नरक), असंयत स., शरीर-मिश्र काल
		29	मनुष्य	नारकी मिथ्यादृष्टि, शरीर-मिश्र, 1 से 3 नरक
	92	6 (23,25,26,28,29,30)	मनुष्य / तिर्यञ्च / देव	देव / नारकी / आहारक-शरीरी -- शरीर-मिश्र काल; एकेद्विय -- शरीर-पर्याप्ति काल
	90	5 (23,25,26,29,30)	तिर्यञ्च / मनुष्य	देव / नारकी -- शरीर-मिश्र काल; एकेद्विय -- शरीर-पर्याप्ति काल
	88.84.82		तिर्यञ्च / मनुष्य	उद्गेलना सहित मिथ्यादृष्टि तिर्यञ्च एकेद्विय शरीर-पर्याप्ति काल
26	93.91	1 (29)	देव / तीर्थकर	मनुष्य, अविरत स., शरीर-मिश्र काल
	92.90	6 (23,25,26,28,29,30)	चारों-गति	मनुष्य / तिर्यञ्च
	88.84	5 (23,25,26,29,30)	तिर्यञ्च / मनुष्य	उद्गेलना सहित मिथ्यादृष्टि -- एकेन्द्रिय उच्चास-पर्याप्ति; एकेन्द्रिय आतप-उद्योत सहित शरीर-पर्याप्ति काल
	82		तिर्यञ्च	उद्गेलना सहित मिथ्यादृष्टि -- एकेन्द्रिय उच्चास-पर्याप्ति; एकेन्द्रिय आतप-उद्योत सहित शरीर-पर्याप्ति काल
27	93	30	मनुष्य, तीर्थकर	देव, शरीर-पर्याप्ति
		29	देव, तीर्थकर	आहारक शरीरी, शरीर-पर्याप्ति
	91	30	मनुष्य, तीर्थकर	देव, शरीर-पर्याप्ति
		मनुष्य, तीर्थकर	नारकी, 1-3 नरक, शरीर-पर्याप्ति	
	92	6 (23,25,26,28,29,30)		देव, नारकी, आहारक-शरीरी -- शरीर-पर्याप्ति काल; एकेन्द्रिय आतप / उद्योत सहित उच्चास पर्याप्ति काल
	90	5 (23,25,26,29,30)		देव, नारकी -- शरीर-पर्याप्ति काल; एकेन्द्रिय आतप / उद्योत सहित उच्चास पर्याप्ति काल
	88.84	5 (23,25,26,29,30)		उद्गेलना सहित मिथ्यादृष्टि एकेन्द्रिय आतप / उद्योत सहित उच्चास पर्याप्ति काल
28	93	30	मनुष्य, तीर्थकर	देव, उच्चास-पर्याप्ति
		29	देव, तीर्थकर	मनुष्य, शरीर पर्याप्ति काल; आहारक शरीरी उच्चास पर्याप्ति
	91	30	मनुष्य, तीर्थकर	देव / नारकी (1-3 नरक), उच्चास-पर्याप्ति
		29	देव, तीर्थकर	मनुष्य, शरीर पर्याप्ति काल
	4 (25,26,29,30)		मनुष्य / तिर्यञ्च	देव, उच्चास-पर्याप्ति
		29,30		नारकी, उच्चास-पर्याप्ति
	92.90	28	देव	आहारक शरीरी, उच्चास पर्याप्ति
	6 (23,25,26,28,29,30)		चारों-गति	सामान्य मनुष्य / पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च, शरीर पर्याप्ति
	5 (23,25,26,29,30)			विकलेन्द्रिय तिर्यञ्च उद्योत रहित, उच्चास पर्याप्ति काल
	88.84	5 (23,25,26,29,30)	मनुष्य / तिर्यञ्च	उद्गेलना सहित मिथ्यादृष्टि विकलेन्द्रिय, शरीर पर्याप्ति काल ?
29	93	30	मनुष्य, तीर्थकर	देव, भाषा-पर्याप्ति
		29	देव, तीर्थकर	मनुष्य, उच्चास पर्याप्ति काल; आहारक शरीरी भाषा पर्याप्ति
	91	30	मनुष्य, तीर्थकर	देव / नारकी (1-3 नरक), भाषा-पर्याप्ति
		29	देव, तीर्थकर	मनुष्य, उच्चास पर्याप्ति काल
	4 (25,26,29,30)		मनुष्य / तिर्यञ्च	देव, भाषा-पर्याप्ति
		29,30		नारकी, भाषा-पर्याप्ति
	92.90	28	देव	आहारक शरीरी, भाषा पर्याप्ति
	6 (23,25,26,28,29,30)		चारों-गति	सामान्य मनुष्य / पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च, उच्चास पर्याप्ति
	5 (23,25,26,29,30)			विकलेन्द्रिय तिर्यञ्च उद्योत रहित, उच्चास पर्याप्ति काल; विकलेन्द्रिय तिर्यञ्च उद्योत सहित शरीर पर्याप्ति
	88.84	5 (23,25,26,29,30)	मनुष्य / तिर्यञ्च	उद्गेलना सहित मिथ्यादृष्टि विकलेन्द्रिय, शरीर पर्याप्ति काल ?
30	93	29	देव, तीर्थकर	मनुष्य, भाषा पर्याप्ति काल
		31	देव, तीर्थकर, आहारक-द्विक	
	91	29	देव, तीर्थकर	मनुष्य सम्यकती
		28,29	नरक / मनुष्य	मनुष्य मिथ्यादृष्टि
	92.90.88	6 (23,25,26,28,29,30)	चारों-गति	त्रस तिर्यञ्च / मनुष्य
	84	5 (23,25,26,29,30)	मनुष्य / तिर्यञ्च	उद्गेलना सहित मिथ्यादृष्टि विकलेन्द्रिय, उच्चास / भाषा पर्याप्ति ?
31	92.90.88	6 (23,25,26,28,29,30)	चारों-गति	त्रस तिर्यञ्च, उद्योत सहित, भाषा पर्याप्ति
	84	5 (23,25,26,29,30)	मनुष्य / तिर्यञ्च	विकलेन्द्रिय तिर्यञ्च, उद्योत सहित

गोमत्सार कम्कांड गाथा – गाथा .. 775 से 784



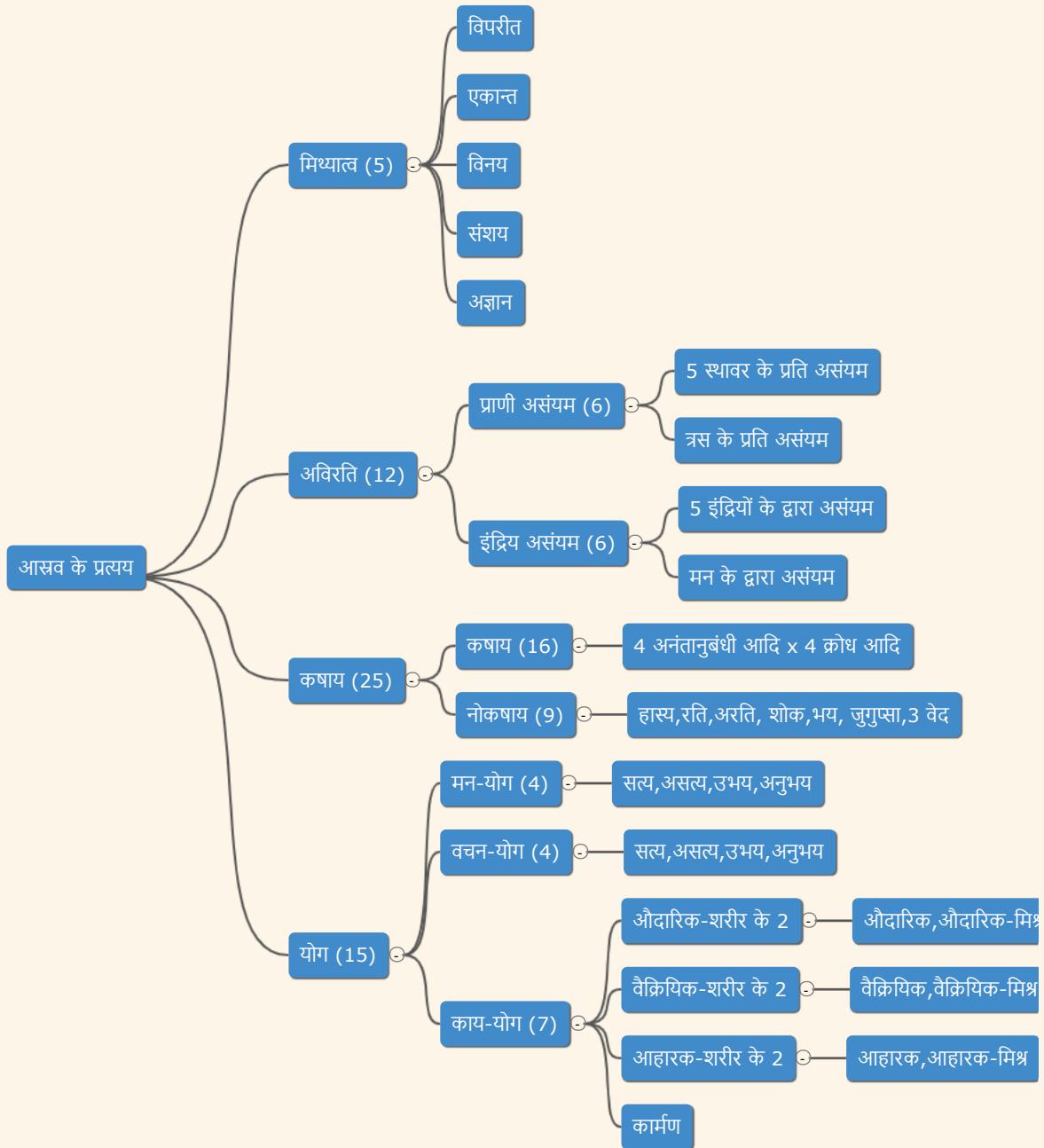
आस्रव प्रत्यय



+ आस्रव के प्रत्यय के मूल और उत्तर-भेद -

आस्रव के प्रत्यय के मूल और उत्तर-भेद

आस्रव के प्रत्यय के मूल और उत्तर-भेद



+ गुणस्थान में आस्रवों के मूल-प्रत्यय -
गुणस्थान में आस्रवों के मूल-प्रत्यय

विशेष :

गुणस्थान में आस्रव के मूल-प्रत्यय					
गुणस्थान	बंध-प्रत्यय	मिथ्यात्व (5)	अविरत (12)	क्षय (25)	योग (15)
मिथ्यादृष्टि	4	✓	✓	✓	✓
सासादन	3	X	✓	✓	✓
सम्बिध्यादृष्टि	3	X	✓	✓	✓
असंयत सम्बद्धिः	3	X	✓	✓	✓
संयतसंयत	3	X	✓	✓	✓
प्रमत्तसंयत	2	X	X	✓	✓
अप्रमत्तसंयत	2	X	X	✓	✓
अपूर्वकरण	2	X	X	✓	✓
अनिवृत्करण	2	X	X	✓	✓
सुक्षमसाम्पराय	2	X	X	✓	✓
उपशान्त / क्षीण क्षयाय	1	X	X	X	✓
सयोग केवली	1	X	X	X	✓



+ गुणस्थानों में आस्रवों के उत्तर प्रत्यय -
गुणस्थानों में आस्रवों के उत्तर प्रत्यय

विशेष :

गुणस्थानों में आस्रव के उत्तर प्रत्यय								
गुणस्थान	नाना जीवों की अपेक्षा			एक जीव की अपेक्षा			उत्कृष्ट	
	संख्या	अनुदय	व्युच्छिति	संख्या	प्रत्यय	संख्या	प्रत्यय	संख्या
मिथ्यादृष्टि	55	2 (आहारक, आहारक-मिश्र योग)	5 (मिथ्यात्व)	10	१ मिथ्यात्व, २ असंयम, ३ कषाय, १ वेद, हास्य-रति / शोक-अरति, भय, जुगुसा, १ योग	18	१ मिथ्यात्व, ७ असंयम, ४ कषाय, १ वेद, हास्य-रति / शोक-अरति, भय, जुगुसा, १ योग	
सासादन	50	7	4 (अनतानुबंधी ४)	10	२ असंयम, ७ (४ कषाय, १ वेद, हास्य-रति / शोक-अरति), १ योग	17	७ असंयम, ९ (४ कषाय, १ वेद, ४ हास्य-रति / शोक-अरति, भय, जुगुसा, १ योग	
सम्यमिथ्यादृष्टि	43	14 (औदारिक-मिश्र वैक्रियिक-मिश्र कार्यण)	0	9	२ असंयम, ३ कषाय, १ वेद, हास्य-रति / शोक-अरति, १ योग	16	७ असंयम, ३ कषाय, १ वेद, हास्य-रति / शोक-अरति, भय, जुगुसा, १ योग	
असंयत सम्यमदृष्टि	46 (+ औदारिक-मिश्र वैक्रियिक-मिश्र कार्यण)	11	7 (४ अप्रत्याख्यान, औदारिक-मिश्र वैक्रियिक, वैक्रियिक-मिश्र कार्यण, १ असंयम)	8	२ असंयम, २ कषाय, १ वेद, हास्य-रति / शोक-अरति, १ योग	14	६ असंयम, २ कषाय, १ वेद, हास्य-रति / शोक-अरति, भय, जुगुसा, १ योग	
संयतासंयत	37	20 (औदारिक-मिश्र कार्यण)	15 (४ प्रत्याख्यान, शेष ११ असंयम)	5	१ कषाय, १ वेद, हास्य-रति / शोक-अरति, १ योग	7	१ कषाय, १ वेद, हास्य-रति / शोक-अरति, भय, जुगुसा, १ योग	
प्रमत्तसंयत	24 (+ आहारक, आहारक-मिश्र)	33	2 (आहारक, आहारक-मिश्र)					
अप्रमत्तसंयत	22	35	0					
अपूर्वकरण	22	35	6 (६ नोकषाय)					
अनिवृत्तिकरण	प्रथम भाग	16	41	1 (नपुंसक-वेद)				
	द्वितीय भाग	15	42	1 (स्त्री-वेद)				
	तृतीय भाग	14	43	1 (पुरुष-वेद)				
	चतुर्थ भाग	13	44	1 (संज्वलन क्रोध)	2	१ कषाय, १ योग	3	१ कषाय, १ वेद, १ योग
	पंचम भाग	12	45	1 (संज्वलन मान)				
	छठा भाग	11	46	1 (संज्वलन माया)				
	सातवाँ भाग	10	47	0				
सूक्ष्मसाम्पराय	10	47	1 (सूक्ष्म-लोभ)	2	१ कषाय, १ योग	2	१ कषाय, १ योग	
उपशान्त कषाय	9	48	0					
क्षीण कषाय	9	48	4 (असत्य मन / वचन, उभय मन / वचन योग)	1	१ योग	1	१ योग	
संयोग केवली	7 (+ औदारिक मिश्र / कार्यण काय योग)	50	7 (औदारिक-औदारिक-मिश्र सत्य-१/मन और वचन, उभय-२/मन और वचन, कार्यण)					

कुल कौश प्रत्यय = ५७ / ९८ मिथ्यात्व, १८ असंयम, १५ कषाय, १५ योग



+ गुणस्थानों में आस्रव के स्थान संख्या और उनके प्रकार -
गुणस्थानों में आस्रव के स्थान संख्या और उनके प्रकार

गुणस्थान	स्थान-संख्या	स्थान (ऊपर) और उनके प्रकार (स्थान के नीचे)
मिथ्यादृष्टि	9	10 [11] 12 [13] 14 [15] 16 [17] 18 1 [3] 5 [6] 6 [6] 5 [3] 1
सासादन	8	10 [11] 12 [13] 14 [15] 16 [17] 1 [2] 3 [3] 3 [3] 2 [1]
मिश्र	8	9 [10] 11 [12] 13 [14] 15 [16] 1 [2] 3 [3] 3 [3] 2 [1]
असंयत सम्यमदृष्टि	8	9 [10] 11 [12] 13 [14] 15 [16] 1 [2] 3 [3] 3 [3] 2 [1]
संयतासंयत	7	8 [9] 10 [11] 12 [13] 14 [15] 16 1 [2] 3 [3] 3 [3] 2 [1]
प्रमत्तसंयत	3	5 [6] 7 1 [1] 1
अप्रमत्तसंयत	3	5 [6] 7 1 [1] 1
अपूर्वकरण	3	5 [6] 7 1 [1] 1
अनिवृत्तिकरण	2	2 [3] 1 [1]
सूक्ष्मसाम्पराय	1	2 1
उपशान्त कषाय	1	1
क्षीण कषाय	1	1
संयोग केवली	1	1



+ गुणस्थानों में आस्रव के प्रत्यय के भंगों का प्रमाण -

गुणस्थानों में आस्रव के प्रत्यय के भंगों का प्रमाण

विशेष :

गुणस्थानों में आस्रव के प्रत्यय के भंगों का प्रमाण												
गुणस्थान	विशेष	5 मिथ्यात्म	प्रत्यय									भंगों का प्रमाण
			12 अविरति			25 कषाय						
मिथ्यादृष्टि	अनंतानुबंधी-रहित	5	*63	6	4	2	^2	^2	3	#10	18,14,400	
	सामान्य	5	63	6	4	2	2	2	3	13	23,58,720	
	*प्राणी अस्यम में 1 से 6 तक सभी combinations, ${}^6C_1+{}^6C_2+{}^6C_3+{}^6C_4+{}^6C_5+{}^6C_6=6+15+20+15+6+1=63$ *भ्रम या जुगुप्ता का उदय हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है। (अथ) इसलिए दोनों के 2-2 भ्रम हैं। *अनंतानुबंधी से रहित पर्यावरण स्थान में ही होते हैं। इसलिए औदारिक-मिश्र / वैकेषणिक-मिश्र / कार्मण काय योग यहाँ नहीं है।											कुल 41,73,120
सासादन	वैक्रियिक-मिश्र विना	-	63	6	4	2	2	2	3	*12	4,35,456	
	वैक्रियिक-मिश्र में	-	63	6	4	2	2	2	#2	1	24,192	
	*वैक्रियिक-मिश्र विना बाहर योग *वैक्रियिक-मिश्र में न्युसंक वेद नहीं है।											कुल 4,59,648
मिश्र	पर्याप्त अवस्था	-	63	6	4	2	2	2	3	*10	3,62,880	
	वैक्रियिक-मिश्र / कार्मण	-	63	6	4	2	2	2	2	*2	48,384	
असंघत सम्प्रदाय	औदारिक-मिश्र	-	63	6	4	2	2	2	1	*1	12,096	
	*वैक्रियिक-मिश्र के साथ स्त्री वेद और औदारिक-मिश्र के साथ स्त्री / न्युसंक वेद यहाँ नहीं है।											कुल 4,23,360
	संयतासंयत	-	*31	6	4	2	2	2	3	*9	1,60,704	
प्रमत्तसंयत	सामान्य	-	-	-	4	2	2	2	3	*9	864	
	आहारक-योग	-	-	-	4	2	2	2	#1	2	64	
	*असंघत प्रत्यय का अभाव, वैक्रियिक और मिश्र योग का अभाव *आहारक / आहारक-मिश्र योग में पूर्ण वेद का ही संबन्धत											कुल 928
अप्रमत्तसंयत	वेद-सहित	-	-	-	4	-	-	-	3	9	108	
	न्युसंक-वेद-रहित	-	-	-	4	-	-	-	2	9	72	
अनिवृत्तिकरण	वेद-रहित	-	-	-	4	-	-	-	9	36		
	क्रोध-रहित	-	-	-	3	-	-	-	-	9	27	
	मान-रहित	-	-	-	2	-	-	-	-	9	18	
	माया-रहित	-	-	-	1	-	-	-	-	9	9	
	कुल 270											
सूक्ष्मसाम्प्राय		-	-	-	1	-	-	-	-	9	कुल 9	
उपशान्त कषाय		-	-	-	-	-	-	-	-	9	कुल 9	
क्षीण कषाय		-	-	-	-	-	-	-	-	9	कुल 9	
सयोग केवली		-	-	-	-	-	-	-	-	7	कुल 7	
गोमटसार कर्मकाण्ड – गाथा 795-796												



+ मार्गणा में आस्रव - मार्गणा में आस्रव

विशेष :

मार्गणा में आस्रव													
मार्गणा		गुणस्थान	कुल	5 मिथ्यात्म	12 अविरति	25 कषाय	15 योग						
गति	नरक	1 से 7	1	51	5	12	23 (-२ वेद)	11 (15-आहा.द्वि., औदा.द्वि.)					
		2	44	0	12	23		9 (11-वै.मि., कार्मण)					
		3	40	0	12	19 (अनं-४)		9					
	पर्यावरण	पहला	4	42	0	12	19	11 (9+वै.मि., कार्मण)					
		2 से 7	4	40	0	12	19	9					
तिर्यक्	कर्मभूमि	1	53	5	12	25	11 (15-आहा.द्वि., वै.द्वि.)						
		2	48	0	12	25	11 (15-आहा.द्वि., वै.द्वि.)						
		3	42	0	12	21 (25-अनं-४)	9 (15-आहा.द्वि., वै.द्वि., औदा.मि., कार्मण)						
		4	44	0	12	21	11 (15-आहा.द्वि., वै.द्वि.)						
		5	37	0	11	17 (21-अप्र-४)	9 (15-आहा.द्वि., वै.द्वि., औदा.मि., कार्मण)						
	भोगभूमि	1	52	5	12	24 (25-न्युसंक वेद)	11 (15-आहा.द्वि., वै.द्वि.)						
		2	47	0	12	24	11 (15-आहा.द्वि., वै.द्वि.)						
		3	41	0	12	20 (24-अनं-४)	9 (15-आहा.द्वि., वै.द्वि., औदा.मि., कार्मण)						
		4	43	0	12	20 (24-अनं-४)	11 (15-आहा.द्वि., वै.द्वि.)						
	लब्धपर्याप्तक	1	42	5	12	23 (25-२ वेद)	2 (कार्मण, औदा.मि.)						

मार्गण में आस्रव

मार्गण	गुणस्थान	कुल	५ मिथ्यात्	१२ अविरति	२५ कषाय	१५ योग		
मनुष्य	कर्मभूमि	सामान्य	५५	५	१२	२५		
		१	५३	५	१२	२५	१३ (१५-वैद्वि)	
		२	४८	०	१२	२५	११	
		३	४२	०	१२	२१ (२५-अनं४)	९ (१५-आहा.द्वि.,वैद्वि,ओदा.मि.,कार्मण)	
		४	४४	०	१२	२१	११ (१५-आहा.द्वि.,वैद्वि,ओदा.मि.,कार्मण)	
		५	३७	०	११ (१२-त्रसहिसा अविरति)	१७ (२१-४ अप्र.)	९ (१५-आहा.द्वि.,वैद्वि,ओदा.मि.,कार्मण)	
		६	२४	०	०	१३ (१७-४ प्र.)	११ (१५-वै.द्वि,ओदा.मि.,कार्मण)	
		७-८	२२	०	०	१३	९ (१५-आहा.द्वि.,वैद्वि,ओदा.मि.,कार्मण)	
		९	भाग १	१६	०	०	७ (१३-६ नोकषाय)	९ (१५-आहा.द्वि.,वैद्वि,ओदा.मि.,कार्मण)
		भाग २	१५	०	०	६ (७-न्यु.वेद)	९ (१५-आहा.द्वि.,वैद्वि,ओदा.मि.,कार्मण)	
		भाग ३	१४	०	०	५ (६-स्त्री.वेद)	९ (१५-आहा.द्वि.,वैद्वि,ओदा.मि.,कार्मण)	
		भाग ४	१३	०	०	४ (५-पुरुष.वेद)	९ (१५-आहा.द्वि.,वैद्वि,ओदा.मि.,कार्मण)	
		भाग ५	१२	०	०	३ (४-क्रांते.कषाय)	९ (१५-आहा.द्वि.,वैद्वि,ओदा.मि.,कार्मण)	
	भाग ६	११	०	०	२ (३-मान.कषाय)	९ (१५-आहा.द्वि.,वैद्वि,ओदा.मि.,कार्मण)		
	भाग ७	१०	०	०	१ (२-माया.कषाय)	९ (१५-आहा.द्वि.,वैद्वि,ओदा.मि.,कार्मण)		
	१०	१०	०	०	१	९		
	११-१२	९	०	०	०	९		
	१३	७	०	०	०	७ (ओदा.द्वि.,कार्मण.सत्य.अनुभव.मन-वचन.योग)		
	भोगभूमि	१	५२	५	१२	२४ (२५-न्यु.वेद)		
		२	४७	०	१२	२४ (२५-न्यु.वेद)	११	
		३	४१	०	१२	२० (२५-अनं४.न्यु.वेद)	९ (१५-आहा.द्वि.,वैद्वि,ओदा.मि.,कार्मण)	
		४	४३	०	१२	२० (२५-अनं४.न्यु.वेद)	११ (१५-आहा.द्वि.,वैद्वि)	
	लब्ध्यपर्याप्तिक	१	४२	५	१२	२३ (२५-२ वेद)		
	भवनत्रिक, देवियाँ	१	५२	५	१२	२४ (२५-न्यु.वेद)		
		२	४७	०	१२	२४	११	
		३,४	४१	०	१२	२० (२५-अनं४)	९ (१५-आ.द्वि.,ओदा.द्वि.,वै.मि.,कार्मण)	
	सौर्धम से ग्रैवेयिक	१	५१	५	१२	२३ (२५-२ वेद)		
		२	४६	०	१२	२३ (२५-२ वेद)	११ (१५-आहा.द्वि.,ओदा.द्वि.)	
		३	४०	०	१२	१९ (२३-अनं४)	९ (१५-आ.द्वि.,ओदा.द्वि.,वै.मि.,कार्मण)	
		४	४२	०	१२	१९ (२३-अनं४)	११ (१५-आ.द्वि.,ओदा.द्वि.)	
	अनुदिशा, अनुत्तर	४	४२	०	१२	१९ (२३-अनं४)		
	इतिरिय	एकेन्द्रिय	१	३८	५	७ (१२-४इंद्रिय और मन)		
		२	३२	०	७ (१२-४इंद्रिय और मन)	२३ (२५-२ वेद)		
	दो इंद्रिय	१	४०	५	८ (१२-३इंद्रिय और मन)	२३ (२५-२ वेद)		
		२	३३	०	८ (१२-३इंद्रिय और मन)	२३ (२५-२ वेद)		
	तीन इंद्रिय	१	४१	५	९ (१२-२इंद्रिय और मन)	२३ (२५-२ वेद)		
		२	३४	०	९ (१२-२इंद्रिय और मन)	२३ (२५-२ वेद)		
	चार इंद्रिय	१	४२	५	१० (१२-१इंद्रिय और मन)	२३ (२५-२ वेद)		
		२	३५	०	१० (१२-१इंद्रिय और मन)	२३ (२५-२ वेद)		
	पचंत्रिय	५७	५	१२	२५	१५		
	काय	पृथी, जल, वनस्पति	१	३८	५	७ (१२-४इंद्रिय और मन)		
		२	३२	०	७ (१२-४इंद्रिय और मन)	२३ (२५-२ वेद)		
		अशि, वायु	१	३८	५	७ (१२-४इंद्रिय और मन)	२३ (२५-२ वेद)	
	त्रस	५७	५	१२	२५	१५		
	योग	१० (४ मन, ४ वचन, वैक्रियिक, औदारिक)	१	४३	५	१२	२५	
			२	३८	०	१२	२५	१ (कोई १ योग)
			३	३४	०	१२	२१ (२५-अनं४)	
			४	३४	०	१२	२१ (२५-अनं४)	
		९ (४ मन, ४ वचन, औदारिक)	५	२९	०	११	१७ (२१-अप्र.-५)	
			६,७,८	१४	०	०	१३ (१७-४ प्र.)	
			१	८	०	०	७ (१३-६ नोकषाय)	
			२	७	०	०	६ (७-न्यु.वेद)	
			३	६	०	०	५ (६-स्त्री.वेद)	
			४	५	०	०	४ (५-पुरुष.वेद)	१ (कोई १ योग)
			५	४	०	०	३ (४-क्रांते.कषाय)	
			६	३	०	०	२ (३-मान.कषाय)	
		७	२	०	०	१ (२-माया.कषाय)		
	१०	२	०	०	१			
	११-१२	१	०	०	०			
	१३ (२ मन, २ वचन, औदारिक)	१३	१	०	०	१ (कोई १ योग)		
	वैक्रियिक मिश्र	१	४३	५	१२	२५		
		२	३७	०	१२	२४ (२५-न्यु.वेद)	१ (वैक्रियिक मिश्र)	
		४	३३	०	१२	२० (२५-अनं४, स्त्री.वेद)		
		५	३२	०	१२	१९ (२५-अनं४, २ वेद)	१ (औदारिक मिश्र)	
	औदारिक मिश्र	१	४३	५	१२	२५		
		२	३८	०	१२	२५		
		४	३२	०	१२	१९ (२५-अनं४, २ वेद)		
		१३	१	०	०	०		
	आहारक	६	१२	०	०	१ (२५-कषाय १२, २ वेद)		
	तीनों वेद	१	५३	५	१२	२३ (२५-२ वेद)		
	स्त्री / पुरुष	२	४८	०	१२	२३		
	न्युसक	३	४७	०	१२	२३		
	तीनों वेद	३	४१	०	१२	१९ (२३-अनं४)		
	पुरुष	४	४४	०	१२	१९ (२३-अनं४)		
	स्त्री	४	४१	०	१२	१९ (२३-अनं४)		
	न्युसक	५	४३	०	१२	१९ (२३-अनं४)		
	तीनों वेद	५	३५	०	११	१५ (२३-अनं४, अप्र.४)		

मार्गणा में आस्रव						
मार्गणा	गुणस्थान	कुल	5 मिथ्यात	12 अविरति	25 कषाय	15 योग
पुरुष	6	22	0	0	11 (23-12 कषाय)	11 (15-वैकि.द्वि., औदा.मिश्र.कार्मण)
स्त्री / नपुंसक		20	0	0	11	9 (11-आहा.द्विक)
तीनों वेद		20	0	0	11	9 (11-आहा.द्विक)
तीनों वेद		9 (भाग १)	14	0	5 (11-6 नोकषाय)	9 (11-आहा.द्विक)
स्त्री / पुरुष वेद		9 (भाग २)				
पुरुष वेद		9 (भाग ३)				
चारों	9	1	43	5	12	13 (25-१२ कषाय)
		2	38	0	12	13
		3	34		12	12 (13-अनं् १)
		4	37		12	12 (13-अनं् १)
		5	31		11	11 (12-अप्र. १)
		6	21		10	10 (11-प्र. १)
		7-8	19		10	10 (11-प्र. १)
		भाग १	13		4 (10-नोकषाय ६)	9 (15-आहा.द्वि., औदा.मिश्र.वैद्विक.कार्मण)
मान,माया,लोभ		भाग २	12		3 (4-नपुं.वेद)	
माया,लोभ		भाग ३	11		2 (3-स्त्री वेद)	
लोभ		भाग ४	10		1 (2-पुरुष वेद)	
		भाग ५	10		1 (३ कषाय में से एक)	
		भाग ६	10		1 (२ कषाय में से एक)	
		भाग ७	10	0	0	1 (लोभ कषाय)
		10	10		0	1 (लोभ कषाय)
कुमति / कुश्ति	2	1	55	5	12	25
विभगावधि		2	50	0	12	25
मति / श्रुति / अवधि		1	52	5	गुणस्थान अनुसार	
	9	2	47	0	गुणस्थान अनुसार	
मनःपर्यय		4 से 12	46	0	11 (17-प्र. ४,२ वेद)	9
		6	20		11	
		7-8	20		5 (11-6 नोकषाय)	
		भाग 1,2,3	14		4 (5-पुरुष वेद)	
		भाग 4	13		3 (4-क्रोध कषाय)	
		भाग 5	12		2 (3-मान कषाय)	
		भाग 6	11		1 (लोभ कषाय)	
		भाग 7	10		1 (लोभ कषाय)	
केवल		10	10		0	
सामायिक, छेदोपस्थापना	9	11-12	46	0	0	7 (औदा.द्वि., कार्मण सत्य-अनुभय मन-वचन)
		6	24		13 (17-4 प्र.)	
		7-8	22		13	
		भाग 1	16		7 (13-6 नोकषाय)	
		भाग 2	15		6 (7-नपुं. वेद)	
		भाग 3	14		5 (6-स्त्री वेद)	
		भाग 4	13		4 (5-पुरुष वेद)	
		भाग 5	12		3 (4-क्रोध कषाय)	
		भाग 6	11		2 (3-मान कषाय)	
		भाग 7	10		1 (लोभ कषाय)	
परिहारविषयद्वि.	9	6,7	20	0	0	9 (15-आहा.द्वि., वै.द्वि., औदा.मि., कार्मण)
सूक्ष्मसाम्पराय		10	10		0	
यथर्खाता		11,12	9		0	
देवसंस्थापना		13	7		0	
असंयम	9	5	37	0	11 (12-त्रसहिसा अविरति)	9 (15-आहा.द्वि., वै.द्वि., औदा.मि., कार्मण)
		1	55		17 (21-4 अप्र.)	
		2	50		25	
		3	43		21 (25-अनं् ४)	10 (13-ओदा.मिश्र.वै.मिश्र.कार्मण)
		4	46			
चक्षु / अचक्षु		1 से 12	57		0	13 (15-आहा.द्वि.)
अवधिदर्शन		4 से 12	48		0	
केवल		13	7		0	
देशया	9	कृष्ण, नील, कापोत	1	55	0	7 (औदा.द्वि., कार्मण सत्य-अनुभय मन-वचन)
		पीत, पद्म, शुक्ल			5	
		कृष्ण, नील, कापोत	2		25	
		पीत, पद्म, शुक्ल			0	12 (15-आहा.द्वि., औदा.मि.)
		छहों	3		0	
		कृष्ण, नील	4	45	21 (25-अनं् ४)	13 (15-आहा.द्वि.)
		कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल	4		12 (15-आहा.द्वि., वै.मिश्र.)	
		पीत, पद्म, शुक्ल	5		10 (13-ओदा.मिश्र.वै.मिश्र.कार्मण)	
		6	24		12 (15-आहा.द्वि., वै.मिश्र.)	
		7	22		13 (15-आहा.द्वि.)	
शुक्ल	9	8	22	0	0	9 (15-आहा.द्वि., वै.द्वि., औदा.मि., कार्मण)
		भाग 1	16		13	
		भाग 2	15		7 (13-6 नोकषाय)	
		भाग 3	14		6 (7-नपुं. वेद)	
		भाग 4	13		5 (6-स्त्री वेद)	
		भाग 5	12		4 (5-पुरुष वेद)	
		भाग 6	11		3 (4-क्रोध कषाय)	
		भाग 7	10		2 (3-मान कषाय)	
		10	10		1 (2-माया कषाय)	
					1	

	मार्गणा	गुणस्थान	कुल	मार्गणा में आस्रव	5 मिथ्यात्	12 अविरति	25 कषाय	0	0	15 योग
		गुणस्थान	9							7 (ओदा.द्वि., कार्मण, सत्य-अनुभय मन-वचन)
भव्य	अभव्य	1	55	5		12		25		13 (15-आहा.द्विक)
	भव्य	1 से 14	57							गुणस्थान अनुसार
		4	45					21		
		5	37					17		12 (15-आहा.द्विक, ओदा.मिश्र)
		6 से 8	22					13		
		भाग 1	16					7 (13-6 नोकषाय)		
		भाग 2	15					6 (7-नयुं वेद)		
		भाग 3	14					5 (6-स्त्री वेद)		
		भाग 4	13					4 (5-पुरुष वेद)		
		भाग 5	12					3 (4-क्रांत्र कषाय)		
		भाग 6	11					2 (3-मान कषाय)		
		भाग 7	10					1 (2-माया कषाय)		
		10	10					0		
		11	9							
		4	46					21		13 (15-आहा.द्विक)
		5	37					17		9 (15-आहा.द्वि., वै.द्वि., ओदा.मि., कार्मण)
		6	24							11 (15-वै.द्वि., ओदा.मि., कार्मण)
		7	22							9 (15-आहा.द्वि., वै.द्वि., ओदा.मि., कार्मण)
		क्षायिक	4 से 14	48						
		मिश्र	3	43						
		सासादन	2	50						गुणस्थान अनुसार
		मिथ्यात्	1	55						
		संज्ञी	1 से 12	57						गुणस्थान अनुसार
		असंज्ञी	1	45	5					4 (अनुं वचनयोग, कार्मण, ओदा.द्वि.)
			2	38	0					2 (कार्मण, ओदा.मिश्र)
			1	54	5					12 (15-आहा.द्विक, कार्मण)
			2	49						10 (15-आहा.द्वि., वै.मि., ओदा.मि., कार्मण)
			3	43	0					21 (25-अनं ४)
			4	45						12 (15-आहा.द्वि., कार्मण)
			5 से 13	37						गुणस्थान अनुसार
			1	43	5					
			2	38						12
			4	34	0					25
			13	1						21
										0
										0
										1 (कार्मण)

आस्रव त्रिभमी -- गाथा 24 से 60



भाव अधिकार



+ नाना जीवों में पाए जाने वाले भाव -
नाना जीवों में पाए जाने वाले भाव

विशेष :

नाना जीवों में पाए जाने वाले मूलभाव					
भाव	गुणस्थान				सिद्ध
	1 से 3	4 से 11	12	13 - 14	
औदयिक	✓	✓	✓	✓	-
क्षायोपशमिक	✓	✓	✓	-	-
औपशमिक	-	✓	-	-	-
क्षायिक	-	✓	✓	✓	✓
पारिणामिक	✓	✓	✓	✓	✓
कुल	3	5	4	3	2

गोमटसार कर्मकाण्ड -- गाथा 820



+ नाना जीवों में पाए जाने वाले उत्तरभाव -

नाना जीवों में पाए जाने वाले उत्तरभाव

विशेष :

नाना जीवों में पाए जाने वाले उत्तरभाव														
गुणस्थान														
	1	2	3	4	5	6/7	8/9	10	11	12	13	14	सिद्ध	
गति (4)	मनुष्य	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	
	तिर्यङ्ग	✓	✓	✓	✓	-	-	-	-	-	-	-	-	
	देव, नारकी	✓	✓	✓	✓	-	-	-	-	-	-	-	-	
	वेद (3)	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	-	-	-	-	-	
कथाप (4)	ऋग्य, मान, माया	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	-	-	-	-	-	
	लोभ	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	-	-	-	-	
	मिथ्यात्व	✓	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	
	कृष्ण, नील, कापोत	✓	✓	✓	-	-	-	-	-	-	-	-	-	
सेप्या (6)	पीत, पद्मा	✓	✓	✓	✓	✓	-	-	-	-	-	-	-	
	शुक्ल	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	
	असिद्धत्व	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	
	असंयम	✓	✓	✓	-	-	-	-	-	-	-	-	-	
आद्यात्मिक (21)	अज्ञान	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	
	ज्ञान (4)	मति, श्रुत, अवधि	-	-	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	-	
	मनःपर्यय	-	-	-	-	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	-	
	दर्शन (3)	चक्षु, अंचक्षु	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	-	
काण्डायोपाशास्त्रिक (18)	अवधि	-	-	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	-	
	कुमाति, कुञ्चि, विभंग	✓	✓	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	
	दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	-	
	वेदक सम्पर्कत्व	-	-	✓	✓	✓	-	-	-	-	-	-	-	
क्षाण्डिक (9)	सराग-चारित्र	-	-	-	✓	-	-	-	-	-	-	-	-	
	संयमासंयम	-	-	-	-	✓	-	-	-	-	-	-	-	
	सम्पर्कत्व	-	-	-	✓	✓	✓	✓	-	-	-	-	-	
	चारित्र	-	-	-	-	-	✓	✓	-	-	-	-	-	
औपशमिक (2)	ज्ञान, दर्शन	-	-	-	-	-	-	-	-	✓	✓	✓	-	
	सम्पर्कत्व	-	-	-	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	
	चारित्र	-	-	-	-	-	✓	✓	-	✓	✓	✓	-	
	दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य	-	-	-	-	-	-	-	-	✓	✓	✓	-	
पारिणामिक (3)	जीवत्व	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	
	भव्यत्व	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	-	
	अभव्यत्व	✓	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	
कुल		34	32	32	36	31	31	29	23	21	20	14	13	10
गोमटसार कर्मकाण्ड – गाया 820														



+ गुणस्थानों में एक जीव के एक काल में संभव भाव -

गुणस्थानों में एक जीव के एक काल में संभव भाव

विशेष :

गुणस्थानों में एक जीव के एक काल में संभव भाव														
गुणस्थान	मूल भाव	स्थान-संख्या	पर-संयोग						स्व-संयोग					
			प्रत्येक	विसयोगी	त्रिसयोगी	चतु:सयोगी	चंच.सयोगी							
1 से 3	3 (औद्/क्षायो/पा.)	10	3	3	1									3
4 से 7	5 (औद्/क्षायो/पा./औप्/क्षायि)	26	5	*9	*7	*2								#3
उपशम-श्रेणी	*यहाँ औपशमिक-क्षाण्डिक का संयोग भग्न संभव नहीं है													
क्षपक-श्रेणी	*ओपशमिक सम्पर्कत्व और चारित्र का भग्न संभव नहीं है। इसी प्रकार क्षाण्डिक का स्व-संयोगी भग्न यहाँ संभव नहीं है।													
13, 14	4 (औद्/क्षायो/पा./क्षायि)	19	4	6	4	1								4
	3 (औद्/पा./क्षायि)	10	3	3	1									3
सिद्ध	2 (पा./क्षायि)	5	2	1										2
गोमटसार कर्मकाण्ड – गाया 820-822														



+ गुणस्थानों में उत्तरभावों के भंग -

गुणस्थानों में उत्तरभावों के भंग

विशेष :

गुणस्थानों में उत्तरभावों के भंग

गुणस्थानों में उत्तरस्थानों के भंग												
गुणस्थान	क्षायोपशमिक				औदायिक				ओपशमिक			
	स्थान		विशेष		स्थान		विशेष		मूल भाव		पुण्य	
	स्थान	विशेष	स्थान	विशेष	स्थान	विशेष	स्थान	विशेष	गुण्य	औपशमिक	क्षायिक	पारिणामिक
1	3 (10, 9, 8)	10 (3 अज्ञान, 2 दर्शन, 5 दानादि) 9 (2 अज्ञान, 2 दर्शन, 5 दानादि) 8 (2 अज्ञान, अचक्षु-दर्शन, 5 दानादि)	1 (8)	8 (1 गति, 1 वेद, 1 कषाय, 1 लेश्या, मिथ्यात्म, असिद्धत्व, असंयम, अज्ञान)	216 (12 [नरक-गति*4 कषाय*3 लेश्या] + 48 [देव-गति*2 वेद*4 कषाय*6 लेश्या] + 144 [2 गति*3 वेद*4 कषाय*6 लेश्या] + 12 [तिर्यङ्ग-गति*1 वेद*4 कषाय*3 लेश्या-अचक्षु-दर्शन])							2 (भव्य, अभव्य)
2												
3	2 (11, 9)	11 (3 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 दानादि) 9 (2 ज्ञान, 2 दर्शन, 5 दानादि)	1 (7)	7 (1 गति, 1 वेद, 1 कषाय, 1 लेश्या, असिद्धत्व, असंयम, अज्ञान)	180 (12 [नरक-गति*4 कषाय*3 लेश्या] + 24 [देव-गति*2 वेद*4 कषाय*3 लेश्या] + 144 [2 गति*3 वेद*4 कषाय*6 लेश्या])							
4	2 (12, 10)	12 (3 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 दानादि, वेदक स.) 10 (2 ज्ञान, 2 दर्शन, 5 दानादि, वेदक स.)			180 (12 [नरक-गति*4 कषाय*3 लेश्या] + 24 [देव-गति*2 वेद*4 कषाय*3 लेश्या] + 144 [2 गति*3 वेद*4 कषाय*6 लेश्या])		104 (4 [नरक-गति*4 कषाय-कापीत-लेश्या] + 16 [तिर्यङ्ग-गति*4 कषाय*4 लेश्या] + 72 [मनुष्य-गति*3 वेद*4 कषाय*6 लेश्या] + 12 [देव-गति*4 कषाय*3 लेश्या])					
5	2 (13, 11)	13 (3 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 दानादि, वेदक स., देशसंयम) 11 (2 ज्ञान, 2 दर्शन, 5 दानादि, वेदक स., देशसंयम)			72 (2 गति*3 वेद*4 कषाय*3 लेश्या)		36 (3 वेद*4 कषाय*3 लेश्या)					
6,7	4 (14, 13, 12, 11)	14 (4 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 दानादि, वेदक स., सराग-चारित्र) 13 (3 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 दानादि, वेदक स., सराग-चारित्र) 12 (3 ज्ञान, 2 दर्शन, 5 दानादि, वेदक स., सराग-चारित्र) 11 (2 ज्ञान, 2 दर्शन, 5 दानादि, वेदक स., सराग-चारित्र)	1 (6)	6 (1 गति, 1 वेद, 1 कषाय, 1 लेश्या, असिद्धत्व, अज्ञान)	36 (3 वेद*4 कषाय*3 लेश्या)						1	
8,9 (सर्वेद)					12 (3 वेद*4 कषाय)							
9 (अवेद)					4 (4 कषाय)							
9 (क्रोध-रहित)					3 (3 कषाय)							
9 (मान-रहित)					2 (2 कषाय)							
9 (माया-रहित)					1							
10					1							
11,12				1 (4)	4 (मनुष्य-गति, 1 लेश्या, असिद्धत्व, अज्ञान)		1					
13				1 (3)	4 (मनुष्य-गति, 1 लेश्या, असिद्धत्व)		1					
14				1 (2)	4 (मनुष्य-गति, असिद्धत्व)		1					

गोमटसार कर्मकाण्ड -- गाथा 823



गुणस्थानों में आलाप



+ गुणस्थानों में आलाप -

गुणस्थानों में आलाप

विशेष :

गुणस्थानों में आलाप																				
गुणस्थान	जीवसमाप्ति	पर्याप्ति	प्राण	संज्ञा	गति	इन्द्रिय	काय	योग	वेद	कषाय	ज्ञान	संयम	दर्शन	लेश्या	भव्य	सम्यक्ति	संसी	आहारक	उपयोग	
पर्याप्ति	१४	७	६,५,४	१०१,८७,६,४	४	४	५	६	११ (-३ मिश्र का.)	३ + अप.	४, अक.	८	७	४	द्रव्य ६, भाव २	६	२	२	२	
अपर्याप्ति	५ (१२, ५, ६, ३)	७	६,५,४	७,७,६,५,४,३	४	४ अ.सं.	४	५	६	४ (३ मिश्र का.)	३ + अप.	४, अक.	६ (-मन्, विम्)	४ (सा, क्षे, यथा, अस)	४	द्रव्य २ (का. शु), भाव ६	२	५ (- स.मि.)	२	२
मिथ्यादृष्टि	सामान्य	१	१४	६,५,४	१०७,१७,८,६,७ ५,६,४,४,३	४	४	५	६	१३ (-२ आ.द्विक)	३	४	३ (अज्ञा)	१ (असं.) (च.अच.)	२	६,६	२	१ (मि.)	२	२
	पर्याप्ति	१	७	६,५,४	१०,१७,६,५,४	४	४	५	६	१० (-३ मिश्र आ. का.)	३	४	३	१	२	६,६	२	१	२	१
	अपर्याप्ति	१	७	६,५,४	७,७,६,५,४,३	४	४	५	६	३ (२ मिश्र का.)	३	४	२	१	२	६,६	२	१	२	२
सासादन	सामान्य	१	२ सं.पं.सं.अ.	६,६	१०७	४	४	१	१	१३ (-२ आ.द्विक)	३	४	३ (अज्ञा)	१ (असं.) (च.अच.)	२	६,६	१	१	१	२
	पर्याप्ति	१	१ (सं.पं.)	६	१०	४	४	१	१	१० (-३ मिश्र का.आ.)	३	४	३ (अज्ञा)	१ (असं.) (च.अच.)	२	६,६	१	१	१	२

	गुणस्थानों में आलाप																			
	गुणस्थान	जीवसमास	पर्याप्ति	प्राण	संज्ञा	गति	इन्द्रिय	काय	योग	वेद	कथाय	ज्ञान	संयम	दर्शन	लेश्या	भव्य	सम्प्रकृत्य	संज्ञी	आहारक	उपयोग
अपर्याप्ति	१	१ (सं.अ.)	६	७	४	३ (- नरक)	१	१	३ (२ मिश्र.का.)	३	४	२ (अज्ञा.)	१ (असं.)	२ (च.अच.)	प्रव्य २ (का. शु.)	१	१	१	२	२
सम्यमित्याद्विष्टि	१	१ (सं.प.)	६	१०	४	४	१	१	१० (-३ मिश्र.का., आ.)	३	४	३ (मिश्र.)	१ (असं.)	२ (च.अच.)	द.द.	१	१	१	१	२
असंयत सम्यद्विष्टि	सामान्य	१	२ (सं.प., सं.अ.)	६५६	१००७	४	४	१	१२ (-२ आद्विक)	३	४	३	१	३	६६	१	१	१	२	२
	पर्याप्ति	१	१ (सं.प.)	६	१०	४	४	१	१० (-३ मिश्र.का., आ.)	३	४	३	१	३	६६	१	३	१	१	२
	अपर्याप्ति	१	१ (सं.अ.)	६	७	४	४	१	१३ (२ मिश्र.का.)	२ (- स्त्री)	४	३	१	३	प्रव्य २ (का. शु.)	१	३	१	१	२
संयतासंयत	१	१ (सं.प.)	६	१०	४	२	१	१	१० (-३ मिश्र.वै., का., आ.)	३	४	३	१	३	६३	१	३	१	१	२
प्रमत्तसंयत	१	२ (सं.प., सं.अ.)	६५६	१००७	४	१	१	११ (-२ मिश्र.वै., का.)	३	४	४	३	३	६३	१	३	१	१	२	
अप्रमत्तसंयत	१	१ (सं.प.)	६	१०	३ (-आ.)	१	१	१	१० (-३ मिश्र.वै., का., आ.)	३	४	४	३	३	६३	१	३	१	१	२
अपूर्वकरण	१	१ (सं.प.)	६	१०	३	१	१	१	१० (-३ मिश्र.वै., का., आ.)	३	४	४	२	३	६१	१	२	१	१	२
अनिवृत्तिकरण	प्रधम-भाग	१	१ (सं.प.)	६	१०	२ (- अ., भ.)	१	१	१० (-३ मिश्र.वै., का., आ.)	३	४	४	२	३	६१	१	२	१	१	२
	द्वितीय-भाग	१	१ (सं.प.)	६	१०	१ (प.)	१	१	१० (-३ मिश्र.वै., का., आ.)	० (अ.)	४	४	२	३	६१	१	२	१	१	२
	रुपीय-भाग	१	१ (सं.प.)	६	१०	१ (प.)	१	१	१० (-३ मिश्र.वै., का., आ.)	० (अ.)	३ (-क्रो.)	४	२	३	६१	१	२	१	१	२
	चतुर्थ-भाग	१	१ (सं.प.)	६	१०	१ (प.)	१	१	१० (-३ मिश्र.वै., का., आ.)	० (अ.)	२ (- क्रो.)	४	२	३	६१	१	२	१	१	२
	पंचम-भाग	१	१ (सं.प.)	६	१०	१ (प.)	१	१	१० (-३ मिश्र.वै., का., आ.)	० (अ.)	१ (लो.)	४	२	३	६१	१	२	१	१	२
सूक्ष्मास्पराय	१	१ (सं.प.)	६	१०	१ (सु.प.)	१	१	१	१० (-३ मिश्र.वै., का., आ.)	० (अ.)	१ (सू.लो.)	४	१	३	६१	१	२	१	१	२
उपशान्तकरण	१	१ (सं.प.)	६	१०	० (अ.सं.)	१	१	१	१० (-३ मिश्र.वै., का., आ.)	० (अ.)	० (अक.)	४	१	३	६१	१	२	१	१	२
द्वीणमोह	१	१ (सं.प.)	६	१०	० (क्षी.)	१	१	१	१० (-३ मिश्र.वै., का., आ.)	० (अ.)	० (अक.)	४	१	३	६१	१	१	१	१	२
सायोग-केवली	१	१ (सं.प.)	६	४२	० (क्षी.)	१	१	७ (२ मन्.२ व., २ औ., का.)	० (अ.)	० (अक.)	१	१	१	६१	१	१	१	१	२	
अयोग-केवली	१	१ (सं.प.)	६	१	० (क्षी.)	१	१	० (अयोग)	० (अ.)	० (अक.)	१	१	१	६०	१	१	०	१	२	
सिद्ध-परमेष्ठी	०	०	०	०	० (क्षी.)	१ (सिद्ध)	०	०	० (अयोग)	० (अ.)	० (अक.)	१	०	१	०	०	१	०	१	२



+ नरक में गुणस्थानों में आलाप -

नरक में गुणस्थानों में आलाप

विशेष :

गति मार्गणा के अनुवाद से नरकों में गुणस्थानों में आलाप																				
	गुणस्थान	जीवसमास	पर्याप्ति	प्राण	संज्ञा	गति	इन्द्रिय	काय	योग	वेद	कथाय	ज्ञान	संयम	दर्शन	लेश्या	भव्य	सम्प्रकृत्य	संज्ञी	आहारक	उपयोग
नारक	सामान्य	४	२	६५६	१००७	४	१	१	११ (-२ औ., २ आ.)	१	४	६	१	३	३	३	६	१	२	
	पर्याप्ति	४	१ (सं.प.)	६ (प.)	२०	४	१	१	११ (४ म., ४ व., वै.)	१	४	६	१	३	१	३	६	१	१	२
अपर्याप्ति	अपर्याप्ति	२	१ (सं.अ.)	६ (अ.)	७	४	१	१	१२ (२ वै., का.)	१	४	५	१	३	२	३	१	२	२	
	मिथ्याद्विष्टि	सामान्य	१	२	६५६	१००७	४	१	११ (-२ औ., २ आ.)	१	४	३	१	२	३	३	१	२	२	
	पर्याप्ति	१	१ (सं.प.)	६ (प.)	२०	४	१	१	११ (४ म., ४ व., वै.)	१	४	३	१	२	१	३	१	१	२	
असंयत सम्यद्विष्टि	अपर्याप्ति	१	१ (सं.अ.)	६ (अ.)	७	४	१	१	१२ (२ वै., का.)	१	४	२	१	२	२	१	१	२	२	
	सासादान	१	१ (सं.प.)	६ (प.)	२०	४	१	१	११ (४ म., ४ व., वै.)	१	४	३	१	२	१	३	१	१	२	
	सम्यमित्याद्विष्टि	१	१ (सं.प.)	६ (प.)	२०	४	१	१	११ (४ म., ४ व., वै.)	१	४	३	१	२	१	३	१	१	२	
प्रथम	सामान्य	१	२	६५६	१००७	४	१	१	११ (-२ औ., २ आ.)	१	४	३	१	३	३	१	२	१	२	
	पर्याप्ति	४	१ (सं.प.)	६ (प.)	२०	४	१	१	११ (४ म., ४ व., वै.)	१	४	६	१	३	१	२	६	१	१	२
	अपर्याप्ति	२	१ (सं.अ.)	६ (अ.)	७	४	१	१	१२ (२ वै., का.)	१	४	५	१	३	२	१	१	२	२	
द्वितीय	मिथ्याद्विष्टि	सामान्य	१	२	६५६	१००७	४	१	११ (-२ औ., २ आ.)	१	४	३	१	२	३	१	१	२	२	
	पर्याप्ति	४	१ (सं.प.)	६ (प.)	२०	४	१	१	११ (४ म., ४ व., वै.)	१	४	६	१	३	१	२	५	१	१	२
	अपर्याप्ति	१	१ (सं.अ.)	६ (अ.)	७	४	१	१	१२ (२ वै., का.)	१	४	२	१	२	१	१	१	१	२	
असंयत सम्यद्विष्टि	सामान्य	१	२	६५६	१००७	४	१	१	११ (-२ औ., २ आ.)	१	४	३	१	३	१	१	३	१	१	२
	पर्याप्ति	४	१ (सं.प.)	६ (प.)	२०	४	१	१	११ (४ म., ४ व., वै.)	१	४	३	१	३	१	१	३	१	१	२
	अपर्याप्ति	१	१ (सं.अ.)	६ (अ.)	७	४	१	१	१२ (२ वै., का.)	१	४	३	१	३	१	१	३	१	१	२
सासादान	सामान्य	१	२	६५६	१००७	४	१	१	११ (४ म., ४ व., वै.)	१	४	३	१	२	१	१	१	१	१	२
	सम्यमित्याद्विष्टि	१	१ (सं.प.)	६ (प.)	२०	४	१	१	११ (४ म., ४ व., वै.)	१	४	३	१	२	१	१	१	१	१	२
	असंयत सम्यद्विष्टि	सामान्य	१	२	६५६	१००७	४	१	११ (-२ औ., २ आ.)	१	४	३	१	३	१	१	३	१	१	२
द्वितीय	सामान्य	४	२	६५६	१००७	४	१	११ (-२ औ., २ आ.)	१	४	६	१	३	३	१	५	१	१	२	
	पर्याप्ति	१	१ (सं.प.)	६ (प.)	२०	४	१	१	११ (४ म., ४ व., वै.)	१	४	६	१	३	१	१	५	१	१	२
	अपर्याप्ति	१	१ (सं.अ.)	६ (अ.)	७	४	१	१	१२ (२ वै., का.)	१	४	२	१	२	१	१	२	१	१	२



+ तिर्यन्चों में गुणस्थानों में आलाप -

तिर्यन्वों में गुणस्थानों में आलाप

विशेष :

		गति मार्गणा के अनुवाद से तिर्यकों में गुणस्थानों में आलाप																					
		गुणस्थान	जीवसमास	पर्याप्ति		प्राण		संज्ञा	गति	इन्द्रिय	काय	योग	वेद	कथाय	ज्ञान	संयम	दर्शन	लेश्या	भव्य	सम्प्रकृत्य	संज्ञी	आहारक	उपयोग
				पर्याप्ति	अपर्याप्ति	पर्याप्ति	अपर्याप्ति									द्रव्य	भाव						
सामान्य		५	१४	६,५,४	६,५,४	१०,९,८,७,६,४	१०,९,८,७,६,४	४	१	५	६	११(-२वै,२ आ.)	३	४	६	२	३	६	६	२	६	२	२
पर्याप्ति		५	७	६,५,४	-	१०,९,८,७,६,४	-	४	१	५	६	१(४म.,४व. औ.)	३	४	६	२	३	६	६	२	६	२	२
अपर्याप्ति		३	७	-	६,५,४	-	१०,७,६,५,४,३	४	१	५	६	२(औ.मि. का.)	३	४	५	१	३	२	४	२	२	२	२
मिथ्यादृष्टि	सामान्य	१	१४	६,५,४	६,५,४	१०,९,८,७,६,४	१०,९,८,७,६,४	४	१	५	६	११(-२वै,२ आ.)	३	४	३	१	२	६	६	२	१	२	२
	पर्याप्ति	१	७	६,५,४	-	१०,९,८,७,६,४	-	४	१	५	६	१(४म.,४व. औ.)	३	४	३	१	२	६	६	२	१	२	२
	अपर्याप्ति	१	७	-	६,५,४	-	१०,७,६,५,४,३	४	१	५	६	२(औ.मि. का.)	३	४	२	१	२	२	२	१	२	२	२
सासादन	सामान्य	१	२(संप.सं.अ.)	६	६	१०	७	४	१	१(पै)	१(त्र)	११(-२वै,२ आ.)	३	४	३	१	२	६	६	१	१(सा.)	१	२
	पर्याप्ति	१	१(संप.)	६	-	१०	-	४	१	१(पै)	१(त्र)	१(४म.,४व. औ.)	३	४	३	१	२	६	६	१	१(सा.)	१	१
	अपर्याप्ति	१	१(सं.अ.)	-	६	-	७	४	१	१(पै)	१(त्र)	२(औ.मि. का.)	३	४	२	१	२	२	३	१	१(सा.)	१	२
सम्प्रमिथ्यादृष्टि		१	१(संप.)	६	-	१०	-	४	१	१(पै)	१(त्र)	१(४म.,४व. औ.)	३	४	३	१	२	६	६	१	१(सम.)	१	१
असंयत सम्प्रदृष्टि	सामान्य	१	२(संप.सं.अ.)	६	६	१०	७	४	१	१(पै)	१(त्र)	११(-२वै,२ आ.)	३	४	३	१	३	६	६	१	३	१	२
	पर्याप्ति	१	१(संप.)	६	-	१०	-	४	१	१(पै)	१(त्र)	१(४म.,४व. औ.)	३	४	३	१	३	६	६	१	३	१	२
	अपर्याप्ति	१	१(सं.अ.)	-	६	-	७	४	१	१(पै)	१(त्र)	२(औ.मि. का.)	१	४	३	१	३	२	१(का.)	१	३	१	२
संयतासंयत		१	१(संप.)	६	-	१०	-	४	१	१(पै)	१(त्र)	१(४म.,४व. औ.)	३	४	३	१	३	६	३	१	२	१	१
पंचेन्द्रिय	सामान्य	५	४	६,५	६,५	१०,९	७,७	४	१	१	१	११(-२वै,२ आ.)	३	४	६	२	३	६	६	२	६	२	२
	पर्याप्ति	५	२	६,५	-	१०,९	-	४	१	१	१	१(४म.,४व. औ.)	३	४	६	२	३	६	६	२	६	२	१
	अपर्याप्ति	३	२	-	६,५	-	७,७	४	१	१	१	२(औ.मि. का.)	३	४	५	१	३	२	३	२	४	२	२
	सामान्य	१	४	६,५	६,५	१०,९	७,७	४	१	१	१	११(-२वै,२ आ.)	३	४	३	१	२	६	६	२	१	२	२
	पर्याप्ति	१	२	६,५	-	१०,९	-	४	१	१	१	१(४म.,४व. औ.)	३	४	३	१	२	६	६	२	१	२	१
	अपर्याप्ति	१	२	-	६,५	-	७,७	४	१	१	१	२(औ.मि. का.)	३	४	२	१	२	२	३	१	२	१	२
तत्व्यपर्याप्ति		१	२(सं.अ.अ.अ.)	-	६,५	-	७,७	४	१	१(पै)	१(त्र)	२(औ.मि. का.)	१(का.)	४	२	१	२	२	३	१	२	१	२
पं. योनिमती	सामान्य	५	४	६,५	६,५	१०,९	७,७	४	१	१	१	११(-२वै,२ आ.)	१	४	६	२	३	६	६	२	५	२	२
	पर्याप्ति	५	२	६,५	-	१०,९	-	४	१	१	१	१(४म.,४व. औ.)	१	४	६	२	३	६	६	२	५	२	१
	अपर्याप्ति	२	२	-	६,५	-	७,७	४	१	१	१	२(औ.मि. का.)	१	४	२	१	२	३	२	२	२	१	२
	सामान्य	१	४	६,५	६,५	१०,९	७,७	४	१	१	१	११(-२वै,२ आ.)	१	४	३	१	२	६	६	२	१	२	२
	पर्याप्ति	१	२	६,५	-	१०,९	-	४	१	१	१	१(४म.,४व. औ.)	१	४	३	१	२	६	६	२	१	२	१
	अपर्याप्ति	१	२	-	६,५	-	७,७	४	१	१	१	२(औ.मि. का.)	१	४	२	१	२	२	३	१	२	१	२
सासादन	सामान्य	१	२(संप.सं.अ.)	६	६	१०	७	४	१	१(पै)	१(त्र)	११(-२वै,२ आ.)	१	४	३	१	२	६	६	१	१(सा.)	१	२
	पर्याप्ति	१	१(संप.)	६	-	१०	-	४	१	१(पै)	१(त्र)	१(४म.,४व. औ.)	१	४	३	१	२	६	६	१	१(सा.)	१	१
	अपर्याप्ति	१	१(सं.अ.)	-	६	-	७	४	१	१(पै)	१(त्र)	२(औ.मि. का.)	१	४	२	१	२	२	३	१	१(सा.)	१	१
सम्प्रमिथ्यादृष्टि		१	१(संप.)	६	-	१०	-	४	१	१(पै)	१(त्र)	१(४म.,४व. औ.)	१	४	३	१	२	६	६	१	१(सम.)	१	१
असंयत सम्प्रदृष्टि		१	१(संप.)	६	-	१०	-	४	१	१(पै)	१(त्र)	१(४म.,४व. औ.)	१	४	३	१	३	६	६	१	२	१	१
संयतासंयत		१	१(संप.)	६	-	१०	-	४	१	१(पै)	१(त्र)	१(४म.,४व. औ.)	१	४	३	१	३	६	६	१	२	१	१

+ मनुष्यों में गुणस्थानों में आलाप -
मनुष्यों में गुणस्थानों में आलाप

विशेष :

		गति मार्गण के अनुवाद से मनुष्यों में गुणस्थानों में आलाप																							
		गुणस्थान	जीवसमास	पर्याप्ति	प्राण	संज्ञा	गति	इन्द्रिय	काय	योग	वेद	कथाप	ज्ञान	संयम	दर्शन	लेश्या ब्रह्म	भव	सम्प्रकृत	संज्ञा	आहारक	उपयोग				
सामान्य		१४	२	६	६	१०	७	४, क्षी.	१	१	१	१	१३ (-२ क्षै.)	३, अ.	४, अ.	८	७	४	६	६, अ.	२	६	१	२	२, यु.
पर्याप्त		१४	१	६	-	१०	-	४, क्षी.	१	१	१	१	१३ (-२ क्षै.), १० (४ म., ४ व. अ., आ.)	३, अ.	४, अ.	८	७	४	६	६, अ.	२	६	१	२	२
अपर्याप्त		५ (पि, सा, स, प्र, सयो)	१	-	६	-	७	४, क्षी.	१	१	१	१	३ (औमि, आमि, का.)	३, अ.	४, अ.	६ (-वि, मन.)	४	४	२	६	२	४	१	२	२, यु.
मिथ्यादृष्टि	सामान्य	१	२	६	६	१०	७	४	१	१	१	१	११ (-२ क्षै., २ अ.)	३	४	३	१	२	६	६	२	१	१	२	
	पर्याप्त	१	१	६	-	१०	-	४	१	१	१	१	११ (४ म., ४ व., औ.)	३	४	३	१	२	६	६	२	१	१	१	२
	अपर्याप्त	१	१	-	६	-	७	४	१	१	१	१	२ (औमि, का.)	३	४	२	१	२	२	३	२	१	१	१	२
सासादन	सामान्य	१	२	६	६	१०	७	४	१	१	१	१	११ (-२ क्षै., २ अ.)	३	४	३	१	२	६	६	१	१	१	२	
	पर्याप्त	१	१	६	-	१०	-	४	१	१	१	१	११ (४ म., ४ व., औ.)	३	४	३	१	२	६	६	१	१	१	१	२
	अपर्याप्त	१	१	-	६	-	७	४	१	१	१	१	२ (औमि, का.)	३	४	२	१	२	२	३	१	१	१	२	
सम्प्रमिथ्यादृष्टि		१	१	६	-	१०	-	४	१	१	१	१	११ (४ म., ४ व., औ.)	३	४	३	१	२	६	६	१	१	१	१	२
असंयत सम्प्रदृष्टि	सामान्य	१	२	६	६	१०	७	४	१	१	१	१	११ (-२ क्षै., २ अ.)	३	४	३	१	३	६	६	१	३	१	२	
	पर्याप्त	१	१	६	-	१०	-	४	१	१	१	१	११ (४ म., ४ व., औ.)	३	४	३	१	३	६	६	१	३	१	१	२
	अपर्याप्त	१	१	-	६	-	७	४	१	१	१	१	२ (औमि, का.)	३	४	३	१	३	२	६	१	२	१	१	२
संयतासंयत		१	१	६	-	१०	-	४	१	१	१	१	११ (४ म., ४ व., औ.)	३	४	३	१	३	६	६	१	३	१	१	२
मनुष्यिनी	सामान्य	१४	२	६	६	१०	७	४, क्षी.	१	१	१	१	११ (-२ क्षै., २ अ.)	१, अ.	४, अ.	७ (- मन.)	४	६	६	६, अ.	२	६	१	२	२, यु.
	पर्याप्त	१४	१	६	-	१०	-	४, क्षी.	१	१	१	१	११ (४ म., ४ व., औ.)	१, अ.	४, अ.	७ (- मन.)	४	६	६	६, अ.	२	६	१	२	२, यु.
	अपर्याप्त	३ (पि, सा, सयो)	१	-	६	-	७	४	१	१	१	१	२ (औमि, का.)	१	४	३ (कुम, कुशु, के)	२	३	२	४	२	३	१	२	२, यु.
	सामान्य	१	२	६	६	१०	७	४	१	१	१	१	११ (-२ क्षै., २ अ.)	१	४	३	१	२	६	६	१	१	१	२	
	पर्याप्त	१	१	६	-	१०	-	४	१	१	१	१	११ (४ म., ४ व., औ.)	१	४	३	१	२	६	६	१	१	१	१	२
	अपर्याप्त	१	१	-	६	-	७	४	१	१	१	१	२ (औमि, का.)	१	४	२ (कुम, कुशु)	१	२	२	३	२	१	१	१	२
	सामान्य	१	२	६	६	१०	७	४	१	१	१	१	११ (-२ क्षै., २ अ.)	१	४	३	१	२	६	६	१	१	१	१	२
	पर्याप्त	१	१	६	-	१०	-	४	१	१	१	१	११ (४ म., ४ व., औ.)	१	४	३	१	२	६	६	१	१	१	१	२
	अपर्याप्त	१	१	-	६	-	७	४	१	१	१	१	२ (औमि, का.)	१	४	२ (कुम, कुशु)	१	२	२	३	२	१	१	१	२
सासादन	पर्याप्त	१	१	६	-	१०	-	४	१	१	१	१	११ (४ म., ४ व., औ.)	१	४	३	१	२	६	६	१	१	१	१	२
	अपर्याप्त	१	१	-	६	-	७	४	१	१	१	१	२ (औमि, का.)	१	४	२ (कुम, कुशु)	१	२	२	३	१	१	१	१	२
	सम्प्रमिथ्यादृष्टि	१	१	६	-	१०	-	४	१	१	१	१	११ (४ म., ४ व., औ.)	१	४	३	१	२	६	६	१	१	१	१	२
असंयत सम्प्रदृष्टि		१	१	६	-	१०	-	४	१	१	१	१	११ (४ म., ४ व., औ.)	१	४	३	१	३	६	६	१	३	१	१	२

		गति मार्गणा के अनुवाद से मनुष्यों में गुणस्थानों में आलाप																				
		गुणस्थान	जीवसमास	पर्याप्ति	प्राण	संज्ञा	गति	इन्द्रिय	काय	योग	वेद	कथाय	ज्ञान	संयम	दर्शन	तेष्या	भव्य	सम्यक्त्व	संज्ञी	आहारक	उपयोग	
		पर्याप्ति	अपर्याप्ति	पर्याप्ति	अपर्याप्ति	पर्याप्ति	अपर्याप्ति	पर्याप्ति	अपर्याप्ति	पर्याप्ति	अपर्याप्ति	पर्याप्ति	अपर्याप्ति	पर्याप्ति	अपर्याप्ति	पर्याप्ति	अपर्याप्ति	पर्याप्ति	अपर्याप्ति			
संयतासंयत		१	१	६	-	१०	-	४	१	१	१	१	१	३	६	३	१	३	१	१	२	
प्रमत्तसंयत		१	१	६	-	१०	-	४	१	१	१	१	१	२	३	६	३	१	३	१	२	
अप्रमत्तसंयत		१	१	६	-	१०	-	३	१	१	१	१	१	२	३	६	३	१	३	१	२	
अपूर्वकरण		१	१	६	-	१०	-	३	१	१	१	१	१	२	३	६	१	१	१	१	२	
अनिवृत्तिकरण	प्रथम-भाग	१	१	६	-	१०	-	२	१	१	१	१	१	१	२	३	६	१	१	१	२	
	द्वितीय-भाग	१	१	६	-	१०	-	१	१	१	१	१	१	१	२	३	६	१	१	१	२	
	तृतीय-भाग	१	१	६	-	१०	-	१	१	१	१	१	१	०	३ (-क्रो.)	३	२	३	१	१	२	
	चतुर्थ-भाग	१	१	६	-	१०	-	१	१	१	१	१	१	०	२ (मा., लो.)	३	२	३	१	१	२	
	पंचम-भाग	१	१	६	-	१०	-	१	१	१	१	१	१	०	१ (लो.)	३	२	३	१	१	२	
सूक्ष्मसाम्प्राय		१	१	६	-	१०	-	१	१	१	१	१	१	०	१ (सू.लो.)	३	१	३	६	१	१	२
उपशान्तकायाय		१	१	६	-	१०	-	०	१	१	१	१	१	०	०	३	१	३	६	१	१	२
क्षीणमोह		१	१	६	-	१०	-	०	१	१	१	१	१	०	०	३	१	३	६	१	१	२
सयोग-केवली		१	२	६	६	४	२	०	१	१	१	१	१	७ (२ म., २ व्, २ औ., का.)	०	०	१	१	१	१	०	२ यु.
अयोग-केवली		१	१	६	-	१	-	०	१	१	१	१	१	०	०	०	१	१	६	०	१ (अना.)	२ यु.
लब्ध्यपर्याप्ति		१	१	-	६	-	७	४	१	१	१	१	१	२ (औ., का.)	१	४	२	१	२	१	१	२



सत्-अनुगम



+ मार्गणा में भंग-विचय -
मार्गणा में भंग-विचय

विशेष :

नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय	
मार्गणा	प्रति-समग्र अस्तित्व
नारकी, तिर्यच, देव	नियम से हैं
मनुष्य	पर्याप्ति
	अपर्याप्ति
इन्द्रिय	एकेंद्रिय सूक्ष्म-बादर, दो तीन, चार, पंच इन्द्रिय पर्याप्ति अपर्याप्ति
काय	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति, निगोट बादर-सूक्ष्म, पर्याप्ति अपर्याप्ति
योग	पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी, काययोगी, औदारिक, औदारिक-मिश्र, वैक्रियिक और कार्यण काययोगी
वेद	वैक्रियिक मिश्र, आहारक, आहारक-मिश्र
कथाय	स्त्री, पुरुष, ननुसक वेदी और अपनत वेदी
ज्ञान	मत्यज्ञानी, श्रुतज्ञानी, विभगावधि, मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्यय और केवलज्ञानी

संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार-विशुद्धि, यथाख्यात, संयता-संयत और असंयत	नियम से हैं
	सूक्ष्म-साम्परायिक	कथचित हैं कथचित नहीं
दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि और केवल	नियम से हैं
लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल	नियम से हैं
भव्य	भव्य-सिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक	नियम से हैं
सम्प्रकृत्य	सम्प्रदृष्टि, क्षणिक सम्प्रदृष्टि, वेदक सम्प्रदृष्टि, मिथ्यादृष्टि	नियम से हैं
	औपशमिक सम्प्रदृष्टि, सासादन सम्प्रदृष्टि, सम्प्रमिथ्यादृष्टि	कथचित हैं कथचित नहीं
संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	नियम से हैं
आहार	आहारक, अनाहारक	नियम से हैं



+ मार्गणा का स्वामित्व - मार्गणा का स्वामित्व

विशेष :

एक जीव की अपेक्षा स्वामित्व		
	मार्गणा	कारण
गति	नरक	नरक-गति नाम-कर्म का उदय
	तिर्यच	तिर्यच-गति नाम-कर्म का उदय
	मतुष्य	तिर्यच-गति नाम-कर्म का उदय
	देव	देव-गति नाम-कर्म का उदय
	सिद्ध	क्षायिक लब्धि
इन्द्रिय	एक, दो, तीन, चार, पंच इन्द्रिय	क्षयोपशम लब्धि
	अनिन्द्रिय	क्षायिक लब्धि
काय	पृथ्वीकायिक	पृथ्वीकायिक (एकेद्विय जाति) नाम-कर्म का उदय
	जलकायिक	जलकायिक (एकेद्विय जाति) नाम-कर्म का उदय
	अग्निकायिक	अग्निकायिक (एकेद्विय जाति) नाम-कर्म का उदय
	वायुकायिक	वायुकायिक (एकेद्विय जाति) नाम-कर्म का उदय
	वनस्पतिकायिक	वनस्पतिकायिक (एकेद्विय जाति) नाम-कर्म का उदय
	त्रसकायिक	त्रसकायिक नाम-कर्म का उदय
	अकायिक	क्षायिक लब्धि
योग	मन, वचन, काय योगी	क्षयोपशम लब्धि
	अयोगी	क्षायिक लब्धि
वेद	स्त्री, पुरुष, नवुसक वेदी	चारित्र-मोहनीय कर्म का उदय
	अपगत वेदी	औपशमिक व क्षायिक लब्धि
कथाय	क्रोध, मान, माया, लोभ	चारित्र-मोहनीय कर्म का उदय
	अकथायी	औपशमिक व क्षायिक लब्धि
ज्ञान	मत्यज्ञानी, श्रुतज्ञानी, विभगावधि, मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्वय	क्षयोपशमिक लब्धि
	केवलज्ञानी	क्षायिक लब्धि
	संयत, सामायिक, छेदोपस्थापना	औपशमिक, क्षायिक, क्षयोपशमिक लब्धि
संयम	परिहार-विशुद्धि, संयता-संयत	क्षयोपशमिक लब्धि
	सूक्ष्म-साम्परायिक, यथाख्यात	औपशमिक व क्षायिक लब्धि
	असंयत	संयम-घाति कर्म का उदय
	चक्षु, अचक्षु, अवधि	क्षयोपशमिक लब्धि
दर्शन	केवल	क्षायिक लब्धि
	कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल	ओदयिक भाव
	अलेश्यक	क्षायिक लब्धि
भव्य	भव्य-सिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक	पारिणामिक भाव
	न भव्य-सिद्धिक, न अभव्य-सिद्धिक	क्षायिक लब्धि
सम्प्रकृत्य	सम्प्रदृष्टि	औपशमिक, क्षायिक, क्षयोपशमिक लब्धि
	क्षायिक सम्प्रदृष्टि	क्षायिक लब्धि
	वेदक सम्प्रदृष्टि	क्षयोपशमिक लब्धि
	औपशमिक सम्प्रदृष्टि	औपशमिक लब्धि
	सासादन सम्प्रदृष्टि	पारिणामिक भाव
	सम्प्रमिथ्यादृष्टि	क्षयोपशमिक लब्धि
	मिथ्यादृष्टि	मिथ्यात कर्म का उदय
संज्ञी	संज्ञी	क्षयोपशमिक लब्धि
	असंज्ञी	ओदयिक भाव
	न संज्ञी नअसंज्ञी	क्षायिक लब्धि
आहार	आहारक	ओदयिक भाव तथा क्षायिक लब्धि
	अनाहारक	ओदयिक भाव तथा क्षायिक लब्धि





+ मार्गणा में द्रव्य-प्रमाणानुगम -
मार्गणा में द्रव्य-प्रमाणानुगम

विशेष :

द्रव्य-प्रमाणानुगम									
मार्गणा		प्रमाण							
गति	नारकी	सामान्य	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>असंख्यात</td></tr> <tr><td>काल</td><td>असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>असंख्यात जगल्लेणी</td></tr> </table>	द्रव्य	असंख्यात	काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	असंख्यात जगल्लेणी
द्रव्य	असंख्यात								
काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	असंख्यात जगल्लेणी								
तिर्यच	सामान्य	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>अनन्त</td></tr> <tr><td>काल</td><td>> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>अनन्तानन्त लोकप्रमाण</td></tr> </table>	द्रव्य	अनन्त	काल	> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	अनन्तानन्त लोकप्रमाण	
द्रव्य	अनन्त								
काल	> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	अनन्तानन्त लोकप्रमाण								
पर्चेन्द्रिय	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>असंख्यात</td></tr> <tr><td>काल</td><td>असंख्यात-असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> </table>	द्रव्य	असंख्यात	काल	असंख्यात-असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी				
द्रव्य	असंख्यात								
काल	असंख्यात-असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
मनुष्य	सामान्य	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>असंख्यात</td></tr> <tr><td>काल</td><td>असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>जगल्लेणी का असंख्यातवां भाग</td></tr> </table>	द्रव्य	असंख्यात	काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	जगल्लेणी का असंख्यातवां भाग	
द्रव्य	असंख्यात								
काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	जगल्लेणी का असंख्यातवां भाग								
पर्याप्ति	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>> कोडाकोडाकोडाकोडाकोड़ी < कोडाकोडाकोडाकोड़ी, छठे और सातवें वर्ष के बीच</td></tr> </table>	द्रव्य	> कोडाकोडाकोडाकोडाकोड़ी < कोडाकोडाकोडाकोड़ी, छठे और सातवें वर्ष के बीच						
द्रव्य	> कोडाकोडाकोडाकोडाकोड़ी < कोडाकोडाकोडाकोड़ी, छठे और सातवें वर्ष के बीच								
सामान्य	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>असंख्यात</td></tr> <tr><td>काल</td><td>असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>जगत्प्रतर // (५६ अंगुल) ^२</td></tr> </table>	द्रव्य	असंख्यात	काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	जगत्प्रतर // (५६ अंगुल) ^२		
द्रव्य	असंख्यात								
काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	जगत्प्रतर // (५६ अंगुल) ^२								
भवनावासी	भवनावासी	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>असंख्यात</td></tr> <tr><td>काल</td><td>असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>असंख्यात जगल्लेणी, जगत्प्रतर का असंख्यातवां भाग</td></tr> </table>	द्रव्य	असंख्यात	काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	असंख्यात जगल्लेणी, जगत्प्रतर का असंख्यातवां भाग	
द्रव्य	असंख्यात								
काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	असंख्यात जगल्लेणी, जगत्प्रतर का असंख्यातवां भाग								
व्यन्तर	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>असंख्यात</td></tr> <tr><td>काल</td><td>असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>जगत्प्रतर // (संख्यात सौ योजन) ^२</td></tr> </table>	द्रव्य	असंख्यात	काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	जगत्प्रतर // (संख्यात सौ योजन) ^२		
द्रव्य	असंख्यात								
काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	जगत्प्रतर // (संख्यात सौ योजन) ^२								
ज्योतिषी	<table border="1"> <tr><td colspan="2">देवों के समान</td></tr> </table>	देवों के समान							
देवों के समान									
इन्द्रिय	देव	सौधर्म-ईशान	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>असंख्यात</td></tr> <tr><td>काल</td><td>असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>असंख्यात जगल्लेणी, जगत्प्रतर का असंख्यातवां भाग</td></tr> </table>	द्रव्य	असंख्यात	काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	असंख्यात जगल्लेणी, जगत्प्रतर का असंख्यातवां भाग
द्रव्य	असंख्यात								
काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	असंख्यात जगल्लेणी, जगत्प्रतर का असंख्यातवां भाग								
सनकुमार, माहेन्द्र	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>?</td></tr> </table>	द्रव्य	?						
द्रव्य	?								
ब्रह्म, ब्रह्मान्तर	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>?</td></tr> </table>	द्रव्य	?						
द्रव्य	?								
लान्तव, कापिष्ठ	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>?</td></tr> </table>	द्रव्य	?						
द्रव्य	?								
शुक्र, महाशुक्र	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>?</td></tr> </table>	द्रव्य	?						
द्रव्य	?								
शतार, सहस्रार	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>?</td></tr> </table>	द्रव्य	?						
द्रव्य	?								
आनन्द-अपराजित	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>पत्य के असंख्यातवें भाग</td></tr> <tr><td>काल</td><td>?</td></tr> </table>	द्रव्य	पत्य के असंख्यातवें भाग	काल	?				
द्रव्य	पत्य के असंख्यातवें भाग								
काल	?								
सर्वार्थसिद्धि	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>संख्यात</td></tr> </table>	द्रव्य	संख्यात						
द्रव्य	संख्यात								
एकेन्द्रिय	एकेन्द्रिय	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>अनन्त</td></tr> <tr><td>काल</td><td>> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>अनन्तानन्त लोकप्रमाण</td></tr> </table>	द्रव्य	अनन्त	काल	> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	अनन्तानन्त लोकप्रमाण	
द्रव्य	अनन्त								
काल	> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	अनन्तानन्त लोकप्रमाण								
दो, तीन, चार, पंचेन्द्रिय	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>असंख्यात</td></tr> <tr><td>काल</td><td>असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>?</td></tr> </table>	द्रव्य	असंख्यात	काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	?		
द्रव्य	असंख्यात								
काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	?								
काय	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, बादर वनस्पति प्रत्येक	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, बादर वनस्पति प्रत्येक	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>असंख्यात लोकप्रमाण</td></tr> </table>	द्रव्य	असंख्यात लोकप्रमाण				
द्रव्य	असंख्यात लोकप्रमाण								
पृथ्वी, जल, प्रत्येक वनस्पति	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>असंख्यात</td></tr> <tr><td>काल</td><td>असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>?</td></tr> </table>	द्रव्य	असंख्यात	काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	?		
द्रव्य	असंख्यात								
काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	?								
अग्नि	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>असंख्यात, ?</td></tr> </table>	द्रव्य	असंख्यात, ?						
द्रव्य	असंख्यात, ?								
वायु	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>असंख्यात</td></tr> <tr><td>काल</td><td>असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>असंख्यात जगत्प्रतर, लोक का असंख्यातवां भाग</td></tr> </table>	द्रव्य	असंख्यात	काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	असंख्यात जगत्प्रतर, लोक का असंख्यातवां भाग		
द्रव्य	असंख्यात								
काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	असंख्यात जगत्प्रतर, लोक का असंख्यातवां भाग								
वनस्पति	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>अनन्त</td></tr> <tr><td>काल</td><td>> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>अनन्तानन्त लोकप्रमाण</td></tr> </table>	द्रव्य	अनन्त	काल	> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	अनन्तानन्त लोकप्रमाण		
द्रव्य	अनन्त								
काल	> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	अनन्तानन्त लोकप्रमाण								
वृक्ष	निगोद	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>असंख्यात</td></tr> <tr><td>काल</td><td>> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>अनन्तानन्त लोकप्रमाण</td></tr> </table>	द्रव्य	असंख्यात	काल	> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	अनन्तानन्त लोकप्रमाण	
द्रव्य	असंख्यात								
काल	> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	अनन्तानन्त लोकप्रमाण								
मनोयोगी, (सत्य, असत्य, उभ्य) वचनयोगी	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>देवों का संख्यातवां भाग</td></tr> </table>	द्रव्य	देवों का संख्यातवां भाग						
द्रव्य	देवों का संख्यातवां भाग								
वचनयोगी, अनुभ्य वचनयोगी	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>असंख्यात</td></tr> <tr><td>काल</td><td>असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>?</td></tr> </table>	द्रव्य	असंख्यात	काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	?		
द्रव्य	असंख्यात								
काल	असंख्यात संख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	?								
काययोगी, (औदारिक, औदारिक-मिश्र, कार्मण) काययोगी	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>अनन्त</td></tr> <tr><td>काल</td><td>> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी</td></tr> <tr><td>क्षेत्र</td><td>अनन्तानन्त लोकप्रमाण</td></tr> </table>	द्रव्य	अनन्त	काल	> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	क्षेत्र	अनन्तानन्त लोकप्रमाण		
द्रव्य	अनन्त								
काल	> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी								
क्षेत्र	अनन्तानन्त लोकप्रमाण								
वैक्रियिक	<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>देव-राशि - (देव-राशि / संख्यात)</td></tr> </table>	द्रव्य	देव-राशि - (देव-राशि / संख्यात)						
द्रव्य	देव-राशि - (देव-राशि / संख्यात)								
योग	वैक्रियिक-मिश्र		<table border="1"> <tr><td>द्रव्य</td><td>देव-राशि / संख्यात</td></tr> </table>	द्रव्य	देव-राशि / संख्यात				
द्रव्य	देव-राशि / संख्यात								

द्रव्य-प्रमाणानुगम				
मार्गणा		प्रमाण		
आहारक		54		
आहारक-मिश्र		संख्यात		
वेद	स्त्री		देवियों से कुछ अधिक	
	पुरुष		देवों से कुछ अधिक	
	नपुंसक	द्रव्य	अनन्त	
		काल	> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	
		क्षेत्र	अनन्तानन्त लोकप्रमाण	
अपगत-वेद		अनन्त		
कथाय	क्रोध, मान, माया, लोभ	द्रव्य	अनन्त	
		काल	> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	
		क्षेत्र	अनन्तानन्त लोकप्रमाण	
अकथाय		अनन्त		
ज्ञान	मत्यज्ञानी, श्रुतज्ञानी		नपुंसक वेदी जीवों के समान, अनन्त	
	विभंगावधि		देवों से कुछ अधिक	
	मति, श्रुति, अवधि	द्रव्य	पल्य के असंख्यात्में भाग	
		काल	आवली का असंख्यात्में भाग, अंतर्मूर्हूर्त	
	मनःपर्यय		संख्यात	
केवल		अनन्त		
संयम	संयत, सामाधिक, छेदोपस्थापना		पृथक्त बोटि	
	परिहार-विशुद्धि		पृथक्त सहस्र	
	सुकृष्ट-साम्प्राणिक		पृथक्त शत	
	यथाखात-विहार-शुद्धि		पृथक्त शत सहस्र	
	संयातासंयत		पल्य के असंख्यात्में भाग	
असंयत		मत्यज्ञानी के समान, अनन्त		
दर्शन	चक्षु-दर्शन	द्रव्य	असंख्यात	
		काल	असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	
		क्षेत्र	?	
अचक्षु-दर्शन		असंयतों के समान, अनन्त		
केवल-दर्शन		केवल-ज्ञानियों के समान, अनन्त		
लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत		असंयतों के समान, अनन्त	
	पीत (तेजो)		ज्योतिषी देवों के समान, असंख्यात	
	पद्म		संज्ञी पचेन्द्रिय तिर्यच योनिनीयों के संख्यात्में भाग	
	शुक्रत		पल्य के असंख्यात्में भाग	
भव्य	भव्यसिद्धिक	द्रव्य	अनन्त	
		काल	> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	
		क्षेत्र	अनन्तानन्त लोकप्रमाण	
अभव्यसिद्धिक		अनन्त		
सम्यक्त्व	सम्यक्त्वी, उपशम, क्षायिक, वेदक, सासादन-सम्यक्त्वी, सम्यग्मिथ्याद्वाहि		पल्य के असंख्यात्में भाग	
	मिथ्याद्वाहि		असंयमियों के समान, अनन्त	
संज्ञी	संज्ञी		देवों से कुछ अधिक, असंख्यात	
	असंज्ञी		असंयमियों के समान, अनन्त	
आहार	आहारक / अनाहारक	द्रव्य	अनन्त	
		काल	> अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी	
		क्षेत्र	अनन्तानन्त लोकप्रमाण	



+ वैमानिक देवों की संख्या - वैमानिक देवों की संख्या

विशेष :

ऊर्ध्व लोक के वैमानिक देव	
अल्प बहुत्त	संख्या
5 अनुत्तर	पल्य के असंख्यात्में भाग
9 अनुदिश	ऊपर से संख्यात गुणा
3 उपरिम ग्रैवेयक	ऊपर से संख्यात गुणा
3 मध्यम ग्रैवेयक	ऊपर से संख्यात गुणा
3 अधी ग्रैवेयक	ऊपर से संख्यात गुणा
आरण	अच्युत
आनन्द	प्राणित
शतार	सहस्रार
शुक्र	महाशुक्र
लांतव	कपिष्ठ
ब्रह्म	ब्रह्मोत्तर
सानन्दकमार	माहेन्द्र
सौर्धम	ईश्वान

(आहार की कार्किय-अनुप्रेष्ठा, गाया : 158, श्री गोमात्सार गाया : 161, 162)



+ नारकियों की संख्या -
नारकियों की संख्या

विशेष :

अधोलोक में नारकियों की संख्या	
अल्प बहुत्व	संख्या
1 - धर्म	नीचे से असंख्यात गुण। (जगतश्रेणी / $2^1 \sqrt{2}$ घनांगुल - शेष नारकी)
2 - वंश	नीचे से असंख्यात गुण। जगतश्रेणी / $2^{12} \sqrt{2}$ (जगतश्रेणी)
3 - मेधा	नीचे से असंख्यात गुण। जगतश्रेणी / $2^{10} \sqrt{2}$ (जगतश्रेणी)
4 - अंजना	नीचे से असंख्यात गुण। जगतश्रेणी / $2^8 \sqrt{2}$ (जगतश्रेणी)
5 - अरिष्टा	नीचे से असंख्यात गुण। जगतश्रेणी / $2^6 \sqrt{2}$ (जगतश्रेणी)
6 - मधवा	नीचे से असंख्यात गुण। जगतश्रेणी / $2^3 \sqrt{2}$ (जगतश्रेणी)
7 - माधवी	असंख्यात जगतश्रेणी / $2^2 \sqrt{2}$ (जगतश्रेणी)

(आधार: श्री कालिकाभृतप्रब्लेष्ट, गाया: 159, श्री गोमदेश्वर, गाया: 153, 154)



क्षेत्रानुगम



+ मार्गणा में क्षेत्रानुगम -
मार्गणा में क्षेत्रानुगम

विशेष :

क्षेत्रानुगम			
मार्गणा		क्षेत्र	
पति	नारकी	सामान्य	2 स्वस्थान, 4 समुद्रधात, उपपाद
	तिर्यच	सामान्य	2 स्वस्थान, 4 समुद्रधात, उपपाद
		पंचेन्द्रिय	2 स्वस्थान, 4 समुद्रधात, उपपाद
	मनुष्य	पर्याप्त	स्वस्थान, उपपाद
		पर्याप्त	समुद्रधात
	अपर्याप्त	स्वस्थान, उपपाद	लोक का असंख्यातवा भाग
इन्द्रिय	देव	सामान्य	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद
	एकेन्द्रिय	पर्याप्त / अपर्याप्त / सूक्ष्म	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद
		पर्याप्त / अपर्याप्त / बादर	स्वस्थान
			समुद्रधात, उपपाद
	दो, तीन, चार	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद	लोक का असंख्यातवा भाग
	पंचेन्द्रिय	पर्याप्त	स्वस्थान, उपपाद
काय		पर्याप्त	समुद्रधात
		अपर्याप्त	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद
	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु	सूक्ष्म / पर्याप्त / अपर्याप्त	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद
	पृथ्वी, जल, अग्नि, प्रत्येक वनस्पति	बादर, अपर्याप्त	स्वस्थान
		बादर, पर्याप्त	समुद्रधात, उपपाद
		बादर, अपर्याप्त	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद
योग	वायु	बादर, अपर्याप्त	स्वस्थान
		बादर, पर्याप्त	समुद्रधात, उपपाद
		बादर, अपर्याप्त	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद
	वनस्पति	निगोद / पर्याप्त / अपर्याप्त / सूक्ष्म	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद
		बादर (निगोद / पर्याप्त / अपर्याप्त)	स्वस्थान
			समुद्रधात, उपपाद
त्रस		पर्याप्त	स्वस्थान, उपपाद
		अपर्याप्त	समुद्रधात
			लोक का असंख्यातवा भाग
पाय	पाँचों मनोयोगी, पाँचों वचनयोगी	स्वस्थान, समुद्रधात	लोक का असंख्यातवा भाग
	काययोगी, औदारिक-मिश्र काययोगी	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद	सर्वलोक
	औदारिक काययोगी	स्वस्थान, समुद्रधात	सर्वलोक

क्षेत्रानुगम			
मार्गणा		क्षेत्र	
वैक्रियिक	स्वस्थान, समुद्रधात	लोक का असंख्यात्मा भाग	
वैक्रियिक-मिश्र	स्वस्थान	लोक का असंख्यात्मा भाग	
आहारक	स्वस्थान, समुद्रधात	लोक का असंख्यात्मा भाग	
आहारक-मिश्र	स्वस्थान	लोक का असंख्यात्मा भाग	
कार्मण काययोग		सर्वलोक	
वेद	पुरुष, स्त्री	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद	लोक का असंख्यात्मा भाग
	ननुसंक	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद	सर्वलोक
कथाय	अपगत-वेद	स्वस्थान	लोक का असंख्यात्मा भाग
	क्रोध, मान, माया, लोभ	समुद्रधात	लोक का असंख्यात्मा भाग / लोक का असंख्यात बहुभाग / सर्वलोक
ज्ञान	अकथाय	स्वस्थान	लोक का असंख्यात्मा भाग
	मति, श्रुति, अवधि	समुद्रधात	लोक का असंख्यात्मा भाग / लोक का असंख्यात बहुभाग / सर्वलोक
संयम	केवल	स्वस्थान	लोक का असंख्यात्मा भाग
	संयत, यथाखात-विहार-शुद्धि	समुद्रधात	लोक का असंख्यात्मा भाग
सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार-विशुद्धि, सुक्ष्म-साम्परायिक, संयातासंयत	स्वस्थान, समुद्रधात	लोक का असंख्यात्मा भाग	
	असंयत	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद	सर्वलोक
दर्शन	चक्षु-दर्शन	स्वस्थान, समुद्रधात	लोक का असंख्यात्मा भाग
	अचक्षु-दर्शन	कथंचित उपपाद	लोक का असंख्यात्मा भाग
लेश्या	अवधि	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद	सर्वलोक
	केवल-दर्शन	स्वस्थान	लोक का असंख्यात्मा भाग
भव्य	कृष्ण, नील, कापोत	समुद्रधात, उपपाद	सर्वलोक
	पीत (तेज), पद्म	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद	लोक का असंख्यात्मा भाग
सम्पर्कत्व	शुक्ल	स्वस्थान, उपपाद	लोक का असंख्यात्मा भाग
	सम्पर्कत्वी, क्षायिक	समुद्रधात	लोक का असंख्यात्मा भाग / लोक का असंख्यात बहुभाग / सर्वलोक
संज्ञी	उपशम, वेदक, सासादन-सम्पर्कत्वी	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद	लोक का असंख्यात्मा भाग / लोक का असंख्यात बहुभाग / सर्वलोक
	सम्पर्कत्वी	स्वस्थान	लोक का असंख्यात्मा भाग
आहार	मिथ्यादृष्टि	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद	सर्वलोक
	संज्ञी	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद	लोक का असंख्यात्मा भाग
	असंज्ञी		सर्वलोक
	आहारक	स्वस्थान, समुद्रधात, उपपाद	सर्वलोक
	अनाहारक		सर्वलोक



+ जीवों का वर्तमान निवास-स्थान / अवस्था -

जीवों का वर्तमान निवास-स्थान / अवस्था

विशेष :

मार्गणा	जीवों का वर्तमान निवास-स्थान / अवस्था								
	स्वस्थान		समुद्रधात						
स्व.स्थ.	वि.स्थ.	वेदना	कपाय	वैक्रियिक	तैजस	आहारक	मारणा,	केवली	उपपाद
नारकी, तिर्यंच (पञ्चेन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय पर्याप्ति, योनिमत्ती), देव, उपशम सम्पर्कत्व, सासादन, स्त्रीवेद, मत्यज्ञानी, श्रुतज्ञानी, असंयत, लेश्या (कृष्ण, नील, कापोत), अभ्यु, मिथ्यादृष्टि, असंज्ञी	✓	✓	✓	✓	✓	X	X	✓	X ✓
पुरुषवेद, वेदक सम्पर्कत्व, लेश्या (पीत, पद्म), क्रोध, मान, माया लोभ	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	X ✓
मनुष्यनी	✓	✓	✓	✓	✓	X	X	✓	✓
अकथायी, अपगत वेद, यथाखात संयत	✓	✓	X	X	X	X	X	✓	X
पर्याप्त (मनुष्य, पञ्चेन्द्रिय, त्रस), शुक्ल लेश्या, क्षायिक सम्पर्कत्व	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
वैक्रियिक काययोग, विभगज्ञान	✓	✓	✓	✓	✓	X	X	✓	X X
विकलत्रय पर्याप्ति	✓	✓	✓	✓	X	X	X	✓	X ✓
त्रस लब्ध्यपर्याप्ति, बादर पर्याप्ति (पूर्वी, जल), सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति पर्याप्ति	✓	X	✓	✓	X	X	X	✓	X ✓
संयत	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
सामायिक, छेदोपस्थापना	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	X X
संयातासंयत, परिहारविशुद्धि	✓	✓	✓	✓	✓	X	X	✓	X X
सम्पर्कत्वादृष्टि	✓	✓	✓	✓	✓	X	X	X	X X
आहारक काययोग	✓	✓	X	X	X	X	X	✓	X X
आहारक-मिश्र	✓	X	X	X	X	X	X	X	X X
सुक्ष्मसांपराय	✓	X	X	X	X	X	X	✓	X X
बादर एकेन्द्रीय पर्याप्ति (तेजस्कायिक, वायुकायिक)	✓	X	✓	✓	✓	X	X	✓	X ✓
सुक्ष्म, निगोद, एकेन्द्रीय अपर्याप्ति	✓	X	✓	✓	X	X	X	✓	X ✓

स्व.स्थ. = स्वस्थान-स्थान, वि.स्थ. = विहारवत स्थान, मारणा. = मारणातिक



स्पशनुगम



+ गुणस्थानों में स्पर्श - गुणस्थानों में स्पर्श

विशेष :

गुणस्थानों (सामान्य/ओघ) में स्पर्श	
गुणस्थान	स्पर्श
मिथ्यादृष्टि	सर्व-लोक
सासादन	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग, कुछ कम १२/१४ भाग
मिश्र, असंयत	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग
संयतासंयत	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ६/१४ भाग
प्रमत्त, अप्रमत्त, चारों उपशमक, चारों क्षपक, अयोग-केवली	लोक का असंख्यातवां भाग
संयोग-केवली	लोक का असंख्यातवां भाग, असंख्यातवां बहुभाग, सर्व-लोक



+ मार्गणा में स्पर्शनुगम - मार्गणा में स्पर्शनुगम

विशेष :

स्पर्शनुगम				
	मार्गणा	गुणस्थान		
गति	नरक	सामान्य	मिथ्यादृष्टि	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग
			सासादन	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग
		१	मिथ्यादृष्टि से असंयत	लोक का असंख्यातवां भाग
		२-६	मिथ्यादृष्टि, सासादन	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम १,२,३,४,५ भाग
		७	मिथ्यादृष्टि	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग
मनुष्य	तिर्यच		सासादन, मिश्र, असंयत	लोक का असंख्यातवां भाग
			मिथ्यादृष्टि	सर्व-लोक
			सासादन	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ७/१४ भाग
			सम्पर्यमिथ्यादृष्टि	लोक का असंख्यातवां भाग
			असंयत, संयतासंयत	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग
देव			लब्ध्यपर्याप्ति	लोक का असंख्यातवां भाग, सर्व-लोक
			मिथ्यादृष्टि	लोक का असंख्यातवां भाग, सर्व-लोक
			सासादन	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ७/१४ भाग
			सम्पर्यमिथ्यादृष्टि से अयोग-केवली	लोक का असंख्यातवां भाग
			संयोग-केवली	लोक का असंख्यातवां भाग / लोक का असंख्यात बहुभाग / सर्वलोक
इन्द्रिय			लब्ध्यपर्याप्ति	लोक का असंख्यातवां भाग, सर्व-लोक
			सामान्य	मिथ्यादृष्टि, सासादन
			सम्पर्यमिथ्यादृष्टि, असंयत	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग
			मिथ्यादृष्टि, सासादन	लोक का असंख्यातवां भाग, लोकनाली के साढ़े तीन, आठ, नौ भाग
			सम्पर्यमिथ्यादृष्टि, असंयत	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग
काय			संैधर्म, ईशान	ओघ के समान
			मिथ्यादृष्टि से असंयत	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग
			भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिष	लोक का असंख्यातवां भाग, लोकनाली के साढ़े तीन, आठ, नौ भाग
			सनल्कुमार से सहमार	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग
			आनत से अच्युत	लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग
पंचेन्द्रिय			नौ-ग्रैवेयक	लोक का असंख्यातवां भाग
			नौ-अनुदिश, पांच अनुत्तर	लोक का असंख्यातवां भाग
			एकेन्द्रिय	पर्याप्ति / अपर्याप्ति, बादर / सूक्ष्म
			२-४ इन्द्रिय	पर्याप्ति / अपर्याप्ति
पंचेन्द्रिय			पंचेन्द्रिय	पर्याप्ति
				मिथ्यादृष्टि
				सासादन से अयोग-केवली
स्थावर				लब्ध्यपर्याप्ति
				सर्व-लोक
				पर्याप्ति / अपर्याप्ति (बादर/ सूक्ष्म, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, बादर प्रत्येक रूपस्थिति)

स्पर्शनुगम		
मार्गणा	गुणस्थान	स्पर्श
बादर पर्याप्ति (पृथकी, जल, अंडी, प्रयोक्त वनस्पति)		लोक का असंख्यातवां भाग, सर्व-लोक
बादर पर्याप्ति वायुकायिक		लोक का असंख्यातवां भाग, सर्व-लोक
(बादर/ सूक्ष्म/ पर्याप्ति /अपर्याप्ति) वनस्पतिकायिक / निगोद		सर्व-लोक
त्रस	पर्याप्ति	ओघ के समान
	लव्यपर्याप्ति	पंचोद्धिय लव्यपर्याप्ति के समान
धोग	पांच मन, पांच वचन	मिथ्यादृष्टि
		लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग, सर्व-लोक
		सासादन से संयत-संयत
	सामान्य	ओघ के समान
		प्रमत्त-संयत से सयोग-केवली
		लोक का असंख्यातवां भाग
	औदारिक	मिथ्यादृष्टि
		ओघ के समान (सर्व-लोक)
		सासादन
	वैक्रियिक	लोक का असंख्यातवां भाग
		सम्प्रभिथादृष्टि, असंयत
		तोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ६/१४ भाग
	आहारक, आहारक-मित्र	प्रमत्त-संयत
	कार्मण	लोक का असंख्यातवां भाग
		मिथ्यादृष्टि
		ओघ के समान
वेद	स्त्री-पुरुष	सासादन
		लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग
		सम्प्रभिथादृष्टि, असंयत
		तोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग
		संयत-संयत
		तोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ६/१४ भाग
		प्रमत्त-संयत से अनिवृत्तिकरण
		लोक का असंख्यातवां भाग
	नपुंसक	मिथ्यादृष्टि
		ओघ के समान (सर्व-लोक)
		सासादन
		लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम १२/१४ भाग
		सम्प्रभिथादृष्टि
कथाय	अपगत	असंयत, संयत-संयत
		लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ६/१४ भाग
		प्रमत्त-संयत से अनिवृत्तिकरण
		लोक का असंख्यातवां भाग
		अनिवृत्तिकरण से अयोग-केवली
ज्ञान	मत्यज्ञानी, श्रुतज्ञानी	सयोग-केवली
		ओघ के समान
		मिथ्यादृष्टि
		ओघ के समान
		सासादन
संयम	सामान्य	सम्प्रभिथादृष्टि
		लोक का असंख्यातवां भाग, सर्व-लोक
		असंयत-संयत
		ओघ के समान
		प्रमत्त-संयत से अनिवृत्तिकरण
दर्शन	असंयत	सयोग-केवली
		ओघ के समान
		मिथ्यादृष्टि
		ओघ के समान
		सासादन
लेश्या	चक्षु	सम्प्रभिथादृष्टि, असंयत
		लोक का असंख्यातवां भाग
		परिहार-विचुदि
		प्रमत्त, अप्रमत्त-संयत
		लोक का असंख्यातवां भाग
	पीत	सूक्ष्म-साम्पराय
		ओघ के समान
		यथाख्यात
		उपशान्त-कथाय आदि ४
		ओघ के समान
शुक्र	संयत-संयत	उपशान्त-संयत
		ओघ के समान
		असंयत
		मिथ्यादृष्टि से असंयत सम्यगदृष्टि
		ओघ के समान
शुक्र	अचक्षु	चक्षु
		मिथ्यादृष्टि
		सासादन से क्षीण-कथाय
		ओघ के समान
		मिथ्यादृष्टि से क्षीण-कथाय
	अवधि	अवधि-ज्ञानियों के समान
		अयोग, सयोग-केवली
		केवलज्ञानीयों के समान
		मिथ्यादृष्टि
		ओघ के समान
शुक्र	कृष्ण, नील, कापोत	सासादन
		लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ५१४.५/१४.२/१४ भाग
		सम्प्रभिथादृष्टि, असंयत
		लोक का असंख्यातवां भाग
		मिथ्यादृष्टि, सासादन
	पीत	सम्प्रभिथादृष्टि, असंयत
		लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४.१/१४ भाग
		संयत-संयत
		लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग
		प्रमत्त, अप्रमत्त-संयत
शुक्र	पद्म	प्रमत्त, असंयत
		लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ८/१४ भाग
		संयत-संयत
		लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ५/१४ भाग
		प्रमत्त, अप्रमत्त-संयत
शुक्र	शुक्र	मिथ्यादृष्टि से संयत-संयत
		लोक का असंख्यातवां भाग, कुछ कम ६/१४ भाग
		प्रमत्त-संयत से सयोग केवली
		ओघ के समान
		प्रमत्त-संयत से अयोग केवली

मार्गणा		गुणस्थान	स्पर्श
भव्य	भव्य	मिथ्यादृष्टि से अयोग केवली	ओं के समान
	अभव्य		सर्व-लोक
सम्यकत्व	सामान्य	असंयत से अयोग केवली	ओं के समान
	क्षायिक	असंयत	ओं के समान
		संयतासंयत से अयोग केवली	लोक का असंख्यातरां भाग
	वेदक	संयोग केवली	ओं के समान
		असंयत से अप्रमत्त-संयत	ओं के समान
	औपशमिक	असंयत	ओं के समान
		संयतासंयत से उपशान्त-कथाय	लोक का असंख्यातरां भाग
	सासादन		ओं के समान
	सम्यग्मिथ्यादृष्टि		ओं के समान
	मिथ्यादृष्टि		ओं के समान
संज्ञी	संज्ञी	मिथ्यादृष्टि	लोक का असंख्यातरां भाग, कुछ कम ८४ भाग, सर्वलोक
		सासादन से क्षीण-कथाय	ओं के समान
	असंज्ञी		सर्व-लोक
आहार	आहारक	मिथ्यादृष्टि	ओं के समान
		सासादन से संयतासंयत	ओं के समान
		प्रमत्त-संयत से संयोग केवली	लोक का असंख्यातरां भाग
	अनाहारक	मिथ्यादृष्टि, सासादन, असंयत, संयोग-केवली	कार्मण-काययोगी जीवों के समान
		अयोग-केवली	लोक का असंख्यातरां भाग



कालानुगम



+ गुणस्थानों में काल -

गुणस्थानों में काल

विशेष :

गुणस्थान (सामान्य/ओं) में काल			
गुणस्थान	नाना जीव अपेक्षा काल		एक जीव अपेक्षा काल
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य
मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	*अंतर्मुहूर्त	*कुछ कम अर्ध-पूद्वल-परिवर्तन
सासादन	एक समय	पत्य का असंख्यातरां भाग	एक समय
मिश्र	अंतर्मुहूर्त	पत्य का असंख्यातरां भाग	अंतर्मुहूर्त
असंयत	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	पूर्व-कोटि - ९ अंतर्मुहूर्त + ३३ सागर
संयतासंयत	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	पूर्व-कोटि - ३ अंतर्मुहूर्त
प्रमत्त-अप्रमत्तसंयत	सर्व-काल	एक समय	अंतर्मुहूर्त
चारों उपशमक	एक समय	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त
चारों क्षपक, अयोग-केवली	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त
संयोग- केवली	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	पूर्व-कोटि - (८ वर्ष + ८ अंतर्मुहूर्त)

*सादि-सात मिथ्यादृष्टि की अपेक्षा



+ मार्गणा में कालानुगम -

मार्गणा में कालानुगम

विशेष :

मार्गणा		गुणस्थान	नाना जीव अपेक्षा काल	एक जीव अपेक्षा काल
गति	नरक	सामान्य	जघन्य	उत्कृष्ट
			जघन्य	उत्कृष्ट
संयत	नरक	सामान्य	मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल
			सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि	अंतर्मुहूर्त
			असंयत सम्यदृष्टि	ओं के समान
संयत	नरक	सामान्य		सर्व-काल
				अंतर्मुहूर्त
				३३ सागर
संयत	नरक	सामान्य		अंतर्मुहूर्त
				अंतर्मुहूर्त
				३३ सागर - ६ अंतर्मुहूर्त

मारणा	गुणस्थान	नाना जीव अपेक्षा काल		एक जीव अपेक्षा काल	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
	१ से ७	मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	१,३,७,१०,१७,२२,३३ सागर
तिर्यक	सामान्य	सासादन, सम्यमिथ्यादृष्टि	ओध के समान		
		असंयत सम्पदादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	तीन पल्य
		संयतासंयत	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	पूर्व-कोटि - ३ अंतर्मुहूर्त
		मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	पृथक्त्र (१५, ४७, १५१, ४९८) पूर्व-कोटि + ३ पल्य
	पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्ति, पंचेन्द्रिय योनिनी	सासादन, सम्यमिथ्यादृष्टि	ओध के समान		
		असंयत सम्पदादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	३ पल्य, ३ पल्य, ३ पल्य - (२ मास + पृथक्त्र अंतर्मुहूर्त)
		संयतासंयत	ओध के समान		
		पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्ति	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	अंतर्मुहूर्त
		मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	पृथक्त्र (४७, २३, ७) पूर्व-कोटि + ३ पल्य
मनुष्य	मनुष्य, मनुष्य पर्याप्ति, मनुष्यनी	सासादन	एक समय	अंतर्मुहूर्त	छह आवली
		सम्यमिथ्यादृष्टि	अंतर्मुहूर्त		
		असंयत सम्पदादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	साधिक (कुछ कम १३ पूर्व कोटि) ३ पल्य, साधिक ३ पल्य, ३ पल्य - (९ मास + ४९ दिन)
		संयतासंयत से अयोग-केवली	ओध के समान		
	लब्ध्यपर्याप्ति		क्षुद्र-भव ग्रहण काल	पल्य का असंख्यातवां भाग	अंतर्मुहूर्त
	मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	३१ सागर	
देव	सामान्य	सासादन, सम्यमिथ्यादृष्टि	ओध के समान		
		असंयत सम्पदादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	३३ सागर
		भवनवासी से सहसार	मिथ्यादृष्टि, असंयत सम्पदादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त
		सासादन, सम्यमिथ्यादृष्टि	ओध के समान		
	आनंद से नव ग्रैवेयक	मिथ्यादृष्टि, असंयत सम्पदादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	२०, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१ सागर
		सासादन, सम्यमिथ्यादृष्टि	ओध के समान		
	गौ अनुदिश, चार अनुत्तर	असंयत सम्पदादृष्टि	सर्व-काल	३१ सागर+१ समय, ३२ सागर+१ समय	३२ सागर, ३३ सागर
इन्द्रिय	एकेन्द्रिय	असंयत सम्पदादृष्टि	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	अंतर्मुहूर्त
		सामान्य	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	अनन्त (असंख्यात आवली के असंख्यात भाग) पुद्रल परिवर्तन
		बादर	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	असंख्यातासंख्यात (अगुल के असंख्यात भाग) अवसर्पणी-उत्सर्पणी काल
		बादर-पर्याप्ति	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	संख्यात हाजार वर्ष
		बादर-लब्ध्यपर्याप्ति	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	अंतर्मुहूर्त
		सूक्ष्म	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	असंख्यात लोकप्रमाण काल
		सूक्ष्म-पर्याप्ति	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त
		सूक्ष्म-लब्ध्यपर्याप्ति	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	अंतर्मुहूर्त
	२,३,४	२,३,४ और २,३,४ पर्याप्तिक	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल, अंतर्मुहूर्त	संख्यात हजार वर्ष
		लब्ध्यपर्याप्ति	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	अंतर्मुहूर्त
		५ और ५ पर्याप्ति	मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त
	५	सासादन से अयोग-केवली	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	पृथक्त्र पूर्व-कोटि + (१०० सागर, पृथक्त्र सौ सागर)
		लब्ध्यपर्याप्ति	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	ओध के समान
		पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	अंतर्मुहूर्त
काय	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, प्रायेक वनस्पति	बादर	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	असंख्यात लोकप्रमाण काल
		बादर-पर्याप्ति	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	कर्म-स्तिथि प्रमाण
		लब्ध्यपर्याप्ति	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	संख्यात हाजार वर्ष
	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति, निगोद	पर्याप्ति, अपर्याप्ति	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	अंतर्मुहूर्त
		वनस्पति	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	असंख्यात लोकप्रमाण काल
	निगोद	सामान्य	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	अदाई पुद्रल परिवर्तन
		बादर	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	कर्म-स्तिथि प्रमाण
	त्रस	त्रस और पर्याप्ति	मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त
		सासादन से अयोग-केवली	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	२००० सागर + पृथक्त्र पूर्व-कोटि, २००० सागर
		लब्ध्यपर्याप्ति	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	अंतर्मुहूर्त
योग	५ मन, ५ चरन	मिथ्यादृष्टि, असंयत सम्पदादृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्त-संयत, अप्रमत्त-संयत, संयोग-केवली	सर्व-काल	एक समय	एक समय
		सासादन	ओध के समान		
		सम्यमिथ्यादृष्टि	एक समय	पल्य का असंख्यातवां भाग	अंतर्मुहूर्त
		चारों उपस्थक और क्षपक	एक समय	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त
		मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	एक समय	अनन्त (असंख्यात पुद्रल परिवर्तन)
	काय	सामान्य	सर्व-काल	मनोयोगी के समान	
		सासादन से अयोग-केवली	सर्व-काल	एक समय	कुछ कम २२ हजार वर्ष
		मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल - ३ समय	अंतर्मुहूर्त
		सासादन	एक समय	पल्य का असंख्यातवां भाग	छह आवली - एक समय
		असंयत सम्पदादृष्टि	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त
	वैक्रियिक	संयोग-केवली	एक समय	संख्यात समय	एक समय
		मिथ्यादृष्टि, असंयत सम्पदादृष्टि	सर्व-काल	एक समय	अंतर्मुहूर्त
		सासादन	ओध के समान		

मार्गणा	गुणस्थान	नाना जीव अपेक्षा काल		एक जीव अपेक्षा काल	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
		मनोयोगी के समान			
वैक्रियिक-मिश्र	मिथ्यादृष्टि, असंयत सम्पद्विष्टि	अंतर्मुहूर्त	पल्प का असंख्यातवृं भाग	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त
	सासादन	एक समय	पल्प का असंख्यातवृं भाग	एक समय	छह आवती - एक समय
	आहारक	प्रमत्त-संयत	अंतर्मुहूर्त	एक समय	अंतर्मुहूर्त
	आहारक-मिश्र	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त
	मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	एक समय	तीन समय	
	कार्मण	सासादन, असंयत सम्पद्विष्टि	एक समय असंख्यातवृं भाग	एक समय	दो समय
वेद	स्त्री	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	पृथक्त्व सौ पल्प	
	सासादन, सम्यमिथ्यादृष्टि		ओघ के समान		
	असंयत सम्पद्विष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	५५ पल्प - ३ अंतर्मुहूर्त	
	संयतासंयत से अनिवृत्करण		ओघ के समान		
	पुरुष	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	पृथक्त्व सौ सागर	
	सासादन से अनिवृत्करण		ओघ के समान		
कथापाय	नर्पुसक	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	अनन्त (असंख्यात पुद्रल परिवर्तन)	
	सासादन, सम्यमिथ्यादृष्टि		ओघ के समान		
	असंयत सम्पद्विष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	३३ सागर - ६ सागर	
	संयतासंयत से अनिवृत्करण		ओघ के समान		
	अपात	अनिवृत्करण के अवैद भाव से अयोग-केवली		ओघ के समान	
	क्रोध, मान, माया, लोभ	मिथ्यादृष्टि से अप्रमत्त-संयत		मनोयोगी के समान	
ज्ञान	क्रोध, मान, माया लोभ / लोभ	२ या ३ उपशामक	एक समय	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त
	क्रोध, मान, माया लोभ / लोभ	२ या ३ क्षपक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त
	अकथावी	अंतिम चार गुणस्थान		ओघ के समान	
	मत्यज्ञानी-श्रुतज्ञानी	मिथ्यादृष्टि		ओघ के समान	
	सासादन			ओघ के समान	
	मति-श्रुत-अवधि	असंयत सम्पद्विष्टि से क्षीणकषाय		ओघ के समान	
संयम	मन-पर्याप्ति	प्रमत्त-संयत से क्षीणकषाय		ओघ के समान	
	केवल	सयोग-केवली, अयोग-केवली		ओघ के समान	
	संयत	प्रमत्त-संयत से अयोग-केवली		ओघ के समान	
	सामाधिक, छेदोपस्थापना	प्रमत्त-संयत से अनिवृत्करण		ओघ के समान	
	परिहारिविषयाद्वि	प्रमत्त-संयत, अप्रमत्त-संयत		ओघ के समान	
	सूक्ष्म-साम्परायिक सुद्धि संयत	सूक्ष्म-साम्पराय उपशामक / क्षपक		ओघ के समान	
दर्शन	यथाखात	अंतिम चार गुणस्थान		ओघ के समान	
	संयतासंयत			ओघ के समान	
	असंयत	मिथ्यादृष्टि से असंयत सम्पद्विष्टि		ओघ के समान	
	चक्षु-दर्शन	मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	२००० सागर
	सासादन से क्षीणकषाय			ओघ के समान	
	अचक्षु-दर्शन	मिथ्यादृष्टि से क्षीणकषाय		ओघ के समान	
तेश्या	अवधि			ओघ के समान	
	केवल			ओघ के समान	
	कृष्ण, नील, कापोत	मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	(३३ सागर, १७ सागर, ७ सागर) + २ अंतर्मुहूर्त
	सासादन			ओघ के समान	
	सम्यमिथ्यादृष्टि			ओघ के समान	
	असंयत सम्पद्विष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	३३ सागर - ६ अंतर्मुहूर्त, १७ सागर - २ अंतर्मुहूर्त, ७ सागर - २ अंतर्मुहूर्त	
भव्य	तेज, पच	मिथ्यादृष्टि, असंयत सम्पद्विष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	२ सागर + अंतर्मुहूर्त, कुछ अधिक १८ सागर
	शुक्रल	सासादन, सम्यमिथ्यादृष्टि, असंयत सम्पद्विष्टि			
	संयतासंयत से अप्रमत्त-संयत	सर्व-काल	एक समय	अंतर्मुहूर्त	
	चारों उपशामक और क्षपक, सयोग-केवली	मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	कुछ अधिक ३१ सागर
	सासादन, सम्यमिथ्यादृष्टि, असंयत सम्पद्विष्टि			ओघ के समान	
	संयतासंयत से अप्रमत्त-संयत			एक समय	अंतर्मुहूर्त
सम्यक्त्व	भव्यसिद्धिक	मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	कुछ कम अर्ध-पुद्रल-परिवर्तन
	अभव्यसिद्धिक	सासादन से अयोग-केवली		ओघ के समान	
	सम्पद्विष्टि	असंयत सम्पद्विष्टि से अयोग-केवली		ओघ के समान	
	वेदक	असंयत सम्पद्विष्टि से अप्रमत्त-संयत		ओघ के समान	
	उपशम	असंयत सम्पद्विष्टि, संयतासंयत	अंतर्मुहूर्त	पल्प का असंख्यातवृं भाग	अंतर्मुहूर्त
		प्रमत्त-संयत से उपशान्त-कषाय	एक समय	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त
संज्ञी	सासादन			ओघ के समान	
	सम्यमिथ्यादृष्टि			ओघ के समान	
	मिथ्यादृष्टि			ओघ के समान	
	संज्ञी	मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	पृथक्त्व सौ सागर
	सासादन से क्षीणकषाय			ओघ के समान	
	असंज्ञी		सर्व-काल	क्षुद्र-भव ग्रहण काल	अनन्त (असंख्यात पुद्रल परिवर्तन)
आहार	आहारक	मिथ्यादृष्टि	सर्व-काल	अंतर्मुहूर्त	असंख्यातासंख्यात (अगुल के असंख्यात भाग) अवसर्पणी-उत्सर्पणी काल
		सासादन से सयोग-केवली		ओघ के समान	
	अनाहारक	मिथ्यादृष्टि, सासादन, असंयत सम्पद्विष्टि, सयोग-केवली		कार्मण-काययोगी के समान	
		अयोग-केवली		ओघ के समान	



भावानुगम



+ मार्गणा में भावानुगम - मार्गणा में भावानुगम

विशेष :

मार्गणा	विशेष	गुणस्थान	भव	
गति	नरक	सामान्य	मिथ्यादृष्टि सासादन सम्प्रमिथ्यादृष्टि असंयत सम्प्रदृष्टि	ओदयिक पारिणामिक क्षायोपशमिक आपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक
		असंयतत्व		ओदयिक
		१		सामान्य के समान
		२ से ७	मिथ्यादृष्टि, सासादन, सम्प्रमिथ्यादृष्टि असंयत सम्प्रदृष्टि	ओघ के समान
	तिर्यच	पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्त, पंचेन्द्रिय योनिनी	मिथ्यादृष्टि से संयतासंयत	ओघ के समान
		पंचेन्द्रिय योनिनी	असंयत सम्प्रदृष्टि	औपशमिक, क्षायोपशमिक
		असंयतत्व		ओदयिक
	मनुष्य	मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी	मिथ्यादृष्टि से अयोग-केवली	ओघ के समान
	देव	सामान्य	मिथ्यादृष्टि से असंयत सम्प्रदृष्टि	ओघ के समान
	भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष देव देवियाँ सौधर्म, ईशान देवियाँ		असंयत सम्प्रदृष्टि	औपशमिक, क्षायोपशमिक
इन्द्रिय	सौधर्म से नव ग्रेवेयिक देव		मिथ्यादृष्टि से असंयत सम्प्रदृष्टि	ओघ के समान
	अनुदिश से सर्वार्थसिद्धि		असंयत सम्प्रदृष्टि	आपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक
	पंचेन्द्रिय	पर्याप्तक	मिथ्यादृष्टि से अयोग-केवली	ओघ के समान
	काय	त्रस और पर्याप्त	मिथ्यादृष्टि से अयोग-केवली	ओघ के समान
धोग	काय	ओदारिक-मित्र	असंयत सम्प्रदृष्टि	क्षायिक, क्षायोपशमिक
		आहारक, आहारक-मित्र	सयोग-केवली	क्षायिक
वेद	स्त्री, पुरुष, नपुंसक		मिथ्यादृष्टि से अनिवृत्तिकरण	ओघ के समान
	अपग्रत		अनिवृत्तिकरण के अवेद भाव से अयोग-केवली	ओघ के समान
कथाय	क्रोध, मान, माया, लोभ		मिथ्यादृष्टि से सूक्ष्म-साम्प्रराय, उपशमक / क्षपक	ओघ के समान
	अक धारी		अतिम चार गुणस्थान	ओघ के समान
ज्ञान	मत्यज्ञानी-श्रुतज्ञानी, विभंग		मिथ्यादृष्टि, सासादन	ओघ के समान
	मति-श्रुत-अवधि		असंयत सम्प्रदृष्टि से क्षीणकषाय	ओघ के समान
	मन-पर्याप्त		प्रमत-संयत से क्षीणकषाय	ओघ के समान
	केवल		सयोग-केवली, अयोग-केवली	ओघ के समान
संयम	संयत		प्रमत-संयत से अयोग-केवली	ओघ के समान
	सामायिक, छेदोपस्थापना		प्रमत-संयत से अनिवृत्तिकरण	ओघ के समान
	परहारिविशुद्धि		प्रमत-संयत, अप्रमत-संयत	ओघ के समान
	सूक्ष्म-साम्प्रायिक सुद्धि संयत		सूक्ष्म-साम्प्राय उपशमक / क्षपक	ओघ के समान
	यथाखात		अतिम चार गुणस्थान	ओघ के समान
	संयतासंयत			ओघ के समान
दर्शन	असंयत		मिथ्यादृष्टि से असंयत सम्प्रदृष्टि	ओघ के समान
	चक्षु-दर्शन		मिथ्यादृष्टि से क्षीणकषाय	ओघ के समान
	अचक्षु-दर्शन		मिथ्यादृष्टि से क्षीणकषाय	ओघ के समान
	अवधि			अवधि-ज्ञानियों के समान
लेश्या	केवल			केवलज्ञानियों के समान
	कृष्ण, नील, कापोत		मिथ्यादृष्टि से असंयत सम्प्रदृष्टि	ओघ के समान
	तेज, पद्म		मिथ्यादृष्टि, से अप्रमत-संयत	ओघ के समान
	शुबल		मिथ्यादृष्टि से सयोग-केवली	ओघ के समान
भव्य	भव्यसिद्धिक		मिथ्यादृष्टि से अयोग-केवली	ओघ के समान
	अभव्यसिद्धिक			पारिणामिक
सम्प्रकर्त्ता	सम्प्रदृष्टि	क्षायिकसम्प्रदृष्टि	असंयत सम्प्रदृष्टि संयतासंयत से अप्रमत-संयत उपशमक क्षपक, सयोग-केवली, अयोग-केवली	क्षायिक क्षायोपशमिक औपशमिक क्षायिक
		वेदक	असंयत सम्प्रदृष्टि संयतासंयत से अप्रमत-संयत	क्षायोपशमिक
		उपशम	असंयत सम्प्रदृष्टि संयतासंयत से अप्रमत-संयत उपशमक	औपशमिक औपशमिक

मार्गणा	विशेष	गुणस्थान	भाव
	सासादन		पारिणामिक
	सम्प्रयोगशालाई		क्षायोपशामिक
	मिथ्याई		ओदयिक
संजी	संजी	मिथ्याई से क्षीणकषाय	ओघ के समान
	असंजी		ओदयिक
आहार	आहारक	मिथ्याई से सयोग-केवली	ओघ के समान
	अनाहारक	मिथ्याई, सासादन, असंयत सम्पादणि, सयोग-केवली	कार्मण-काययोगी के समान
		अयोग-केवली	क्षायिक



अन्तरानुगम



+ गुणस्थानों में अंतर -

गुणस्थानों में अंतर

विशेष :

गुणस्थान (सामान्य/ओघ) में अंतर				
गुणस्थान	नाना जीव अपेक्षा		एक जीव अपेक्षा	
	जघन्य	उल्कृष्ट	जघन्य	उल्कृष्ट
मिथ्याई		निरंतर	अंतर्मुहूर्त	कुछ कम २०६६ सागर
सासादन	१ समय	पत्व का असंख्यातवां भाग	पत्व का असंख्यातवां भाग	अर्धपुद्गल परिवर्तन - (१४ अंतर्मुहूर्त - १ समय)
मित्र	१ समय	पत्व का असंख्यातवां भाग	अंतर्मुहूर्त	अर्धपुद्गल परिवर्तन - (१४ अंतर्मुहूर्त)
असंयत		निरंतर	अंतर्मुहूर्त	अर्धपुद्गल परिवर्तन - (११ अंतर्मुहूर्त)
संयतासंयत		निरंतर	अंतर्मुहूर्त	अर्धपुद्गल परिवर्तन - (११ अंतर्मुहूर्त)
प्रमत्त		निरंतर	अंतर्मुहूर्त	अर्धपुद्गल परिवर्तन - (१० अंतर्मुहूर्त)
अप्रमत्त		निरंतर	अंतर्मुहूर्त	अर्धपुद्गल परिवर्तन - (१० अंतर्मुहूर्त)
चारों उपशमक	१ समय	पृथक्त्व वर्ष	अंतर्मुहूर्त	अर्धपुद्गल परिवर्तन - (२८, २६, २४, २२ अंतर्मुहूर्त)
चारों क्षपक, अयोग-केवली	१ समय	छह मास		निरंतर
सयोग- केवली			निरंतर	



+ मार्गणा में अन्तरानुगम -

मार्गणा में अन्तरानुगम

विशेष :

एक जीव की अपेक्षा अन्तरानुगम		
मार्गणा	जघन्य	उल्कृष्ट
माति	नरक	अंतर्मुहूर्त
	तिर्यच	अंतर्मुहूर्त (क्षुद्र- भव ग्रहण काल)
	मनुष्य / पंचेद्विय तिर्यच	
	ईशान तक	अंतर्मुहूर्त
	सनकुमार-माहेन्द्र	पृथक्त्व मुहूर्त
	ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर	पृथक्त्व दिवस
	शुक्र-महाशुक्र	पृथक्त्व पक्ष
	आनन्द-अच्युत	पृथक्त्व मास
इन्द्रिय	नौ-ग्रेवेयक	
	अनुदिशा-अपराजित	पृथक्त्व वर्ष
	सर्वार्थ-सिद्धि	-
	सामान्य	
देव	एकेद्विय	
	वादर	
	सूक्ष्म	
	दो-पाच इन्द्रिय	
काय	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु	अंतर्मुहूर्त (क्षुद्र- भव ग्रहण काल)
	वनस्पति	अंतर्मुहूर्त (क्षुद्र- भव ग्रहण काल)
	निगोदिया	अनन्त (असंख्यात पुद्गल परिवर्तन)
		असंख्यात लोकप्रमाण काल

	एक जीव की अपेक्षा अन्तरानुगम		जघन्य	
	मार्गणा	प्रत्येक	उत्कृष्ट	
	त्रस		ढाइ पुद्वल परिवर्तन	
योग	मन, वचन		अंतर्मुहूर्त	अनन्त (असंख्यात पुद्वल परिवर्तन)
	काय	सामान्य		अंतर्मुहूर्त
		औदारिक, औदारिक-मिश्र	एक समय	१. अंतर्मुहूर्त + २ समय + ३३ सागर
		वैक्रियिक		अनन्त (असंख्यात पुद्वल परिवर्तन)
		वैक्रियिक-मिश्र	साधिक १० हजार वर्ष	
	आहारक, आहारक-मिश्र		अंतर्मुहूर्त	कुछ कम अर्ध-पुद्वल-परिवर्तन
		कार्मण	तीन समय कम क्षुद्र-भव ग्रहण काल	असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी
वेद	स्त्री		क्षुद्र-भव ग्रहण काल	अनन्त (असंख्यात पुद्वल परिवर्तन)
	पुरुष		एक समय	
	नर्पुसक		अंतर्मुहूर्त	पृथक्त्व सौ सागर
	अपगत-वेद	उपशम	अंतर्मुहूर्त	कुछ कम अर्ध-पुद्वल-परिवर्तन
कथाय	क्रोध, मान, माया, लोभ		एक समय	अंतर्मुहूर्त
	अकथायी		अंतर्मुहूर्त	कुछ कम अर्ध-पुद्वल-परिवर्तन
ज्ञान	मध्यज्ञानी-श्रुतज्ञानी			कुछ कम ३३ सागर
	विभगावधि			अनन्त (असंख्यात पुद्वल परिवर्तन)
	मति-श्रुत-अवधि-मनःपर्यय			कुछ कम अर्ध-पुद्वल-परिवर्तन
	केवलज्ञान			-
संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारिविशुद्धि		अंतर्मुहूर्त	कुछ कम अर्ध-पुद्वल-परिवर्तन
	सूक्ष्म-साम्पराय, यथार्थात	उपशम ब्रेणी		
		क्षपक		
	असंयम			-
दर्शन	चक्षु-दर्शन		अंतर्मुहूर्त	अनन्त (असंख्यात पुद्वल परिवर्तन)
	अचक्षु-दर्शन			
	अवधि		अंतर्मुहूर्त	कुछ कम अर्ध-पुद्वल-परिवर्तन
	केवल			-
लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत		अंतर्मुहूर्त	कुछ-अधिक ३३ सागर
	पीत, पद्मा, शुक्ल			अनन्त (असंख्यात पुद्वल परिवर्तन)
भव्य	भव्य-सिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक			
सम्यक्त्व	औपशमिक, वेदक, सम्यग्मिथादृष्टि		अंतर्मुहूर्त	कुछ कम अर्ध-पुद्वल-परिवर्तन
	क्षायिक			
	सासादन-सम्यक्त्वी		पल्य का असंख्यातवां भाग	कुछ कम अर्ध-पुद्वल-परिवर्तन
	मिथ्यादृष्टि		अंतर्मुहूर्त	कुछ कम ३३ सागर
संज्ञी	संज्ञी		अंतर्मुहूर्त (क्षुद्र-भव ग्रहण काल)	अनन्त (असंख्यात पुद्वल परिवर्तन)
	असंज्ञी			पृथक्त्व सौ सागर
आहार	आहारक		एक समय	तीन समय
	अनाहारक		तीन समय कम क्षुद्र-भव ग्रहण काल	असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी



+ एक जीव की अपेक्षा प्रकृतिबंध अंतरानुगम -

एक जीव की अपेक्षा प्रकृतिबंध अंतरानुगम

विशेष :

एक जीव की अपेक्षा प्रकृतिबंध अंतरानुगम			अन्तर
	जघन्य	उत्कृष्ट	
५ ज्ञानावरण, ४ दर्शनावरण, साता-असाता वेदनीय, ४ संज्वलन, पुरुष-वेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगप्ता, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस, कार्मण, समचतुरम्-संस्थान, वर्ण-चतुष्क, अगुरुलघु ४, प्रशस्त विहायोगति, त्रस ४, स्थिर आदि २ युगल, सुभा, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थकर, ५ अन्तराय	१ समय	अंतर्मुहूर्त	
निद्रा, प्रचला	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	
स्त्यानगुद्धि त्रिक, मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धी ४	अंतर्मुहूर्त	कुछ कम १३२ सागर	
प्रत्याख्यानावरण, अप्रत्याख्यानावरण	अंतर्मुहूर्त	कुछ कम एक कोटि पूर्व	
स्त्री-वेद	१ समय	कुछ कम १३२ सागर	
नर्पुसक-वेद, ५ संस्थान, ५ संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुर्स्वर, अनादेय, नीच-गोत्र	१ समय	कुछ कम ३ पल्य अधिक १३२ सागर	
नरक, देव, मनुष्य आयु	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	
तिर्यक आयु	अंतर्मुहूर्त	पृथक्त्व १०० सागर	
नरक-देव गति, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक अंगोपाग, नरक-देव आनुपूर्वी	१ समय	असंख्यात पुद्वलपरावर्तन	
तिर्यक गति, तिर्यक आनुपूर्वी, उद्योत	१ समय	पृथक्त्व १६३ सागर	
मनुष्य गति, मनुष्य आनुपूर्वी, उच्च गोत्र	१ समय	असंख्यात लोक प्रमाण	
४ जाति, आतप, स्पावर आदि ४,	१ समय	१२५ सागर	
औदारिक शरीर, औदारिक अंगोपाग, वज्रकाष्ठभनाराच-संहनन	१ समय	कुछ कम ३ पल्य	
आहारक शरीर, आहारक अंगोपाग	अंतर्मुहूर्त	कुछ कम अर्ध पुद्वलपरावर्तन	

*होई एक तिर्यच या मनुष्य चोदह सागर शिथिवाले लानव, कापिष्ठ देवो में उत्पन्न हुआ। वहीं एक समरोपण काल द्वितीय सागरवाण के अरम्भ में पर्यावर को प्राप्त हुआ, तथा तेह शाम काल सम्पर्क वाहित व्यतीत कर मध्य और मनुष्य हुआ। वहीं समय अभ्यासमाधान का पालन कर इस मनुष्यमव रामवाले आयु ते कम बाईस सागरवाले आरण, अन्त्यु कल्प में उत्पन्न हुआ। वहीं से मरकर पुनः मनुष्य हुआ। संगम को पालन कर उपर्युक्त में उत्पन्न हुआ और मनुष्य आयु से न्यून इकावीं सामर की आया प्राप्त की। वहीं अन्तर्मुखीं कम छापासठ शाम काल के असम समय में मिश्र गुणस्थानता हुआ। अन्तर्मुखीं विश्राम कर पुनः समाप्तीं हुआ। विश्राम ते, चमक र मनुष्य हुआ। संगम या समरोपण को पालन कर इसे मनुष्य भव की आयु से न्यून बोध सामर की आयुवाले आनन्द-प्राप्ति देवो में उत्पन्न होकर पुनः यामान से मनुष्यान् से कम बाईस सामर के देवो में उत्पन्न होकर अन्तर्मुखीं कम दो छापासठ शाम वाला के असम समय में विश्रामत को प्राप्त हुआ। इस प्रकार अन्तर्मुखीं कम दो छापासठ शाम का काल पूर्ण किया जा सकता है। (शूटो अन्तर्मुखीं पृष्ठ-५)



अल्प-बहुत्व



+ जीवों में अल्प-बहुत्व -

जीवों में अल्प-बहुत्व

गर्भज पर्याप्त मनुष्य < मनुष्यिनि < सर्वार्थसिद्धि देव << बादर पर्याप्त तेजस्कायिक << अनुत्तर (विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित) < अनुदिश < नवें ग्रैवेयक देव < आठवें ग्रैवेयक देव < सातवें ग्रैवेयक देव < छठे ग्रैवेयक देव < पांचवें ग्रैवेयक देव < चौथे ग्रैवेयक देव < तीसरे ग्रैवेयक देव < दूसरे ग्रैवेयक देव < पहले ग्रैवेयक देव < आरण-अच्युत देव < आनन्द-प्राणत देव << सप्तम-पृथिवी नारकी << छठी पृथिवी नारकी << शतार-सहस्रार देव << शुक्र-महाशुक्र देव << पंचम-पृथिवी नारकी << लान्तव-कापिष्ठ देव << चतुर्थ पृथिवी नारकी << ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर देव << तृतीय-पृथिवी नारकी << माहेन्द्र देव << सानकुमार देव << द्वितीय पृथिवी नारकी << अपर्याप्त मनुष्य << ईशान देव < ईशान देवियाँ < सौधर्म देव < सौधर्म देवियाँ << प्रथम पृथिवी नारकी << भवनवासी देव < भवनवासी देवियाँ << पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिनि << व्यंतर देव < व्यंतर देवियाँ < ज्योतिष देव < ज्योतिष देवियाँ < चतुर्थद्विद्रिय पर्याप्त << पंचेन्द्रिय पर्याप्त << द्विन्द्रिय पर्याप्त << त्रीन्द्रिय पर्याप्त << पंचेन्द्रिय अपर्याप्त << चतुर्थद्विद्रिय अपर्याप्त << त्रीन्द्रिय अपर्याप्त << द्विन्द्रिय अपर्याप्त << बादर प्रत्येक वनस्पतिकायिक << बादर पर्याप्त निगोदप्रतिष्ठित << बादर पर्याप्त पृथिविकायिक << बादर पर्याप्त जलकायिक << बादर पर्याप्त वायुकायिक << बादर अपर्याप्त अग्निकायिक << बादर अपर्याप्त प्रत्येक वनस्पति << बादर अपर्याप्त प्रतिष्ठित << बादर अपर्याप्त पृथिवीकायिक << बादर अपर्याप्त जलकायिक << बादर अपर्याप्त वायुकायिक << सूक्ष्म अपर्याप्त अग्निकायिक << सूक्ष्म अपर्याप्त पृथिवीकायिक << सूक्ष्म पर्याप्त वायुकायिक << सूक्ष्म पर्याप्त जलकायिक <<< सिद्ध जीव <<< बादर पर्याप्त वनस्पतिकायिक << बादर अपर्याप्त वनस्पतिकायिक << सूक्ष्म अपर्याप्त वनस्पतिकायिक << सूक्ष्म पर्याप्त वनस्पतिकायिक < सूक्ष्म पर्याप्त वनस्पतिकायिक < सूक्ष्म वनस्पतिकायिक < वनस्पतिकायिक < निगोद जीव < = संख्यात अधिक

'<<' = असंख्यात अधिक

'<<<' = अनंत अधिक



+ अद्वापरिमाण में अल्प-बहुत्व -

अद्वापरिमाण में अल्प-बहुत्व

अनाकार (दर्शनोपयोग) का ज. | सं. आवली| < चक्षु-इंद्रियावग्रह का ज. < श्रोतावग्रह का ज. < ग्राणावग्रह का ज. < जीहावग्रह का ज. < मनोयोग का ज. < वचनयोग का ज. < काययोग का ज. < स्पर्शनेन्द्रियावग्रह का ज. < इंद्रियज अवाय ज्ञान का ज. < इंद्रियज ईहाज्ञान का ज. < श्रुतज्ञान का ज. < श्वासोच्चास का ज. < तद्वद्वस्थ केवली के केवलज्ञान और केवलदर्शन का तथा सक्षाय जीव के शुक्ल लेश्या का ज. < एकत्ववितर्कअवीचार ध्यान का ज. < पृथक्त्ववीतर्कअवीचार ध्यान का ज. < उपशम श्रेणी से गिरे हुए सूक्ष्म-सांपरायिक का ज. < उपशम श्रेणी पर चढ़ते हुए सूक्ष्म-सांपरायिक का ज. < क्षपक श्रेणीगत सूक्ष्म-सांपरायिक का ज. < मान का ज. < क्रोध का ज. < माया का ज. < लोभा का ज. < क्षुद्रभवग्रहण का ज. < कृष्टिकरण का ज. < संक्रामण का ज. < अपवर्तन का ज. < उपशांत कषाय का ज. < क्षीणमोह का ज. < उपशामक का ज. < क्षपक का ज. < चक्षुदर्शनोपयोग का उ. <: चक्षुज्ञानोपयोग का उ. < श्रोत ज्ञानोपयोग का उ. < ग्राणेन्द्रियज ज्ञानोपयोग का उ. < जिह्वाइंद्रियज ज्ञानोपयोग < मनोयोग का उ. < वचनयोग का उ. < काययोग का उ. < स्पर्शनेन्द्रियज ज्ञानोपयोग का उ. < अवायज्ञान का उ. < ईहाज्ञानोपयोग का उ. <: श्रुतज्ञान का उ. < श्वासोच्चास का उ. < तद्वद्वस्थ केवली के केवलज्ञान और केवलदर्शन का तथा सक्षाय जीव के शुक्ल लेश्या का उ. < एकत्ववितर्कअवीचार ध्यान का उ. <: पृथक्त्ववीतर्कअवीचार ध्यान का उ. < उपशम श्रेणी से गिरे हुए सूक्ष्म-सांपरायिक का उ. < उपशम श्रेणी पर चढ़ते हुए सूक्ष्म-सांपरायिक का उ. < क्षपक श्रेणीगत सूक्ष्म-सांपरायिक का उ. <: मान का उ. < क्रोध का उ. < माया का उ. < लोभ का उ. < क्षुद्रभव ग्रहण का उ. < कृष्टिकरण का उ. < संक्रामण का उ. < अपवर्तन का उ. < उपशांत कषाय का उ. < क्षीणमोह का उ. < उपशामक का उ. < क्षपक का उ.

ज. = जघन्य

उ. = उक्त

'<' = विशेष (संख्यात आवली) अधिक

'<' = दूना अधिक

* व्याघात से रोहित काल की अपेक्षा है



+ योग-स्थान में अल्प-बहुत्व -

योग-स्थान में अल्प-बहुत्व

सू. एकेन्द्रिय अप. का ज. << बा. एकेन्द्रिय अप. का ज. << दो इंद्रिय अप. का ज. << ३ इंद्रिय अप. का ज. << ४ इंद्रिय अप. का ज. << असंजी पंचेन्द्रिय अप. का ज. << संज्ञी पंचेन्द्रिय अप. का ज. << सू. एकेन्द्रिय अप. का उ. << बा. एकेन्द्रिय लब्धअप. का उ. << सू. एकेन्द्रिय प. का ज. << बा. एकेन्द्रिय प. का ज. << सू. एकेन्द्रिय प. का उ. << बा. एकेन्द्रिय प. का उ. << दो इंद्रिय अप. का उ. << ३ इंद्रिय अप. का उ. << ४ इंद्रिय अप. का उ. << असंजी पंचेन्द्रिय अप. का उ. << संज्ञी पंचेन्द्रिय अप. का उ. << दो इंद्रिय प. का उ. << ३ इंद्रिय प. का उ. << ४ इंद्रिय प. का उ. << असंजी पंचेन्द्रिय प. का उ. << संज्ञी पंचेन्द्रिय प. का उ.

<< = पत्व / असंख्यात

ज. = जघन्य, उ. = उत्कृष्ट

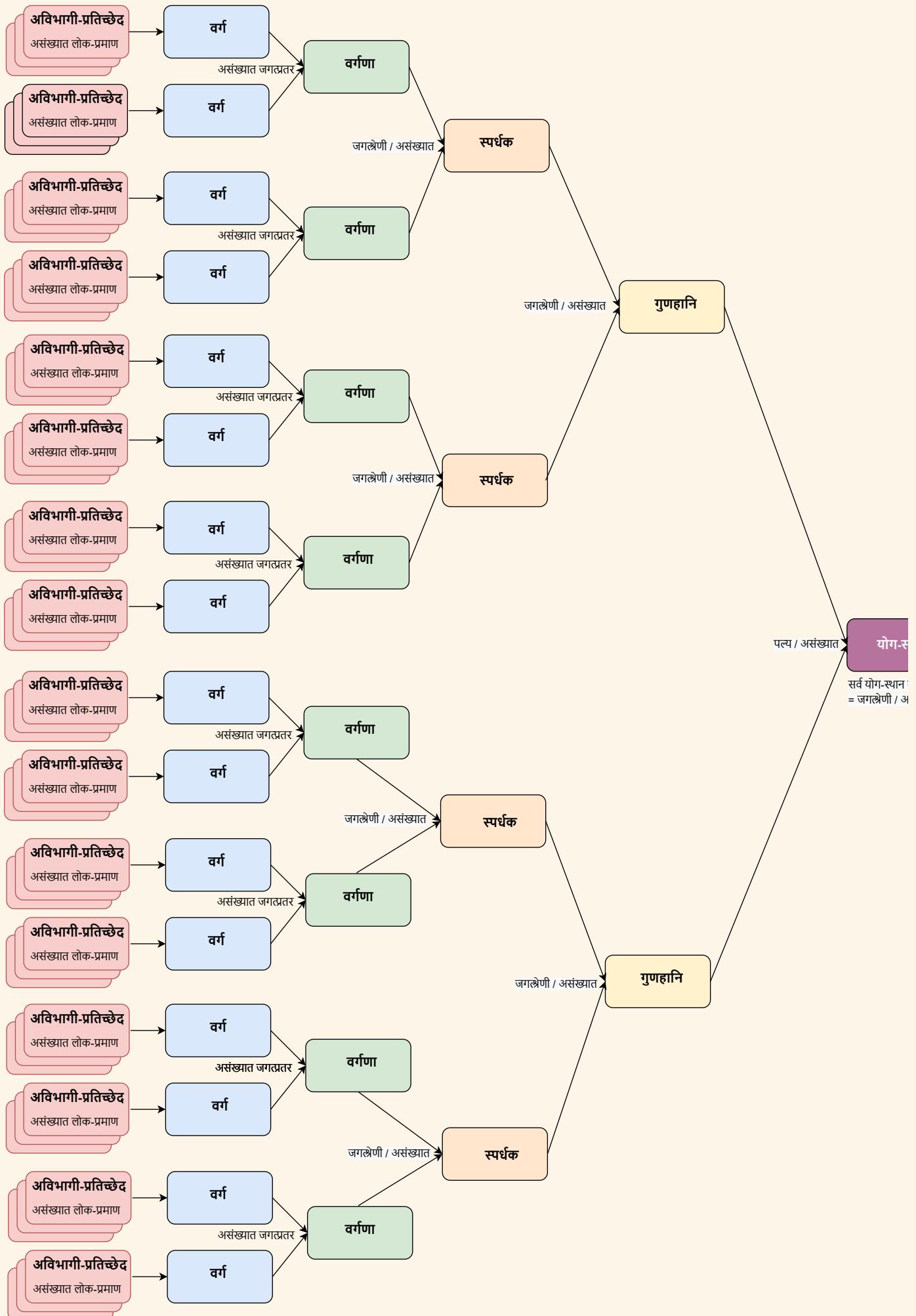
प. = पर्याप्त, अप. = अपर्याप्त

सू. = सूक्ष्म, बा. = बादर



+ योग-स्थान -
योग-स्थान

विशेष :



योगस्थान >> स्पर्धक की वर्गणायें >> अंतर-निरंतर-ध्वान > स्पर्धक >> नाना-स्पर्धक वर्गणा >> जीव-प्रदेश >> अविभाग प्रतिष्ठेद



+ योग-स्थान अल्प-बहुत्व -

योग-स्थान अल्प-बहुत्व

विशेष :



+ जीव-समास में योगस्थान -

जीव-समास में योगस्थान

विशेष :



मोहनीय-विभक्ति



+ मोहनीय प्रकृति-स्थान विभक्ति – स्थान आदि -

प्रकृति-स्थान विभक्ति -- स्थान आदि समुल्कीर्तना अनुयोग द्वारा

विशेष :

प्रकृति-स्थान विभक्ति (स्थान और स्वामित्व समुल्कीर्तना अनुयोग द्वारा)						
स्तर	स्वामित्व	काल		अंतर		भंग
		उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	
1 प्रकृति	संज्वलन लोभ	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त			
2 प्रकृति	+ संज्वलन माया					
3 प्रकृति	+ संज्वलन मान					
4 प्रकृति	+ संज्वलन क्रोध					
5 प्रकृति	+ पुरुष वेद					
11 प्रकृति	+ 6 नोकषय	अंतर्मुहूर्त				
12 प्रकृति	+ स्त्री वेद		1 समय	अंतर्मुहूर्त		
13 प्रकृति	+ नपुंसक वेद	अंतर्मुहूर्त				
21 प्रकृति	+ 8 कथय	क्षायिक सम्पर्की (चारों गति में)	अंतर्मुहूर्त	साधिक 33 सागर		
22 प्रकृति	+ सम्पर्क प्रकृति	क्षायिक सम्पर्क समुख कृतकृत्य वेदक	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त		
23 प्रकृति	+ सम्पर्कित्यात्व	क्षायिक सम्पर्क समुख मिथ्यात का क्षय करने वाले मनुष्य और मनुष्याने	अंतर्मुहूर्त			
24 प्रकृति	+ मिथ्यात्व	अनन्तानुबंधी विसंयोजक (चारों गति में) सम्पर्कित, सम्पर्कित्याहृषि	अंतर्मुहूर्त	साधिक 132 सागर	अंतर्मुहूर्त	
26 प्रकृति	28 - (सम्पर्कप्रकृति सम्पर्कित्यात्व)	मिथ्याहृषि	1 समय*	कुछ कम अर्ध पुद्दल परिवर्तन*	कुछ कम अर्ध पुद्दल परिवर्तन*	
27 प्रकृति	28 - सम्पर्कित्यात्व	मिथ्याहृषि	1 समय*	पत्य / असंख्यात	साधिक 132 सागर	
28 प्रकृति	मोहनीय की 28 प्रकृतियाँ	सम्पर्कित, सम्पर्कित्याहृषि, मिथ्याहृषि	अंतर्मुहूर्त	साधिक 132 सागर	1 समय	कुछ कम अर्ध पुद्दल परिवर्तन*

प्रकृति-स्थान विभक्ति (स्थान और स्वामित्व समुत्कीर्तना अनुयोग द्वारा)						
सत्त्व	स्वामित्व	काल		अंतर		भंग
		उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	
* सांदिसात भेद की अपेक्षा						



+ मोहनीय विभक्ति-स्थान में अल्प-बहुत्व -

मोहनीय विभक्ति-स्थान में अल्प-बहुत्व

विशेष :

1 <2 <3 <11 <12 <4 <13 <22 <23 <<27 <<21 <<24 <<28 <<<26

'<' = विशेष / संख्यात अधिक
'<<' = असंख्यात अधिक
'<<<' = अनंत अधिक



विविध विषय



+ मूल संघ पट्टावली -

मूल संघ पट्टावली

विशेष :

मूल संघ पट्टावली		
केवल ज्ञानी	0-12 वर्ष	गोतम स्वामी
	13-24 वर्ष	सुधर्मा स्वामी / लोहार्य
	24-62 वर्ष	जमू स्वामी
द्वादशांग धारी	62-76	विष्णु
	76-92	नदिमित्र
	92-114	अपराजित
	114-133	गोवर्धन
	133-162	भद्रबाहु
10 पूर्व धारी	162-172	विशाखाचार्य
	172-191	प्रोष्ठिल
	191-208	क्षत्रिय
	208-229	जयसेन
	229-247	नागसेन
	247-264	सिद्धार्थ
	264-282	घृतसेण
	282-295	विजय
	295-315	बृद्धिर्णिंग
	315-329	देव
	329-345	धर्मसेन
11 अंग	345-363	क्षत्र
11 अंग	363-383	जयपाल
11 अंग	383-422	पांडु
11 अंग	422-436	धृतसेन
11 अंग	436-468	कंस
11 अंग	468-474	सुभद्र
10 अंग	474-492	यशोभद्र
9 अंग	492-515	भद्रबाहु
8 अंग	515-565	लोहाचार्य
1 अंग	565-585	विनयदत्त
1 अंग	565-585	श्रीदत्त
1 अंग	565-585	शिवदत्त
1 अंग	565-585	अर्हदत्त
अंगाशधारी	565-593	अर्हद्वृति

मूल संघ पट्टावली

अंगोशधारी	593-614	माधनन्दि	
अंगोशधारी	610-633	धर्मसेन	
अंगोशधारी	633-663	पृथ्वंत	षट्-खण्डगम
अंगोशधारी	614-683	भूतबलि	महा-बंधो
अंगोशधारी	645-654	जिनवंद	
अंगोशधारी	654-706	कुंदकुद	समयसार
अंगोशधारी	600-660	आर्यांशु	
अंगोशधारी	620-687	नागहस्ति	
अंगोशधारी	650-700	यतिवृष्टम्	
अंगोशधारी	706-770	उमस्वामी	तत्त्वार्थ-सूत्र
अंगोशधारी	700-740	रविषेण स्वामी	
ईश्वी संवत्	120-185	समंतभद्र	रत्-करण्ड-श्रावकाचार
	220-231	लोहाचार्य	
	231-289	यशकीर्ति	
	289-386	यशोनन्दि	
	336-386	देवनन्दि	
	386-436	जयनन्दि	
	436-442	गुणनन्दि	
	422-464	ब्रजनन्दि	
	464-505	कुमारनन्दि	
	505-531	लोकचंद्र	
	531-556	प्रभाचंद्र	
	556-565	नेमिचंद्र	
	565-586	भानुनन्दि	
	586-603	सिहनन्दि	
	603-609	वसुनन्दि	
	609-639	वीरनन्दि	
	639-663	रत्ननन्दि	
	663-679	माणिक्यनन्दि	
	679-705	मेघचंद्र	
	705-720	शान्तिकीर्ति	
	720-758	मेरुकीर्ति	
	770-860	वादिभसिंह	
	770-860	सौमसेन	
	770-860	गुणभद्र	
	770-860	जिनसेन	
	770-860	समंतभद्र	
	818-878	जिनसेन	
	820-878	दशरथ	
	820-878	पद्मसेन	
	820-878	देवसेन	
	820-898	धर्मसेन	
	870-898	गुणभद्र	उत्तरपुराण, आदिपुराण
	905-955	अमृतचंद्र	आमङ्गाति टीका
	923-960	माधवचंद्र	तिलोकसार टीका
	923-960	नेमिचंद्र सि. चक्र	गोमटसार, लक्ष्मिसार, त्रिलोकसार
	923-963	अमितपति	योगसार प्राप्तुत
	930-950	अभ्यनन्दि	जैनेन्द्र महावृति
	930-1023	पद्मनन्दि	आविद्धकरण
	931	हरिषेण	वृहत्कथा
	933-955	देवसेन	दर्शनसार रचना
	935-999	मेघचन्द्र	ज्वालामाली
	937	कुलभद्र	सारसमूच्य
	939	इन्द्रनन्दि	श्रुतात्मार
	939	कनकनन्दि	सत्वत्रिभंगी
	970	पोत्र	शान्तिपुराण
	960-993	रत्न	अजितनाथ पुराण
	950-990	रविभद्र	आराधनासार
	950-990	वीरनन्दि	आचारसार
	950-1020	प्रभाचन्द्र	प्रमेय कमल मार्तण्ड
	974	महासेन	प्रधुम्ब चरित्र
	978	चामुण्डराय	चारित्रसार
	981	नेमिचन्द्र सि.	द्रव्य संग्रह
	923-1023	अमितपति	श्रावकाचार
	987	हरिषेण	धर्म परिवर्का
	1023-1028	माणिक्यनन्दि	परिक्षमुख
	1010-1065	वादिराज	एकीभाव स्तोत्र
	1018	वीर कवि	जम्बू स्वामी चरित्र
	1047	मल्लिषेण	महापुराण
	1047	ध्वलचार्य	हरिवंशपुराण
	उत्तरार्ध ईश्वी	पद्मनन्दि	पंच वंशतिका
	1066	श्री चन्द्र	पुराण संग्रह
	1068	नेमिचन्द्र	द्रव्य संग्रह
	1068-1118	वसुनन्दि	प्रतिष्ठा पाठ
	1089	अग्नल कवि	चन्द्र प्रभा चारित्र
अन्तिम पाद ई.	वृत्तिविलास	धर्म परीक्षा	

मूल संघ पट्टावली		
	नामचन्द्र	मत्तिनाथ पुराण
1100	जयसेन	कुद्कुन्द त्रिपी टीका
ई.श. 11-12	वसुनन्दि	श्रावकाचार
ई.श. 11-12	वदिभ सिंह	स्पादा शिल्दि
1103	नयसेन	धर्ममृत
मध्यपाद	योगचन्द्र	दोहासार
मध्यपाद	अनन्तवीर्य	प्रमेय रत्नमाला
मध्यपाद	पदाप्रभ मल्लथारी	नियमसार टीका
1123	गुणधरकीर्ति	अध्यात्म टीका
1132	श्रीधर	सुकुमाल चरित्र
1173-1243	पं आशाधर	सागर / अनगार धर्ममृत
1185-1243	प्रभाचन्द्र	क्रियाकलाप
1189	अगाल	चन्द्र प्रभ पुराण
अंतिमपाद	नेघचन्द्र	कर्म प्रकृति
1193-1260	माधनन्दि	शास्त्रसार समृच्छ
1200	बध्यवर्मा	हरिवंश पुराण
1200	शुभचन्द्र	नर पिंगल
ई.श. 12-13	रविचंद्र	आराधना सार
पूर्वपाद	गुणभद्र	धन्य कुमार चरित
1213	मधव चन्द्र	क्षेत्रपाल
मध्यपाद	रामचन्द्र मुमुक्षु	पुण्यसव कथा कोश
उत्तरार्ध	अर्द्ददास	गुरुदेव चम्पू
1393-1468	जिनदास	जम्बू ख्वामी चरित
1387	धनपाल	बहुबलि चरित
मध्यपाद	प. योगदेव	वारस अनुवेक्षा
1448-1515	तारण स्वामी	उपदेश शुद्ध सार
1468-1498	ज्ञान भूषण	तत्त्वज्ञान तरंगिनी
1604	अकरंके	शब्दानुशासन
1605	चन्द्रप्रभ	गोमटेश्वर चरित्र
1602	ज्ञानकीर्ति	यशोधर चरित्र
1623-1643	पं बनारसीदास	समयसार नाटक
1623-1643	पं भगवतीदास	दंडनासार
मध्यपाद	हेमराज पाडेय	प्रवचनसार वचनिका
मध्यपाद	पं हीराचन्द्र	पंचास्तिकाय टीका
1642-1646	पं. जगन्नाथ	सुख निधान
1696	महीचन्द्र	आदिपुराण
1697	बुलकीदास	पाण्डव पुराण
ई.श. 17-18	संतताल	सिद्धचक्र विधान
ई.18 पूर्वार्ध	खुशालचन्द्र	व्रतकथा कोष
1716-1728	किशनसिंह	क्रिया कोष
1718	पं ज्ञानचंद्र	पंचास्तिकाय टीका
1718	पं मनोहरताल	धर्म परीक्षा
1719-1766	पं टोडरमल	सम्यकज्ञान चंद्रिका
1720-1772	पं दौलतराम	क्रिया कोष
1721-1729	देवेंद्रकीर्ति	विषायाहर पूजा
1721-1740	जिनदास	हरिवंश पुराण
1722	दीपचंदशाह	चिदविलास
1724-1744	जिनसागर	जिनकथा
1724-1732	भूधरदास	जिनशतक
1730-1733	नरेन्द्र सेन	प्रमाण प्रमेय
1741	पं रूपचंद पाण्डेय	स. ना. टीका
1761	पं शिवलाल	चर्चा संग्रह
1770-1840	पं पत्रालाल	राजवातिक टीका
1780	पं गुमानीराम	समाधिमरण
1795-1867	सदासुख दास	रलकरण्ड श्रावकाचार टीका
1798-1866	दौलतराम	छहढाला



+ पुराण-पुरुष -
पुराण-पुरुष

विशेष :

दशरथ, कौशल्या, कैकई, सुमित्रा, सुप्रभा, जनक, -- 13 वें स्वर्ग

भामण्डल -- देवकुरु भोग भूमि

राम, भरत, शत्रुघ्न, लव-कुश, कुम्भकरण, विभीषण, मेघनाथ, इंद्रजीत, बालि, हनुमान, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, क्रष्ण के पुत्र -- (**भानु कुमार, शम्भू कुमार, प्रधुम्न कुमार**), कीचक, गजकुमार, सुकौशल, सुदर्शन, श्रीपाल -- मोक्ष

लक्ष्मण -- वर्तमान में नरक, पुष्कर द्वीप के महाविदेह में तीर्थकर

सीता -- 16 वें स्वर्ग में प्रतीन्द्रदेव , रावण के जीव का गणधर बनके उसी भव से मोक्ष

रावण -- तीसरे नरक में, भरत क्षेत्र में कई भव बाद पञ्च कल्यांकधारी तीर्थकर

मन्दोदरी, सुभद्रा -- स्वर्ग

नकुल, सहदेव, सुकमाल, चारुदत्त -- सर्वार्थसिद्धि, एक भवधारी

कृष्ण, जरल्कुमार, द्वीपायनमुनि -- नरक

कंस .. नरक, रौद्र परिणामी होने से बहुत अत्याचार किये अंत में क्रष्ण के हाथों मारा गया

जरासंध -- नरक ।

देवकी और क्रष्ण की 8 रानियाँ (रुक्मणी, सत्यभामा, आदि), द्रोपदी, चेलना, मैनासुन्दरी -- स्वर्गा

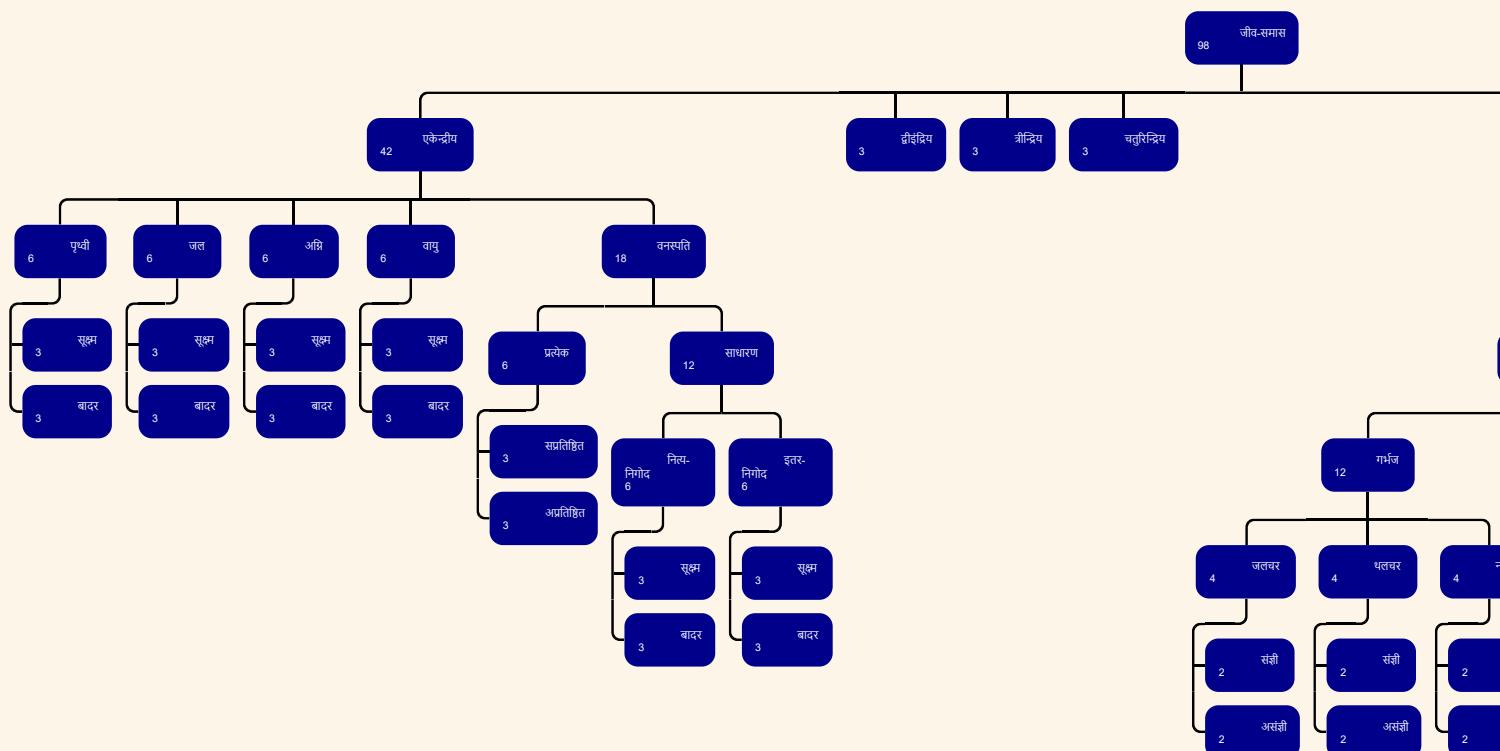
श्रेष्ठिक -- नरक में, क्षायिक सम्प्रदायकर्दर्शन, भरत-क्षेत्र की अगली चौबीसी में श्री महापद्म नामक प्रथम तीर्थकर



+ जीव-समास (98 भेद)

जीव-समास (98 भेद)

विशेष :



अंतिम-भेद 2 = पर्याप्त और निर्वृत्यपर्याप्त
 अंतिम-भेद 3 = लब्ध्यपर्याप्त, पर्याप्त और निर्वृत्यपर्याप्त



+ नरक संबंधी जानकारी -

नरक संबंधी जानकारी

विशेष :

	ब्रेणीबद्ध	४४२०	२६८४	१४७६	७००	२६०	६०	४	९६०४
	प्रकीर्णिक	२९,९५,५६७	२४,१७,३०५	१४,८६,५१५	९,९९,२९३	२,९९,७३५	९९,९३२	०	८३,९०,३४७
	संख्यात यो. वाले	६ लाख	५ लाख	३ लाख	२ लाख	६० हजार	१९ हजार १९९	१	१६,८०,०००
	असंख्यात यो. वाले	२४ लाख	२० लाख	१२ लाख	८ लाख	२४ लाख	७९ हजार १९६	४	६७,२०,०००
	कुल	३० लाख	२५ लाख	१५ लाख	१० लाख	३ लाख	पाँच कम १ लाख	५	८४ लाख
	इन्द्रक की मोटाई	१ कोस	१ १/२ कोस	२ कोस	२ १/२ कोस	३ कोस	३ १/२ कोस	४ कोस	
	इन्द्रक बिलो के अंतराल (यो.)	६४९९-३५४८	२९९९-४७/८०	३२४९-७/१६	३६६५-४५/४८	४४९९-१/१६	६९९८-१/१६	-	
	वातावरण	उष्ण	उष्ण	उष्ण	उष्ण	३/४ उष्ण, ४/४ शीत	शीत	शीत	
	अवधिज्ञान का क्षेत्र	४ कोस	३ १/२ कोस	३ कोस	२ १/२ कोस	२ कोस	१ १/२ कोस	१ कोस	
अवगाहना	प्रथम पटल	३ हाथ	८ धनुष २ हाथ २४/११ अंगुल	१७ धनुष ३४ २/३ अंगुल	३५ धनुष २ हाथ २० ४/७ अंगुल	७५ धनुष	१६६ धनुष २ हाथ १६ अंगुल	५००	
	अंतिम पटल	७ धनुष ३ हाथ ६ अंगुल	१५ धनुष २ हाथ १२ अंगुल	३१ धनुष १ हाथ	६२ धनुष २ हाथ	१२५ धनुष	२५० धनुष		
	लेश्या	कापोत	कापोत	कापोत / नील	नील	नील / कृष्ण	कृष्ण	परम-कृष्ण	
आयु	जघन्य	१० हजार वर्ष	१ सागर	३ सागर	७ सागर	१० सागर	१७ सागर	२२ सागर	
	उत्कृष्ट	१ सागर	३ सागर	७ सागर	१० सागर	१७ सागर	२२ सागर	३३ सागर	
	नारकियों के जन्म में उत्कृष्ट अंतर	२४ मूर्ति	७ दिन	१५ दिन	१ माह	२ माह	४ माह	६ माह	



+ नरक के 49 पटलों में आयु - नरक के 49 पटलों में आयु

विशेष :

(आयु में जहाँ कोई इकाई नहीं दी हो, वहाँ 'सागर' ले लेना, त्रि. सा. २-२०२)

नरक-गति के पटलों में जघन्य / उत्कृष्ट आयु

पटल संख्या	प्रथम पृथ्वी		द्वितीय पृथ्वी		तीतीय पृथ्वी		चतुर्थ पृथ्वी		पंचम पृथ्वी		षष्ठ पृथ्वी		सप्तम पृथ्वी	
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
सामान्य	10,000 वर्ष	१ सागर	१	३	३	७	७	१०	१०	१७	१७	२२	२२	३३
१	10,000 वर्ष	90,000 वर्ष	१	१३/११	३	३१/९	७	५२/७	१०	५७/५	१७	५६/३	२२	३३
२	90,000 वर्ष	९०,००,००० वर्ष	१३/११	१५/११	३१/९	३५/९	५२/७	५५/७	५७/५	६४/५	५६/३	६१/३		
३	९०,००,००० वर्ष	असं. कोटि पूर्वी	१५/११	१७/११	३५/९	३९/९	५५/७	५८/७	६४/५	७१/५	६१/३	२२		
४	असं. कोटि पूर्वी	१/१० सागर	१७/११	१९/११	३९/९	४३/९	५८/७	६१/७	७१/५	७८/५				
५	१/१० सागर	१/५ सागर	१९/११	२१/११	४३/९	४७/९	६१/७	६४/७	७८/५	१७				
६	१/५ सागर	३/१० सागर	२१/११	२३/११	४७/९	५१/९	६४/७	६७/७						
७	३/१० सागर	२/५ सागर	२३/११	२५/११	५१/९	५५/९	६७/७	१०						
८	२/५ सागर	१/२ सागर	२५/११	२७/११	५५/९	५९/९								
९	१/२ सागर	३/५ सागर	२७/११	२९/११	५९/९	७								
१०	३/५ सागर	७/१० सागर	२९/११	३१/११										
११	७/१० सागर	४/५ सागर	३१/११	३३/०										
१२	४/५ सागर	९/१० सागर												
१३	९/१० सागर	१ सा												



+ तिर्यक्ष-गति में जघन्य / उत्कृष्ट आयु

विशेष :

तिर्यक्ष-गति में जघन्य / उत्कृष्ट आयु

मार्गाणा	विशेष	आयु	
		उत्कृष्ट	जघन्य
एकेन्द्रिय	पृथ्वी-कायिक	शुद्ध	१२,००० वर्ष
	पृथ्वी-कायिक	खर	२२,००० वर्ष
	अप-कायिक		७,००० वर्ष
	तेज-कायिक		३ दिन रात
	वायु-कायिक		३,००० वर्ष
	वनस्पति साधारण		१०,००० वर्ष
विकलेन्द्रिय	द्वीपिन्द्रिय		१२ वर्ष
	त्रीपिन्द्रिय		४९ दिन रात
	चतुर्पिन्द्रिय		६ महीने
पंचेन्द्रिय	जलचर	मत्स्यादि	१ कोड पूर्वी
	परिसर्ग	गोह, नेवला, सरी-सपादि	९ पूर्वीग
	उरग	सर्प	४२,००० वर्ष
	पक्षी	कर्म भूमिज भैरुल आदि	७२,००० वर्ष
	चौपाये	कर्म भूमिज	१ पल्य
	असंझी पंचेन्द्रिय	कर्म भूमिज	१ कोड पूर्वी
भोग भूमिज	उत्तम भोगभूमिज	देव कुरु-उत्तर कुरु	३ पल्य
	मध्यम भोगभूमिज	हरि व रम्यक क्षेत्र	२ पल्य
	जघन्य भोगभूमिज	हेमवत-हैरण्यवत	१ पल्य
	कुभोगभूमिज	(अंतद्वार्गीय)	१ पल्य



+ एक अंतर्महुर्त में लब्ध्यपर्याप्तिक के संभव निरंतर क्षुद्र भव -

एक अंतर्महुर्त में लब्ध्यपर्याप्तिक के संभव निरंतर क्षुद्र भव

विशेष :

एक अंतर्महुर्त में लब्ध्यपर्याप्तिक के संभव निरंतर क्षुद्र भव			
क्रम	मार्गणा	एक अंतर्महुर्त के भव	
	नाम	सूक्ष्म / बादर	प्रयेक मे
1	पृथी कायिक	सूक्ष्म	6012
2		बादर	6012
3	अप कायिक	सूक्ष्म	6012
4		बादर	6012
5	तेज कायिक	सूक्ष्म	6012
6		बादर	6012
7	वायु कायिक	सूक्ष्म	6012
8		बादर	6012
9	वनस्पति साधारण	सूक्ष्म	6012
10		बादर	6012
11	वनस्पति अप्रति प्रत्येक	बादर	6012
12	द्वीपन्द्रिय	बादर	80
13	त्रीपन्द्रिय	बादर	60
14	चतुरिपन्द्रिय	बादर	40
15	असङ्गी	बादर	8
16	संगी	बादर	8
17	मनुष्य	बादर	8
कुल योग			66336



+ मनुष्य-गति मार्गणा में आयु -

मनुष्य-गति मार्गणा में आयु

विशेष :

मनुष्य-गति मार्गणा में आयु					
अपेक्षा	विशेष	(ति. प. ग)	जघन्य आयु	(ति. प. ग)	उत्कृष्ट आयु
क्षेत्र	भरत-एरावत क्षेत्र	सुषमा सुषमा काल		2 पत्त्य	3 पत्त्य
		सुषमा काल		1 पत्त्य	2 पत्त्य
		सुषमा दुषमा काल	1 कोटि पूर्व		1 पत्त्य
		दुषमा सुषमा काल	120 वर्ष	1 कोटि पूर्व	
		दुषमा काल	20 वर्ष		120 वर्ष
		दुषमा दुषमा काल	12 वर्ष		20 वर्ष
	विदेह क्षेत्र	2255	अंतर्महुर्त	2255	1 कोटि पूर्व
	हेमवत-हैरण्यवत		1 कोटि पूर्व		1 पत्त्य
	हरि रम्यक	404	1 पत्त्य	396	2 पत्त्य
	देव-उत्तर कुरु		2 पत्त्य	335	3 पत्त्य
	अंतर्द्वीपज म्लेच्छ		1 कोटि पूर्व	2513	1 पत्त्य
काल	अवसर्पिणी	सुषमा सुषमा काल		2 पत्त्य	335
		सुषमा काल		1 पत्त्य	396
		सुषमा दुषमा काल	1 कोटि पूर्व	404	1 पत्त्य
		दुषमा सुषमा काल	120 वर्ष	1277	1 कोटि पूर्व
		दुषमा काल	20 वर्ष	1475	120 वर्ष
		दुषमा दुषमा काल	15 या 16 वर्ष	1536	20 वर्ष
	उत्सर्पणी	सुषमा सुषमा काल	1564	15 या 16 वर्ष	20 वर्ष
		सुषमा काल	1568	20 वर्ष	120 वर्ष
		सुषमा दुषमा काल	1576	120 वर्ष	1595
		दुषमा सुषमा काल	1596	1 कोटि पूर्व	1598
भोग-भूमि	उत्तम भोग भूमि	1600	1 पत्त्य		2 पत्त्य
	मध्यम भोग भूमि	1602	2 पत्त्य	1604	3 पत्त्य
	जघन्य भोग भूमि	290	2 पत्त्य	290	3 पत्त्य
		289	1 पत्त्य	289	2 पत्त्य
		288	1 कोटि पूर्व	288	1 पत्त्य



+ देव-गति में व्यन्तर देव संबंधी आयु -

देव-गति में व्यन्तर देव संबंधी आयु

विशेष :

देव-गति में व्यन्तर देव संबंधी आयु			
प्रमाण - 1 (मुआ १११६-१७); 2 (वा सु ४३८-३९); 3 (तिप ५.६७८), 4 (विसा ४००-२९३, ५ (द्रस्ती ३५४४)			
तिप.गा.	अन्य प्रमाण	नाम	आयु
			उल्कृष्ट जघन्य
83	1.2	व्यन्तर सामान्य	1 पत्य
84	4.5	किन्नर आदि आठों इंद्र	1 पत्य
84	4.5	प्रतीट्रि	1 पत्य
		समानिक	1 पत्य
		महत्तर देव	1/2 पत्य
		शेष देव	यथायोग्य
		नीतोपाद	10,000 वर्ष
		दिवासी	20,000 वर्ष
85	4	अंतर निवासी	30,000 वर्ष
		कूष्मांड	40,000 वर्ष
		उत्पत्र	50,000 वर्ष
		अनुयन्त्र	60,000 वर्ष
		प्रमाणक	70,000 वर्ष
		गंध	80,000 वर्ष
		महागंध	84,000 वर्ष
		भुजंग (जुयल)	1/8 पत्य
		प्रातिक	1/4 पत्य
		आकाशोत्पन्न	1/2 पत्य
		जंडू द्वीप के रक्षक	10,000 वर्ष
		महीराम	1 पत्य
		वृषभ देव	10,000 वर्ष
तिप.४ गा.	तिप.५ गा.	शाली देव	1 पत्य
		अन्य सर्व द्वीप समुद्रों के अधिपति देव	10,000 वर्ष
		देवियाँ	
		श्री देवी	
		ही देवी	
		धृति देवी	
तिप.४ गा.	तिप.५ गा.	बला देवी	1 पत्य
		लवणा देवी	10,000 वर्ष
इसी प्रकार अन्य सब देवियों की जाना			



+ देव गति में भवनवासी संबंधी आयु -

देव गति में भवनवासी संबंधी आयु

विशेष :

देव गति में भवनवासी संबंधी आयु														
क्रम	नाम		आयु सामान्य		मूल भेद		प्रतीट्रि / त्रायस्तिश / सोकपाल / सामानिक	आत्मरक्ष		परिषद			सेनापति	आरोहक वाहन गा अनीक
	देव सामान्य	इंद्र	जघन्य	उल्कृष्ट	इंद्र	इंद्राणी		देव	देवी	अभ्यंतर	माध्यम	बाह्य		
1	असुर कुमार	चमरेन्द्र वैरोचन	सर्वत्र 10,000 वर्ष	इंद्रवत	1 सागर	2 1/2 पत्य	स्व इंद्रवत	1 पत्य	कथन नष्ट हो गया है (तिप.४/१६१,१७४)	2 1/2 पत्य	2 पत्य	1 1/2 पत्य	1 पत्य	1/2 पत्य
					साधिक 1 सागर	3 पत्य		साधिक 1 पत्य		3 पत्य	2 1/2 पत्य	2 पत्य	साधिक 1 पत्य	साधिक 1/2 पत्य
2	नाग कुमार	भूतनन्द धरणानन्द			3 पत्य	1/8 पत्य		1 कोटि पूर्व	साधिक 1/8 पत्य	1/8 पत्य	1/16 पत्य	1/32 पत्य	1 कोटि पूर्व	1 कोटि वर्ष
					साधिक 3 पत्य	साधिक 1/8 पत्य		साधिक 1 कोटि पूर्व	साधिक 1/16 पत्य	साधिक 1/32 पत्य	साधिक 1 कोटि पूर्व	साधिक 1 कोटि वर्ष	साधिक 1 कोटि वर्ष	
3	सुपर्ण कुमार	त्रैगु वैणधारी			2 1/2 पत्य	3 कोटि पूर्व		1 कोटि वर्ष	साधिक 1 कोटि वर्ष	3 कोटि पूर्व	2 कोटि पूर्व	1 कोटि पूर्व	1 कोटि वर्ष	1 लाख वर्ष
					साधिक 2 1/2 पत्य	साधिक 3 कोटि पूर्व		साधिक 1 कोटि वर्ष	साधिक 2 कोटि पूर्व	साधिक 1 कोटि पूर्व	साधिक 1 कोटि वर्ष	साधिक 1 लाख वर्ष	साधिक 1 लाख वर्ष	
4	द्वीप कुमार	पूर्ण विशिष्ट			2 पत्य	3 कोटि वर्ष		1 लाख वर्ष	साधिक 1 लाख वर्ष	3 कोटि वर्ष	2 कोटि वर्ष	1 कोटि वर्ष	1 लाख वर्ष	50,000 वर्ष
					साधिक 2 पत्य	साधिक 3 कोटि वर्ष		साधिक 1 कोटि वर्ष	साधिक 2 कोटि पूर्व	साधिक 1 कोटि पूर्व	साधिक 1 कोटि वर्ष	साधिक 1 लाख वर्ष	साधिक 50,000 वर्ष	
5	उदधि कुमार	जल प्रभ जल कान्त			1 1/2 पत्य	3 कोटि वर्ष		1 लाख वर्ष	साधिक 1 1/2 पत्य	3 कोटि वर्ष	2 कोटि वर्ष	1 कोटि वर्ष	1 लाख वर्ष	50,000 वर्ष
					साधिक 1 1/2 पत्य	साधिक 3 कोटि वर्ष		साधिक 1 लाख वर्ष	साधिक 2 कोटि वर्ष	साधिक 1 कोटि वर्ष	साधिक 1 लाख वर्ष	साधिक 1 लाख वर्ष	साधिक 50,000 वर्ष	
6	स्तनित कुमार	घोष महा घोष			1 1/2 पत्य	3 कोटि वर्ष		1 लाख वर्ष	साधिक 1 लाख वर्ष	3 कोटि वर्ष	2 कोटि वर्ष	1 कोटि वर्ष	1 लाख वर्ष	50,000 वर्ष
					साधिक 1 1/2 पत्य	साधिक 3 कोटि वर्ष		साधिक 1 लाख वर्ष	साधिक 2 कोटि वर्ष	साधिक 1 कोटि वर्ष	साधिक 1 लाख वर्ष	साधिक 1 लाख वर्ष	साधिक 50,000 वर्ष	

7	विद्युत कुमार	हरिषेण हरिकान्त		1 1/2 पल्य	3 कोटि वर्ष		1 लाख वर्ष	साधिक 1 लाख वर्ष	3 कोटि वर्ष	2 कोटि वर्ष	1 कोटि वर्ष	1 लाख वर्ष	50,000 वर्ष
8	दिक्कुमार	अमित गति अमित वाहन		1 1/2 पल्य	3 कोटि वर्ष		1 लाख वर्ष	साधिक 1 लाख वर्ष	3 कोटि वर्ष	2 कोटि वर्ष	1 कोटि वर्ष	1 लाख वर्ष	50,000 वर्ष
9	अग्नि कुमार	अग्नि शिखा अग्नि वाहन		1 1/2 पल्य	3 कोटि वर्ष		1 लाख वर्ष	साधिक 1 लाख वर्ष	3 कोटि वर्ष	2 कोटि वर्ष	1 कोटि वर्ष	1 लाख वर्ष	50,000 वर्ष
10	वायु कुमार	विलम्ब प्रभज्जन		1 1/2 पल्य	3 कोटि वर्ष		1 लाख वर्ष	साधिक 1 लाख वर्ष	3 कोटि वर्ष	2 कोटि वर्ष	1 कोटि वर्ष	1 लाख वर्ष	50,000 वर्ष



+ देव गति में ज्योतिष संबंधी आयु -
देव गति में ज्योतिष संबंधी आयु

विशेष :

प्रमाण सं	नाम	आयु	
		जघन्य (प्रमाण नं 5)	उत्कृष्ट
1-7	चन्द्र	1/8 पल्य	1 पल्य+1 लाख वर्ष
1-7	सूर्य	1/8 पल्य	1 पल्य+1000 वर्ष
1-7	शुक्र	1/8 पल्य	1 पल्य+100 वर्ष
2,3,4,6,7	बुहस्ति	1/8 पल्य	1 पल्य
1	बुहस्ति	1/8 पल्य	1 पल्य+100 वर्ष
5	बुहस्ति	1/8 पल्य	3/4 पल्य
1-7	बुध मंगल	1/8 पल्य	1/2 पल्य
1-7	शनि	1/8 पल्य	1/2 पल्य
1-7	नक्षत्र	1/8 पल्य	1/2 पल्य
1-7	तारे	1/8 पल्य	1/4 पल्य
वि. सा 449	सर्व देवियाँ	स्व-स्व देवों से आधी	

घातापुष्क को अपेक्षा : ८, 7/2, ३/० (१२९); वि. सा. ५४१, सम्पर्क दृष्टि : स्व स्व उत्कृष्ट + 1/2 पल्य, मिथ्यालृषि : स्व स्व उत्कृष्ट + पल्य /अं सं
प्रमाण : १=(पू. ३८, ११२२-११२३), २=(तं सू. ४/४०-४१), ३=(वि. प. ७/६१७-६२५), ४=(रा. वा. ४/४०-४/२४९), ५=(राये पु. ६/८९), ६=(वि. प. १२/९५-९६), ७=(वि. सा. ४४६)



+ देव गति में सौधर्म-ईशान देव सम्बन्धी आयु -
देव गति में सौधर्म-ईशान देव सम्बन्धी आयु

विशेष :

देव गति में सौधर्म-ईशान देव सम्बन्धी आयु				
नाम	आयु		बद्धायुषक की अपेक्षा उत्कृष्ट	घातायुषक की अपेक्षा उत्कृष्ट
	जघन्य	उत्कृष्ट		
सामान्य	स्वर्ग सामान्य	साधिक 1 पल्य	साधिक 2 सागर	
घातायुषक	सम्पर्क दृष्टि	1 पल्य + 1/2 पल्य	2 सागर + 1/2 सागर	
	मिथ्या दृष्टि	1 पल्य + पल्य /अं सं	2 सागर + पल्य /अं सं	
प्रत्येक पटल	ऋगु	3/2 पल्य	1/2 सागर	666,666,666,666,66 2/3 पल्य
	विमल	1/2 सागर	17/30 सागर	1,333,333,333,33 1/3 पल्य
	चन्द्र	17/30 सागर	19/30 सागर	20,000,000,000,000 पल्य
	वल्लु	19/30 सागर	21/30 सागर	266,666,666,666,66 2/3 पल्य
	वीर	21/30 सागर	23/30 सागर	333,333,333,333,333 1/3 पल्य
	अरुण	23/30 सागर	25/30 सागर	400,000,000,000,000 पल्य
	नंदन	25/30 सागर	27/30 सागर	466,666,666,666,666 2/3 पल्य
	नलिन	27/30 सागर	29/30 सागर	533,333,333,333,333 1/3 पल्य
	कांचन	29/30 सागर	31/30 सागर	600,000,000,000,000 पल्य
	स्विर	31/30 सागर	33/30 सागर	666,666,666,666,666 2/3 पल्य
	चन्द्रु	33/30 सागर	35/30 सागर	733,333,333,333,333 1/3 पल्य
	मरुत	35/30 सागर	37/30 सागर	800,000,000,000,000 पल्य
	ऋद्धीश	37/30 सागर	39/30 सागर	866,666,666,666,666 2/3 पल्य
	वैद्युती	39/30 सागर	41/30 सागर	933,333,333,333,333 पल्य
	स्वचक	41/30 सागर	43/30 सागर	1,000,000,000,000,000 पल्य
	स्विर	43/30 सागर	45/30 सागर	1,066,666,666,666,666 2/3 पल्य
	अंक	45/30 सागर	47/30 सागर	1,133,333,333,333,333 1/3 पल्य
	स्फटिक	47/30 सागर	49/30 सागर	1,200,000,000,000,000 पल्य
	तपनीय	49/30 सागर	51/30 सागर	1,266,666,666,666,666 पल्य
	मेघ	51/30 सागर	53/30 सागर	1,333,333,333,333,333 पल्य
	अभ्र	53/30 सागर	55/30 सागर	1,400,000,000,000,000 पल्य

स्व स्व उत्कृष्ट आयुवत

देव गति मे सौधर्म-ईशान देव सम्बन्धी आयु			
नाम	आयु	बद्धायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट	घातायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट
जघन्य	उत्कृष्ट		
हरित	55/30 सागर	57/30 सागर	1,466,666,666,666,666 2/3 पल्य
पद्म	57/30 सागर	59/30 सागर	1,533,333,333,333,333 1/3 पल्य
लोहितांक	59/30 सागर	61/30 सागर	1,600,000,000,000,000 पल्य
वरिष्ठ	61/30 सागर	63/30 सागर	1,666,666,666,666,666 2/3 पल्य
नन्दावर्ती	63/30 सागर	65/30 सागर	1,73,333,333,333,333 1/3 पल्य
प्रभकर	65/30 सागर	67/30 सागर	1,800,000,000,000,000 पल्य
पिश्टाक (पुष्कर)	67/30 सागर	69/30 सागर	1,866,666,666,666,666 2/3 पल्य
गज	69/30 सागर	71/30 सागर	1,933,333,333,333,333 1/22 पल्य
मित्र	71/30 सागर	73/30 सागर	20,000,000,000,000,000 पल्य
प्रभा	73/30 सागर	5/2 सागर	साधिक 2 सागर



+ सानतकुमार / महेंद्र युगल मे आयु -
सानतकुमार / महेंद्र युगल मे आयु

विशेष :

सानतकुमार / महेंद्र युगल मे आयु			
नाम	आयु सामान्य		बद्धायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट
	जघन्य	उत्कृष्ट	
सामान्य सामान्य	साधिक 2 सागर	साधिक 7 सागर	
घातायुष्क	सम्यद्विष्टि	5/2 सागर	7/2 सागर
	मिथ्याद्विष्टि	2 सागर + पल्य /अ सं	7 सागर + पल्य /अ सं
प्रत्येक पटल	अंजन	5/2 सागर	45/14 सागर
	वनमाला	45/14 सागर	43/14 सागर
	नाग	55/14 सागर	63/14 सागर
	गरुण	65/14 सागर	75/14 सागर
	लाम्भत	75/14 सागर	85/14 सागर
	बलभद्रि	85/14 सागर	95/14 सागर
	चक्र	95/14 सागर	15/2 सागर
			साधिक 7 सागर



+ ब्रह्म-कापिष्ठ युगल संबंधी आयु -
ब्रह्म-कापिष्ठ युगल संबंधी आयु

विशेष :

ब्रह्म ब्रह्मोत्तर युगल संबंधी आयु			
नाम	आयु सामान्य		बद्धायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट
	जघन्य	उत्कृष्ट	
सामान्य सामान्य	साधिक 7 सागर	साधिक 10 सागर	
घातायुष्क	सम्यक हृष्टि	7+1/2 सागर	10+1/2 सागर
	मिथ्या हृष्टि	7 सागर + पल्य /अ सं	10सागर +पल्य /अ सं
प्रत्येक पटल	अरित	15/2 सागर	33/4 सागर
	देव समिति	33/4 सागर	9 सागर
	ब्रह्म	9 सागर	39/4 सागर
	ब्रह्मोत्तर	39/4 सागर	21/2सागर
	लोकतिक देव	8 सागर	8 सागर

उत्कृष्ट आयु सामन्य वत

लान्तव-कापिष्ठ युगल संबंधी			
नाम	आयु सामान्य		बद्धायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट
	जघन्य	उत्कृष्ट	
सामान्य सामान्य	साधिक 10 सागर	साधिक 14सागर	
घातायुष्क	सम्यक हृष्टि	10+1/2 सागर	14+1/2 सागर
	मिथ्या हृष्टि	10 सागर + पल्य /अ सं	14सागर +पल्य /अ सं
प्रत्येक पटल	ब्रह्मा नितय	21/2 सागर	25/2 सागर
	लान्तव	25/2 सागर	29/2 सागर

उत्कृष्ट आयु सामन्य वत



+ शुक्र से अच्युत स्वर्ग सम्बन्धी आयु -
शुक्र से अच्युत स्वर्ग सम्बन्धी आयु

विशेष :

शुक्र से प्राणत युगल सम्बन्धी आयु					
	नाम	आयु सामान्य		बद्धायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट	घातायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट
		जघन्य	उत्कृष्ट		
सामान्य	स्वर्ग सामान्य	साधिक 14 सागर	साधिक 1 सागर		
घातायुष्क	सम्प्रदृष्टि	15/2 सागर	33/2 सागर		
	मिथ्या दृष्टि	14 सागर + पल्य /अ सं	16 सागर + पल्य /अ सं		
प्रत्येक पटल	महा शुक्र	15/2 सागर	33/2 सागर	साधिक 16 सागर	
शतार सहस्रार युगल सम्बन्धी					
	नाम	आयु सामान्य		बद्धायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट	घातायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट
		जघन्य	उत्कृष्ट		
सामान्य	स्वर्ग सामान्य	साधिक 16 सागर	साधिक 18 सागर		
घातायुष्क	सम्प्रदृष्टि	33/2 सागर	37/2 सागर		
	मिथ्या दृष्टि	16 सागर + पल्य /अ सं	18 सागर + पल्य /अ सं		
प्रत्येक पटल	सहस्रार	33/2 सागर	37/2 सागर	साधिक 18 सागर	
आनन्द प्राणत युगल सम्बन्धी					
	नाम	आयु सामान्य		बद्धायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट	घातायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट
		जघन्य	उत्कृष्ट		
सामान्य	स्वर्ग सामान्य	18 सागर	20 सागर		
घातायुष्क		उत्पत्ति का अभाव (वि. सा 533)			
प्रत्येक पटल	आनन्द	37/2 सागर	19 सागर	112/6 सागर	
	प्राणत	19 सागर	39/2 सागर	59/3 सागर	
	पुण्यक	39/2 सागर	20 सागर	20 सागर	



+ आरण से सर्वार्थ-सिद्धि तक आयु -

विशेषः

आरण से सर्वार्थ-सिद्धि तक आयु					
	नाम	आयु सामान्य		बद्धायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट	घातायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट
		जघन्य	उत्कृष्ट		
सामान्य	स्वर्ग सामान्य	20 सागर		22 सागर	
घातायुष्क	उत्पत्ति का अभाव (वि. सा. 533)				
प्रत्येक पटल	सातांकर	20 सागर	62/3 सागर	124/6 सागर	उत्पत्ति का अभाव
	आरण	62/3 सागर	64/3 सागर	128/6 सागर	
	अंचुत	64/3 सागर	22 सागर	22 सागर	
नव ग्रैवेयिक संबंधी					
	नाम	आयु सामान्य		बद्धायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट	घातायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट
		जघन्य	उत्कृष्ट		
सामान्य	स्वर्ग सामान्य	22 सागर	31 सागर		
घातायुष्क	उत्पत्ति का अभाव (वि. सा. 533)				
प्रत्येक पटल	अधी				
	सुदर्शन	21 सागर	23 सागर		
	अमोघ	23 सागर	24 सागर		
	सुप्रबद्ध	24 सागर	25 सागर		
	मध्यम				
	यशोधर	25 सागर	26 सागर		
	सुभद्र	26 सागर	27 सागर		
	सुविशाल	27 सागर	28 सागर		
	उत्कृष्ट				
	सुमनस	28 सागर	29 सागर		
	सौमनस	29 सागर	30 सागर		
	प्रीतिकर	30 सागर	31 सागर		
उत्पत्ति का अभाव					

नव अनुदिश संबंधी				
	नाम	आयु सामान्य	बद्धायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट	घातायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट
		जग्य	उत्कृष्ट	
सामान्य	खर्वा सामान्य	31 सागर	32 सागर	
घातायुष्क	उत्पत्ति का अभाव (वि. सा 533)			उत्पत्ति का अभाव
प्रत्येक घटल	आदित्य			
	9 के 9 सर्व			
	विमान	31 सागर	32 सागर	

पञ्च अनुत्तर संबंधी				
	नाम	आयु सामान्य	बद्धायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट	घातायुष्क की अपेक्षा उत्कृष्ट
		जग्न्य	उत्कृष्ट	
सामान्य	खर्वी सामान्य	32 सागर	33 सागर	उत्कृष्टि का अभाव
घातायुष्क		उत्कृष्टि का अभाव (वि. सा 533)		
प्रत्येक विमान	विजय	32 सागर	33 सागर	
	वैजयंति	32 सागर	33 सागर	
	जयंति	32 सागर	33 सागर	

	अपराजित	32 सागर	33 सागर	
	सर्वार्थ सिद्धि	33 सागर	33 सागर	



+ वैमानिक परिवार में आयु -
वैमानिक परिवार में आयु

विशेष :

नाम स्वर्ग	वैमानिक परिवार में आयु									
	इन्द्रादिक		लोकपालादिक				आमरक्ष		परिषद	
इंद्र	इन्द्रिक	यम-सोम	कुबेर	वरुण	लो. चतु.	अमरक्ष	अभ्यंतर	मध्यम	बाहु	
सौधर्म		5/2 पत्त्य	3 पत्त्य	ऊन 3 पत्त्य		5/2 पत्त्य	3 पत्त्य	4 पत्त्य	5 पत्त्य	1 पत्त्य
ईशान		3 पत्त्य	ऊन 3 पत्त्य	साधिक 3 पत्त्य		5/2 पत्त्य	3 पत्त्य	4 पत्त्य	5 पत्त्य	1 पत्त्य
सनकुमार		7/2 पत्त्य	4 पत्त्य	ऊन 4 पत्त्य		7/2 पत्त्य	4 पत्त्य	5 पत्त्य	6 पत्त्य	2 पत्त्य
माहेन्द्र		4 पत्त्य	ऊन 4 पत्त्य	साधिक 4 पत्त्य		7/2 पत्त्य	4 पत्त्य	5 पत्त्य	6 पत्त्य	2 पत्त्य
ब्रह्म		9/2 पत्त्य	5 पत्त्य	ऊन 5 पत्त्य		9/2 पत्त्य	5 पत्त्य	6 पत्त्य	7 पत्त्य	3 पत्त्य
ब्रह्मोत्तर		5 पत्त्य	ऊन 5 पत्त्य	साधिक 5 पत्त्य		9/2 पत्त्य	5 पत्त्य	6 पत्त्य	7 पत्त्य	3 पत्त्य
लान्तव		11/2 पत्त्य	6 पत्त्य	ऊन 6 पत्त्य		11/2 पत्त्य	6 पत्त्य	7 पत्त्य	8 पत्त्य	4 पत्त्य
कापिष्ठ	स्व-स्व स्वर्ग की उक्तुष्ट आयु	6 पत्त्य	ऊन 6 पत्त्य	साधिक 6 पत्त्य	स्व-स्व स्वामिवत	11/2 पत्त्य	6 पत्त्य	7 पत्त्य	8 पत्त्य	4 पत्त्य
शुक्र		13/2 पत्त्य	7 पत्त्य	ऊन 7 पत्त्य		13/2 पत्त्य	7 पत्त्य	8 पत्त्य	9 पत्त्य	5 पत्त्य
महाशुक्र		7 पत्त्य	ऊन 7 पत्त्य	साधिक 7 पत्त्य		13/2 पत्त्य	7 पत्त्य	8 पत्त्य	9 पत्त्य	5 पत्त्य
शतार		15/2 पत्त्य	8 पत्त्य	ऊन 8 पत्त्य		15/2 पत्त्य	8 पत्त्य	9 पत्त्य	10 पत्त्य	6 पत्त्य
सहस्रार		8 पत्त्य	ऊन 8 पत्त्य	साधिक 8 पत्त्य		15/2 पत्त्य	8 पत्त्य	9 पत्त्य	10 पत्त्य	6 पत्त्य
आनन्द		17/2 पत्त्य	9 पत्त्य	ऊन 9 पत्त्य		17/2 पत्त्य	9 पत्त्य	10 पत्त्य	11 पत्त्य	7 पत्त्य
प्राणत		9 पत्त्य	ऊन 9 पत्त्य	साधिक 9 पत्त्य		17/2 पत्त्य	9 पत्त्य	10 पत्त्य	11 पत्त्य	7 पत्त्य
आरण		19/2 पत्त्य	10 पत्त्य	ऊन 10 पत्त्य		19/2 पत्त्य	10 पत्त्य	11 पत्त्य	12 पत्त्य	8 पत्त्य
अच्युत		10 पत्त्य	ऊन 10 पत्त्य	साधिक 10 पत्त्य		19/2 पत्त्य	10 पत्त्य	11 पत्त्य	12 पत्त्य	8 पत्त्य



+ वैमानिक इंद्राणि / देवियों संबंधी आयु -
वैमानिक इंद्रों अथवा देवों की देवियों संबंधी आयु

विशेष :

नं	स्वर्ग	वैमानिक इंद्रों अथवा देवों की देवियों संबंधी आयु			इन्द्रिक की देवियाँ स्व-स्व इन्द्रों की देवियोंवत्	लोकपाल परिवार की देवियाँ सो-म.यम			आमरक्षकों की देवियाँ	परिषद की देवियाँ	अनीकों की देवियाँ	प्रकी. त्रिक की देवियाँ
		इंद्रि नं 1	इंद्रि नं 2	इंद्रि नं 3		सो-म.यम	कुबेर	वरुण	लो. विक			
		5 पत्त्य	5 पत्त्य	5 पत्त्य		5/4 पत्त्य	3/2 पत्त्य	ऊन 3/2 पत्त्य				
1	सौधर्म	5 पत्त्य	5 पत्त्य	5 पत्त्य		3/2 पत्त्य	3/2 पत्त्य	साधिक 3/2 पत्त्य				
2	ईशान	7 पत्त्य	7 पत्त्य	7 पत्त्य		9/4 पत्त्य	5/2 पत्त्य	ऊन 5/2 पत्त्य				
3	सनकुमार	9 पत्त्य	9 पत्त्य	17 पत्त्य		5/2 पत्त्य	5/2 पत्त्य	साधिक 5/2 पत्त्य				
4	माहेन्द्र	11 पत्त्य	11 पत्त्य	17 पत्त्य		13/4 पत्त्य	7/2 पत्त्य	ऊन 7/2 पत्त्य				
5	ब्रह्म	13पत्त्य	13पत्त्य	25 पत्त्य		7/2 पत्त्य	7/2 पत्त्य	साधिक 7/2 पत्त्य				
6	ब्रह्मोत्तर	15 पत्त्य	15 पत्त्य	25 पत्त्य		17/4 पत्त्य	9/2 पत्त्य	ऊन 9/2 पत्त्य				
7	लान्तव	17पत्त्य	17पत्त्य	35 पत्त्य		1/2 पत्त्य	9/2 पत्त्य	साधिक 9/2 पत्त्य				
8	कापिष्ठ	19 पत्त्य	19 पत्त्य	35 पत्त्य		21/4 पत्त्य	11/2 पत्त्य	ऊन 11/2 पत्त्य				
9	शुक्र	21 पत्त्य	21 पत्त्य	40 पत्त्य		11/2 पत्त्य	11/2 पत्त्य	साधिक 11/2 पत्त्य				
10	महाशुक्र	23 पत्त्य	23 पत्त्य	40 पत्त्य		25/4 पत्त्य	13/2 पत्त्य	ऊन 13/2 पत्त्य				
11	शतार	25 पत्त्य	25 पत्त्य	45 पत्त्य		13/2 पत्त्य	13/2 पत्त्य	साधिक 13/2 पत्त्य				
12	सहस्रार	27 पत्त्य	27 पत्त्य	45 पत्त्य		29/4 पत्त्य	15/2 पत्त्य	ऊन 15/2 पत्त्य				
13	आनन्द	34 पत्त्य	29 पत्त्य	50 पत्त्य		15/2 पत्त्य	15/2 पत्त्य	साधिक 15/2 पत्त्य				
14	प्राणत	41 पत्त्य	31 पत्त्य	50 पत्त्य		33/4 पत्त्य	17/2 पत्त्य	ऊन 17/2 पत्त्य				
15	आरण	48 पत्त्य	33 पत्त्य	55 पत्त्य		17/2 पत्त्य	17/2 पत्त्य	साधिक 17/2 पत्त्य				
16	अच्युत	55 पत्त्य	35 पत्त्य	55 पत्त्य								



+ चौबीस तीर्थकर निर्देश -
चौबीस तीर्थकर निर्देश

विशेष :

ऋग्भनाथ	अजितनाथ	संभवनाथ	अभिनंदन	सुमतिनाथ	पद्मप्रभु	सुपार्श्व	चंद्रप्रभ	पुष्पदंत	शीतलनाथ	श्रेयांसनाथ	वासुपूज्य	विमलनाथ	अनंतनाथ
वर्तमान भव	म.पु.	अयोध्या	अयोध्या	श्रावस्ती	अयोध्या	कौशांबी	काशी	चंद्रपुर	काकदी	भ्रपुर	सिंहादपुर	चंपा	कांपिल्य
जन्म नगरी	ह.पु.	अयोध्या	अयोध्या		अयोध्या	कौशांबी	वाराणसी			भ्रपुर	सिंहादपुर		अयोध्या

क्रमबनाथ			अजितनाथ		संभवनाथ		अभिनंदन		सुमतिनाथ		पद्मप्रभु		सुपार्श्व		चंद्रप्रभ		पुष्पदंत		शीतलनाथ		त्रेयांसनाथ		वासुपूज्य		विमलनाथ		अनंतनाथ				
चिह्न	ति.प.	बैल	गज	अश्व	बंदर	चकवा	कमल	नंदावर्त	अर्धचंद्र	मगर	स्वस्तिक	गैँडा	भेसा	शुकर	सेही																
यक्ष	ति.प.	गोवदन	महायक्ष	त्रिमुख	यक्षेश्वर	तुंबुरव	मातंग	विजय	अजित	ब्रह्म	ब्रह्मेश्वर	कुमार	शनुमुख	पाताल	किंत्र																
यक्षिणी	ति.प.	चक्रश्वरी	रोहिणी	प्रज्ञापि	वज्रशृंखल	वज्रांकुशा	अप्रतिक्षेपश्वरी	पुरुषदत्ता	मनोवेगा	काली	ज्वालामालिनी	महाकाली	गौरी	गाधारी	वैरोटी																
पिता	म.पु.	नाभिराय	जितशत्रु	द्वंद्राज्य	स्वयंवर	मेघरथ	धरण	सुप्रतिष्ठ	महासेन	सुग्रीव	द्वद्रथ	विष्णु	वसुपूज्य	कृतवर्मा	सिंहसेन																
	ति.प.			जितारि	संवर	मेघभ्रम																									
	म.पु.			द्वंद्राज्य	स्वयंवर	मेघरथ																									
	ह.पु.			जितारि	संवर	मेघभ्रम																									
माता	म.पु.	मरुदेवी	विजयसेना	सुषेणा	सिद्धार्था	मंगला	सुसीमा	पृथ्वीषैणा	लक्ष्मणा	जयरामा	सुनंदा	सुनंदा	जयावती	जयश्यामा	सर्वश्यामा	जयश्यामा	सर्वश्यामा	जयश्यामा	सर्वश्यामा	जयश्यामा	जयश्यामा	जयश्यामा	जयश्यामा	जयश्यामा	जयश्यामा						
	ति.प.			सेना		सुमंगला				रामा	नंदा	रेणुश्री	विजया																		
	म.पु.			सुषेणा		सुमंगला				जयरामा	सुनंदा	विष्णुश्री	जयावती																		
	ह.पु.			सेना		सुमंगला				रामा	विष्णुश्री	विष्णुश्री	जयावती																		
वंश	ति.प.	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु	इक्षवाकु						
गर्भ-तिथि	म.पु.	आषाढ क.२	ज्येष्ठ क.१५	फा.शु.४	वैशा.शु.६	श्राव.शु.२	माघ क.६	भाद्र शु.६	चैत्र क.५	फा.कृ.९	चैत्र क.८	ज्येष्ठ क.६	आषा.क.६	ज्येष्ठ क.१०	कार्ति.क.१																
गर्भ-नक्षत्र	म.पु.	उत्तराशाढा	रोहिणी	मूर्गशिरा	पुनर्वसु	मधा	विश्रामा	...	मूल	पूर्वाषाढा	त्रिवण																				
गर्भ-काल	म.पु.		ब्रह्ममुहूर्त	प्रातः						प्रभात	प्रभात	अंतिम रात्रि	प्रातः	अंतिम रात्रि	प्रातः	अंतिम रात्रि	प्रातः	अंतिम रात्रि	प्रातः	अंतिम रात्रि	प्रातः	अंतिम रात्रि	प्रातः	अंतिम रात्रि	प्रातः	अंतिम रात्रि					
जन्म तिथि	म.पु.	चैत्रकृ.९	माघशु.१०	कार्ति.शु.१५	माघशु.१२	वैत्र शु.११	कार्ति कृ.१३	ज्येष्ठशु.१२	पौषकृ.११	मार्ग शु.१	फा.कृ.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४	माघ शु.१४				
	ति.प.			मार्ग शु.१५		श्राव.शु.११	अश्विकृ.१३																								
	ह.पु.			मार्ग शु.१५		श्राव.शु.११	कार्ति कृ.१३																								
जन्म नक्षत्र	ति.प.	उत्तराशाढा	रोहिणी	ज्येष्ठा	पुर्वाषाढा.मूर्गशिरा	पुर्वाषाढा	मधा	विश्रामा	अनुराधा	मूल	पूर्वाषाढा	त्रिवण	विश्रामा	पूर्वाषाढा.मूर्गशिरा	रेवती	रेवती	रेवती	रेवती	रेवती	रेवती	रेवती	रेवती	रेवती	रेवती	रेवती	रेवती	रेवती				
	प.पु.			ज्येष्ठा		पुर्वाषाढा.मूर्गशिरा																									
	ह.पु.			ज्येष्ठा		पुर्वाषाढा.मूर्गशिरा																									
योग	म.पु.		प्रजेश्योग	सम्योग	अदितियोग	पितृ	त्रैष्योग	अश्रिमित्र	शक्र	जैत्र	विश्व	विष्णु	वारुण	अहिर्बृद्ध	पूषा																
ऊंचाई			500 ध.	450 ध.	400 ध.	350 ध.	300 ध.	250 ध.	200 ध.	150 ध.	100 ध.	90 ध.	80 ध.	70 ध.	60 ध.	50 ध.															
वर्ण			स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण	स्वर्ण					
नाम निर्देश	म.पु.	क्रष्ण	अजित	संभव	अभिनंदन	सुमति	पद्मप्रभु	सुपार्श्व	चंद्रप्रभ	शीतलनाथ	त्रेयांसनाथ	वासुपूज्य	विमलनाथ	अनंतनाथ	अनंतजित	उत्कापात	ज्येष्ठकृ.१२														
	ति.प.			मेघ	जातिस्मरण	गंधर्व नगर	जातिस्मरण	पतञ्जल	तडिद	उल्कापात	हिम	बास्त-वि.	विश्रामा	पूर्वाषाढा	त्रिवण	विश्रामा	पूर्वाषाढा	विश्रामा													
	प.पु.			मेघ		मेघ																									
	ह.पु.			मेघ		मेघ																									
दीक्षा तिथि	ति.प.	माघशु.९	चैत्रकृ.९	माघशु.१२	माघशु.१५	पूर्वाह्नि	अपराह्न	विश्रामा	अनुराधा	मूल	पूर्वाषाढा	त्रिवण	विश्रामा	पूर्वाषाढा	विश्रामा	पूर्वाषाढा	विश्रामा	पूर्वाषाढा	विश्रामा	पूर्वाषाढा	विश्रामा	पूर्वाषाढा	विश्रामा	पूर्वाषाढा	विश्रामा	पूर्वाषाढा	विश्रामा				
	ह.पु.			अपराह्न		अपराह्न																									
	म.पु.			सायंकाल		सायंकाल																									
दीक्षा काल	ति.प.																														

			ऋषभनाथ	अजितनाथ	संभवनाथ	अभिनन्दन	सुमतिनाथ	पद्मप्रभु	सुपार्श्व	चंद्रप्रभ	पुष्पदंत	शीतलनाथ	ब्रेयांसनाथ	वासुपूज्य	विमलनाथ	अनंतनाथ
संघ	पूर्वधारी	ति.प.	4750	3750	2150	2500	2400	2300	2030	4000 2000 2000	1500 5000 1500	1400	1300	1200	1100	1000
	शिक्षक	ति.प.	4150	21600	129300	230050	254350	269000	244920	210400 200400	155500	59200	48200	39200	38500	39500
	अवधिज्ञानी	ति.प.	9000	9400	9600	9800	11000	10000	9000	2000 8000 8000	8400	7200	6000	5400	4800	4300
	केवली	ति.प.	20000	20000	15000	16000	13000	12000 11300 12000	11000 10000	7500 7500 7000	7000	6500	6000	5500	5000	
	विक्रियाधारी	ति.प.	20400	19800	20600	19000	18400	16800 16300 16800	15300 15150 15300	600 10400 14000	13000	12000	11000	10000	9000	8000
	नाम	म.पु.	वज्रनाभि	विमलवाहन	विमलवाहन	महाबल	रतिषेण	अपराजित	नंदिषेण	पद्मानाभ	महापद्मा	पद्मगुल्म	नलिनप्रभ	पद्मोत्तर	पद्मसेन	पद्मरथ
पूर्व भव (देवगति से पूर्व)	पक्ष्या थे	म.पु.	वज्रनाभि	विमलवाहन	विपुलवाहन	महाबल	अतिबल	अपराजित	नंदिषेण	पद्मा	महापद्मा	पद्मोत्तर	पंकजगुल्म	नलिनगुल्म	पद्मासन	पद्म
	पिता का नाम	प.पु.	चक्रवर्ती	मंडलेश्वर	मंडलेश्वर	मंडलेश्वर	मंडलेश्वर	मंडलेश्वर	मंडलेश्वर	मंडलेश्वर	मंडलेश्वर	मंडलेश्वर	मंडलेश्वर	मंडलेश्वर	मंडलेश्वर	
	पिता का नाम	ह.पु.	वज्रसेन	अरिदम	स्वयंप्रभ	विमलवाहन	सीमधर	पिहितासव	अरिदम	युगंधर	सर्वजनानंद	अभ्यानंद	वज्रदंत	वज्रनाभि	सर्वधुपि	
	देश व नगर	म.पु.	जंबू-द्वीप, विदेह-क्षेत्र, सुसीमा	जंबू-द्वीप, विदेह-क्षेत्र, क्षेत्र, सुम्पुरी	जंबू-द्वीप, विदेह-क्षेत्र, खण्ड, विदेह-क्षेत्र, पुंडरीकीणी	धातकी-खण्ड, विदेह-क्षेत्र, पुंडरीकीणी	धातकी-खण्ड, विदेह-क्षेत्र, खण्ड, विदेह-क्षेत्र, सुसीमा	धातकी-खण्ड, विदेह-क्षेत्र, सुम्पुरी	धातकी-खण्ड, विदेह-क्षेत्र, खण्ड, विदेह-क्षेत्र, सुसीमा	धातकी-खण्ड, विदेह-क्षेत्र, पुंडरीकीणी	पुष्करवर-द्वीप, विदेह-क्षेत्र, सुसीमा	पुष्करवर-द्वीप, विदेह-क्षेत्र, सुम्पुरी	पुष्करवर-द्वीप, विदेह-क्षेत्र, खण्ड, विदेह-क्षेत्र, सुसीमा	धातकी-खण्ड, विदेह-क्षेत्र, महानगर	धातकी-खण्ड, विदेह-क्षेत्र, अरिष्टा	
	स्थान	म.पु.	सर्वार्थसिद्धि	विजय	विजय	अ.ग्रैवेयक	वैजयंत	अ.ग्रैवेयक	क.ग्रैवेयक	प्राणत	आरण	पुष्पोत्तर	महाशुक्र	सहस्रार		
	स्थान	ह.पु.	वैजयंत	वैजयंत	विजय	विजय	वैजयंत	वैजयंत	वैजयंत	आरण	अच्युत	कापिष्ठ	कापिष्ठ	शतार	पुष्पोत्तर	



+ द्वादश चक्रवर्ती निर्देश -

द्वादश चक्रवर्ती निर्देश

विशेष :

द्वादश चक्रवर्ती निर्देश													
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12		
नाम	भरत	सगर	मधवा	सनकुमार	शाति	कुंभु	अर	सुभौम	पद्म	हरिषेण	जयसेन	ब्रह्मदत्त	
पूर्वभव	सर्वधी सिद्धि अच्युत	विजय वि.	ग्रैवेयक	महोद्रें अच्युत	सर्वधी सिद्धि	सर्वधी सिद्धि	जयंत अपराजित स.सि.	जयंत महाशुक्र	ब्रह्मसर्ग अच्युत	माहोद्रें सनकुमार	ब्रह्मस्वर्ग महाशुक्र	कमलगुल्म	
पूर्व भव नं. 2	नाम राजा	पीठ	विजय जयसेन	शशिप्रभ नरपति	धर्मजी	मेघरथ	सिंहरथ	धनपति	कनकाभ्र भूपाल	चिंत प्रजापाल	महोद्रदत्त	अमितांग वसुधर	संभूत
	नगर	पुंडरीकीणी	पृथिवीपुर	पुंडरीकीणी	महापुरी	जंबू वि.पुंडरीकीणी	जंबू वि.सुम्पुरी	जंबू वि.क्षेत्रपुरी	-	वीतशोका श्रीपुर	विजय	राजपुर श्रीपुर	काशी
	दीक्षागुरु	कुशसेन	यशोधर	विमल	सुप्रभ	-	-	-	विचित्रगुप्त संभूत	सुप्रभ शिवगुप्त	नंदन	सुधीर्मित्र वररुचि	स्वतंत्रलिंग
र्त्तमान नगर	सामान्य	अयोध्या	अयोध्या	श्रावस्ती	हस्तिनापुर	हस्तनागपुर	हस्तनागपुर	द्वाशवती	हस्तिनापुर	कांपिल्य	कांपिल्य	कांपित्य	
र्त्तमान पिता	सामान्य	ऋषभ	विजय	सुमित्र	विजय	विश्वसेन	सुरसेन	सुदर्शन	कीर्तिवर्य	पद्मरथ	पद्मानाभ	विजय	ब्रह्मरथ
र्त्तमान माता	विशेष	-	समुद्रविजय	-	अनंतवीर्य	-	-	-	सहस्रबाहु	पद्मानाभ	हरिकेतु	-	ब्रह्मा
शरीरोत्तेष्य	सामान्य	यशस्वती	सुमंगला	भद्रवती	सहदेवी	ऐरा	श्रीकांता	मित्रसेना	तारा	मयूरी	वप्रा	यशोवती	चूला
तिलोयपण्णति	500	450	42 1/2	42	40	35	30	28	22	20	15	7	
त्रिलोकसार	-	-	-	41 1/2	-	-	-	-	-	-	-	-	
हरिवंशपुराण	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	14	-	
महापुराण	-	-	-	42 1/2	-	-	-	-	-	24	-	60	
आयु	तिलोयपण्णति	84 लाख पूर्व	72 लाख पूर्व	5 लाख पूर्व	3 लाख पूर्व	1,00,000 वर्ष	95,000 वर्ष	84,000 वर्ष	60,000 वर्ष	30,000 वर्ष	10,000 वर्ष	3,000 वर्ष	700 वर्ष
हरिवंशपुराण	-	-	-	-	-	-	-	-	68,000 वर्ष	-	26,000 वर्ष	-	-
महापुराण	-	70 लाख पूर्व	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
कुमारकाल	77,000 वर्ष	50,000 वर्ष	25,000 वर्ष	50,000 वर्ष	-	-	-	5,000 वर्ष	500 वर्ष	325 वर्ष	300 वर्ष	28 वर्ष	
मंडलीक	1,000 वर्ष	50,000 वर्ष	25,000 वर्ष	50,000 वर्ष	-	-	-	5,000 वर्ष	500 वर्ष	325 वर्ष	300 वर्ष	56 वर्ष	
दिविजय	60,000 वर्ष	30,000 वर्ष	10,000 वर्ष	10,000 वर्ष	-	-	-	500 वर्ष	300 वर्ष	150 वर्ष	100 वर्ष	16 वर्ष	
राज्य काल	सामान्य	6 लाख पूर्व 61000 वर्ष	70लाख पूर्व 30000 वर्ष	39000 वर्ष	90000 वर्ष	-	-	-	49500 वर्ष	18700 वर्ष	8850 वर्ष	1900 वर्ष	600 वर्ष
विशेष	6 लाख पूर्व 1 पूर्व	697000पूर्व + 99999 पूर्वग+83 लाख वर्ष	-	-	-	-	-	62500 वर्ष	-	25175 वर्ष	-	-	
संयम काल	1 लाख पूर्व	1 लाख पूर्व	50000 वर्ष	1 लाख वर्ष	-	-	-	-	10000 वर्ष	350 वर्ष	400 वर्ष	-	
निर्मान	तिलोयपण्णति	मोक्ष	-	सनकुमार स्वर्ग	मोक्ष	मोक्ष	मोक्ष	7वें नरक	मोक्ष	मोक्ष	मोक्ष	7वें नरक	



+ नव बलदेव निर्देश -
नव बलदेव निर्देश

विशेष :

नव बलदेव निर्देश										
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	
वर्तमान-भव	नाम	विजय	अचल	धर्म / भद्र	सुप्रभ	सुदर्शन	नन्दीषण / नन्दिमित्र	नन्दिमित्र / नन्दिषण	राम / पद्म	पद्म / बल
	नगर	पोदनपुर	द्वारावती		खगपुर	चक्रपुर		बनारस / अयोध्या		मधुरा
	पिता	प्रजापति	ब्रह्म / ब्रह्मभूते	भद्र / रोद्रनाद	सोमप्रभ / सोम	सिंहसेन / प्रख्यात	वरसेन / शिवाकर	अग्निशेख / सम्मूहग्रीष्मनाद	दशरथ	वसुदेव
	माता	भद्रामोजा / जयती	सुभद्रा	सुवेषा / सुभद्रा	सुदर्शना / जयती	सुप्रभा / विजया	विजया / वैजयती	वैजयती / अपराजिता	अपराजिता / काशिल्या / सुबाला	सेहिणी
	गुरु	सुवर्णकुम्भ	सत्कार्ति	सुधर्म	मगंक	श्रीतिकीर्ति	सुमित्र / शिवघोष	भवनश्रुत	सुव्रत	सुसद्धर्म
	शरीर				स्वर्णवत् / सफेद	समचतुरस संस्थान, वक्रकृष्णभ नाराच संहनन				
	उत्सेध	८० धनुष	७० धनुष	६० धनुष	५० धनुष	४५ धनुष	२९ धनुष	२२ धनुष	१६ धनुष	१० धनुष
प्रथम पूर्व भव	आपु	८७ लाख वर्ष	७७ लाख	६७ लाख	३७ लाख	१७ लाख	६७००० वर्ष	३७००० वर्ष	१७००० वर्ष	१२००० वर्ष
	निर्गमन					मोक्ष				ब्रह्म-स्वर्ग
द्वितीय पूर्व भव	स्वर्ग	अनुत्तर विमान / महाशुक्र			सहस्रार		ब्रह्म / सौर्यम्	ब्रह्म / सनकुमार	महाशुक्र	
	नाम	बल / विशाखाभूति	मारुतवेग	नन्दिमित्र	महाबल	पूरुषभ	सुदर्शन	वसुन्धर	श्रीचन्द्र / विजय	सखिसङ्ग
	नगर	पुण्डरीकी	पृथ्वीपूरी	आनन्दपुर	नन्दपुरी	वीतशोका	विजयपुर	सुसीमा	क्षेमा / मलय	हस्तिनापुर
दीक्षा गुरु	दीक्षा गुरु	अमृतसर	महासुव्रत	सुव्रत	ऋषभ	प्रजापात	दमवर	सुधर्म	अर्णव	विदुम



+ नव नारायण निर्देश -
नव नारायण निर्देश

विशेष :

नव नारायण निर्देश										
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	
वर्तमान-भव	नाम	त्रिपृष्ठ	द्विपृष्ठ	स्वर्णभू	पुरुषोत्तम	पुरुषसिंह	पुरुषपंडीरक	दत्त / पुरुषदत्त	नारायण / लक्ष्मण	कृष्ण
	नगर	पोदनपुर	द्वापुरी / द्वारावती	हस्तिनापुर / द्वारावती	चक्रपुर / खगपुर	कुशग्रप्तुर / चक्रपुर	मिथिला / बनारस	अयोध्या / बनारस	मधुरा	
	पिता	प्रजापति	ब्रह्म / ब्रह्मभूते	भद्र / रोद्रनाद	सोमप्रभ / सोम	सिंहसेन / प्रख्यात	वरसेन / शिवाकर	अग्निशेख / सम्मूहग्रीष्मनाद	दशरथ	वसुदेव
	माता	मृगावती	माधवी (ऊर्ध्व)	पृथिवी	सीता	अम्बिका	लक्ष्मी	कौशिनी	कैकेयी	देवकी
	पटरा-नी	सुप्रभा	रूपिणी	प्रभवा	मनोहरा	सुनेत्रा	विमलसुन्दरी	आनन्दवती	प्रभावती	रुक्मिणी
	शरीर				स्वर्णवत् / नील व कृष्ण, समचतुरस संस्थान, वक्रकृष्णभ नाराच संहनन					
	उत्सेध	८० धनुष	७० धनुष	६० धनुष	५० धनुष	४५ धनुष	२९ धनुष	२२ धनुष	१६ धनुष	१० धनुष
प्रथम पूर्व भव	आपु	८४ लाख वर्ष	७२ लाख वर्ष	६० लाख वर्ष	३० लाख वर्ष	१० लाख वर्ष	६५००० / ५६००० वर्ष	३२००० वर्ष	१२००० वर्ष	१००० वर्ष
	कुमार काल	२५००० वर्ष	२५००० वर्ष	१२५०० वर्ष	७००० वर्ष	३०० वर्ष	२५० वर्ष	२०० वर्ष	१०० वर्ष	१६ वर्ष
द्वितीय पूर्व भव	मण्डलीक काल	२५०००	२५०००	१२५००	१३००	१२५०	२५०	५०	३००	५६
	विजय काल	१००० वर्ष	१०० वर्ष	१० वर्ष	८० वर्ष	७० वर्ष	६० वर्ष	५० वर्ष	४० वर्ष	८ वर्ष
	राज्य काल	१३४९०००	७१४९१००	५९७४९१०	२९९७९९२०	१९८२८०	६४४८०	३९७००	११५६०	९२०
निर्गमन	सप्तम नरक	षष्ठि नरक	षष्ठि नरक	षष्ठि नरक	षष्ठि नरक	षष्ठि नरक	पंचम नरक	चतुर्थ नरक	तृतीय नरक	
	स्वर्ग	महाशुक्र	प्राणत	लान्वाप	सहस्रार	ब्रह्म / २ महेन्द्र	माहेन्द्र (२ सौर्यम्)	माहेन्द्र (२ सौर्यम्)	सनकुमार	महाशुक्र
प्रथम पूर्व भव	नाम	विश्वनन्दी	पर्वत	धनमित्र	सागरदत्त	विकट	प्रियमित्र	मानसवैष्टित	पुनर्वसु	गंगदेव
	नगर	हस्तिनापुर	अयोध्या	श्रावस्ती	कौशाम्बी	पोदनपुर	शैलनगर	सिंहपुर	कौशाम्बी	हस्तिनापुर
द्वितीय पूर्व भव	दीक्षा गुरु	समूत	सुभद्र	वसुदर्शन	श्रेयोस	सुभूति	वसुभूति	घोषसेन	परामोऽधि	द्वमसेन

*म.पु.की अपेक्षा सभी सुदम नरक में गये हैं।



+ नव प्रतिनारायण निर्देश -
नव प्रतिनारायण निर्देश

विशेष :

नव प्रतिनारायण निर्देश										
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	
वर्तमान-भव	नाम	अश्वीव	तारक	मेरक / मधु	मधुकेट्टम / मधुसुदन	निशुम / मधुकीड़	बलि / निशुम	प्रहरण / प्रह्लाद / बलीद्र	रावण / दशानन	जरासंघ
	नगर	अलका	विजयपुर / भोगवर्धन	नन्दनपुर / रत्नपुर	पृथ्वीपुर / वाराणसी	हरिपुर / हस्तिनापुर	सूर्यपुर / चक्रपुर	सिंहपुर / मन्दरपुर	लंका	राजग्रह
	शरीर				स्वर्णवत्, समचतुरस संस्थान, वक्रकृष्णभ नाराच संहनन					
	उत्सेध	८० धनुष	७० धनुष	६० धनुष	५० धनुष	४५ धनुष	२९ धनुष	२२ धनुष	१६ धनुष	१० धनुष

	नव प्रतिनारायण निर्देश								
	1	2	3	4	5	6	7	8	9
आयु	८५ लाख वर्ष	७२ लाख	६० लाख	३० लाख	१० लाख	६५००	३२००	१२००	१०००
निर्गमन	सातम नरक	षष्ठम नरक	षष्ठ / सप्तम नरक		षष्ठम नरक		पंचम नरक	चतुर्थ नरक	हतोय नरक
कई भव पहिले	नाम	विशाखनन्दि	विष्ण्यशक्ति	चण्डशासन	राजसिंह		मन्ती	नरदेव	
	नगर	राजगृह	मलय	श्रावस्ती	मलय			सारसम्चय	



+ एकादश रूद्र निर्देश -

एकादश रूद्र निर्देश

विशेष :



चक्रवर्ती के 14 रत्न

विशेष :

		चक्रवर्ती के 14 राज		
		कार्य	उत्पत्ति स्थान	संज्ञा
जीव रत्न	गज	सवारी	वैताढ्य पर्वत के मूल में	विजयगिरि
	अश्व	सवारी	वैताढ्य पर्वत के मूल में	वपनंजय
	सेनापति	देशों को विजय करते हैं	राजधानी	आयोध्य
	पुरोहित	दैवी उपर्द्वयों की शांति के अर्थ अनुष्ठान करना	राजधानी	बुद्धिसागर
	स्त्री	उपभोग का विषय	विद्याधरों की श्रीणी में	सुभद्रा
	वार्षिक	भूमि, महल, सड़क आदि का निर्माण करते हैं	राजधानी	कामवृष्टि
अजीव रत्न	गुहपति	राजभवन की समस्त व्यवस्था का संचालन और हिंसाब रखना	राजधानी	भद्रपुष्प
	छत्र	सेना के ऊपर 12 योजन तक छत्र बनना	आयुध-शाला	सूर्योपम
	असि	शत्रु का संहार	आयुध-शाला	भद्रपुष्प
	दण्ड	वैताढ्य पर्वत की दोनों गुफाओं के द्वारा खोलना	आयुध-शाला	प्रदुर्भवंग
	चक्र	छह खण्ड साधने का रास्ता बताना	आयुध-शाला	सुदर्शन
	काकिणी	गुफाओं में सूर्य के समान प्रकाश करना	लक्ष्मी / श्री गृह	चिंता जननी
दूरित्वपूरण	चिंतामणि	इच्छित पदार्थों को प्रदान करना	लक्ष्मी / श्री गृह	चूडामणि
	चर्म	नदी आदि जलाशयों में नान-रूप हो जाना	लक्ष्मी / श्री गृह	



भगवान महावीर के पूर्व भव -

विशेष :

भगवान महावीर के पूर्व भव				
क्षेत्र	नाम	स्त्री	पिता-माता	विशेष
जंबुद्धीप -> पूर्प-विदेह -> पृष्ठलावती -> पुण्डरीकीणी	पुरुरवा	कालिका		
सोधर्म-स्वर्ग				
जंबुद्धीप -> भरत-क्षेत्र -> कोशल -> अयोध्या	मरीचि		भरत-चक्रवर्ती / धारिणी	त्रिदण्डी वेष, परिव्राजक शास्त्र की रचना, शिष्य कपिल
ब्रह्म-स्वर्ग				
जंबुद्धीप -> भरत-क्षेत्र -> अयोध्या	जटिल		कपिल-ब्राह्मण / काली	वेद-मति
सोधर्म-स्वर्ग				
अयोध्या -> स्मूणामार	पुष्पमित्र		भारद्वाज-ब्राह्मण / पृष्ठदत्ता	सांख्य-मत का प्रचार

भगवान महावीर के पूर्व भव				
सौधर्म-स्वर्ग				
जंबूद्धीप -> भरत-क्षेत्र -> क्षेत्रिक	अग्निसह		अग्निभूति ब्राह्मण / गौतमी	एकांत मत के शास्त्र का ज्ञाता, परिद्वाराजक
सानकुलुमार-स्वर्ग				
जंबूद्धीप -> भरत-क्षेत्र -> मंदिर	अग्निमित्र		गौतम-ब्राह्मण	त्रिदण्डी
माहेन्द्र-स्वर्ग (५वें स्वर्ग)				
जंबूद्धीप -> भरत-क्षेत्र -> मंदिर	भारद्वाज		सायंकायन-ब्राह्मण / मंदिरा	त्रिदण्डी
ब्रह्म-स्वर्ग				
असंख्यात त्रस-स्थावर योनियों में जन्म				
जंबूद्धीप -> भरत-क्षेत्र -> माघ -> राजगृह	स्थावर		शांडिल-ब्राह्मण / पारासिरी	वेद-मति / परिद्वाराजक दीक्षा
माहेन्द्र-स्वर्ग (५वें स्वर्ग)				
जंबूद्धीप -> भरत-क्षेत्र -> माघ -> राजगृह	विश्वनंदी		विश्व-भूति राजा / ज्ञानी	विश्वभूति का छोटा भाई विशाखभूति (आगे दसवें स्वर्ग में देव) के बेटे विशाखनंद के मायाचार के बदले दीक्षा धारण की और निदान पूर्वक मरण
महाशुक्र-स्वर्ग				
जंबूद्धीप -> भरत-क्षेत्र -> सुराय्य-देश -> पोदनपुर	त्रिपृष्ठ	स्वयंप्रभा (ज्वलनजटी/ वायुरुगा की पुँजी)	प्रजापति / मूगावती	विजय-बलभद्र (विशाखभूति का जीव, जयावती रानी द्वारा), मुकुत हुआ; अश्वग्रीव (विशाखनंद का जीव), विजयार्थ-पर्वत की उत्तर श्रेणी में अलका नारी (मपुरस्त्रीव राजा, नीलजन्मा रानी का पुत्र), सातवें नरक में गया
सातवें नरक				
वानिसिंह-पर्वत	कूर सिंह			
पहला नरक				
जंबूद्धीप -> भरत-क्षेत्र -> हिमवान पर्वत के ऊपर	सिंह			चारण-ऋद्धि धारी अजितज्ञय और अमितमुणा मुति द्वारा सम्बोधन
सौधर्म-स्वर्ग				
धातकी-खंड -> पूर्व-विदेश -> मंगलावती देश -> विजयार्थ पर्वत -> कंकनप्रभ	कनकोजल	कनकावती	कंककपुंख / कंकनमाला	जिनदीक्षा
लान्तव (९) स्वर्ग				
जंबूद्धीप -> भरत-क्षेत्र -> कौशल देश -> अयोध्या	हरिषेण		वज्रसेन राजा / शीतवती रानी	मुनिव्रत
महाशुक्र (१०) स्वर्ग				
धातकी-खंड -> पूर्व-विदेश -> पुष्कलावती देश -> पुष्टिरोक्तिणि	प्रियमित्र चक्रवर्ती		सुमित्र / सुव्रता	जिनदीक्षा
सहस्रार (११) स्वर्ग				
जंबूद्धीप -> भरत-क्षेत्र -> छत्राकार	नन्द		नदिर्धन राजा / वीरवती रानी	जिनदीक्षा, तीर्थकर प्रकृति का बंध
अच्युत (१२) स्वर्ग में इन्द्र				
जंबूद्धीप -> भरत-क्षेत्र -> कुंडलपुर	वर्धमान		सिद्धार्थ राजा / विश्वामी रानी	भगवान महावीर



+ भवनवासी देवों में इंद्र परिवार -

विशेषः

भवनतासी देवों में इन्द्र परिवार												
	असुरकुमार	नागकुमार	सुपर्णकुमार	द्वीपकुमार	उदधिकुमार	स्तनित कुमार	विद्युत कुमार	दिवकुमार	अग्निकुमार	वायुकुमार		
	दक्षिण	उत्तर	दक्षिण	उत्तर	दक्षिण	उत्तर	दक्षिण	उत्तर	दक्षिण	उत्तर	दक्षिण	उत्तर
परिषद	अर्थयतर ‘समिति’	250	300	200	200	160	160				140	
	मध्य ‘चंद्रा’	200	250	160	160	140	140				120	
	बाह्य ‘युक्ता’	150	200	140	140	120	120				100	
आत्मक्ष								100				
सैनासूर								50				
किल्विपक								100				
आभियोग्य								32				
	प्रत्येक इन्द्र के सोम, यम, वरुण और कुबेर नामक, चार-चार रक्षक लोकपाल होते हैं जो ज्ञाम से पूर्व, पश्चिम आदि दिशाओं में होते हैं। ये परिवार में तत्पात्रों के समान होते हैं।											
	दस हजार वर्ष बाती जघन्य आयु वाले देवों का आहर दो दिन में तो पर्योगम की भौतिक का अवसर आता है।											
	दस हजार वर्ष बाती आयु वाले देव ७ श्रावणीचुम्ब प्रमाण काल के बाद, और पर्योगम की आयु वाले पौष महृत्के बाद उच्चवास लेते हैं।											
	तत्त्वार्थ राजवाचिक - 4/10											



अलौकिक गणित



+ क्षेत्र प्रमाण -
क्षेत्र प्रमाण

विशेष :

क्षेत्र प्रमाण	
द्रव्य का अविभागी अंश =	परमाणु
अनन्तानन्त परमाणु =	1 अवस्त्रासत्र
8 अवस्त्रासत्र =	1 सत्रासत्र
8 सत्रासत्र =	1 त्रुट्रेण (व्यवहाराणु)
8 त्रुट्रेण =	1 त्रसरेण (त्रस जीव के पाँव से उड़नेवाला अणु)
8 त्रसरेण =	1 रथरेण (रथ से उड़ने वाली धूल का अणु)
8 रथरेण =	उत्तम भोगभूमिज का बालाग्र
8 उ. भोगभूमिज का बालाग्र =	मध्यम भोगभूमिज का बालाग्र
8 म. भोगभूमिज का बालाग्र =	जघन्य भोगभूमिज का बालाग्र
8 ऊ. भोगभूमिज का बालाग्र =	कर्मभूमिज का बालाग्र
8 कर्मभूमिज का बालाग्र =	1 लिखा (लीख)
8 लीख =	1 जूँ
8 जूँ =	1 यव
8 यव =	1 उत्सध्यगुल / सूच्यगुल / व्यवहारांगुल
6 सूच्यगुल =	1 पाद
2 पाद =	1 वितस्ति
2 वितस्ति =	1 हस्त
2 हस्त =	1 किष्कु
2 किष्कु =	1 दंड / युग / धनुष / मूसल / नाती / नाड़ी
2000 धनुष =	1 कोश
4 कोश =	1 योजन
-	
सात राजू लंबे आकाश प्रदेश =	जगतश्रेणी
अनंत राजू लंबे आकाश प्रदेश =	आकाशश्रेणी
सूच्यगुल ^ 2 =	प्रतरांगुल
सूच्यगुल ^ 3 =	घनांगुल
जगतश्रेणी ^ 2 =	जगतप्रतर
जगतश्रेणी ^ 3 =	घनलोक / जगतधन
आकाशश्रेणी ^ 2 =	आकाशप्रतर
आकाशश्रेणी ^ 3 =	अलौकिकाकाश
-	
व्यवहार राशि x 500 =	'प्रमाण' राशि
500 उत्सध्यगुल =	1 प्रमाणांगुल
500 योजन =	1 प्रमाण योजन / महायोजन / दिव्ययोजन
आंगुल =	भरत ऐरावत क्षेत्र के चक्रवर्ती का अंगुल



+ संख्या प्रमाण -
संख्या प्रमाण

$256 = 2^8$
 256 का अर्धच्छेद = 8
 8 का अर्धच्छेद = 3
 256 की वर्ग-शलाका = 3
 अर्धच्छेद का अर्धच्छेद = वर्ग-शलाका

विशेष :

संख्या प्रमाण	
एक =	1
दस =	10
शत =	100
सहस्र =	1000
दस सह. =	10,000
शत सह. =	100,000
दसशत सहस्र =	1,000,000
कोटि =	10,000,000
पक्षकटि =	$(10,000,000)^2$
कटिपक्षकटि =	$(10,000,000)^3$
नहुत =	$(10,000,000)^4$
निनहुत =	$(10,000,000)^5$
अखोभिनी =	$(10,000,000)^6$
बिन्दु =	$(10,000,000)^7$
अज्जद =	$(10,000,000)^8$
निरज्जद =	$(10,000,000)^9$
अहह =	$(10,000,000)^{10}$
अबब =	$(10,000,000)^{11}$
अटट =	$(10,000,000)^{12}$
सोगान्धिक =	$(10,000,000)^{13}$
उप्पल =	$(10,000,000)^{14}$
कुमुद =	$(10,000,000)^{15}$
पुङ्ड्रिक =	$(10,000,000)^{16}$
पदुम =	$(10,000,000)^{17}$
कथान =	$(10,000,000)^{18}$
महाकथान =	$(10,000,000)^{19}$
अरस्त्रय =	$(10,000,000)^{20}$
पण्ठी =	$=(256)^2=65536$
बादाल =	=पण्ठी ²
एकड़ी =	=बादाल ²



न्याय-वाक्य



+ न्याय-वाक्य -
न्याय-वाक्य

विशेष :

[प्रमेय] (*Theorem*) का शाब्दिक अर्थ है - ऐसा कथन जिसे प्रमाण द्वारा सिद्ध किया जा सके। इसे साध्य भी कहते हैं।

गणित में (और विशेषकर रेखागणित में) बहुत से प्रमेय हैं। प्रमेयों की विशेषता है कि उन्हें स्वयंसिद्धों (*axioms*) एवं सामान्य तर्क (*deductive logic*) से सिद्ध किया जा सकता है।

1. **अजाकृपाणीय न्याय** - कहीं तलवार लटकती थी, नीचे से बकरा गया और वह संयोग से उसकी गर्दन पर गिर पड़ी। जहाँ दैवसंयोग से कोई विपत्ति आ पड़ती है वहाँ इसका व्यवहार होता है।

• **अजातपुत्रनामोक्तीर्तन न्याय** - अर्थात् पुत्र न होने पर भी नामकरण होने का न्याय। जहाँ कोई बात होने पर भी आशा के सहारे लोग अनेक प्रकार के आयोजन बाँधने लगते हैं वहाँ यह कहा जाता है।

• **अध्यारोप न्याय** - जो वस्तु जैसी न हो उसमें वैसे होने का (*जैसे रज्जु में सर्प होने का*) आरोप। वेदांत की पुस्तकों में इसका व्यवहार मिलता है।

• **अंधकूपपतन न्याय** - किसी भले आदमी ने अंधे को रास्ता बतला दिया और वह चला, पर जाते जाते कूएँ में गिर पड़ा। जब किसी अनधिकारी को कोई उपदेश दिया जाता है और वह उसपर चलकर अपने अज्ञान आदि के कारण चूक जाता है या अपनी हानि कर बैठता है तब यह कहा जाता है।

• **अंधगज न्याय** - कई जन्मांधों ने हाथी कैसा होता है यह देखने के लिये हाथी को टठोला। जिसने जो अंग टटोल पाया उसने हाथी का आकार उसी अंग का सा समझा। जिसने पूँछ टटोली उसने रस्सी के आकार का, जिसने पैर टटोला उसने खंभे के आकार रस्सी के आकार का, जिसने पैर टटोला उसने खंभे के आकार का समझा। किसी विषय के पुर्ण अंग का ज्ञान न होने पर उसके संबंध में जब अपनी अपनी समझ के अनुसार भिन्न भिन्न बाते कही जाती हैं तब इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

• **अंधगोलांगूल न्याय** - एक अंधा अपने घर के रास्ते से भटक गया था। किसी ने उसके हाथ में गाय की पूँछ पकड़ाकर कह दिया कि यह तुम्हें तुम्हारे स्थान पर पहुँचा देगी। गाय के इधर उधर दौड़ने से अंधा अपने घर तो पहुँचा नहीं, कष्ट उसने भले ही पाया। किसी दुष्ट या मूर्ख के उपदेश पर काम करके जब कोई कष्ट या दुःख उठाता है तब यह कहा जाता है।

• **अंधचटक न्याय** - अंधे के हाथ बटेर।

• **अंधपरंपरा न्याय** - जब कोई पुरुष किसी को कोई काम करते देखकर आप भी वही काम करने लगे तब वहाँ यह कहा जाता है।

• **अंधपंगु न्याय** - एक ही स्थान पर जानेवाला एक अंधा और एक लंगड़ा यदि मिल जायें तो एक दुसरे की सहायता से दोनों वहाँ पहुँच सकते हैं। सांख्य में जड़ प्रकृति और चेतन पुरुष के संयोग से सृष्टि होने के वृष्टांत में यह उक्ति कही गई है।

• **अपवाद न्याय** - जिस प्रकार किसी वस्तु के संबंध में ज्ञान हो जाने से भ्रम नहीं रह जाता उसी प्रकार। (*वेदांत*)।

• **अपराह्नच्छाया न्याय** - जिस प्रकार दोपहर की छाया बराबर बढ़ती जाती है उसी प्रकार सज्जनों की प्रीति आदि के संबंध में यह न्याय कहा जाता है।

• **अपसारिताग्निभूतल न्याय** - जमीन पर से आग हटा लेने पर भी जिस प्रकार कुछ देर तक जमीन गरम रहती है उसी प्रकार धनी धन के न रह जाने पर भी कृछ दिनों तक अपनी अकड़ रखता है।

• **अरण्यरोदन न्याय** - जंगल में रोने के समान बात। जहाँ कहने पर कोई ध्यान देनेवाला न हो वहाँ इसका प्रयोग होता है।

• **अर्कमधु न्याय** - यदि मदार से ही मधु मिल जाय तो उसके लिये अधिक परिश्रम व्यर्थ है। जो कार्य सहज में हो उसके लिये इधर उधर वहूत श्रम करने की आवश्यकता नहीं।

• **अर्द्धजरतीय न्याय** - एक ब्राह्मण देवता अर्थकष्ट से दुःख हो नित्य अपनी गाय लेकर बाजार में बेचने जाते पर वह न बिकती। बात यह थई कि अवस्था पूछने पर वे उसकी बहुत अवस्था बतलाते थे। एक दिन एक आदमी ने उनसे न बिकने का कारण पूछा। ब्राह्मण ने कहा जिस प्रकार आदमी की अवस्था अधिक होने पर उसकी कदर बढ़ जाती है उसी प्रकार मैंने गाय के संबंध में भी समझा था। उसने आगे ऐसा न कहने की सलाह दी। ब्राह्मण ने सोचा कि एक बार गाय को बुड़ी कहकर अब फिर जवान कैसे कहूँ। अंत में उन्होंने स्थिर किया कि आत्मा तो बुड़ी होती नहीं देह बुड़ी होती है। अतः इसे मैं 'आधी बुड़ी आधी जवान' कहूँगा। जब किसी की कोई बात इस पक्ष में भई और उस पक्ष में भी हो तब यह उक्ति कही जाती है।

• **अशोकवनिका न्याय** - अशोक-वन में जाने के समान (*जहाँ छाया सौरम आदि सब कुछ प्राप्त हो*)। जब किसी एक ही स्थान पर सब-कुछ प्राप्त हो जाय और कहीं जाने की आवश्यकता न हो तब यह कहा जाता है।

• **अश्मलोष्ट न्याय** - अर्थात् तराजू पर रखने के लिये पथर तो ढेले से भी भारी है। यह विषमता सूचित करने के अवसर पर ही कहा जाता है। जहाँ दो वस्तुओं में सापेक्षिकता सूचित करनी होती है। वहाँ 'पाषाणेष्टिक न्याय' कह जाता है।

• **अस्सेहदीप न्याय** - बिना तेल के दीये की सी बात। थोड़े ही काल रहनेवाली बात देखकर यह कहा जाता है।

• **अस्सेहदप न्याय** - साँप के कुंडल मारकर बैठने के समान। किसी सवाभाविक बात पर।

• **अहि नकुल न्याय** - साँप नेवले के समान। स्वाभाविक विरोध या बैर सूचित करने के लिये।

• **आकाशापरिच्छिन्नत्व न्याय** - आकाश के समान अपरिच्छिन्न।

• **आभ्राणक न्याय** - लोकप्रवाद के समान।

- **आग्रवण न्याय** - जिस प्रकार किसी वन में यदि आम के पेड़ अधिक होते हैं तो उसे 'आम का वन' ही कहते हैं, यद्यपि और भी पेड़ उस वन में रहते हैं, उसी प्रकार जहाँ औरों को छोड़ प्रधान वस्तु का ही उल्लेख किया जाता है वहाँ यह उक्ति कही जाती है।
- **उत्पाटितदत्तनाग न्याय** - दाँत तोड़े हुए साँप के समान। कुछ करने-धरने या हानि पहुँचाने में असमर्थ हुए मनुष्य के संबंध में।
- **उदकनिमज्जन न्याय** - कोई दोषी है या निर्दोष इसकी एक दिव्य परीक्षा प्राचीन काल में प्रचलित थी। दोषी को पानी में खड़ा करके किसी ओर बाण छोड़ते थे और बाण छोड़ने के साथ ही अभियुक्त को तबतक झूंबे रहने के लिये कहते थे जबतक वह छोड़ा हुआ बाण वहाँ से फिर छूटने पर लौट न आवे। यदि इतने बीच में झूबनेवाले का कोई अंग बाहर न दिखाई पड़ा तो उसे निर्देष समझते थे। जाहाँ सत्यास्तय की बात आती है वहाँ यह न्याय कहा जाता है।
- **उभयतः पाशरज्जु न्याय** - जहाँ दोनों ओर विपत्ति हो अर्थात् दो कर्तव्यपक्षों में से प्रत्येक में दुःख हो वहाँ इसका व्यवहार होता है। 'साँप छूँँदर की गति'।
- **उष्ट्रकंटक भक्षण न्याय** - जिस प्रकार थोड़े से सुख के लिये ऊँट कॉटे खाने का कष्ट उठाता है उसी प्रकार जहाँ थोड़े से सुख के लिये अधिक कष्ट उठाया जाता है वहाँ यह कहावत कही जाती है।
- **ऊपरवृष्टि न्याय** - किसी बात का जहाँ कोई फल न हो वहाँ कहा जाता है।
- **कंठचामीकर न्याय** - गले में सोने का हार हो और उसे इधर उधर ढूँढ़ता फिरे। आनंदस्वरूप ब्रह्म के अपने में रहते भी अज्ञानवश सुख के लिये अनेक प्रकार के दुःख भोगने के वृष्टांत में वेदांती कहते हैं।
- **कदंबगोलक न्याय** - जिस प्रकार कदंब के गोले में सब फूल एक साथ हो जाते हैं, उसी प्रकार जहाँ कई बातें एक साथ हो जाती हैं वहाँ इसे कहते हैं। कुछ नैयायिक शब्दोत्पत्ति में कई वर्णों के उच्चारण एक साथ मानकर उसके वृष्टांत में यह कहते हैं। यह भी कहते हैं कि जिस प्रकार कदंब में सब तरफ किजल्क होते हैं वैसे शब्द जहाँ उत्पन्न होता है उसके सभी ओर उसकी तरंगों का प्रसार होता है।
- **कदलीफल न्याय** - केला काटने पर ही फलता है इसी प्रकार नीच सीधे कहने से नहीं सुनते।
- **कफोनिगुड न्याय** - सूत न कपास जुलाहों से मटकौवल।
- **करकंकण न्याय** - 'कंकण' कहने से ही हाथ के गहने का बोध हो जाता है, 'कर' कहने की आवश्यकता नहीं। पर कर कंकण कहते हैं जिसका अर्थ होता है 'हाथ में पड़ा हुआ कड़ा'। इस प्रकार का जहाँ अभिप्राय होता है वहाँ यह न्याय कहा जाता है।
- **काकतालीय न्याय** - किसी ताड़ के पेड़ के नीचे कोई पथिक लेटा था और ऊपर एक कौवा बैठा था। कौवा किसी ओरको उड़ा और उसके उड़ने के साथ ही ताड़ का एक पका हुआ फल नीचे गिरा। यद्यपि फल पककर आपसे आप गिरा था तथापि पथिक ने दोनों बातों को साथ होते देख यही समझा कि कौवे के उड़ने से ही तालफल गिरा। जहाँ दो बातें संयोग से इस प्रकार एक साथ हो जाती हैं वहाँ उनमें परस्पर कोई संबंध न होते हुए भी लोग संबंध समझ लेते हैं। ऐसा संयोग होने पर यह कहावत कही जाती है।
- **काकदध्युपघातक न्याय** - 'कौवे से दही बचाना' कहने से जिस प्रकार 'कुत्ते, बिल्ली आदि सब जंतुओं से बचाना' समझ लिया जाता है उसी प्रकार जहाँ किसी वाक्य का अभिप्राय होता है वहाँ यह उक्ति कहीं जाती है।
- **काकदंतगवेषण न्याय** - कौवे का दाँत ढूँढ़ना निष्फल है अतः निष्फल प्रयत्न के संबंध में यह न्याय कहा जाता है।
- **काकाक्षिगोलक न्याय** - कहते हैं, कौवे के एक ही पुतली होती है जो प्रयोजन के अनुसार कभी इस आँख में कभी उस आँख में जाती है। जहाँ एक ही वस्तु दो स्थानों में कार्य करे वहाँ के लिये यह कहावत है।
- **कारणगुणप्रक्रम न्याय** - कारण का गुण कार्य में भी पाया जाता है। जैसे सूत का रूप आदि उससे बुने कपड़े में।
- **कुशकाशावलंबन न्याय** - जैसे झूबता हुआ आदमी कुश काँस जो कुछ पाता है उसी को सहारे के लिये पकड़ता है, उसी प्रकार जहाँ कोई दृढ़ आधार न मिलने पर लोग इधर उधर की बातों का सहारा लेते हैं वहाँ के लिये यह कहावत है। 'झूबते को तिनके का सहारा' बोलते भी हैं।
- **कूपखानक न्याय** - जैसे कूआँ खोदनेवाले की देह में लगा हुआ कीचड़ उसी कूएँ के जल में साफ हो जाता है उसी प्रकार राम, कृष्ण आदि को भिन्न भिन्न रूपों में समझने से ईश्वर में भेद बुद्धि का जो द्वेष लगता है वह उन्हीं की उपासना द्वारा ही अद्वैतबुद्धि हो जाने पर मिट जाता है।
- **कूपमंडूक न्याय** - समुद्र का मेढक किसी कूएँ में जा पड़ा। कूएँ के मेढक ने पूछा 'भाई ! तुम्हारा समुद्र कितना बड़ा है।' उसने कहा 'बहुत बड़ा।' कूएँ के मेढक ने पूछा 'इस कूएँ के इतना बड़ा।' समुद्र के मेढक ने कहा 'कहाँ कूआँ, कहाँ समुद्र।' समुद्र से बड़ी कोई वस्तु पृथ्वी पर नहीं। इसपर कूएँ का मेढक जो कूएँ से बड़ी कोई वस्तु जानता ही न था बिगड़कर बोला 'तुम झूठे हो, कूएँ से बड़ी कोई वस्तु हो नहीं सकती।' जहाँ परिमित ज्ञान के कारण कोई अपनी जानकारी के ऊपर कोई दूसरी बात मानता ही नहीं वहाँ के लिये यह उक्ति है।
- **कूर्माग न्याय** - जिस प्रकार कछुआ जब चाहता है तब अपने सब अंग भीतर समेट लेता है और जब चाहता है बाहर करता है उसी प्रकार ईश्वर सृष्टि और लय करता है।
- **कैमुतिक न्याय** - जिसने बड़े-बड़े काम किए उसे कोई छोटा काम करते क्या लगता है। उसी के वृष्टांत के लिये यह उक्ति कही जाती है।
- **कौडिन्य न्याय** - यह अच्छा है पर ऐसा होता तो और भी अच्छा होता।

- **गजभुक्त कपित्य न्याय** - हाथी के खाए हुए कैथ के समान ऊपर से देखने में ठीक पर भीतर भीतर निःसार और शून्य।
- **गड्डलिकाप्रवाह न्याय** - भेड़िया धसान।
- **गणपति न्याय** - एक बार देवताओं में विवाद चला कि सबमें पूज्य कौन है। ब्रह्मा ने कहा जो पृथ्वी की प्रदक्षिणा पहले कर आवे वही श्रेष्ठ समझा जाय। सब देवता अपने वाहनों पर चले। गणेश जी चूहे पर सवार सबके पीछे रहे। इतने में मिले नारद। उन्होंने गणेश जी को युक्ति बताई कि राम नाम लिखकर उसी की प्रदक्षिणा करके चटपट ब्रह्मा के पास पहुँच जाओ। गणपति ने ऐसा ही किया और देवताओं में वे प्रथम पूज्य हुए। इसी से जहाँ थोड़ी सी युक्ति से बड़ी भारी बात हो जाय वहाँ इसका प्रयोग करते हैं।
- **गतानुगतिक न्याय** - कुछ ब्राह्मण एक घाट पर तर्पण किया करते थे। वे अपना अपना कुश एक ही स्थान पर रख देते थे जिससे एक का कुश दूसरा ले लेता था। एक दिन पहचान के लिये एक ने अपने कुश को ईंट से दबा दिया। उसकी देखा देखी दूसरे दिन सबने अपने कुश पर ईंट रखी। जहाँ एक की देखादेखी लोग कोई काम करने लगते हैं वहाँ यह न्याय कहा जाता है।
- **गुड़जिहिका न्याय** - जिस प्रकार बच्चे को कड़वी औषध खिलाने के लिये उसे पहले गुड़ देकर फुसलाते हैं उसी प्रकार जहाँ अरुचिकर या कठिन काम करने के लिये पहले कुछ प्रलोभन दिया जाता है वहाँ इस उक्ति का प्रयोग होता है।
- **गोवलीरवर्द न्याय** - 'वलीरवर्द' शब्द का अर्थ है बैल। जहाँ यह शब्द गो के साथ हो वहाँ अर्थ और भी जल्दी खुल जाता है। ऐसे शब्द जहाँ एक साथ होते हैं वहाँ के लिये यह कहावत है।
- **घट्टकुटीप्राभात न्याय** - एक बनिया घाट के महसूल से बचने के लिये ठीक रास्ता छोड़ ऊबड़खाबड़ स्थानों में रातभर भटकता रहा पर सबेरा होते होते फिर उसी महसूल की छावनी पर पहुँचा और उसे महसूल देना पड़ा। जहाँ एक कठिनाई से बचने के लिये अनेक उपाय निष्फल हों और अंत में उसी कठिनाई में फँसना पड़े वहाँ यह न्याय कहा जाता है।
- **घटप्रदीप न्याय** - घड़ा अपने भीतर रखे हुए दीप का प्रकाश बाहर नहीं जाने देता। जहाँ कोई अपना ही भला चाहता है दूसरे का उपकार नहीं करता यहाँ यह प्रयुक्त होता है।
- **घुणाक्षर न्याय** - घुनों के चालने से लकड़ी में अक्षरों के से आकार बन जाते हैं, यद्यपि घुन इन उद्देश्य से नहीं काटते कि अक्षर बनें। इसी प्रकार जहाँ एक काम करने में कोई दूसरी बात अनायस हो जाय वहाँ यह कहा जाता है।
- **चंपकपटवास न्याय** - जिस कपड़े में चंपे का फूल रखा हो उसमें फूलों के न रहने पर भी बहुत देर तक महक रहती है। इसी प्रकार विषय-भोग का संस्कार भी बहुत काल तक बना रहता है।
- **जलतरंग न्याय** - अलग नाम रहने पर भी तरंग जल से भिन्न गुण की नहीं होती। ऐसा ही अभेद सूचित करने के लिये इस उक्ति का व्यवहार होता है।
- **जलतुंबिका न्याय** - (क) तुँबी पानी में नहीं ढूबती, ढुबाने से ऊपर आ जाती है। जहाँ कोई बात छिपाने से छिपनेवाली नहीं होती वहाँ इसे कहते हैं। (ख) तुँबी के ऊपर मिट्टी कीचड़ आदि लपेटकर उसे पानी में डाले तो वह ढूब जाती है पर कीजड़ धोकर पानी में डालें तो नहीं ढूबती। इसी प्रकार जीव देहादि के नलों से युक्त रहने पर संसार सागर में निमग्न हो जाता है और मल आदि छूटने पर पार हो जाता है।
- **जलानयन न्याय** - पानी 'लाओ' कहने से उसकै साथ बरतन का लाना भी समझ लिया जाता है क्योंकि बरतन के बिना पानी आवेगा किसमें।
- **तिलतंडुल न्याय** - चावल और तिल की तरह मिली रहने पर भी अलग दिखाई देनेवाली वस्तुओं के संबंध में इसका प्रयोग होता है।
- **तृणजलौका न्याय** - घास और जोंक का न्याय
- **दंडचक्र न्याय** - जैसे घड़ा बनने में दंड, चक्र आदि कई कारण हैं वैसे ही जहाँ कोई बात अनेक कारणों से होती है वहाँ यह उक्ति कही जाती है।
- **दंडापूप न्याय** - कोई डंडे में बँधे हुए मालपूए छोड़कर कहीं गया। आने पर उसने देखा कि डंडे का बहुत सा भाग चूहे खा गए हैं। उसने सोचा कि जब चूहे डंडा तक खा गए तब मालपूए को उन्होंने कब छोड़ा होगा। जब कोई दुष्कर और कष्टसाध्य कार्य हो जाता है तब उसके साथ ही लगा हुआ सुखद और सहज कार्य अवश्य ही हुआ होगा यही सूचित करने के लिये यह कहावत कहते हैं।
- **दशम न्याय** - दस आदमी एक साथ कोई नदी तैरकर पार गए। पार जाकर वे यह देखने के लिये सबको गिनने लगे कि कोई छूटा या वह तो नहीं गया। पर जो गिनता वह अपने को छोड़ देता इससे गिनने में नौ ही ठहरते। अंत में उस एक खोए हुए के लिये सबने रोना शुरू किया। एक चतुर पथिक ने आकर उनसे फिर से गिनने के लिये कहा। जब एक उठकर नौ तक गिन गया तब पथिक ने कहा 'दसवें तुम।' इसपर सब प्रसन्न हो गए। वेदांती इस न्याय का प्रयोग यह दिखाने के लिये करते हैं कि गुरु के 'तत्त्वमसि' आदि उपदेश सुनने पर अज्ञान और तज्जनित दुःख दूर हो जाता है।
- **देहलीदीपक न्याय** - देहली पर दीपक रखने से भीतर और बाहर दोनों ओर उजाला रहता है। जहाँ एक ही आयोजन से दो काम सधें या एक शब्द या बात दोनों ओर लगे वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है।
- **नष्टाश्वरदग्धरथ न्याय** - संस्कृत शास्त्रों में प्रसिद्ध एक न्याय जिसका तात्पर्य है, दो आदमियों का इस प्रकार मिलकर काम करना जिसमें दोनों एके दूसरे की चीजों का उपयोग करके अपना उद्देश्य सिद्ध करें। यह न्याय निम्नलिखित घटना या कहानी के आधार पर है। दो आदमी अलग-अलग रथ पर सवार होकर किसी वन में गए। वहाँ संयोगवश आग लगने के कारण एक आदमी का रथ जल गया और दूसरे का

घोड़ा जल गया। कुछ समय के उपरांत जब दोनों मिले तब एक के पास केवल घोड़ा और दूसरे के पास केवल रथ था। उस समय दोनों ने मिलकर एक दूसरे की चीज का उपयोग किया। घोड़ा रथ में जोता गया और वे दोनों निर्दिष्ट स्थान तक पहुँच गए। दोनों ने मिलकर काम चला लिया। इस प्रकार जहाँ दो आदमी मिलकर एक दूसरे की त्रुटि की पूर्ति करके काम चलाते हैं वहाँ इसे कहते हैं।

• **नारिकेलफलांबु न्याय** - नारिकेल के फल में जिस प्रकार न जाने कहाँ से कैसे जल आ जाता है उसी प्रकार लक्ष्मी किस प्रकार आती है नहीं जान पड़ता।

• **निम्रगाप्रवाह न्याय** - नदी का प्रवाह जिस ओर को जाता है उधर रुक नहीं सकता। इसी प्रकार के अनिवार्य क्रम के वृष्टांत में यह कहावत है।

• **नृपनापितपुत्र न्याय** - किसी राजा के यहाँ एक नाई नौकर था। एक दिन राजा ने उससे कहा कि कहीं से सबसे सुंदर बालक लाकर मुझे दिखाओ। नाई को अपने पुत्र से बढ़कर और कोई सुंदर बालक कहीं न दिखाई पड़ा और वह उसी को लेकर राजा के सामने आया। राजा उस काले कलूटे बालक को देख बहुत क्रुद्ध हुआ, पर पीछे उसने सोचा कि प्रेम या राग के वश इसे अपने लड़के सा सुंदर और कोई दिखाई ही न पड़ा। राग के वश जहाँ मनुष्य अंधा हो जाता है और उसे अच्छे बुरे की पहचान नहीं रह जाती वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है।

• **पंकप्रक्षालन न्याय** - कीचड़ लग जायगा तो धो डालेंगे इसकी अपेक्षा यही विचार अच्छा है कि कीचड़ लगने ही न पावे।

• **पंजरचालन न्याय** - दस पक्षी यदि किसी पिंजड़े में बंद कर दिए जाय और वे सब एक साथ यत्र करें तो पिंजड़े को इधर उधर चला सकते हैं। दस ज्ञानेद्रियाँ और दस कर्मेद्रियाँ प्राणरूप क्रिया उत्पन्न करके देह को चलाती हैं इसी के वृष्टांत में सांख्यवाले उक्त न्याय करते हैं।

• **पाषाणेष्टक न्याय** - ईट भारी होती है पर उससे भी भारी पत्थर होता है।

• **पिष्टपेषण न्याय** - पीसे को पीसना निरर्थक है। किए हुए काम को व्यर्थ जहाँ कोई फिर करता है वहाँ के लिये यह उक्ति है।

• **प्रदीप न्याय** - जिस प्रकार तेल, बत्ती और आग इन भिन्न भिन्न वस्तुओं के मेल से दीपक जलता है उसी प्रकार सत्त्व, रज और तम इन परस्पर भिन्न गुणों के सहयोग से देह-धारण का व्यापार होता है। ([संब्यु](#))।

• **प्रापाणक न्याय** - जिस प्रकार धी, चीनी आदि कई वस्तुओं के एकत्र करने से बढ़िया मिठाई बनती है उसी प्रकार अनेक उपादानों के योग से सुंदर वस्तु तैयार होने के वृष्टांत में यह उक्ति कही जाती है। साहित्यवाले विभाव, अनुभाव आदि द्वारा रस का परिपाक सूचित करने के लिये इसका प्रयोग प्रायः करते हैं।

• **प्रासादवासि न्याय** - महल में रहनेवाला यद्यपि कामकाज के लिये नीचे उतरकर बाहर इधर उधर भी जाता है पर उसे प्रसादवासी ही कहते हैं इसी प्रकार जहाँ जिस विषय की प्रधानता होती है वहाँ उसी का उल्लेख होता है।

• **फलवत्सहकार न्याय** - आम के पेड़ के नीचे पथिक छाया के लिये ही जाता है पर उसे फल भी मिल जाता है। इसी प्रकार जहाँ एक लाभ होने से दूसरा लाभ भी हो वहाँ यह न्याय कहा जाता है।

• **बहुवृकाकृष्ट न्याय** - एक हिरन को यदि बहुत से भेड़िए लगें तो उसके अंग एक स्थान पर नहीं रह सकते। जहाँ किसी वस्तु के लिये बहुत से लोग खींचाखींची करते हैं वहाँ वह यथास्थान वा समूची नहीं रह सकती।

• **विलवर्तिगोद्धा न्याय** - जिस प्रकार बिल में स्थित गोह का विभाग आदि नहीं हो सकता उसी प्रकार जो वस्तु अज्ञात है उसके संबंध में भला बुरा कुछ नहीं कहा जा सकता।

• **ब्राह्मणग्राम न्याय** - जिस ग्राम में ब्राह्मणों की बस्ती अधिक होती है उसे ब्राह्मणों का गाँव करते हैं यद्यपि उसमें कुछ और लोग भी बसते हैं। औरों को छोड़ प्रधान वस्तु का ही नाम लिया जाता है, यहीं सूचित करने के लिये यह कहावत है।

• **ब्राह्मणअमण न्याय** - ब्राह्मण यदि अपना धर्म छोड़ श्रमण ([बौद्ध भिक्षु](#)) भी हो जाता है तब भी उसे ब्रह्मण श्रमण कहते हैं। एक वृत्ति को छोड़ जब कोई दूसरी वृत्ति ग्रहण करता है तब भी लोग उसकी पूर्ववृत्ति का निर्देश करते हैं।

• **मज्जनोन्मज्जन न्याय** - तैरना न जानेवाला जिस प्रकार जल में पड़कर डूबता उतरता है उसी प्रकार मूर्ख या दुष्ट वादी प्रमाण आदि ठीक न दे सकने के कारण क्षुब्ध और व्याकुल होता है।

• **मंडूकतोलन न्याय** - एक धूर्त बनिया तराजू पर सौंदे के साथ मेढ़क रखकर तौला करता था। एक दिन मेढ़क कूदकर भाग और वह पकड़ा गया। छिपाकर की हुई बुराई का भड़ा एक दिन फूटता है।

• **रज्जुसर्प न्याय** - जबतक वृष्टि ठीक नहीं पड़ती तबतक मनुष्य रस्सी को साँप समझता है इसी प्रकार जबतक ब्रह्मज्ञान नहीं होता तबतक मनुष्य दुश्य जगत् को सत्य समझता है, पीछे ब्रह्मज्ञान होने पर उसका भ्रम दूर होता है और वह समझता है कि ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। ([वेदांती](#))।

• **राजपुत्रव्याध न्याय** - कोई राजपुत्र बचपन में एक व्याध के घर पड़ गया और वहीं पलकर अपने को व्याधपुत्र ही समझने लगा। पीछे जब लोगों ने उसे उसका कुल बताया तब उसे अपना ठीक ठीक ज्ञान हुआ। इसी प्रकार जबतक ब्रह्मज्ञान नहीं होता तबतक मनुष्य अपने को न जाने क्या समझा करता है। ब्रह्मज्ञान हो जाने पर वह समझता है कि 'मैं ब्रह्म हूँ'। ([वेदांती](#))।

• **राजपुरप्रवेश न्याय** - राजा के द्वार पर जिस प्रकार बहुत से लोगों की भीड़ रहती है पर सब लोग बिना गड़बड़ या हल्ला किए चुपचाप कायदे से खड़े रहते हैं उसी प्रकार जहाँ सुव्यवस्थापूर्वक कार्य होता है वहाँ यह न्याय कहा जाता है।

• **रात्रिदिवस न्याय** - रात दिन का फर्क। भारी फर्क।

• **लूतातंतु न्याय** - जिस प्रकार मकड़ी अपने शरीर से ही सूत निकालकर जाला बनाती है और फिर आप ही उसका संहार करती है इसी प्रकार ब्रह्म अपने से ही सृष्टि करता है और अपने में उसे लय करता है।

• **लोष्टलगुड न्याय** - ढेला तोड़ने के लिये जैसे डंडा होता है उसी प्रकार जहाँ एक का दमन करनेवाला दूसरा होता है वहाँ यह कहावत कही जाती है।

• **लोह चुंबक न्याय** - लोहा गतिहीन और निष्क्रिय होने पर भी चुंबक के आकर्षण से उसके पास जाता है उसी प्रकार पुरुष निष्क्रिय होने पर भी प्रकृति के साहचर्य से क्रिया में तत्पर होता है। ([सांख्य](#))।

• **वरगोष्ठी न्याय** - जिस प्रकार वरपक्ष और कन्यापक्ष के लोग मिलकर विवाह रूप एक ऐसे कार्य का साधन करते हैं जिससे दोनों का अभीष्ट सिद्ध होता है उसी प्रकार जहाँ कई लोग मिलकर सबके हित का कोई काम करते हैं वहाँ यह न्याय कहा जाता है।

• **वहिधूम न्याय** - धूमरूप कार्य देखकर जिस प्रकार कारण रूप अग्नि का ज्ञान होता है उसी प्रकार कार्य द्वारा कारण अनुमान के संबंध में यह उक्ति है ([नैयायिक](#))।

• **विल्वखल्लाट ([खल्लाट](#)) न्याय** - धूप से व्याकुल गंजा छाया के लिये बेल के पेड़ के नीचे गया। वहाँ उसके सिर पर एक बेल टूटकर गिरा। जहाँ इष्टाश्व के प्रयत्न में अनिष्ट होता है वहाँ यह उक्ति कही जाती है।

• **विषवृक्ष न्याय** - विष का पेड़ लगाकर भी कोई उसे अपने हाथ से नहीं काटता। अपनी पाली पोसी वस्तु का कोई अपने हाथ से नाश नहीं करता।

• **वीचितरंग न्याय** - एक के उपरांत दूसरी, इस क्रम से बरा- बर आनेवाली तरंगों के समान। नैयायिक ककारादि वर्णों की उत्पत्ति वीचितरंग न्याय से मानते हैं।

• **वीजांकुर न्याय** - बीज से अंकुर या अंकुर से बीज है यह ठीक नहीं कहा जा सकता। न बीज के बिना अंकुर हो सकता है न अंकुर के बिना। बीज और अंकुर का प्रवाह अनादि काल से चला आता है। दो संबद्ध वस्तुओं के नित्य प्रवाह के वृष्टांत में वेदांती इस न्याय को कहते हैं।

• **वृक्षप्रकंपन न्याय** - एक आदमी पेड़ पर चढ़ा। नीचे से एक ने कहा कि यह डाल हिलाओ, दुसरे ने कहा यह डाल हिलाओ। पेड़ पर चढ़ा हुआ आदमी कुछ स्थिर न कर सका कि किस डाल को हिलाऊँ। इतने में एक आदमी ने पेड़ का धड़ ही पकड़कर हिला डाला जिससे सब डालें हिल गई। जहाँ कोई एक बात सबके अनुकूल हो जाती है वहाँ इसका प्रयोग होता है।

• **वृद्धकुमारिका न्याय या वृद्धकुमारी वाक्य न्याय** - कोई कुमारी तप करती-करती बुझी हो गई। इंद्र ने उससे कोई एक वर माँगने के लिये कहा। उसने वर माँगा कि मेरे बहुत से पुत्र सोने के बरतनों में खूब धी दूध और अन्न खायें। इस प्रकार उसने एक ही वाक्य में पति, पुत्र गोधन धान्य सब कुछ माँग लिया। जहाँ एक की प्राप्ति से सब कुछ प्राप्त हो वहाँ यह कहावत कही जाती है। ([सांख्य](#))।

• **शतपत्रभेद न्याय** - सौ पत्ते एक साथ रखकर छेदने से जान पड़ता हैं कि सब एक साथ एक काल में ही छिद गए पर वास्तव में एक एक पत्ता भिन्न भिन्न समय में छिदा। कालांतर की सूक्ष्मता के कारण इसका ज्ञान नहीं हुआ। इस प्रकार जहाँ बहुत से कार्य भिन्न भिन्न समयों में होते हुए भी एक ही समय में हुए जान पड़ते हैं वहाँ यह वृष्टांत वाक्य कहा जाता है। ([सांख्य](#))।

• **श्यामरक्त न्याय** - जिस प्रकार कच्चा काला घड़ पकने पर अपना श्याम-गुण छोड़ कर रक्त-गुण धारण करता है उसी प्रकार पूर्व-गुण का नाश और अपर-गुण का धारण सूचित करने के लिये यह उक्ति कही जाती है।

• **श्यालकशुनक न्याय** - किसी ने एक कुत्ता पाला था और उसका नाम अपने साले का नाम रखा था। जब वह कुत्ते का नाम लेकर गालियाँ देता तब उसकी स्त्री अपने भाई का अपमान समझकर बहुत चिढ़ती। जिस उद्देश्य से कोई बात नहीं की जाती वह यदि उससे हो जाती है तो यह कहावत कही जाती है।

• **संदंशपतित न्याय** - सँड़सी जिस प्रकार अपने बीच आई हुई वस्तु के पकड़ती है उसी प्रकार जहाँ पूर्व ओर उत्तर पदार्थ द्वारा मध्यस्थित पदार्थ का ग्रहण होता है वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है।

• **समुद्रवृष्टि न्याय** - समुद्र में पानी बरसने से जैसे कोई उपकार नहीं होता उसी प्रकार जहाँ जिस बात की कोई आवश्यकता या फल नहीं वहाँ यदि वह की जाती है तो यह उक्ति चरितार्थ की जाती है।

• **सर्वपिक्षा न्याय** - बहुत से लोगों का जहाँ निमंत्रण होता है वहाँ यदि कोई सबके पहले पहुँचता है तो उसे सबकी प्रतीक्षा करनी होती है। इस प्रकार जहाँ किसी काम के लिये सबका आसरा देखना होता है वहाँ उक्ति कही जाती है।

• **सिंहवलोकन न्याय** - सिंह शिकार मारकर जब आगे बढ़ता है तब पीछे फिर-फिरकर देखता जाता है। इसी प्रकार जहाँ अगली और पिछली सब बातों की एक साथ आलोचना होती है वहाँ इस उक्ति का व्यवहार होता है।

• **सूचीकटाह न्याय** - सूई बनाकर कड़ाह बनाने के समान। किसी लोहार से एक आदमी ने आकर कड़ाह बनाने को कहा। थोड़ी देर में एक दूसरा आया, उसने सूई बनाने के लिये कहा। लोहार ने पहले सूई बनाई तब कड़ाह। सहज काम पहले करना तब कठिन काम में हाथ लगाना, इसी के वृष्टांत में यह कहा जाता है।

• **सुंदोपसुंद न्याय** - सुंद और उपसुंद दोनों भाई बड़े बली दैत्य थे। एक स्त्री पर दोनों मोहित हुए। स्त्री ने कहा दोनों में जो अधिक बलवान होगा उसी के साथ मैं विवाह करूँगी। परिणाम यह हुआ कि दोनों लड़ मरे। परस्पर के फूट से बलवान् से बलवान् मनुष्य नष्ट हो जाता हैं यही सूचित करने के लिये यह कहावत है।

- **सोपानारोहण न्याय** - जिस प्रकार प्रासाद पर जाने के लिसे एक एक सीढ़ी क्रम से चढ़ना होता है उसी प्रकार किसी बड़े काम के करने में क्रम-क्रम से चलना पड़ता है।
- **सोपानावरोहण न्याय** - सीढ़ियाँ जिस क्रम से चढ़ते हैं उसी के उलटे क्रम से उतरते हैं। इसी प्रकार जहाँ किसी क्रम से चलकर फिर उसी के उलटे क्रम से चलना होता है ([जैसे, एक बार एक से सौ तक गिनती गिनकर फिर सौ से निशानवे, अद्वानबे इस उलटे क्रम से गिनना](#)) वहाँ यह न्याय कहा जाता है।
- **स्थविरलगुड न्याय** - बुड्डे के हाथ फेंकी हुई लाठी जिस प्रकार ठीक निशाने पर नहीं पहुँचती उसी प्रकार किसी बात के लक्ष्य तक न पहुँचने पर यह उक्ति कही जाती है।
- **स्थूणानिखनन न्याय** - जिस प्रकार घर के छप्पर में चाँड़ देने के लिये खंभा गाड़ने में उसे मिट्टी आदि डालकर ढढ़ करना होता है उसी प्रकार युक्ति उदाहरण द्वारा अपना पक्ष ढढ़ करना पड़ता है।
- **स्थूलारुधती न्याय** - विवाह हो जाने पर वर और कन्या को अरुंधती तारा दिखाया जाता है जो दूर होने के कारण बहुत सूक्ष्म है और जल्दी दिखाई नहीं देता। अरुंधती दिखाने में जिस प्रकार पहले सप्तर्षि को दिखाते हैं जो बहुत जल्दी दिखाई पड़ता है और फिर उँगली से बाताते हैं कि उसी के पास वह अरुंधती है देखो, इसी प्रकार किसी सूक्ष्म-तत्व का परिज्ञान कराने के लिये पहले स्थूल-दृष्टि आदि देकर क्रमशः उस तत्व तक ले जाते हैं।
- **स्वामिभृत्य न्याय** - जिस प्रकार मालिक का काम करके नौकर भी स्वामी की प्रसन्नता से अपने को कृतकार्य समझता है उसी प्रकार जहाँ दूसरे का काम हो जाने से अपना भी काम या प्रसन्नता हो जाय वहाँ के लिये यह उक्ति है।
- **अन्धचटकन्याय** - अन्धे के हाथ बटेर लगाना
- **अन्धगजन्याय** - अन्धा और हाथी
- **अन्धगालांलन्याय** - अन्धा और गाय की पूँछ
- **अन्धपंगुन्याय** - अन्धा और लंगड़ा
- **अन्धदर्पणन्याय** - अन्धा और दर्पण
- **अन्धपरम्परान्याय** - अन्ध परम्परा
- **स्थूणानिखनन्याय** - खूँटे को हिलाकर पक्का करना
- **अर्धकुकुटीन्याय** - आधी मुर्गी खाने के लिये, आधी अण्डे देने के लिये
- **कण्ठचामीकरन्याय** - गले में जेवर का न्याय
- **कदम्बकोरक ([कदम्बगोलक](#)) न्याय** - कदम्ब की कली का न्याय ; यह न्याय तब उपयुक्त होता है जब उदय के साथ ही विकास आरम्भ हो जाय। ज्ञातव्य है कि कदम्ब का कली/फूल से फल बनने की प्रक्रिया एक साथ ही होती है।
- **कफोणीगुडन्याय** - कोहनी पर लगे गुड़ का न्याय ([चाट भी नहीं सकते](#))
- **कम्बलनिर्णजनन्याय** - कंबल धोने का न्याय ([काम कुछ, परिणाम कुछ और](#))
- **कूपमण्डूकन्याय** - कुएं का मेढक ([जिसकी सोच सीमित और संकुचित हो](#))
- **कूपयन्त्रघटिकान्याय** - रहट की बाल्टी ([घटिका](#)) का न्याय
- **खलेकपोतन्याय** - खलिहान पर कबूतर ([एक साथ धावा बोलते हैं](#))
- **गुडजिह्विकान्याय** - गुड़ और जीभ ([मीठा लेप की हुई औषधि](#))
- **चोरापराधेमाण्डव्यदण्डन्याय** - चोर करे अपराध और संन्यासी को फांसी
- **तमोदीपन्याय** - अंधेरे को देखने के लिये दीया ([दीप](#))
- **तुष्टतुदुर्जनन्याय** - दुर्जनों का तुष्टीकरण
- **क्षीरनीरन्याय x तिलतण्डुलन्याय ([हंसक्षीरन्याय](#))** - दूध का दूध, पानी का पानी
- **विषकृमिन्याय** - विष के कृमि ([विष में ही जिंदा रहते हैं](#))
- **प्रधानमल्लनिर्बहणन्याय** - मुख्य योद्धा ([मल्ल](#)) का हार जाना
- **मण्डूकप्लुतिन्याय** - मेंढक की छलांग
- **वटेयक्षन्याय** - बरगद का भूत ([सुनी-सुनाई बात](#))

- समुद्रतरंश्याय - समुद्र और तरंग (एक ही चीज के रूप)
- स्थालीपुलाकन्याय - पके भात की परीक्षा के लिये एक दाने की परीक्षा ही काफी है।
- अरुन्धतीदर्शनन्याय - ज्ञात से अज्ञात की ओर जाना



श्री श्रुतस्कन्ध यन्त्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं
णमो उवज्ञायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

